

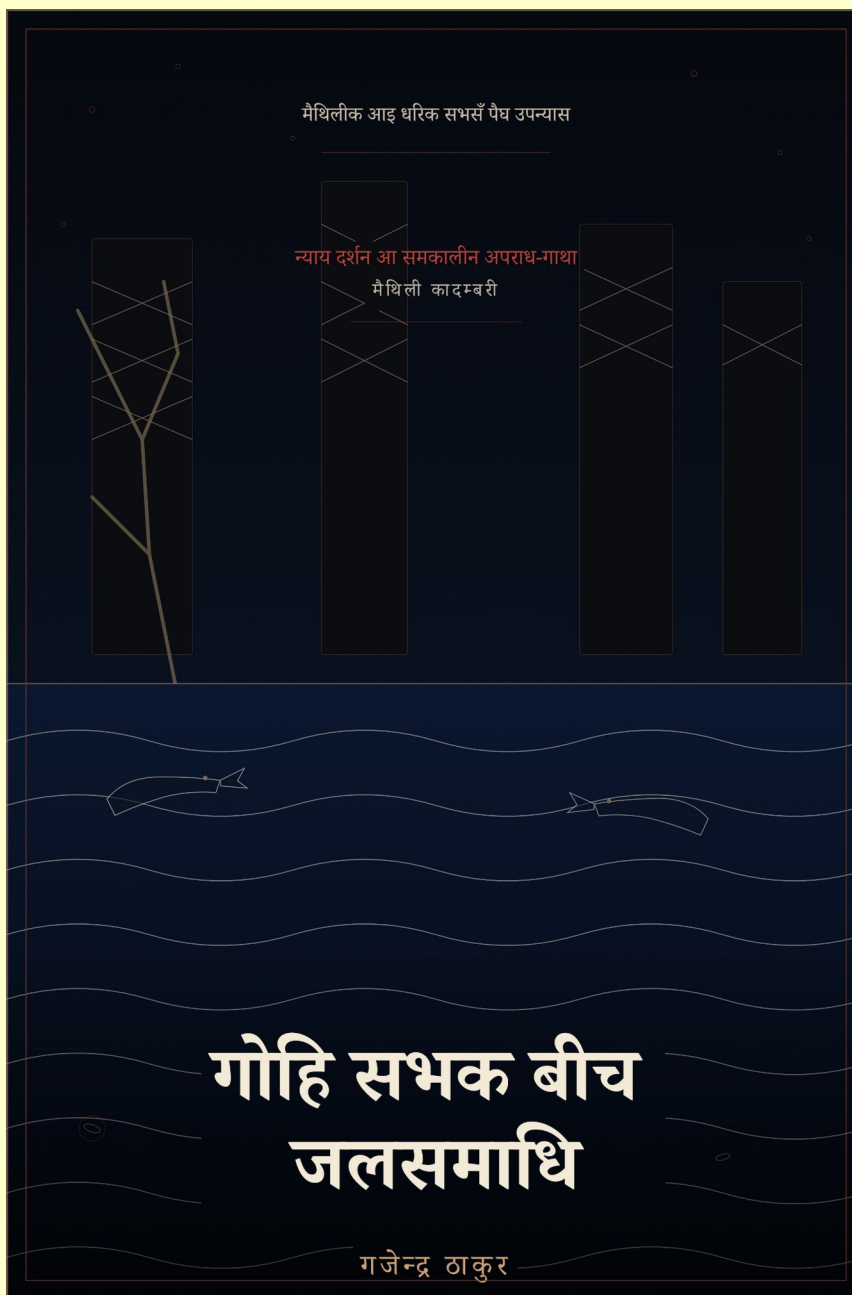
मैथिलीक आइ धरिक सभसँ पैघ उपन्यास

किशोर संस्करण

न्याय दर्शन आ समकालीन अपराध-गाथा

गोहि सभक बीच जलसमाधि

गजेन्द्र ठाकुर



गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

गोहि सभक बीच जलसमाधि

किशोर संस्करण

सरल, शुद्ध मैथिलीमे दू सय अध्याय आ तीन परिशिष्ट

गजेन्द्र ठाकुर

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

गोहि सभक बीच जलसमाधि-गजेन्द्र ठाकुर

प्रकाशन-सूचना

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर। सर्वाधिकार सुरक्षित।

ई किशोर संस्करण मूल कादम्बरीक कथा, पात्र, प्रतीक आ अध्याय-क्रम सुरक्षित रखैत सरल मैथिलीमे पुनर्लिखित कएल गेल अछि।

कठिन कानूनी, तकनीकी आ दार्शनिक बातकें किशोर पाठक लेल सहज उदाहरणमे बुझाओल गेल अछि। निजी जीवन, अपराध आ हिंसासँ जुड़ल प्रसंग सभ शालीन आ सावधान भाषामे प्रस्तुत अछि।

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका |
www.videha.co.in | ISSN 2229-547X

ISBN: 978-93-5937-518-2

Designed By: Aum Gajendra Thakur

किशोर पाठकसँ

ई कथा गढ़ नारिकेल नामक गामसँ शुरू होइत अछि। गामक गाछ, नदी, पोखरि, बच्चा, स्त्री, मजदूर आ पुरखा सभ मिलि एकटा जीवित स्मृति बनबैत छथि।

कथामे “गोहि” केवल नदीक जन्तु नहि। कखनो लालच, कखनो झूठ, कखनो डर, कखनो अन्याय आ कखनो फोनक भीतर छिपल ठगी सेहो गोहि बनि जाइत अछि।

पढ़ैत काल कठिन शब्द भेटय तँ प्रसंगसँ अर्थ बुझबाक प्रयास करू। प्रश्न पूछू, नाम पूरा पढ़ू, ककरो निजी बात बिना मञ्जूरी साझा नहि करू, आ कमजोर लोकक संग ठाढ़ रहू—एहि पोथीक मुख्य सीख ई अछि।

विषय-सूची

खण्ड-० — पूर्व-कथाकाल

- अध्याय — १०० — शंख आ रजत
अध्याय — १९ — आत्मसिद्धि-वाद
अध्याय — १८ — केऽ बनौलक ई जगत?
अध्याय — १७ — चिंतामणि रत्न
अध्याय — १६ — स्मृति-रक्षा
अध्याय — १५ — जलमग्न पाण्डुलिपि
अध्याय — १४ — चारि मुखक मौन
अध्याय — १३ — शंखक अन्तिम प्रश्न
अध्याय — १२ — जल-घड़ीक कैदी
अध्याय — ११ — चर्मकार टोलाक उजास
अध्याय — १० — बुधुआक जलसमाधि
अध्याय — ८९ — पहिल राति, पहिल बाढ़ि
अध्याय — ८८ — डाइनक आरोप
अध्याय — ८७ — टोलाक द्वारपर
अध्याय — ८६ — समयक गोहि
अध्याय — ८५ — आमिलक आदेश
अध्याय — ८४ — जंगलक मौन
अध्याय — ८३ — सोनमा माझिन
अध्याय — ८२ — पहिल कबड्डी
अध्याय — ८१ — आक्रमणक छाया
अध्याय — ८० — गीतक पहिल पाँति
अध्याय — ७९ — क्षमाक पारी
अध्याय — ७८ — पंजीक बाहर
अध्याय — ७७ — बूढ़बाक मौन
अध्याय — ७६ — नारिकेल पातक पहिल पाठ
अध्याय — ७५ — तर्कक पहिल विद्रोह
अध्याय — ७४ — गाछक रोग
अध्याय — ७३ — मोहनक धुन
अध्याय — ७२ — विवाहक साक्षी
अध्याय — ७१ — महामारीक राति
अध्याय — ७० — चन्ना गाछीक रोपाई
अध्याय — ६९ — गज-ग्राहक कथा

- अध्याय -६८ — अदालतक पहिल तारीख
अध्याय -६७ — परदेशक पुकार
अध्याय -६६ — स्त्री सभक राति-सभा
अध्याय -६५ — नकली भूतक जुलूस
अध्याय -६४ — सुखदेवक बदला
अध्याय -६३ — छापाखानाक पहिल पन्ना
अध्याय -६२ — राहतक प्रतीक्षा
अध्याय -६१ — आकाशक पुच्छलतारा
अध्याय -६० — अगिनक राति
अध्याय -५९ — दोसर बाढ़ि
अध्याय -५८ — तेसर बिपत्ति
अध्याय -५७ — साहेबक नोटबुक
अध्याय -५६ — स्वाधीनताक पुकार
अध्याय -५५ — स्वतंत्रताक भोर
अध्याय -५४ — जमींदारीक अन्त
अध्याय -५३ — बिजलीक पहिल दीप
अध्याय -५२ — सीमाक पुकार
अध्याय -५१ — हरित क्रान्तिक बीया
अध्याय -५० — आपातकालक अन्हार
अध्याय -४९ — सूखाक बरख
अध्याय -४८ — रेडियो आ टेलीविजनक अवाज
अध्याय -४७ — खाड़ी देशक बजार
अध्याय -४६ — सद्भावक परीक्षा
अध्याय -४५ — उदारीकरणक हवा
अध्याय -४४ — पहिल कम्प्यूटर
अध्याय -४३ — सुखल होइत धार
अध्याय -४२ — हाथक फोनक चमत्कार
अध्याय -४१ — शहरक बजार
अध्याय -४० — सूचनाक अधिकार
अध्याय -३९ — काजक गारंटी
अध्याय -३८ — इंटरनेटक जाल
अध्याय -३७ — स्क्रीनक पहिल छाया
अध्याय -३६ — अनदेखल ठगक पहिल आहूट
अध्याय -३५ — देहक बजार खुजैत अछि
अध्याय -३४ — उज्ज्वलक स्वप्न

- अध्याय -३३ — वकीलक कोटक छाया
अध्याय -३२ — समुद्रपारक साये
अध्याय -३१ — सत्यव्रतक मौन
अध्याय -३० — गोप कुमारक दस्तावेज
अध्याय -२९ — चन्द्रपालक सपना
अध्याय -२८ — राघवक कोड
अध्याय -२७ — आरुणिक निर्माण
अध्याय -२६ — देविकाक गीत
अध्याय -२५ — मीराक निजता
अध्याय -२४ — निशांतक बैंक
अध्याय -२३ — नन्दक जन्म
अध्याय -२२ — बारह सयक निकट
अध्याय -२१ — अनन्याक प्रश्न
अध्याय -२० — छपाकक पहिल हिसाब
अध्याय -१९ — सत्यव्रतक निर्णय
अध्याय -१८ — अनन्या आ नन्दक भेंट
अध्याय -१७ — शीशाक मीनारक जाल
अध्याय -१६ — बटुकनाथक अंतिम मोड़
अध्याय -१५ — चन्द्रपालक खाता
अध्याय -१४ — पुलक निर्माण
अध्याय -१३ — गोप कुमारक संकलन
अध्याय -१२ — चन्ना गाछीक कैपकैपी
अध्याय -११ — बूढ़बाक अन्तिम आशीर्वाद
अध्याय -१० — पुलपर पहिल छपाक
अध्याय -९ — जाँचक आरम्भ
अध्याय -८ — प्रमाणक बाहर आएब
अध्याय -७ — आधा-भूतक अनुभव
अध्याय -६ — गोप कुमारक अन्तिम पत्रा
अध्याय -५ — जालक उजागर होएब
अध्याय -४ — नामक अन्तिम सूची
अध्याय -३ — बारह सय बरखक पूर्णता
अध्याय -२ — अगिला पीढ़ीक वचन
अध्याय -१ — अन्तिम साक्षी
अध्याय ० — गढ़ नारिकेल: संक्षिप्त लोक-प्रस्तावना
अध्याय १ — चन्ना गाछीक कबड्डी

- अध्याय २ — दहिन कातक गाम
अध्याय ३ — छुपाकक हिसाब
अध्याय ४ — तीस नाम, तीन सय लाश
अध्याय ५ — तारीखक गोहि
अध्याय ६ — हार्वर्डक एथिक्स
अध्याय ७ — श्वासक भाव
अध्याय ८ — स्क्रीनक गोहि
अध्याय ९ — देहक बाजार
अध्याय १० — निजताक ब्लैकमेल
अध्याय ११ — धनक कारी नदी
अध्याय १२ — डार्क-जालपर नारिकेल पात
अध्याय १३ — सीलबन्द आवरण
अध्याय १४ — घर घुरबाक रस्ता
अध्याय १५ — नामक जल
अध्याय १६ — चन्ना गाछीक अदालत
अध्याय १७ — जीतक शोक
अध्याय १८ — खाली अदालत
अध्याय १९ — नामक अभिलेख
अध्याय २० — स्क्रीनक विरुद्ध पाठशाला
अध्याय २१ — निजताक शपथ
अध्याय २२ — हार्वर्डक दोसर भाषण
अध्याय २३ — बटुकनाथक खोज
अध्याय २४ — उपन्यास फेर शुरू
अध्याय २५ — मोन टांगल
अध्याय २६ — बटुकनाथ हरिहरनक यात्रा
अध्याय २७ — चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन
अध्याय २८ — राघव सिग्नलक चुप्पी
अध्याय २९ — लाउ किन-हंगक सपना
अध्याय ३० — धूर्त सभक भीतरक अदालत
अध्याय ३१ — हारल लोक सभक काज
अध्याय ३२ — तेसर कबड्डी
अध्याय ३३ — मोनक परीक्षा
अध्याय ३४ — सुनैत नदी
अध्याय ३५ — नामक देहरी
अध्याय ३६ — घर, भय, सपना

- अध्याय ३७ — तीन कंकड़
अध्याय ३८ — नामक उच्चारण
अध्याय ३९ — बीजक शान्ति
अध्याय ४० — ओसक अक्षर
अध्याय ४१ — नामक नाव
अध्याय ४२ — भारक वृत्त
अध्याय ४३ — चलैत भार
अध्याय ४४ — पोतीक कापी
अध्याय ४५ — भीतरक हवा
अध्याय ४६ — उत्तराधिकारक अन्हार
अध्याय ४७ — गज-ग्राह आख्यान
अध्याय ४८ — पुकार
अध्याय ४९ — मौनक अभिलेख
अध्याय ५० — देहक बादक नाम
अध्याय ५१ — साक्षीक भार
अध्याय ५२ — अगिला आवाज
अध्याय ५३ — कटानक बादक बिहान
अध्याय ५४ — टूँठक चारू कात
अध्याय ५५ — नगरपालिकाक पीयर सूचना-पत्र
अध्याय ५६ — स्मृतिक पहिल नक्शा
अध्याय ५७ — गंगेशक प्रश्न
अध्याय ५८ — चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोग
अध्याय ५९ — राघव सिग्नलक नव कोड
अध्याय ६० — सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन
अध्याय ६१ — पहिल नाम-उत्सव
अध्याय ६२ — टूँठमे हरियर बिंदु
अध्याय ६३ — गढ नारिकेल विरासत-परियोजना
अध्याय ६४ — स्मृति पर निविदा
अध्याय ६५ — ब्रूमक पुनरागमन
अध्याय ६६ — हार्वर्डक शोध-दल
अध्याय ६७ — मीरा आ दृष्टिक अधिकार
अध्याय ६८ — देविका बनाम श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग
अध्याय ६९ — नामक चोरी
अध्याय ७० — पनिडुब्बीक गवाही
अध्याय ७१ — नकली भूतक जुलूस

- अध्याय ७२ — चन्ना गाछीक हँसी
अध्याय ७३ — बटुकनाथक स्वप्न-दरबार
अध्याय ७४ — चन्द्रपालक पहिल स्वीकार
अध्याय ७५ — राघव सिग्नलक बिना नेटवर्क
अध्याय ७६ — लाउ किन-हंगक भारत-यात्रा
अध्याय ७७ — हवाई अड्डापर गोहि
अध्याय ७८ — सत्यव्रत आ लाउक मौन-संवाद
अध्याय ७९ — ब्रूमक दान-पत्र
अध्याय ८० — हरिहरनक संतान
अध्याय ८१ — बत्राक अधूरा नाम
अध्याय ८२ — अंदरक गज-ग्राह
अध्याय ८३ — नारिकेल पात पाठशाला
अध्याय ८४ — पहिल पाठ: उपस्थित
अध्याय ८५ — स्त्री सभक राति-सभा
अध्याय ८६ — मजदूरक पाँव
अध्याय ८७ — स्क्रीनक उपवास
अध्याय ८८ — ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभकें
अध्याय ८९ — सत्यव्रतक जन-सुनवाई
अध्याय ९० — नामक संविधान
अध्याय ९१ — धूर्त सभक अनुपस्थिति
अध्याय ९२ — ठूँठक छाँह
अध्याय ९३ — पुनः बाढ़ि
अध्याय ९४ — गोहि सभक वापसी
अध्याय ९५ — लाउ किन-हंगक अंतिम सौदा
अध्याय ९६ — बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमा
अध्याय ९७ — चन्द्रपालक म्यूल अकाउण्ट
अध्याय ९८ — राघवक अंतिम संदेश
अध्याय ९९ — सत्यव्रत मेहताक गवाही
अध्याय १०० — गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ
अध्याय १०१ — अनाम ग्रहक स्वप्न-आमन्त्रण
अध्याय १०२ — स्वप्नमे ग्रहक बीच कबड्डी
अध्याय १०३ — स्वप्नक अनाम ग्रहपर नाम-पाठ
अध्याय १०४ — जागरण: गढ़ नारिकेल पृथ्वी चुनैत अछि
अध्याय १०५ — पृथ्वीक पहिल पहरा
अध्याय १०६ — बीजक गवाही

- अध्याय १०७ — बीजक चोरी
अध्याय १०८ — माटिक मुँह
अध्याय १०९ — जलक स्मृति
अध्याय ११० — आगिक साक्षी
अध्याय १११ — वायुक प्रश्न
अध्याय ११२ — आकाशक रिक्ति
अध्याय ११३ — शब्दक देह
अध्याय ११४ — अर्थक आत्मा
अध्याय ११५ — कण्ठक पहरा
अध्याय ११६ — मौनक उत्तराधिकार
अध्याय ११७ — स्मृतिक ऋण
अध्याय ११८ — देहक अधिकार
अध्याय ११९ — श्रमक देह
अध्याय १२० — न्यायक देह
अध्याय १२१ — जातिक पिंजरा
अध्याय १२२ — गंगेशक मुक्ति
अध्याय १२३ — तत्त्वचिन्तामणिक पात
अध्याय १२४ — प्रमाणक अग्नि
अध्याय १२५ — निर्णयक धान
अध्याय १२६ — अन्नक न्याय
अध्याय १२७ — भूखक नाम
अध्याय १२८ — प्यासक नाम
अध्याय १२९ — नूनक शपथ
अध्याय १३० — स्वादक न्याय
अध्याय १३१ — साझा थारी
अध्याय १३२ — रसोइक गणराज्य
अध्याय १३३ — विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट
अध्याय १३४ — कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ
अध्याय १३५ — विदेह नाट्य उत्सवक मंचन
अध्याय १३६ — तालीक बादक सन्नाटा
अध्याय १३७ — दर्शकक गवाही
अध्याय १३८ — मंचसँ बाहरक जुलूस
अध्याय १३९ — बाटक रंगमंच
अध्याय १४० — चल चौपाल
अध्याय १४१ — बरामदाक फैसला

- अध्याय १४२ — रेकर्ड-घरक अन्हार
अध्याय १४३ — रद्दी बोराक गवाही
अध्याय १४४ — नामक यात्रा
अध्याय १४५ — डरक पहिल दरार
अध्याय १४६ — मुहरक दाग
अध्याय १४७ — घर-घरक दस्तक
अध्याय १४८ — मिलावटक पहिचान
अध्याय १४९ — जालक नक्शा
अध्याय १५० — मुहरक छाया
अध्याय १५१ — मुहर चलौनिहार हाथ
अध्याय १५२ — आदेशक स्रोत
अध्याय १५३ — संकेतक पाछाँ नाम
अध्याय १५४ — बाबाक वचन
अध्याय १५५ — सेवाक खाता
अध्याय १५६ — दानक ऋण
अध्याय १५७ — लोहेक संदूक
अध्याय १५८ — सहमति-कापीक मिलान
अध्याय १५९ — मृतकक सहमति
अध्याय १६० — गोदामक छाया
अध्याय १६१ — फोनक कैद
अध्याय १६२ — आवाजक मोहर
अध्याय १६३ — हटायल कागजक निशान
अध्याय १६४ — चन्द्रपालक छायाक पेट
अध्याय १६५ — छायाक देह
अध्याय १६६ — इमली घाटक कोठार
अध्याय १६७ — नदी पारक आवाज
अध्याय १६८ — शहरक गला
अध्याय १६९ — चन्द्र दूक दरबज्जा
अध्याय १७० — चन्द्र एकक खोल
अध्याय १७१ — चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत
अध्याय १७२ — गाँठक पढ़नाइ
अध्याय १७३ — पंजीक पहरा
अध्याय १७४ — अदृश्य अदालतक चौखट
अध्याय १७५ — मुहरबाहकक नाम
अध्याय १७६ — सेवा-समारोहक अन्हार

- अध्याय १७७ — घर-घरक कागज
अध्याय १७८ — ऊपरक कोठरी
अध्याय १७९ — मुहरक पगचिन्ह
अध्याय १८० — शहरक खाता
अध्याय १८१ — सिमक छाया
अध्याय १८२ — हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा
अध्याय १८३ — फोनक भीतरक चेहरा
अध्याय १८४ — आवाजक नकाब
अध्याय १८५ — मास्टरक कमरा
अध्याय १८६ — मधवेशक असली नाम
अध्याय १८७ — छत्ताक भीतरक रानी
अध्याय १८८ — महेश्वरक मुहर
अध्याय १८९ — लोहेक पेटी
अध्याय १९० — नील पंजी
अध्याय १९१ — ध्रुवेशक कुर्सी
अध्याय १९२ — बन्द रेकॉर्डरक स्वर
अध्याय १९३ — आवाजक चेहरा
अध्याय १९४ — साँसक समन
अध्याय १९५ — रोकल खाता
अध्याय १९६ — जलसमाधिक अर्थ
अध्याय १९७ — ऊपर उठल नाम
अध्याय १९८ — अपराधीक धरती
अध्याय १९९ — संदूकक भीतरक बिहान
अध्याय २०० — नामक पहरुआ
परिशिष्ट १ — गढ़ नारिकेलक सरल लोककोश
परिशिष्ट २ — अनाम ग्रहक गीत
परिशिष्ट ३ — न्याय बुझबाक सरल कथा

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

खण्ड-०

पूर्व-कथाकाल · अध्याय — १०० सँ — १

अध्याय — १००

शंख आ रजत

चमकैत सभटा चानी नहि, आ नाम सभटा देह नहि — जे शंखकै
रजत बुझै, से गामकै नक्शा बुझै ।



बहुत पुरान बात छी । मिथिलाक एक कोनमे गढ़ नारिकेल नामक एकटा गाम बसल छल, जकर नाम कोनो पैघ नक्शापर नहि भेटत, मुदा जकर स्मृति बारह सय बरखसँ एकटा गाछक जड़िमे जीबैत आयल अछि । गामक बीचोबीच छल चन्ना गाछी ।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

एक दिन एकटा बच्चा दूरसँ किछु चमकैत देखलक आ दौड़ल —
'चानी! चानी!' मुदा लग पहुँचि देखलक, ओ तँ एकटा उज्जर
शंख छल। बूढ़बा हँसि कऽ कहलनि — 'चमकैत सभटा चानी
नहि होइ छै। पहिने आँखि खोलि देखू, पुछू, तखन मानू।'

ई गढ़ नारिकेलक पहिल पाठ छल — जे देखाइ पड़ै, से हमेशा
सत्य नहि; आ जे सत्य, से पुछने-जानने भेटै छै।

शंख चमकल, मन भरमल, दौड़ल बालक हाथ पसारि रे।

पुछलक, जानल, फेर बुझल — चमक नहि, सत्य सम्हारि रे।

अध्याय -१९

आत्मसिद्धि-वाद

जे 'हम' कहै छै, तकर गवाह ओकर अपने साँस— पोखरि अपन
गहिराइ केकरो सँ नहि पुछै।



एक दिन एकटा बच्चा बूढ़ाबाकें पुछलक — ‘हम केना जानी जे हम हम छी? हमर होयबाक प्रमाण की?’

बूढ़ाबा मुस्करा कऽ कहलनि — ‘तौ साँस लइ छह, तौ बीतल बात मोन राखै छह, तौ हँसै-कानै छह — इएह तँ तौ छह। जेना

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

पोखरि अपन गहिराइ केकरोसँ नहि पुछै, तहिना तौ अपन होयब केकरोसँ नहि पुछ।’

बच्चाकेँ बात बुझा गेलैक — अपन नाम आ अपन मोन, इएह ओकर सभसँ पहिल सच्चाइ छी।

के छी हम? पुछलक बालक, साँस कहलक — तोहीं थिकह रे।

नाम अपन जे मन राखल, से अपने अपन गवाह बनल रे।

अध्याय —१८

केऽ बनौलक ई जगत?

गाछ पुछलक—हमरा केऽ रोपलक? माटि हँसल—जे रोपलक, से पुछबे नहि करै छै।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण



एक साँझ बच्चा सभ पीपरक गाछ तर बैसल छल। एकटा बच्चा आकाश दिस देखि पुछलक — ‘ई गाछ, ई नदी, ई तारा — केऽ बनौलक?’

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

केओ कहलक 'माटि', केओ कहलक 'भगवान', केओ चुप रहल।
बूढ़बा कहलनि — 'गाछ अपने पुछलक, हमरा केऽ रोपलक?
मुदा माटि हँसि कऽ कहलक — जे रोपलक, से पुछबे नहि करै।'

बच्चा सभ बुझलक — हर उत्तरसँ पैघ ओ प्रश्न छी जे आगू बाट
देखबै छै। पुछैत रहू — किएक तँ पुछनिहारे आगू बढै छै।

गाछ पुछल, तारा पुछल, कै रचलक ई संसार रे।

बूढ़बा हँसल — पुछैत रहू, पुछबे थिक बिस्तार रे।

अध्याय - १७

चिंतामणि रत्न

मन थिर तँ ढेलो हीरा, मन डोलल तँ हीरो ढेला— रत्न बाहर
नहि, चिन्हैबला आँखिमे छै।



गाममे एकटा कथा चलैत छल — एकटा चिंतामणि रत्न होइ छै,
जे मनक हर इच्छा पूरा करै छै। एकटा बच्चा ओकरा ताकय
निकलल, बहुत ढूँढलक, मुदा कतहु नहि भेटलैक।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

थाकि कऽ ओ बूढ़वा लग आयल। बूढ़वा कहलनि — ‘मन थिर रहै तँ माटिक ढेलो हीरा जकाँ लगै छै; मन डोलै तँ हीरो ढेला बुझाई छै। रत्न बाहर नहि, चिन्हैबला आँखिमे छै।’

बच्चा बुझलक — असली रत्न तँ शान्त मोन आ नीक नजरि छी, जे हर साधारण वस्तुमे मोल देखि लै छै।

ढूँढल रत्न बड़ी दूर, थाकल पएर आ हारल रे।

बूढ़वा कहल — थिर कर मन, ढेलो हीरा भेल रे।

अध्याय -१६

स्मृति-रक्षा

देह माटिमे मिलै छै, नाम पातपर टिकै छै— जे गाम मन राखै,
तकरा केओ मेटा नहि सकै।



एक दिन गामक एकटा बूढ़ मरि गेलाह। बच्चा सभ उदास भऽ पुछलक — ‘आब ओ कहाँ गेलाह? की ओ पूरा मेटा गेलाह?’

बा कहलीह — ‘देह तँ माटिमे मिलि जाइ छै, बुच्चा। मुदा नाम पातपर टिकल रहै छै। जकरा गाम मोन राखै छै, तकरा केओ मेटा नहि सकै।’

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

ओहि दिनसँ बच्चा सभ हर गेल लोकक नाम मोन राखय लगलाह
— किएक तँ नाम बचल, तँ मनुख बचल ।

देह गेल माटिक कोरा, नाम रहल पातपर रे ।

गाम जकरा मन राखल, से जीबय युग-युग भरि रे ।

अध्याय -१५

जलमग्न पाण्डुलिपि

बाढ़ि पोथी डुबा सकै छै, कण्ठ नहि— जे बोल हृदयमे लिखल, से
पानिसँ नहि भीजै ।



एक बरख भयंकर बाढ़ि आयल। पानि गाममे घुसल आ बहुत पुरान पोथी भीजि गेल। विद्वान् सभ उदास छलाह — ‘आब ई ज्ञान हमेशाक लेल हेरा जायत!’

मुदा जीवन्ती नामक एकटा शिष्या शान्त छलि। ओ ओहि पोथीक हर बात अपन मोनमे कण्ठस्थ कऽ लेने छलि। ओ कहलक

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

— ‘बाढ़ि पोथीकेँ डुबा सकै छै, मुदा कण्ठकेँ नहि। जे बात हृदयमे लिखल, से पानिसँ नहि भीजै।’

गाम ओहि दिन एकटा पैघ बात सिखलक — जे मोनमे, स्मृतिमे राखल जाइ छै, से कोनो बाढ़िमे नहि डुबै। पोथी टूटि सकै छै, मुदा जीवित स्मृति नहि।

बाढ़िमे पोथी डुबल, अक्षर भीजल कादो-कादो रे।

कण्ठमे जे बसल बोल, से जागल भोर-भोर रे।

अध्याय - १४

चारि मुखक मौन

चारू मुँह बाजल, तैयो एक बात नुकाएल रहल— हर उत्तरक पाछाँ एकटा मौन ठाढ़ छै।



एक दिन गाममे पैघ सभा भेल। चारि विद्वान् आयल आ हर प्रश्नक उत्तर देलनि। हर उत्तर सुन्दर छल, तर्कसँ भरल।

मुदा बूढ़वा लक्ष्य केलनि — चारू मुँह बाजल, तैयो एकटा बात नुकाएल रहि गेल। ओ कहलनि — ‘हर उत्तरक पाछाँ एकटा मौन टाढ़ रहै छै। जतेक जानू, ततेक आर जानबाक बाकी रहै छै।’

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

बच्चा सभ बुझलक — ज्ञानक कोनो अन्तिम छोर नहि होइ छै।
जे ई मानि लेलक जे ओ सभ किछु जानि गेल, ओ सिखब बन्न
कऽ देलक। तँ नम्र रहि, सिखैत रहब सभसँ नीक।

चारि मुँह बाजल जोरसँ, तैयो मौन ठाढ़ एक कोन रे।
जे जानल से थोड़ बुझल, बाकी अछि अझनो गहन रे।

अध्याय -१३

शंखक अन्तिम प्रश्न

जकरा एक बेर चिन्हलहुँ, तकरो भोर फेर पुछै छै— मुदा उत्तर
जकर थिर, से प्रश्नसँ नहि डरै।



गाममे एकटा बूढ आक्षेपक छलाह, जे जीवन भरि गाम-गाम घूमि, हर बातपर संशय उठबैत, सभसँ सवाल पुछैत रहलाह। किछु लोक हुनकासँ चिढ़ैत छलाह।

एक दिन ओ फेर आबि पुछलनि — ‘जे बात तौ काल्हि बुझलह, ओ आइ फेर साँच छै की?’ उदयनाचार्य शान्त भऽ कहलनि —

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

‘हँ, भोर हर बात फेर पुछै छै। मुदा जकर उत्तर मनमे थिर छै, से प्रश्नसँ नहि डरै।’

बच्चा सभ सिखलक — बेर-बेर पुछब कोनो अपमान नहि; ओ तँ ज्ञानकेँ मजगूत करै छै। जँ अहाँ साँचमे बुझि लेलहुँ, तँ कोनो सवाल अहाँकेँ नहि डरा सकै।

पुछल बूढ़ फेर-फेर, संशयक धार बहल रे।

थिर छल जकर उत्तर, से निडर ठाढ़ रहल रे।

अध्याय -१२

जल-घड़ीक कैदी

बूनि-बूनि पानि खसै, बूनि-बूनि समय— जे घड़ीक कैदी, से बोलक अन्त नहि जनै।



बहुत पुरान बात छी। तखन गढ नारिकेलकें लोक 'नारिकेल-घाट' कहैत छल। गामक बीचमे एकटा पैघ पोखरि छल — जोड़ी पोखरि, जकर दुइ भाग छल, एकटा गहीर आ एकटा उथिल।

ओतय एकटा जल-घड़ी छल, जाहिसँ बूनि-बूनि पानि खसैत छल आ समय बीतैत छल। बुधुआ नामक एकटा बूढ़ सेवक ओतय

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

रहैत छलाह। ओ एतेक बूढ़ छलाह जे लोक हुनकर उमेर गनब छोड़ि देने छल।

मुदा ओ अपन प्रतिज्ञा — गामक नाम आ स्मृति बचेबाक — कहियो नहि छोड़लनि। बूनि-बूनि समय बीतल, पीढ़ी बदलल, मुदा बुधुआक वचन थिर रहल। बूढ़बा कहलनि — जे समयक बहावमे अपन वचन नहि बिसरै, सैह असली पहरादार छी।

बूनि-बूनि खसल पानि, बूनि-बूनि बीतल काल रे।

वचन थिर बुधुआक रहल, समयो भेल निहाल रे।

अध्याय -११

चर्मकार टोलाक उजास

जकर हाथ चाम सिअै, ओकरो नाम पातपर छै— टोलक दीप आ महलक दीप, तेल एक्के जरै।



गामक पछबरिया छोरमे, कमला-बलानक कात, चर्मकार टोला छल। ओतय रहैत छलि मालती — एकटा तेजस्वी, गहीर आँखिवाली किशोरी। ओकर पिता सोमर गामक सभसँ नीक ढोल आ मृदंग बनबैत छलाह।

सभा-भवनसँ आबय-जाय वला विद्वान् ओहि टोला दिस कहियो नहि तकैत छलाह। मुदा बूढ़बा कहलनि — ‘जकर हाथ चाम सिअै, ओकरो नाम पातपर छै। टोलक दीप आ महलक दीप — तेल एक्के जरै छै।’

ओहि दिनसँ गाम धीरे-धीरे बुझय लागल — हर नाम बरोबरि चमकै छै, चाहे ओ गरीबक होउ वा धनीक, टोलाक होउ वा महलक। श्रमक कोनो जाति नहि होइ।

टोलक दीप, महलक दीप, तेल दुनूमे एक्के रे।

मालतीक नामो पातपर, जेना राजाक टेक रे।

अध्याय -१०

बुधुआक जलसमाधि

गोहि देह लेलक, नाम छोड़ि देलक— जे जलमे समाधि लै, से पोखरिक तलमे नहि, गामक मनमे बसै।



बुधुआ आब एतेक बूढ़ भऽ गेलाह जे हुनकर देह थाकि गेल । एक दिन ओ जोड़ी पोखरि लग गेलाह आ शान्तिसेँ जलमे समा गेलाह । गामक लोक कानय लागल ।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

बूढ़वा कहलनि — ‘गोहि देहकें लऽ लेलक, मुदा नामकें नहि। जे जलमे समाधि लै छै, से पोखरिक तलमे नहि, गामक मनमे बसै छै।’ ओहि दिनसँ गाम एहि शब्दकें बुझलक — जलसमाधि केवल मृत्यु नहि, एकटा स्मृति-रक्षा छी।

इएह उपन्यासक नामक मूल छी — ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’। जे अपन वचन आ नाम बचा कऽ जाइ छै, से कहियो पूरा नहि मरै।

देह लेलक गोहि, नाम रहल गाम-मन रे।

जलसमाधि लेल जे, से बसल जन-जन रे।

अध्याय -८९

पहिल राति, पहिल बाढ़ि

पहिल बाढ़ि घर लेलक, गाम नहि— जे राति बचल, से भोरक बीया बनल।



एक राति आधा बीतल छल, तखन आकाश जेना फाटि गेल। तेज हवा, बिजुरी आ मूसलधार पानि — गामक पहिल पैघ बाढ़ि

आयल। नारिकेलक पात चाबुक जकाँ फटकारल, आ बहुत घर बहि गेल।

मुदा गामक लोक एक-दोसराक हाथ धेने, ऊँच ठाम जुटि, राति काटि लेलनि। भोर भेल, गाम बाँचल छल — थाकल, मुदा जीवित।

बूढ़बा कहलनि — ‘बाढ़ि घर लऽ सकै छै, गाम नहि। जे राति सभ मिलि बचल, सैह भोरक बीया बनल।’ ई गामक पहिल बाढ़ि छल, आ पहिल पाठ सेहो — बिपत्ति एक भऽ झेलल जाइ छै।

आधा राति फाटल आकाश, बहल घर धार-धार रे।

हाथ धेने सभ ठाढ़ भेल, बाँचल गाम ओहि पार रे।

अध्याय -८८

डाइनक आरोप

जकरा गाम ‘डाइन’ कहलक, ओकर नाम केओ नहि पुछलक—
आरोप देह जरबै छै, सत्य पातपर रहि जाइ छै।



चर्मकार टोलामे गौरी नामक एकटा स्त्री रहैत छल, जकरा जडी-बूटीसँ बीमार लोककें नीक करबाक अद्भुत ज्ञान छल। ओ रत्नाक परम्पराक उत्तराधिकारिणी छल।

एक बेर गाममे किछु लोक, डर आ अज्ञानतामे, ओकरा 'डाइन' कहि आरोप लगाबय लागल। मुदा केओ ओकर नाम, ओकर बात नहि पुछलक।

बूढ़बा कहलनि — 'आरोप देहकें जरबै छै, मुदा सत्य पातपर रहि जाइ छै। बिनु पुछने, बिनु बुझने केकरो दोषी नहि कहबाक चाही।' गाम ई पाठ सिखलक — भीडक डरसँ नहि, सत्यक जाँचसँ न्याय होइ छै।

'डाइन' कहि जरौलक भीड, नाम केओ नहि पुछल रे।

सत्य पातपर थिर रहल, आरोप धुआँ भऽ उड़ल रे।

अध्याय -८७

टोलाक द्वारपर

द्वारपर मशाल आबि सकै, भीतर नाम नहि जरै— जे टोल जागल,
तकर देबारि आगिसँ ऊँच।



एक राति किछु क्रोधित लोक मशाल लऽ कऽ चर्मकार टोलाक
द्वारपर आवि गेल — गौरीकेँ दण्ड देबाक हेतु। गौरी पीपरक जड़ि
लग हाथ जोड़ि बैसलि — ‘बूढ़बा, रक्षा करू।’

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

हवा एक क्षण थमकल, पीपरक पात बिनु झोंकाक काँपल। पूरा टोला जागि कऽ, एक भऽ, गौरीक चारू कात ठाढ़ भऽ गेल।

बूढ़बा कहलनि — ‘द्वारपर मशाल आबि सकै छै, मुदा भीतरक नाम नहि जरै। जे टोल जागल रहै, तकर देबारि आगिसँ ऊँच होइ छै।’ मशालवला लोक, ओहि एकजुटता आगू, हारि कऽ घुरि गेल।

मशाल लेने आयल भीड़, टोला जागल एक स्वर रे।

देबारि ऊँच भेल प्रेमक, हारल आगिक डर रे।

अध्याय -८६

समयक गोहि

समय सेहो एकटा गोहि छी—पीढ़ी-पीढ़ी निगलै छै— मुदा जे नाम गाम राखै, तकरा समयो नहि निगलै।



बहुत बरख बीति गेल। पुरनका लोक गेलाह, नव लोक आयल;
घर बदलल, वाट बदलल। गौरी एक दिन पीपर लग बैसि सोचलक

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

— ‘एतेक लोक कतय गेलाह? सभ किछु समय केना निगलि लै छै?’

बूढ़बा कहलनि — ‘समय सेहो एकटा गोहि छी, गौरी। ओ पीढ़ी-पीढ़ी निगलैत जाइ छै। मुदा जे नाम गाम मोन राखै छै, तकरा समयो नहि निगलि सकै।’

गौरी बुझलक — तँ हमरा हर नाम मोन राखबाक अछि, ताकि समयक गोहि ओकरा नहि खा सकय। इएह गामक सभसँ पुरान लडाइ छी — विस्मृतिक विरुद्ध स्मृतिक।

समय गोहि निगलल पीढ़ी, बहल बरख बडि जोर रे।

नाम जे गाम मन राखल, से बाँचल सभ ठोर रे।

अध्याय -८५

आमिलक आदेश

साहेबक आदेश कागचपर, गामक न्याय पातपर— हुकुम मेटा सकै, फकरा नहि मेटाइ।



एक भोर एकटा आमिल (राजाक अधिकारी) जयसिंह हाथीपर सवार, दस सिपाही आ यशपतिक संग गाममे आयल। चौपालपर ओ एकटा आदेश टाँगि देलक — गौरीकेँ दण्ड देबाक हुकुम।

यशपति, जे बहुत दिनसँ गौरीसँ बैर राखैत छल, खुशीसँ गौरी दिस आङुर उठौलक। मुदा गाम डरल नहि।

बूढ़बा कहलनि — ‘साहेबक आदेश कागचपर होइ छै, गामक न्याय पातपर। हुकुम मेटा सकै छै, मुदा फकरा नहि मेटाइ।’ गाम

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

बुझलक — बाहरी सत्ताक कागच आ गामक अपन सत्य, दुनू भिन्न वस्तु छी।

आदेश आयल कागचपर, हाथीपर चढ़ि जोर रे।

फकरा थिर रहल पातपर, मेटल नहि ककरो ठोर रे।

अध्याय -८४

जंगलक मौन

जंगल चुप रहै छै, तैयो सभ किछु सुनै छै— जे मौन बुझल,
तकरा जंगलो बाजि उठै।



यशपति भागि गेल। गामक मुखिया आ किछु युवक ओकरा खोजय, कमला-बलानक ओहि पार, घन जंगल दिस गेलाह। गौरी ओहि खोज-दलमे नहि गेलि — ओकरा घरपर अपन बेटी सावित्रीक देखभाल करय पड़लैक।

ओ भोरे बूढ़बा लग आशीर्वाद लेबय गेलि।

बूढ़बा कहलनि — ‘जंगल चुप रहै छै, तैयो सभ किछु सुनै छै। जे मौनकेँ बुझय सिखै, तकरासँ जंगलो बाजि उठै छै।’ गौरी बुझलक — कहियो-कहियो चुप्पीमे ओ बात होइ छै, जे शोरमे नहि सुनाइ पड़ै।

जंगल चुप, तैयो सुनल, हर पातक फुसफुसाहट रे।

मौन जे बुझल मनसँ, तकरा बाजल जंगल-आहट रे।

अध्याय -८३ सोनमा माझिन

जाल जकर हाथ, नदी तकर माए— माझिन माछ पकडै, मुदा
नामकै छोड़ि दै।



किछु दिन बाद गाममे नव भय पसरल — पहिने एकटा बकरी, फेर
एकटा भैंसक बच्चा जोड़ी पोखरि लगसँ गायब भऽ गेल। सभ
डरल — ‘ई की भऽ रहल अछि?’

ओहि पोखरिमे सोनमा माझिन माछ मारैत छल। नदी ओकरा
लेल माए जकाँ छल — ओ ओकर हर मोड़, हर गहिराइ जनैत
छल।

ओ कहलक — ‘जाल माछ पकडै छै, मुदा हम नामकै नहि पकड़ि
राखी।’ ओ हर गेल जीवक नाम लऽ कऽ ओकरा मोन राखैत
छल। बूढ़बा कहलनि — जे नदीकै माए बुझै, से ओकर हर
नामकै सम्मान दै छै।

जाल हाथ, नदी माए, बहल धारक गीत रे।

माछ पकड़ल सोनमा, नाम राखल मीत रे।

अध्याय -८२ पहिल कबड्डी

एक साँसमे जाउ, एक साँसमे आउ, छूबि कऽ घुरू— कबड्डी
सिखबै छै, पकड़ि नहि, उपस्थिति चाही।



तीन बरखमे स्थिति आओर बिगड़ल — आब कहियो-कहियो मनुख सेहो राति-बिरात नदी लगसँ गायब भऽ जाइत छल। सोरह बरखक सावित्री आब बूढ़बाक आवाज केवल सपनामे नहि, दिनहुँ सुनि सकैत छल।

भयकँ हरेबाक लेल गाम एकटा नव खेल शुरू केलक — कबड्डी।
'एक साँसमे जाउ, छूबि कऽ, एक साँसमे घुरू।'

ई खेल सिखौलक — पकड़ि कऽ नहि राखू, मुदा हिम्मतसँ सोझाँ जाउ, छूबि कऽ घुरू, आ मिलि कऽ टाढ़ रहू। इएह ओ कबड्डी छी, जे आगू चलि कऽ गामक सभसँ पैघ अनुष्ठान बनल — मृतकक नाम-स्मरणक खेल।

एक साँस गेल, एक साँस आयल, छूबि घुरल फेर द्वार रे।

पकड़ि नहि, उपस्थिति चाही, इएह कबड्डी-सार रे।

अध्याय -८१

आक्रमणक छाया

छाया पैघ भेने डर पैघ नहि होइ— जे नाम थिर, से अपन छायासँ नहि डरै।



बीस बरख बीति गेल। अमावस्याक कबड्डी आब गामक जीवनक अभिन्न भाग बनि गेल छल; बच्चा सभ ओकरा एहन स्वाभाविकतासँ खेलैत छल जेना ओ सदिखनसँ चलैत आयल हो।

मुदा एक साँझ, गामक सीमापर धूरिक एकटा नव बादर उठल — घोडाक टापक बादर, आ ओकर संग भागल लोकक भीड़। कोनो आक्रमण लग आवि रहल छल।

बूढ़बा कहलनि — ‘छाया पैघ भेने डर पैघ नहि होइ। जे नाम थिर छै, से अपन छायासँ नहि डरै।’ गाम, जे बरखों-बरख कबड्डीमे हिम्मत सिखने छल, ओहि छायाकें शान्त मनसँ सोझाँ करय तैयार भेल।

उठल धूरिक बादर पैघ, घोडाक टाप-टाप रे।

थिर जे नाम, निडर ठाढ़, छायासँ नहि काँप रे।

अध्याय -८०

गीतक पहिल पाँति

गीतक पहिल पाँति एक कण्ठ उठबै, बाकी गाम उठा लै— लेखक एक नहि, गामे रचयिता छै।



ओहि समय गढ नारिकेलमे हरिपति नामक एकटा युवा भ्रमणशील कवि आयल, जे गाम-गाम घूमि गीत रचैत छल ।

एक साँझ ओ चौपालपर एकटा गीतक पहिल पाँति गाओल । ओकर बाद जे भेल, से अद्भुत छल — गामक लोक अपने-आप बाकी पाँति जोड़य लागल, आ पूरा गीत बनि गेल ।

बूढ़बा हँसि कऽ कहलनि — ‘गीतक पहिल पाँति एक कण्ठ उठबै छै, बाकी सारा गाम उठा लै छै । लेखक एक नहि, गामे रचयिता छी ।’ इएह मैथिल लोकगीतक आत्मा छी — ओ ककरो एकक नहि, सभक साझा सम्पत्ति होइ छै ।

पहिल पाँति एक कण्ठ उठल, गाम जोड़ल बाकी तान रे ।

लेखक एक नहि, सभ मिलल, गीत भेल गामक जान रे ।

अध्याय -७९

क्षमाक पारी

कबड्डीमे जकरा छुअल, तकरो घुरबाक पारी दै— क्षमा सेहो एक पारी छी, बदला नहि ।



बहुत बरख बाद, एक साँझ एकटा अत्यन्त वृद्ध पुरुष, डण्टाक सहारे, चर्मकार टोलाक द्वार लग आयल। ओकर वस्त्र कहियो कीमती छल, मुदा आब फाटल आ मैलगर। ओ ओएह लोक छल जे कहियो गामक संग अन्याय केने छल।

गाम चाहितो बदला लऽ सकैत छल। मुदा लोक बूढ़बा दिस तकलक।

बूढ़बा कहलनि — ‘कबड्डीमे जकरा छुअल, तकरो घुरबाक पारी देल जाइ छै। क्षमा सेहो एकटा पारी छी, बदला नहि।’ आ गाम ओकरा क्षमा कऽ देलक। बदलाक शृंखला ओतहि टूटि गेल — किएक तँ क्षमा सभसँ पैघ शक्ति छी।

आयल वृद्ध द्वार लग, कान्ह झुकल, आँखि नोर रे।

गाम कहल — घुरबाक पारी, क्षमा थिक असल जोर रे।

अध्याय -७८

पंजीक बाहर

पंजीमे जकर नाम नहि, से गामसँ बाहर नहि— कागच जकरा छोड़लक, तकरा माटि अपना लेलक।



मिथिलामे एकटा प्राचीन व्यवस्था छल — पंजी प्रबन्ध — जाहिमे कुलक वंशावली आ नाम सावधानीसँ लिखल जाइत छल। मुदा ओहिमे केवल किछु कुलक नाम रहैत छल।

एक युवा पंजीकार, यादवानन्द झा, गम्भीर आ कर्तव्यनिष्ठ, गाम आयल आ बुझलक — कतेको नीक, श्रमशील लोकक नाम ओहि कागचमे नहि छल।

बूढ़बा कहलनि — ‘पंजीमे जकर नाम नहि, से गामसँ बाहर नहि। कागच जकरा छोड़ि दै, तकरा माटि अपना लै छै।’ ओहि दिनसँ यादवानन्द सभक नाम राखय लगलाह — किएक तँ हर मनुख, हर श्रम, अभिलेखक योग्य छी।

पंजी छोड़ल कतेको नाम, कागच रहल अधूर रे।

माटि सभकेँ कोरा लेल, नाम भेल भरपूर रे।

अध्याय — ७७

बूढ़बाक मौन

बूढ़बा जखन चुप, तखन सभसँ बेसी बाजै — मौन सेहो एकटा उत्तर छी।



एक अमावस्याक राति कबड्डी शुरू भेल, मुदा बूढ़बा निर्णायकक भूमिकामे नहि आयलाह। बच्चा सभ प्रतीक्षा केलक, फेर आपसमे कानाफूसी करय लागल — ‘बूढ़बा किएक नहि आयलाह?’

पहिने ओ सभ घबरायल। फेर, धीरे-धीरे, ओ सभ अपने निर्णय लेब शुरू केलक — के जीतल, के हारल, कोन नाम पुकारल जाय।

तखन ओ सभ बुझलक — बूढ़बाक ई चुप्पी स्वयं एकटा शिक्षा छल। बूढ़बा कहने रहथिन — ‘हम जखन चुप रही, तखन सभसँ बेसी बाजी। मौन सेहो एकटा उत्तर छी।’ आब गाम अपन न्याय अपने करय सिखि गेल छल।

चुप रहल बूढ़बा ओहि राति, गाम लेल निर्णय आप रे।

मौनो बाजल गहन बात — अपने बनू अपन नाप रे।

अध्याय - ७६

नारिकेल पातक पहिल पाठ

पहिल पाठ पातपर—नाम केना लिखल जाइ— जे पात नाम राखै, से गाछ इतिहास राखै।



मंदाकिनी नामक एकटा बालिका, बचपनहिसँ, पढ़य-लिखय चाहैत छल। ओ यादवानन्द आ हरिपति कविक कथासभसँ अपन गामक इतिहास जनैत छल।

मुदा गामक पुरनका पाठशालामे केवल उच्च-जातिक बालक जा सकैत छल — कोनो बालिका आ कोनो गरीब बच्चा नहि।

तँ गाम एकटा नव पाठशाला शुरू केलक — नारिकेलक गाछ तर, जतय हर जाति, हर लिंगक बच्चा नाम लिखब सिखि सकैत छल। बूढ़बा कहलनि — ‘पहिल पाठ पातपर होइ छै — नाम केना लिखल जाइ। जे पात नाम राखै, से गाछ इतिहास राखै।’ ई ओएह नारिकेल पात पाठशाला छी, जे आगू सैकड़ों बरख धरि गामक ज्ञानक केन्द्र बनल।

नारिकेल पात तर बैसल, सभ बच्चा एक ठाम रे।

पहिल पाठ — पातपर लिखू, अपन-अपन शुभ नाम रे।

अध्याय - ७५

तर्कक पहिल विद्रोह

जे प्रश्न पुछलक, से गुरुकै हरा नहि, जगा देलक — तर्कक पहिल विद्रोह, ज्ञानक पहिल भोर।



मंदाकिनीक पाठशाला तीन पीढ़ी धरि फलल-फूलल। आब गामक हर बच्चा — चर्मकार, ब्राह्मण, कायस्थ, सभटा — अक्षर पढ़ि, हिसाब लगा सकैत छल।

ओहि पाठशालाक सभसँ तेज छात्र विश्वनाथ एक दिन अपन गुरुकेँ एकटा कठिन प्रश्न पुछलक — एहन प्रश्न, जकर उत्तर स्वयं गुरु लग तैयार नहि छल ।

गुरु क्रोधित नहि भेलाह — ओ मुस्कुरा उठलाह, किएक तँ ओ जनैत छलाह जे ई प्रश्न ज्ञानक नव द्वार खोलत । बूढ़बा कहलनि — ‘जे प्रश्न पुछलक, से गुरुकेँ हरौलक नहि, जगौलक । तर्कक पहिल विद्रोह इएह — ज्ञानक पहिल भोर ।’

शिष्य पुछल कठिन प्रश्न, गुरु हँसल मने-मने रे ।

हारल नहि, जागल गुरु — भोर भेल नव ज्ञान रे ।

अध्याय - ७४

गाछक रोग

एक पातक रोग सम्हारू, नहि तँ गाछ भरि फैलत— गामक रोगो एहिना, एक चुपसँ शुरू होइ ।



केदार आब गामक अनुष्ठान-रक्षक बनल छल — किएक तँ ई परम्परा आब स्त्री आ पुरुष दुनूकै, केवल योग्यताक आधारपर, सौंपल जाइत छल ।

एक दिन ओ चिन्तित भऽ बूढ़बासँ पुछलक — ‘बूढ़बा, हमरा लगैत अछि जे बूढ़ साक्षी-गाछ किछु बीमार अछि। की ई अहाँकें सेहो प्रभावित करैत अछि?’

बूढ़बा कहलनि — ‘एक पातक रोग पहिनहि सम्हारू, नहि तँ ओ पूरा गाछमे फैलि जायत। गामक रोगो एहिना, एक छोट चुप्पीसँ शुरू होइ छै।’ केदार बुझलक — कोनो पैघ समस्या पहिने छोट रूपमे आवै छै; जे ओकरा समयपर देखि लेलक, सैह गाम बचबै छै।

एक पातपर लागल रोग, चुपचाप बढ़ल जोर रे।
समय रहैत सम्हारू ओकरा, नहि तँ गाछ विभोर रे।

अध्याय — ७३

मोहनक धुन

बाँसुरीक धुन हवामे मिलै, तैयो कान ओकरा राखै— जे धुन मन छुबै, से बिसरल नहि जाइ।



शीलावतीक जमानामे चर्मकार टोला सभसँ नीक ढोल-मृदंग बनबैत छल। ओहि टोलाक सभसँ प्रतिभाशाली संगीतकार छल

मोहन। मोहनक एकटा छोटकी बेटी छलि — राधिका, चारि बरखक — जकरा ओ अपन प्राणसँ बेसी प्रेम करैत छल।

एक जाइ, राधिका बहुत बीमार पड़ि गेलि आ गामकँ छोड़ि चलि गेलि। मोहन दुखसँ टूटि गेल। एक साँझ ओ पीपर तर बैसि, बाँसुरीपर अपन दुखक धुन बजौलक। ओ धुन एतेक मीठ आ मार्मिक छल जे पूरा गामक कान ओकरा राखि लेलक।

बूढ़बा कहलनि — ‘बाँसुरीक धुन हवामे मिलि जाइ छै, तैयो कान ओकरा राखि लै छै। जे धुन मन छुबै, से कहियो बिसरल नहि जाइ।’ ओहि दिनसँ गाम हर आयोजन एकटा गीतसँ शुरू करय लागल — अध्यायारम्भ लोकगीतक ओ परम्परा, जे आइ धरि चलैत आयल अछि, एतहिसँ जन्मल।

बजल बाँसुरी पीपर तर, दुखक मीठ ओ तान रे।

हवामे मिलल, कानमे रहल, बनल गामक गान रे।

अध्याय - ७२

विवाहक साक्षी

बियाहमे आगि साक्षी, गाम साक्षी, नाम साक्षी— जकर बियाह गाम देखलक, तकर वचन पातपर।



शीलावतीक पोती अनुराधा आ गामक ब्राह्मण-टोलाक एकटा युवक गोपीनाथ, बचपनहिसँ मित्र छलाह — दुनू एक संग नारिकेल पात पाठशालामे पढ़ल छलाह।

दुनू बियाह करय चाहैत छलाह, मुदा ओ दुनू भिन्न-भिन्न जातिक छलाह, आ गामक किछु पुरान लोक अखनहु जाति-भेद मानैत छलाह। अनुराधाक माए चिन्तित छलि — ‘ई कतेक कठिन होयत।’

मुदा पूरा गाम मिलि कऽ ओहि बियाहक साक्षी बनल — आगि साक्षी, गाम साक्षी, नाम साक्षी। बूढ़बा कहलनि — ‘जकर बियाह गाम देखलक, तकर वचन पातपर लिखा गेल।’ ओहि दिन गाम एकटा पुरान देबारि तोड़लक।

आगि साक्षी, गाम साक्षी, जुड़ल दू मन एक रे।
जाति-देबारि टूटल ओहि दिन, नाम भेल अभिषेक रे।

अध्याय — ७१

महामारीक राति

महामारी देह लेलक, गीत नहि— जे राति सभ मिलि जागल, से
भोर बचा लेलक।



अनुराधा आ गोपीनाथक बियाहक दस बरख बाद, पूब दिससँ एकटा अनदेखल बिपत्ति आयल — एकटा महामारी। पहिने अफवाहक रूपमे, फेर यात्रीक कथामे, आ अन्ततः गाममे स्वयं।

ई समय बहुत कठिन छल — पहिल शिकार गामक उत्तरी छोरक एकटा परिवार भेल, फेर दोसर, फेर तेसर। कतेको परिवारकें दुख भेल।

मुदा गाम हिम्मत नहि हारल — हर राति घर-घर दीप जरल, लोक एक-दोसराक हाल पुछलक, मिलि कऽ गीत गाओल ताकि हिम्मत बनल रहय। बूढ़बा कहलनि — ‘महामारी देहकें लऽ सकल, मुदा गीतकें नहि। जे राति सभ मिलि जागल, सैह भोरकें बचा लेलक।’

आयल पूबसँ अन्हार रोग, राति भेल बडि गहन रे।

दीप जरल, गीत जागल, बाँचल भोर-जतन रे।

अध्याय — ७०

चन्ना गाछीक रोपाई

जे गाछ रोपल गेल, से एक दिनमे छाहरि नहि दै— सबर राखू,
जड़ि पहिने पकड़त, पात पछाति।



महामारीक बाद, विमला आ गामक बुढ़-पुरान लोक एकटा सुन्दर विचार पओलक। विमला बजलि — ‘बूढ़बा, हम चाहैत छी जे

गामक हर पैघ दुःख आ हर पैघ आशा, केवल मनमे नहि, एकटा गाछ रोपि कऽ सेहो मोन राखल जाय ।’

बूढ़बा ई सुनि प्रसन्न भेलाह । गाम एकटा नव गाछी रोपलक — चन्ना गाछी, जे आगू चलि कऽ पूरा उपन्यासक केन्द्रीय साक्षी-स्थल बनल ।

बूढ़बा कहलनि — ‘जे गाछ रोपल गेल, से एक दिनमे छाहरि नहि दै । सबर राखू — जड़ि पहिने पकड़त, पात पछाति ।’ गाम सिखलक — नीक काजक फल तुरंत नहि भेटै; धैर्य आ समयसँ ओ फलै छै ।

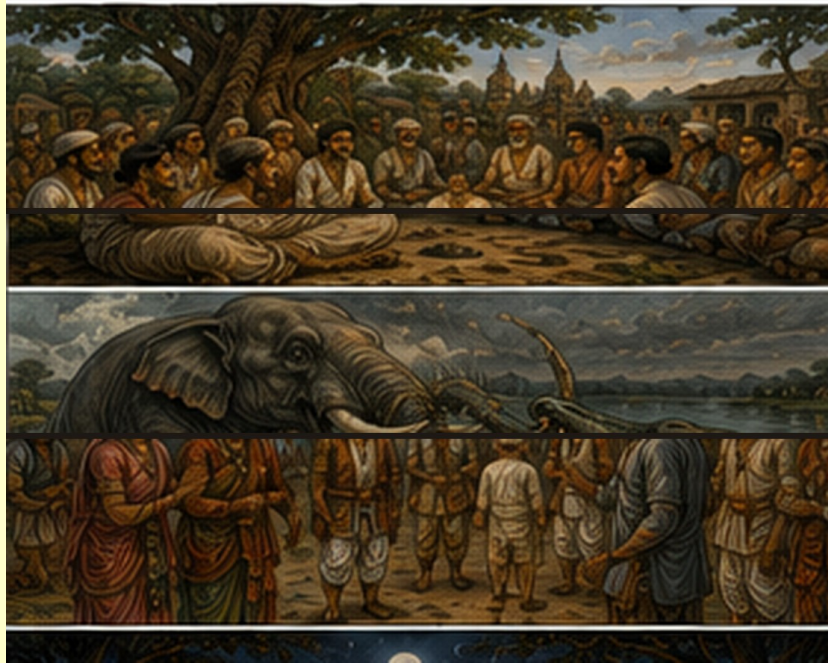
रोपल गाछी विमला हाथें, स्मृतिक बीया एक रे ।

जड़ि पहिने, पात पछाति, सबरक फल अनेक रे ।

अध्याय - ६९

गज-ग्राहक कथा

गज पानिमे, ग्राह पानिमे—लड़ाइ बरखों— मुदा जे नाम पुकारै,
तकरे हाथ उद्धार अनै ।



सूर्यनाथक जमानामे, गामक मन्दिरमे एकटा हाथी छल —
गजराज, जकरा उत्सव-जुलूसक हेतु पोसल जाइत छल ।

एक दिन पोखरिमे नहाइत काल, अचानक पानि उथल-पुथल भऽ
गेल — एकटा विशाल गोहि गजराजक पएर जकडि लेलक ।
गजराज चिचिआयल, बहुत काल धरि लडल, थाकि गेल ।

मुदा जखन ओ अन्तमे पुकारल, तखन ओकर मदति आयल आ ओ
बचल । बूढ़बा कहलनि — ‘गज पानिमे, ग्राह पानिमे — लडाइ
बरखों चलै छै । मुदा जे नाम पुकारै छै, तकरे हाथ उद्धार आबि
जाइ छै ।’ पुकारब कमजोरी नहि, साहस छी ।

गज-ग्राह जुझल पानिमे, बरखों चलल ओ भार रे ।

पुकारल नाम जखन गजें, आयल हाथ-उद्धार रे ।

अध्याय — ६८

अदालतक पहिल तारीख

तारीखपर तारीख, मुदा न्याय पातपर— अदालत देह पुछै, गाम
नाम राखै ।



कमलिनीक जमानामे, राज्यक नव प्रशासनक अन्तर्गत, गढ़ नारिकेल आ आसपासक गाम सभक हेतु एकटा औपचारिक अदालत बनल।

पहिल-पहिल, गामक लोक एकर स्वागत केलक — किएक तँ लिखित कानून, सिद्धान्ततः, हर मनुष्यकेँ समान अधिकार दैत छल, चाहे ओ कोनो जातिक होइक।

मुदा धीरे-धीरे लोक देखलक — अदालत 'तारीखपर तारीख' दैत छल, केवल देह आ कागच पुछैत छल, आ गाम अपन नाम अपने राखैत छल। बूढ़बा कहलनि — 'तारीखपर तारीख अदालतमे, मुदा असली न्याय पातपर रहै छै।' कानून आ न्याय — दुनू सदिखन एक नहि होइ।

तारीखपर तारीख पड़ल, अदालत पुछल देह रे।

गाम राखल अपन नाम, पातपर न्याय-नेह रे।

अध्याय — ६७

परदेशक पुकार

परदेश धन दै, नाम लऽ जाइ— जे गाम मन राखै, से परदेशोमे नहि हेराइ।



जानकीक जमानामे, गामक द्वार लग पहिल बेर एकटा नव प्रकारक मनुष्य आयल — मीठ जीभ, चमकदार वस्त्र, हाथमे कागच — जे गरीब परिवारकेँ दूर परदेश कमाय जेबाक लोभ देखबैत छल ।

गामक कतेको गरीब परिवार, जिनकर जमीन कम छल वा कर्ज बढल छल, एहि प्रस्तावसँ आकर्षित भेल । भोलाक पोता रामसेवक, अपन परिवारक तंगहाली देखि, जाय तैयार भऽ गेल ।

बूढ़बा चेतौलनि — ‘परदेश धन दै छै, मुदा नाम लऽ जा सकै छै । मुदा जे गाम मोन राखै, से परदेशोमे नहि हेराइ । अपन नाम, अपन जड़ि संग राखू ।’

आयल मीठ बोली वला, देखौलक धनक चाह रे ।

बूढ़बा कहल — नाम संग राखू, नहि तँ परदेश थाह रे ।

अध्याय - ६६

स्त्री सभक राति-सभा

जतय स्त्रीक स्वर जुटै, ओतय अन्हार पातर होइ— राति-सभा दीप बिनु सेहो अन्हार तोड़ै ।



सुलोचनाक जमानामे, नव अदालत, अपन सभटा नीक इरादाक बादो, एकटा स्पष्ट कमी देखलक — ओ स्त्रीक मामला, विशेषतः घरक भीतरक अन्याय, ठीकसँ नहि सुनैत छल।

एकटा एहन मामला उठल — पद्मा नामक एकटा स्त्री, जकर पति ओकरा वर्षों धरि सतबैत छल, अदालतमे न्याय माँगय गेलि, मुदा न्यायाधीश ओकर बात टारि देलनि।

तैं गामक स्त्री सभ अपन एकटा राति-सभा शुरू केलक, जतय स्त्रीक स्वर जुटैत छल आ ओ एक-दोसराक मदति करैत छलि। बूढ़बा कहलनि — ‘जतय स्त्रीक स्वर जुटै, ओतय अन्हार पातर भऽ जाइ छै। राति-सभा दीप बिनु सेहो अन्हार तोड़ि दै छै।’

जुटल स्त्री-स्वर राति-सभामे, बाजल मनक बात रे।

बिनु दीपो अन्हार टूटल, भेल इजोत प्रभात रे।

अध्याय — ६५

नकली भूतक जुलूस

नकली भूत ओकरे डेराबै, जे अपन नाम बिसरल— जे नाम थिर, से भूतक जुलूसपर हँसै।



हरिनन्दनक जमानामे, आसपासक गाम सभमे राति-सभा आ बूढ़बाक अनुष्ठानक चर्चा पसरि गेल छल। एहि प्रसिद्धिक फायदा उठाबय, कालीचरण नामक एकटा भ्रमणशील ठग स्वयंकेँ ‘बूढ़बाक असली आत्मा’ कहि प्रचारित करय लागल।

ओ रातिमे गाम-गाम भूतक जुलूस निकालि, लोककें डरा कऽ, पाइ आ अन्न ठगैत छल। मुदा गढ़ नारिकेल नहि डरल — लोक सोझे पुछलक, 'तौ साँचमे के छह? अपन नाम कहू।' आ ठग, उत्तर नहि दऽ सकल, भागि गेल।

बूढ़बा कहलनि — 'नकली भूत ओकरे डराबै छै, जे अपन नाम बिसरि गेल। जे नाम थिर छै, से भूतक जुलूसपर हँसै छै।' जे अपन सत्यकें जनैत अछि, ओकरा कोनो नकली डर नहि डरा सकै।

आयल ठग भूत बनि, जुलूस लेने अन्हार रे।

पुछल गाम — 'नाम कहू!', भागल ठग-अवतार रे।

अध्याय - ६४

सुखदेवक बदला

बदला आगि छी—पहिने अपने हाथ जरबै— जे क्षमा चुनलक, से गाम बचा लेलक।



चम्पावतीक जमानामे, नव भूमि-सर्वेक्षणसँ गरीब परिवार फेर डरल — जेना कतेको पीढ़ी पहिने भोलाक परिवार डरल छल। सुखदेव नामक एकटा मनुष्यक संग पैघ अन्याय भेल छल, आ ओकर मनमे बदलाक आगि जरैत छल।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

ओ ठानि लेने छल जे ओ अपन अन्याय करनिहारसँ बदला लेत,
चाहे जे होउ। मुदा चम्पावती आ बूढ़बा ओकरा बुझौलनि।

बूढ़बा कहलनि — ‘बदला आगि छी, सुखदेव। ओ पहिने अपने
हाथ जराबै छै। जे क्षमा चुनै, से पूरा गाम बचा लै छै।’ सुखदेव
बहुत सोचि, अन्तमे अपन क्रोध छोड़ि देलक — आ गाम घृणा
आ हिंसाक एकटा नव शृंखलासँ बाँचि गेल।

जरल मनमे बदलाक आगि, सुखदेव भेल विकल रे।

चुनल क्षमा, बुझल मरम — गाम बचल सकल रे।

अध्याय — ६३

छापाखानाक पहिल पन्ना

पहिल छपल पन्ना—नाम आब मेटाएब कठिन— जे छपल, से
गाम भरि पढ़त।



देवकीनन्दनक जमानामे, गामसँ किछु कोसक दूरीपर, नगरमे पहिल बेर एकटा छापाखाना खुजल, जतय मैथिली आ संस्कृत दुनू छपैत छल।

हरिपति गंगाधर — पुरनका कवि हरिपतिक सातम पीढ़ीक वंशज — एकटा युवा लेखक-प्रकाशक बनल। आब गामक नाम आ कथा

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

हाथसँ लिखल नहि, छपल रूपमे, बहुत लोक धरि पहुँचि सकैत छल।

बूढ़बा कहलनि — ‘पहिल छपल पन्ना — आब नाम मेटाएब कठिन। जे छपल, से गाम भरि पढ़त।’ छापाखाना नाम-रक्षाक एकटा नव, मजगूत औजार बनल — किएक तँ जे एक बेर छपि गेल, ओकरा मेटाएब सहज नहि।

चलल छापा नगर-कोन, छपल पहिल ओ पन्ना रे।

नाम आब मेटत नहि सहजें, पढ़त गाम अनगन्ना रे।

अध्याय -६२

राहतक प्रतीक्षा

राहतक बाट जोहैत आँखि থাকै, तैयो गाम ठाढ़— जे मिलि कऽ बाट जोहै, तकरा प्रतीक्षो हल्लुक।



सावित्रीदेवीक जमानामे, सम्पूर्ण क्षेत्रपर अंग्रेजी शासन आबि गेल छल। एक बेर पैघ अकाल पड़ल। सरकारी अधिकारी राहत-कार्यक्रमक घोषणा केलनि — अन्न-वितरण, काज-बदला-अनाज, आ चिकित्सा।

मुदा ई सभटा योजना प्रायः कागचपर रहल, आ धीरे-धीरे, अपूर्ण रूपमे, गाम धरि पहुँचल। गामक आँखि राहतक बाट जोहैत থাকि गेल।

मुदा लोक अपन थोड़-बहुत मिलि बाँटि, संग बाट जोहलक, हिम्मत नहि हारल। बूढ़बा कहलनि — ‘राहतक बाट जोहैत आँखि থাকै, तैयो गाम ठाढ़ रहै। जे मिलि कऽ बाट जोहै, तकरा प्रतीक्षो हल्लुक भऽ जाइ।’

जोहल बाट राहतक आँखि, थाकल, तैयो ठाढ़ रे।
मिलि कऽ जोहल सभ संगें, हल्लुक भेल ओ भार रे।

अध्याय — ६१

आकाशक पुच्छलतारा

पुच्छलतारा अबै-जाइ, गाम अपना ठाम— जे ऊपर चमकल, से नीचाँक नाम नहि बदलै।



सावित्रीदेवीक बाद, रुद्रनाथक जमानामे, एक शरदक राति
आकाशमे एकटा अपूर्व दृश्य उभरल — एकटा लम्बा, चमकदार
पुच्छ, लेने तारा, जे धीरे-धीरे आकाशमे बढ़ैत छल।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

गामक एकटा वृद्ध ज्योतिषी चिचिआएल — ‘ई अशुभ अछि! पुरान शास्त्रमे लिखल अछि जे पुच्छलतारा राजाक मृत्यु, युद्ध, अकाल, वा महामारीक पूर्व-सूचना दै छै!’ गाम डरि गेल।

मुदा बूढ़वा शान्त रहलाह — ‘पुच्छलतारा आबै-जाइ छै, गाम अपना ठाम रहै छै। जे ऊपर चमकल, से नीचाँक नाम नहि बदलै। आकाशसँ नहि डरू — अपन जड़ि माटिमे राखू।’ अन्धविश्वासक भयसँ बेसी, अपन कर्म आ स्मृतिपर भरोसा राखू।

उगल पुच्छलतारा आकाश, डरल गामक लोक रे।

बूढ़वा कहल — जड़ि थिर राखू, बदलत नहि ओ टोक रे।

अध्याय — ६०

अगिनक राति

आगि घर लेलक, नाम नहि — जे राति जरल, तकर राखसँ नव चूल्हि जरल।



जेठक एकटा तीव्र गर्मीक राति, गामक धान-भंडार लग रखल
एकटा दीप, तेज हवाक झोंकासँ खसि पडल आ सुखल पयरालपर

आगि लपकि उठल। एक क्षणमे हवा ओकरा गाम भरि पसारय लागल।

रुद्रनाथक बेटी इन्द्राणी, आब अनुष्ठान-रक्षिका, अपन खिड़कीसँ आगिक लाली देखि चिचिआएलि — ‘आगि! आगि! सम्पूर्ण गाम जरत!’ ओ गामक हर द्वारपर दौड़ल।

पूरा गाम जागि, मिलि कऽ, पानि आ माटिसँ आगि सोझाँ टाढ़ भेल। घर जरल, मुदा केओ नाम नहि हेराएल। बूढ़बा कहलनि — ‘आगि घर लेलक, नाम नहि। जे राति जरल, तकर राखसँ नव चूल्हि जरल।’

लपकल आगि जेठक राति, इन्द्राणी दौड़ल द्वार रे।

जरल घर, बचल नाम, राखसँ चूल्हि दोबार रे।

अध्याय -५९

दोसर बाढ़ि

दोसर बाढ़ि पुरान बाट चिन्है, तैयो नव घाव दै— जे गाम बाढ़ि झेलल, से पानिकँ पढ़ब सिखलक।



अगिनक तीन मास बाद, वर्षाक मौसम आयल — मुदा ई साधारण नहि छल। दिन-राति, बिनु रुकने बरखा भेल, आ कमला-बलान आ चारू कातक हर धार बाढ़िसँ भरि गेल।

इन्द्राणी, जे अगिनक राति गामकें बचौने छलि, आव फेर एकटा नव परीक्षामे छलि। मुदा गाम पुरनका बाढ़िसँ सिखने छल — लोक पानिकें 'पढ़ि' पाकल बान्ह मजगूत केलक, आ ठीक समयपर ऊँच ठाम चलि गेल।

बूढ़बा कहलनि — 'दोसर बाढ़ि पुरान बाट चिन्है छै, तैयो नव घाव दै छै। मुदा जे गाम बाढ़ि झेललक, से पानिकें पढ़ब सिखि लै छै।' अनुभव सभसँ पैघ शिक्षक छी।

आयल दोसर बाढ़ि फेर, चिन्हल पुरान बाट रे।

पढ़ल पानि गाम एहि बेर, बान्हल मजगूत घाट रे।

अध्याय -५८

तेसर बिपत्ति

एक बिपत्ति सिखबै, तेसर बिपत्ति पकबै— जे तीन बेर खसल, से चारिम बेर सम्हरि ठाढ़ होइ।



बाढिक पानि उतरलाक बाद, गामक कतेको स्थानपर सङल, ठहरल पानिक गड्ढा रहि गेल। दुइ सप्ताहक भीतर, एकटा नव रोग पसरल — पेट-दर्द आ दस्त।

इन्द्राणी, अगिन आ बाढ़ि दुनूसँ जूझि चुकल, आब तेसर परीक्षाक सोझाँ छलि। ओ थकल स्वरमे बजलि — ‘बूढ़बा, पुच्छलतारा सही छल — तीन बिपत्ति, अगिन, बाढ़ि आ रोग।’

बूढ़बा कहलनि — ‘एक बिपत्ति सिखबै छै, तेसर पकबै छै। जे तीन बेर खसल, से चारिम बेर सम्हरि ठाढ़ होइ छै। पानि उसीनू, सफाइ राखू, एक-दोसराक देखभाल करू।’ गाम तीनू बिपत्ति झेलि, आओर मजगूत भऽ गेल।

अगिन, बाढ़ि, फेर रोग, तीन बेर खसल गाम रे।

सम्हरि ठाढ़ भेल चारिम बेर, धिर रहल हर नाम रे।

अध्याय -५७

साहेबक नोटबुक

साहेब जे लिखलक, से ओकर हिसाब— गाम जे मन राखलक, से गामक सत्य।



नन्दकिशोरक जमानामे, एकटा अंग्रेज विद्वान — मिस्टर हेनरी थॉम्पसन, जकरा गाम 'थॉम्पसन साहेब' कहलक — भारतीय लोक-परम्पराक अध्ययन करय गाम आयल ।

ओ अपन नोटबुक आ कलमक संग, गामक हर बुढ़-पुरान लोकसँ पुछताछ केलनि — ‘बूढ़बा’ के छथि, ‘कबड्डी’क अर्थ की, ‘चन्ना गाछी’क कथा की। आ सभटा ध्यानसँ लिखि लेलक।

बूढ़बा कहलनि — ‘साहेब जे लिखलक, से ओकर हिसाब। गाम जे मन राखलक, से गामक सत्य। दुनू रहि सकै, मुदा बाहरीक कागचकेँ अपन स्मृतिक ठाम नहि लेबय दियौ।’ अपन कथाक असली मालिक गाम स्वयं छी, कोनो बाहरी लेखक नहि।

लिखल साहेब नोटबुकमे, गामक कथा-प्रसंग रे।

सत्य रहल गामक मनमे, कागच केवल संग रे।

अध्याय -५६

स्वाधीनताक पुकार

जे पुकार गाम-गाम पहुँचल, से एक कण्ठक नहि— स्वाधीनता सेहो एकटा साझा गीत छी।



लक्ष्मीदेवीक जमानामे, सम्पूर्ण भारतमे स्वाधीनता-आन्दोलनक लहर तीव्र भऽ चुकल छल — नमक-सत्याग्रहसँ लऽ कऽ अनेक आन्दोलन ।

एकटा युवा स्वाधीनता-सेनानी, रामाश्रय, नगरसँ यात्रा कऽ गढ़ नारिकेल पहुँचल आ पुकारल — ‘भाइयो-बहिनो, स्वाधीनताक आन्दोलनमे शामिल होउ!’

जे गाम सदिखन हर नाम आ हर लोकक मान राखने छल, ओ स्वाधीनताकें नीक जकाँ बुझलक — किएक तँ नाम-रक्षा आ स्वतंत्रता, दुनू एक्के लड़ाइ छी। बूढ़बा कहलनि — ‘जे पुकार गाम-गाम पहुँचल, से एक कण्ठक नहि। स्वाधीनता सेहो एकटा साझा गीत छी — सभकें मिलि गाबय पड़ै छै।’

आयल पुकार गाम-गाम, जागल जन-जन आजि रे।

स्वाधीनता साझा गीत, गाबू मिलि सब आजि रे।

अध्याय -५५

स्वतंत्रताक भोर

भोर भेल, मुदा हर आँगनमे एक्के बेर नहि— जे नाम आजाद, तकर भोर सभसँ पहिने।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण



विश्वम्भरनाथक जमानामे, पन्द्रह अगस्तक भोरे, सम्पूर्ण भारतमे
— गढ नारिकेल सहित — एकटा नव सूरज उगल। सैकडों
बरखक पराधीनताक बाद, देश आजाद भेल।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

गामक चौपालपर पहिल बेर तिरंगा फहरायल गेल। नारिकेल पात पाठशालाक बच्चा 'जन गण मन' गाबय सिखने छल, आ ओहि भोरे हर कण्ठसँ ई गीत उठल।

बूढ़बा कहलनि — 'भोर भेल, मुदा हर आँगनमे एक्के बेर नहि। जे नाम आजाद, तकर भोर सभसँ पहिने। असली स्वतंत्रता तखन, जखन गामक हर नाम, हर जाति, हर स्त्री-पुरुष आजाद होइ।' स्वतंत्रता एकटा शुरुआत छल, अन्त नहि।

फहरल तिरंगा चौपालपर, गाबल 'जन गण मन' रे।

भोर भेल हर आँगन, आजाद भेल जन-जन रे।

अध्याय -५४

जमींदारीक अन्त

जमीनक मालिक बदलल, माटि नहि बदलल — जे माटि जोतै, तकरे नाम खेत जनै।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण



कमला देवीक जमानामे, नव भारत सरकार जमींदारी-व्यवस्था समाप्त केलक — ओ व्यवस्था, जे सैकड़ों बरखसँ चलैत आयल छल ।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

गामक अन्तिम जमींदार परिवार — प्रतापसेन ठाकुरक वंशज —
अपन अधिकांश भूमि सरकारकें सौंपय बाध्य भेल। ओहि भूमिक
पैघ हिस्सा भूमिहीन किसान आ चर्मकार टोलाकें भेटल।

बूढ़बा कहलनि — ‘जमीनक मालिक बदलल, माटि नहि बदलल।
जे माटि जोतै, तकरे नाम खेत जनै छै।’ जे सदिखनसँ श्रम करैत
आयल छल, ओकरा अन्ततः ओकर श्रमक भूमि भेटल — ई
एकटा पैघ न्याय छल।

बदलल मालिक जमीनक, माटि रहल जस-के-तस रे।
जोतनिहारकें भेटल खेत, न्याय भेल ओहि दिन खास रे।

अध्याय -५३

बिजलीक पहिल दीप

बिजलीक दीप जरल, मुदा पुरान दीपक तेल नहि बिसरू— नव
इजोत आवे, पुरान नाम नहि मेटावे।



हरिवंशक जमानामे, एक साँझ, गामक चौपालपर पहिल बिजलीक दीप एकाएक जरल। सम्पूर्ण गाम — बच्चासँ लऽ कऽ वृद्ध धरि — अचम्भासँ ठमकि गेल।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

बल्बक पीयर इजोत डकही पोखरिक पानिपर काँपल, आ लोक ओकरा एहन ताकलक जेना कोनो चमत्कार देखि रहल हो।

बूढ़बा कहलनि — ‘बिजलीक दीप जरल, मुदा पुरान दीपक तेल नहि बिसरू। नव इजोत आबे — मुदा ओ पुरान नाम नहि मेटाबे।’ प्रगतिकेँ अपनाउ, मुदा अपन जड़ि आ स्मृतिकेँ ओकर बदलामे नहि छोड़ू।

जरल बिजलीक पहिल दीप, चमकल पोखरि-नीर रे।

नव इजोत, पुरान तेल — दुनू राखू धीर रे।

अध्याय -५२

सीमाक पुकार

सीमापर तोप बाजल, गाममे सोहरो बाजल— जे गाम युद्धो झेलल, से नामकेँ नहि छोड़लक।



हरिवंशक जमानामे, दूर सीमापर युद्धक ढोल बाजल — पहिने चीन दिससँ, फेर पाकिस्तान दिससँ। समाचार रेडियोक फुसफुसाहटमे गाम धरि पहुँचल।

कतेको घर अपन बेटाकेँ सीमापर पठौलक; किछु घुरि आयल,
किछु नहि। भयक एकटा छाया गाम भरि पसरल।

मुदा ओहि भयक बीचहुँ गामक जीवन चलैत रहल — जन्म होइत
रहल, सोहर गबाइत रहल, खेत जोतल जाइत रहल। बूढबा
कहलनि — ‘सीमापर तोप बाजल, गाममे सोहरो बाजल। जे गाम
युद्धो झेललक, से नामकेँ नहि छोड़लक।’ जीवनक गीत, मृत्युक
शोरसँ बेसी बलगर होइ छै।

सीमापर बाजल तोप, गाममे सोहर-तान रे।

झेलल युद्धो जे गाम, नहि छोड़ल अपन नाम रे।

अध्याय -५१

हरित क्रान्तिक बीया

नव बीया बेसी उपजा दै, मुदा पुरान बीया माटि चिन्है— जे बीया
गाम बचबै, से भूख नहि, नाम रोपै।



हरित क्रान्तिक हवा जखन गढ नारिकेल धरि पहुँचल, तखन खेतक रूप बदलय लागल — नव, अधिक उपजाऊ बीया आ बोरा-बोरा

रासायनिक खाद आयल। पहिल बेर धान एतेक बेसी उपजल जे भण्डार भरि गेल।

मुदा हरिवंशक बेटी सुनयना, जे चीज सभ बारीकीसँ देखैत छलि, बूढ़बासँ पुछलक — ‘बूढ़बा, नव बीयासँ अन्न बेसी भेटत, मुदा हमर पुरनका देशी बीया हेराइत जा रहल अछि। की ई नीक अछि?’

बूढ़बा कहलनि — ‘नव बीया बेसी उपजा दै, मुदा पुरान बीया माटि चिन्है छै। दुनू राखू। जे बीया गाम बचबै, से भूख नहि, नाम रोपै छै।’ प्रगतिक संग विरासतकें बचायब सेहो जरूरी।

आयल नव बीया-खाद, भरल भण्डार अपार रे।

पुरान बीया संग राखू, माटिक ओ आधार रे।

अध्याय -५०

आपातकालक अन्हार

अन्हारक दौर थिर नहि रहै— मुदा जे दीप बुतल, तकरा फेर जरबैमे बेर लागै।



१९७५मे, जखन राष्ट्रीय आपातकाल घोषित भेल, तखन ओकर छाया दिल्लीसँ चलि, गाम-गामक चौपाल धरि पहुँचल। सभा-गोष्ठी आ खुलल बोलपर रोक लागि गेल।

सुनयना, जे राति-सभाक परम्पराकेँ आगू बढ़ा रहल छलि,
भयभीत भऽ पीपर लग गेलि — ‘बूढ़बा, सभापर रोक अछि।
हमर राति-सभा बन्न करय पड़त की?’

बूढ़बा कहलनि — ‘अन्हारक दौर थिर नहि रहै छै। मुदा जे दीप
बुतल, तकरा फेर जरबैमे बेर लागै छै। तँ नामक छोट लौ
चुपचाप जगल राखू आ बाट जोहू — भोर जरूर आओत।’ कठिन
समयमे धैर्य आ छुपल हिम्मत सभसँ पैघ शक्ति छी।

आयल अन्हार आपातक, चुप भेल गामक बोल रे।

राखल दीप जगल भीतरें, बाट जोहल अनमोल रे।

अध्याय - ४९

सूखाक बरख

सूखल बरख पोखरि सुखबै, नाम नहि— जे गाम मिलि इनार
खुनलक, से पानि फेर पओलक।



एक बरख मानसून फेर असफल भेल । आकाश महीनों कोरा रहल,
पोखरिक पानि घटल, आ खेतक माटि फाटि-फाटि पियास कह्य
लागल ।

मुदा एहि बेर, पुरनका सूखासँ भिन्न, सरकारी राहत आ गामक अपन संगठन दुनू समयपर सक्रिय भेल। सुनयनाक बेटा गोपाल, गामक युवा प्रधान, अधिकारीक संग मिलि राहत जुटौलक।

आ गाम मिलि कऽ नव इनार खुनलक, पुरान पोखरि गहीँर केलक। बूढ़बा कहलनि — ‘सूखल बरख पोखरि सुखबै, नाम नहि। जे गाम मिलि इनार खुनलक, से पानि फेर पओलक।’ सामूहिक श्रम हर सूखाकै हरा सकै छै।

सुखल पोखरि, फाटल माटि, तड़पल गामक प्राण रे।

खुनल इनार मिलि सभ, फेर आयल जल-दान रे।

अध्याय - ४८

रेडियो आ टेलीविजनक अवाज

यन्त्रक अवाज दूरसँ आबै, गामक गीत भीतरसँ— जे भीतरक स्वर सुनल, से बाहरक शोरमे नहि हेराइ।



गोपालक जमानामे, गामक चौपालपर पहिल रेडियो आयल, आ किछु बरख बाद, पहिल टेलीविजन। पहिल राति, ओहि छोट

बाकसमेसँ दिल्लीक स्वर निकसल, आ सम्पूर्ण गाम ओकरा घेरि बैसल ।

मुदा ओहि नव उजासक संग एकटा चुप्पी सेहो आयल — जे बच्चा साँझमे पीपर लग बूढ़बाक कथा सुनय अबैत छल, से आब स्क्रीनक सोझाँ बैसय लागल । पुरान गीत आ कथा किछु पाछाँ पड़य लागल ।

बूढ़बा कहलनि — ‘यन्त्रक अवाज दूरसँ आबै, गामक गीत भीतरसँ । जे भीतरक स्वर सुनैत रहल, से बाहरक शोरमे नहि हेराइ ।’ नव माध्यमकेँ सुनू, मुदा अपन गीत नहि बिसरू ।

बाजल बाकस दिल्लीसँ, जुटल गाम ओहि ठाम रे ।

भीतरक स्वर जे सुनल, नहि हेरायल ओ नाम रे ।

अध्याय - ४७

खाड़ी देशक बजार

परदेशक बजार धन दै, घरक चूल्हि नाम दै— जे कमा कऽ नाम बिसरल, से घुरि कऽ अजनबी ।



अस्सीक दशकमे, खाड़ी देशमे तेलक उछालसँ, गामक युवा निर्माण-मजदूरी आ आन काज हेतु दुबई, कुवैत आ सऊदी अरब जाय लागल ।

कुसुमक पति रमेश तीन बरखक करारपर दुबई गेल। मुदा एहि बेर, बहुत पहिनुका रामसेवकसँ भिन्न, रमेश नियमित पत्र आ पैसा घर पठबैत रहल, आ कहियो-कहियो ओकर अवाज फोनपर सेहो अबैत छल।

बूढ़बा कहलनि — ‘परदेशक बजार धन दै, घरक चूल्हि नाम दै। जे कमा कऽ नाम बिसरल, से घुरि कऽ अजनबी बनि जाइ। तँ जतय जाउ, अपन नाम आ अपन लोक संग राखू।’

गेल परदेश कमाय रमेश, आयल धनक ओ चाह रे।

राखल नाम-सम्बन्ध संग, नहि भेल घर-राह अथाह रे।

अध्याय — ४६

सद्भावक परीक्षा

जखन आगि लागल, तखन गाम एक भेल— सद्भाव पाबनिमे नहि, बिपत्तिमे परखल जाइ।



अस्सीक दशकक अन्तमे, आसपासक क्षेत्रमे साम्प्रदायिक तनावक
एकटा लहर उठल, आ ओकर आँच अफवाहक रूपमे गढ़ नारिकेल

धरि पहुँचल। किछु बाहरी लोक गाम आवि, हिन्दू आ मुसलमानकें बाँटय चाहलक।

मुदा गढ़ नारिकेलक मुस्लिम परिवार पीढ़ी-दर-पीढ़ी गामक जीवनमे घुलल-मिलल छल — जकर पुरखा एकहि पोखरिसँ पानि भरने, एकहि खेतमे काज केने, आ एकहि बाढ़िमे एक-दोसराकें बचौने छलाह।

तँ गाम एक भऽ ठाढ़ भेल आ बाहरी झगडाबाजकें विदा कऽ देलक। बूढ़वा कहलनि — ‘जखन आगि लागल, तखन गाम एक भेल। सद्भाव पाबनिमे नहि, बिपत्तिमे परखल जाइ छै।’ साझा स्मृति आ साझा दुःख, कोनो अफवाहसँ बलगर होइ छै।

आयल बाहरी बाँटय लोक, गाम भेल एक-प्राण रे।

साझा पोखरि, साझा दुःख, टूटल नहि ओ मान रे।

अध्याय — ४५

उदारीकरणक हवा

नव हवा दरबज्जा खोललक, मुदा जड़ि हिलल नहि— जे गाम जड़िसँ जुड़ल, से हवामे नहि उड़ै।



१९९१क आर्थिक सुधारक बाद, गामक बजारक रूप बदलय लागल
— रंग-बिरंगक प्लास्टिक, चिक्कन नव कपडा, आ बादमे पहिल

केवल टेलीविजन आयल। नव-नव वस्तु आ नव-नव सपना गाम धरि पहुँचल।

कुसुमक बेटा दिनेश, नगरमे एकटा निजी कम्पनीमे नौकरी पओलक — जे ओकर पिता-पितामहक हेतु असम्भव छल। नव जीवनक गति आ चमकसँ गाम आकर्षित सेहो भेल आ किछु चिन्तित सेहो।

बूढ़बा कहलनि — ‘नव हवा दरबज्जा खोललक, मुदा जड़ि हिलल नहि। जे गाम जड़िसँ जुड़ल, से हवामे नहि उड़ै।’ बदलावकँ अपनाउ, मुदा अपन आधारकँ मजगूत राखू।

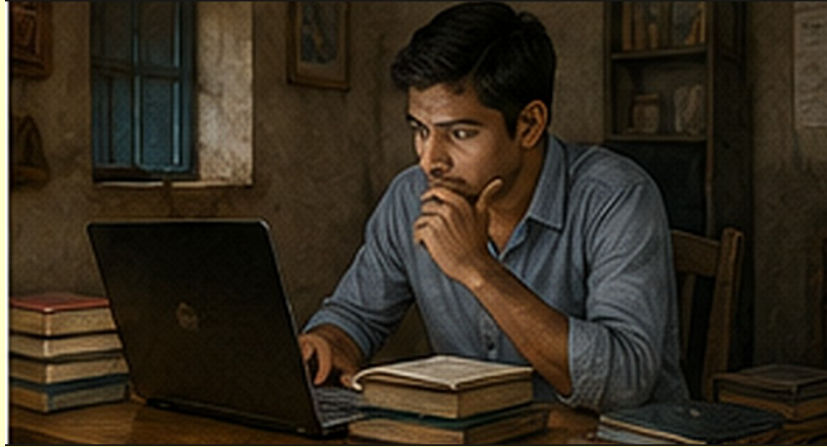
आयल नव बजारक हवा, खुलल दरबज्जा-द्वार रे।

जड़िसँ जे जुड़ल रहल, नहि उड़ल हवा-मँझार रे।

अध्याय - ४४

पहिल कम्प्यूटर

नव यन्त्र गिनती सिखबै, नाम नहि गिनै— जे नाम गाम राखै, से यन्त्रक संख्यासँ पैघ।



प्रतिमाक जमानामे, सरकारी योजनाक अन्तर्गत, नारिकेल पात पाठशालामे पहिल कम्प्यूटर पहुँचल — एकटा पैघ, धूसर यन्त्र, जकरा लोक अचरजसँ देखलक।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

बच्चा सभ आँखि फाड़ि ओकरा देखलक — जे अक्षर हाथसँ लिखय बरख लगैत छल, से आव पल भरिमे स्क्रीनपर उतरि अबैत छल। ई एकटा नव युगक आगमन छल।

मुदा एकटा बूढ़ शिक्षक मुस्कुरा कऽ बूढ़बाक बात दोहरौलनि — ‘नव यन्त्र गिनती सिखबै, मुदा नाम नहि गिनै। जे नाम गाम राखै, से यन्त्रक कोनो संख्यासँ पैघ।’ यन्त्र औजार छी, स्मृति आत्मा।

आयल यन्त्र पाठशाला, गिनल संख्या अपार रे।

नाम जे गाम मन राखल, से यन्त्रसँ पैघ-भार रे।

अध्याय - ४३

सुखल होइत धार

धार पातर भेल, तैयो पुरान बाट चिन्है— जे धार सुखल, से बाढ़िकेँ नहि बिसरल।



प्रतिमाक जमानामे, गामक बुद्ध-पुरान एकटा नव, धीमा बिपत्ति देखलक — कमला-बलानक जल-स्तर बरख-दर-बरख घटैत जा

रहल छल। जे धार कहियो घर बहा लऽ जाइत छल, से आब पातर होइत जा रहल छल।

बूढ़ लोक पीपरक छाहरिमे बैसल चिन्तित छलाह — ‘जे धारसँ हम एतेक बाढ़ि झेललहुँ, ओएह धार आब सुखि रहल अछि? ई तँ आर पैघ चेतावनी छी।’

बूढ़बा कहलनि — ‘धार पातर भेल, तैयो पुरान बाट चिन्है छै। जे धार सुखल, से बाढ़िकेँ नहि बिसरल। पानिक रक्षा करू, ताकि ओहो अहाँकेँ नहि बिसरय।’ प्रकृतिक संग सम्बन्ध, स्मृतिक संग सम्बन्ध जकाँ, बचाव पड़ै छै।

सुखल धार बरख-बरख, पातर भेल ओ नीर रे।

बाढ़िकेँ नहि बिसरल धार, राखू जल गम्भीर रे।

अध्याय - ४२

हाथक फोनक चमत्कार

हाथमे यन्त्र, दूर लग भेल— मुदा जे लग बैसल, तकरो नाम पुछब बिसरू नहि।



सत्यनारायणक जमानामे, पहिल मोबाइल फोन गाम पहुँचल —
पहिने एकटा, गामक मुखियाक हाथमे। जखन ओहि छोट

यन्त्रमेसँ दूर शहर गेल बेटाक अवाज निकसल, तखन पूरा गाम अचम्भासँ जुटल ।

धीरे-धीरे फोन कतेको घर पहुँचल — दूर परदेश गेल पुत्र माए-बापसँ तुरंत बात कऽ सकल, हर समाचार, जन्मसँ मृत्यु धरि, क्षण भरिमे पहुँचय लागल ।

बूढ़बा कहलनि — ‘हाथमे यन्त्र, दूर लग भऽ गेल । मुदा जे लग बैसल अछि, तकरो नाम पुछब बिसरू नहि ।’ यन्त्र दूरकें लग आनल, मुदा लगक लोककें दूर नहि होमय दिअय ।

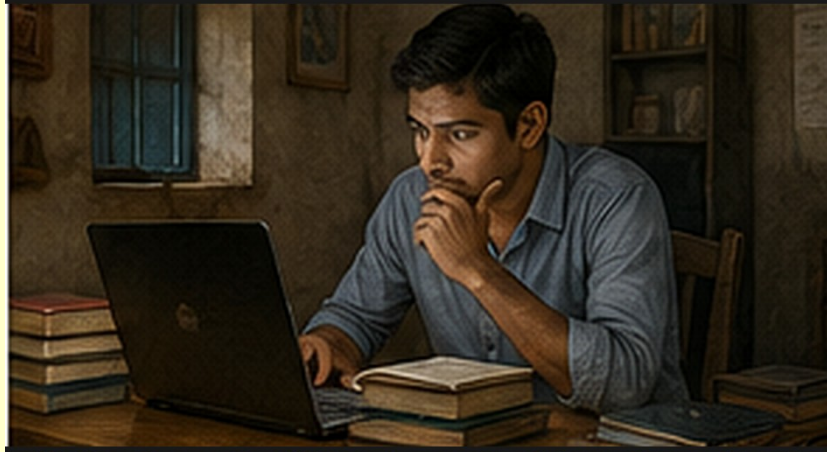
आयल फोन हाथ-हाथ, दूर भेल लगुआ रे ।

लग बैसल जे प्रिय जन, तकरो हाल सुनुआ रे ।

अध्याय — ४१

शहरक बजार

शहर देह किनै, गाम नाम बेचै नहि — जे बजारमे नाम बेचलक, से घुरि कऽ खाली हाथ ।



अंजलिक जमानामे, भारतक आइटी-उद्योगक उच्छालसँ, गामक शिक्षित युवा बंगलोर, हैदराबाद आ दिल्ली जकाँ शहरमे सॉफ्टवेयर-नौकरीक हेतु जाय लागल। जे बच्चा कहियो पातपर

नाम लिखय सिखने छल, से आव कम्प्यूटरक कोड लिखय लागल ।

गाम गर्व करैत छल, मुदा ओहि उड़ानक संग एकटा दूरी सेहो आयल — शहर गेल लोक अपन पाबनि ओतहि मनाबय लागल, आ गामक कतेको घर बरख भरि, अपन जवान सन्तानक बिनु, ताला लागल रहय लागल ।

बूढ़बा कहलनि — ‘शहर देह किनै, मुदा गाम नाम नहि बेचै । जे बजारमे नाम बेचलक, से घुरि कऽ खाली हाथ । ऊँच उड़ — मुदा अपन नाम आ गाम मनमे राखू ।’ सफलता ओ नहि, जे अपन जड़िसँ काटि दिअय ।

गेल शहर लिखय कोड, चमकल नाम-प्रकाश रे ।

राखल गाम-नाम मनमे, नहि भेल हाथ निराश रे ।

अध्याय — ४०

सूचनाक अधिकार

जकरा जानबाक हक, से पुछि सकै— सूचना दीप छी, जे अन्हारमे नाम देखबै ।



करुणाकरक जमानामे, भारतमे सूचनाक अधिकार कानून पारित भेल — एकटा एहन कानून जे साधारण नागरिककेँ सरकारी दफ्तरसँ अपन कागज आधिकारिक रूपसँ माँगबाक हक दैत छल ।

गामक युवा, यादवानन्द झाक पुरान परम्पराकें आगू बढ़ावैत, सरकारी अभिलेखागारसँ गामक जमीन आ इतिहासक कागच माँगय लागल — जे कागच कहियो केवल अधिकारीक बन्द आलमारीमे रहैत छल ।

बूढ़बा कहलनि — ‘जकरा जानबाक हक, से आव पुछि सकै । सूचना दीप छी — जे अन्हारमे नाम देखबै छै ।’ जे प्रश्न पुछि सकै, से अन्यायकें अन्हारमे नुकाएल नहि रहय दै ।

माँगल कागच खुलल आलमारी, पुछल जनताक अधिकार रे ।

सूचना दीप जरल हाथमे, देखल नाम-अन्हार रे ।

अध्याय -३९

काजक गारंटी

जकरा काज भेटल, तकर हाथ ठाढ़ भेल — काज नाम दै, भीख नहि ।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण



विभाक जमानामे, केंद्र सरकारक ग्रामीण रोजगार-गारंटी योजना गाम धरि पहुँचल — जे हर परिवारकें, गामहिमे, सौ दिनक निश्चित काजक हक दैत छल ।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

पोखरि खुनाइ, बान्ह बन्हाइ, बाट बनाइ — गामक काज गामहिमे
होमय लागल, आ जे हाथ पहिने खाली छल, वा परदेश जाय
बाध्य छल, से आव अपन गाममे काज पओलक।

हर काजक हाजिरी एकटा पंजीमे चढाओल जाइत छल — नाम-
पंजीक ओएह पुरान परम्परा, नव रूपमे। बूढ़बा कहलनि —
'जकरा काज भेटल, तकर हाथ ठाढ़ भेल। काज नाम दै छै, भीख
नहि।' सम्मानजनक श्रम, सभसँ पैघ स्वाधीनता छी।

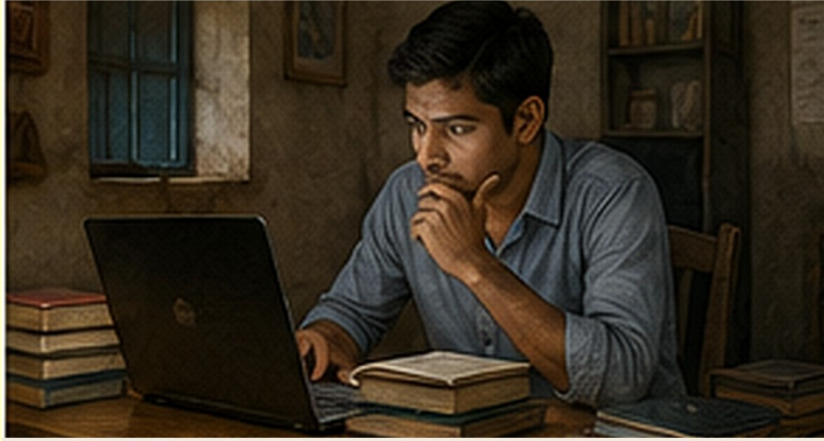
भेटल काज गामहिमे, ठाढ़ भेल हर हाथ रे।

हाजिरी चढल पंजीमे, नाम भेल सनाथ रे।

अध्याय -३८

इंटरनेटक जाल

नव जाल दूरकें लग आनै, मुदा नामकें नम्बर बनबै— जे जालमे
फँसल, से अपन चेहरा हेरा दै।



सुरेशक जमानामे, स्मार्टफोन आ सस्ता इंटरनेट गाम धरि पहुँचल। जे बच्चा कहियो नारिकेल पातपर अक्षर सिखने छल, से आब अपन हथेलीमे सम्पूर्ण संसार धेने घूमय लागल।

मुदा ओहि नव जालक संग नव समस्या सेहो आयल — झूठ समाचार सत्य जकाँ फैलल; लोक दोसराक चमकैत जीवन देखि अपन जीवनसँ असन्तुष्ट भेल; आ अनजान लोक, दूर बैसल, ककरो लग पहुँचि सकल ।

बूढ़बा कहलनि — ‘नव जाल दूरकँ लग आनै, मुदा नामकँ नम्बर बनबै । जे जालमे फँसल, से अपन चेहरा हेरा दै । जालक उपयोग करू, मुदा जालकँ अपन उपयोग नहि करय दियौ ।’

बुनल जाल दूर-दूर, नाम भेल नम्बर-अंक रे ।

फँसल जे ओहि जालमे, हेरायल चेहरा-रंक रे ।

अध्याय -३७

स्क्रीनक पहिल छाया

पहिल परदापर चेहरा चमकल, पाछाँ नाम अन्हार— जे स्क्रीन देखलक, से आँखि गाम बिसरए नहि ।



नीरजक जमानामे, फेसबुक आ व्हाट्सएप गामक हर हाथमे पहुँचि गेल। दूर बसल नातेदार लग आवि गेलाह, पुरान संगी फेर भेंट भेलाह, गामक हर सुख-दुःख पल भरिमे पसरय लागल।

मुदा संगहि अफवाह, ठगी आ ऑनलाइन उत्पीड़नक नव कथा सुनाइ पड़य लागल — कियो केकरो फोटो लऽ, कियो अन्हारमे नुकाएल झूठ फैला, केकरो जीवन कठिन कऽ दैत छल।

बूढ़बा कहलनि — ‘पहिल परदापर चेहरा चमकल, पाछाँ नाम अन्हार। जे स्क्रीन देखलक, से अपन आँखि असली गामकँ बिसरए नहि दिअय।’ परदाक चमकसँ बेसी, अपन लोकक असली चेहरापर भरोसा राखू।

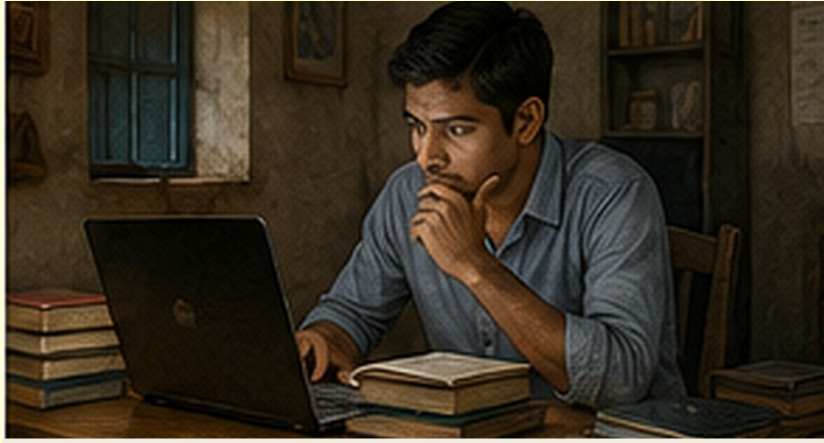
चमकल परदा चेहरा-चेहरा, पाछाँ नाम-अन्हार रे।

देखल स्क्रीन, मुदा नहि बिसरल, असली गाम-दुआर रे।

अध्याय —३६

अनदेखल ठगक पहिल आहट

जे ठग देखाइ नहि दै, से सभसँ पैघ— आहट सुनू, नाम पुछू, कागचपर नहि, आँखिपर विश्वास राखू।



सपनाक जमानामे, गामक एकटा युवक, नौकरीक झांसामे, अपन सम्पूर्ण जमा-पूँजी एकटा फर्जी ऑनलाइन कम्पनीकेँ गमा देलक। कम्पनी असली लागैत छल — ओकर वेबसाइट छल, दफ्तरक

पता छल — मुदा ओ दूर देशसँ, अनदेखल हाथसँ, संचालित भेल छल।

पुलिसमे रपट लिखाओल गेल, मुदा जकरा देखिये नहि सकल जाय, तकरा केना पकड़ल जाय? ई गामक हेतु एकटा नव प्रकारक भय छल।

बूढ़बा गम्भीर भऽ कहलनि — ‘जे ठग देखाइ नहि दै, से सभसँ पैघ। ई नव गोहि छी — ई पोखरिमे नहि, जालमे बसै छै। आहट सुनू, नाम पुछू; कागचपर नहि, अपन आँखिपर विश्वास राखू।’ ई ओएह ‘नव गोहि’ छल, जकर पूरा कथा मुख्य उपन्यासमे खुलत।

आयल ठग अनदेखल, नव गोहि जालक बीच रे।

आहट सुनू, नाम पुछू, राखू आँखि-सींच रे।

अध्याय — ३५

देहक बजार खुजैत अछि

जतय देह बिकाइ, ओतय नाम सस्त — मुदा जे गाम नाम राखै, से देहकै बजार बनए नहि दै।



राजीवक जमानामे, नौकरीक झांसाक ठगी आओर भयावह भऽ गेल — पहिने ठग केवल पाइ लैत छल, आब ओ 'अच्छा

काज'क झूठ वादापर लोककेँ बहला कऽ दूर लऽ जाय लागल, आ किछु लोक फेर घुरि नहि आयल।

गामक एकटा घरमे, एकटा बेटा एहने वादापर गेल आ बरखों धरि कोनो समाचार नहि आयल; ओकर माएक आँखि हर बाट ताकैत रहलि। ई एकटा नव, कठोर अन्याय छल।

बूढ़बा बहुत विचलित भेलाह — 'जतय मनुखकेँ बेचबाक चीज बुझल जाय, ओतय नाम सस्त भऽ जाइ। मुदा जे गाम अपन नाम राखै, से अपन लोककेँ बजार बनए नहि दै। पुछू, जाँचू — अनजानक वादापर अपन बच्चा कहियो नहि पठाउ।' सतर्कता, स्नेहक पहिल रूप छी।

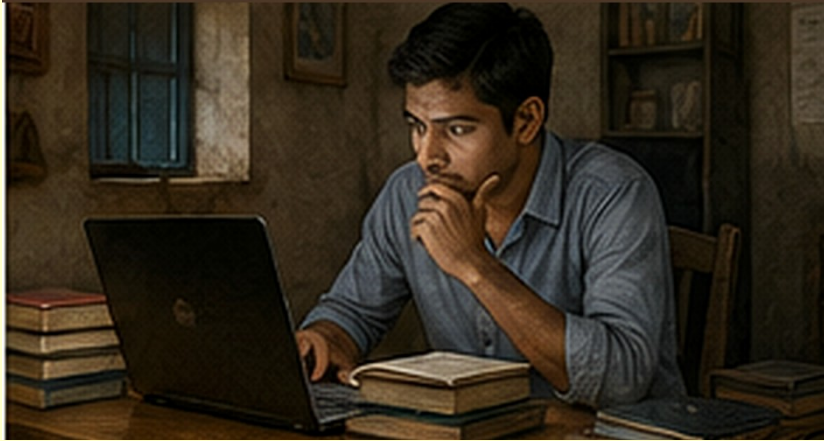
गेल बेटा झूठ वादापर, ताकल माए हर बाट रे।

गाम कहल — नाम बचाउ, नहि बिकय कोनो गात रे।

अध्याय -३४

उज्ज्वलक स्वप्न

स्वप्न पैघ, मुदा जडि माटिमे— जे स्वप्न नाम बिसरल, से जागि कऽ अकेल।



राजीवक जमानामे, गामक एकटा गरीब परिवारमे एकटा बच्चाक जन्म भेल। घरमे सामान्य आनन्द छल — सोहर गाओल गेल, गुड बाँटल गेल, आ बच्चाक नाम राखल गेल उज्ज्वल झा।

मुदा गामक लोक बूढबाकें कहियो एतेक अशांत नहि देखने छल । ओ बेर-बेर ओहि गरीब घर दिस तकैत, किछु बजबाक प्रयास करैत, फेर चुप भऽ जाइत, जेना ओ दूर भविष्यमे किछु देखि रहल हो ।

अन्तमे ओ मृदु स्वरमे कहलनि — 'पैघ स्वप्न देखू, बुच्चा, मुदा जड़ि माटिमे राखू । जे स्वप्न अपन नाम बिसरि जाइ, से जागि कऽ अकेल रहि जाइ ।' ई उज्ज्वल छल, जकर कथा आगू, मुख्य उपन्यासमे, एकटा मार्मिक मोड़ लेत ।

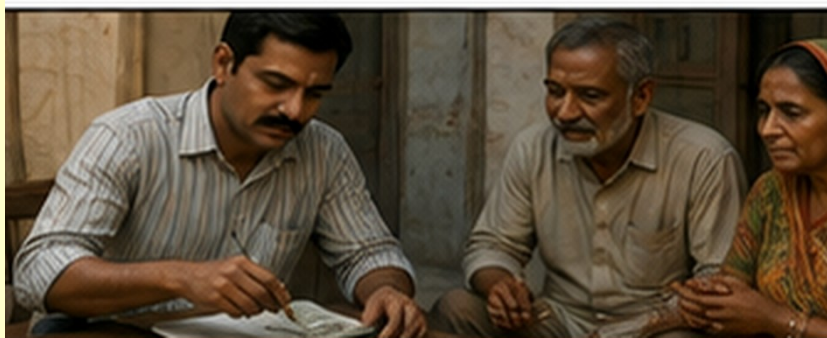
जनमल उज्ज्वल गरीब घर, सोहर गाबल द्वार रे ।

बूढबा कहल — जड़ि थिर राखू, स्वप्न नहि हो निराधार रे ।

अध्याय —३३

वकीलक कोटक छाया

कोटक छायामे न्याय नुकाइ, गाममे न्याय बाजै— वकील धारा पढ़ै, गाम नाम पढ़ै ।



दीपालीक जमानामे, गामक एकटा तेज-तर्रार युवक — नाम बटुकनाथ — कानूनक पढाई कऽ शहरमे वकालत शुरू केलक।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

गाम ओकरापर गर्व करैत छल — जे बालक कहियो नारिकेल
पातपर नाम लिखने छल, से आब अदालतमे बहस करैत छल ।

मुदा शक्तिशाली मुवक्किलक संग ओकर रस्ता बदलय लागल —
जीतक स्वाद, पाइक चमक, शक्तिक नशा ओकरा डेग-डेग ओहि
बाटसँ हटबैत गेल, जे बाट बूढ़बा देखौने रहथिन ।

बूढ़बा उदास भऽ कहलनि — ‘न्याय कोटक छायामे नुका सकै,
मुदा गाममे बाजिते रहै । वकील धारा पढ़ै, गाम नाम पढ़ै । ओ
बिसरय नहि जे साँच कोन छी ।’ प्रतिभा जँ नैतिकतासँ कटि जाय,
तँ ओ खतरनाक भऽ सकै छै ।

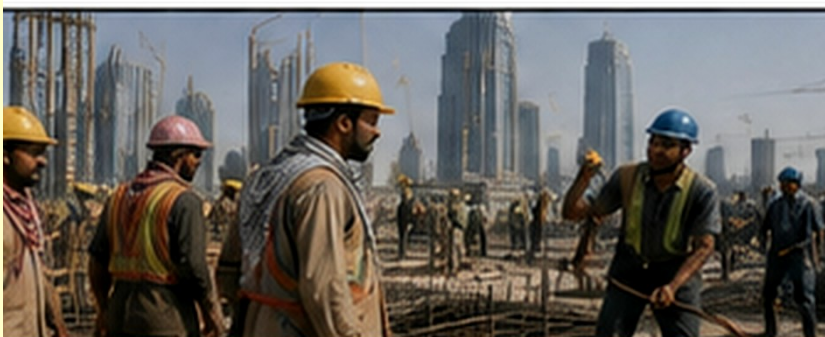
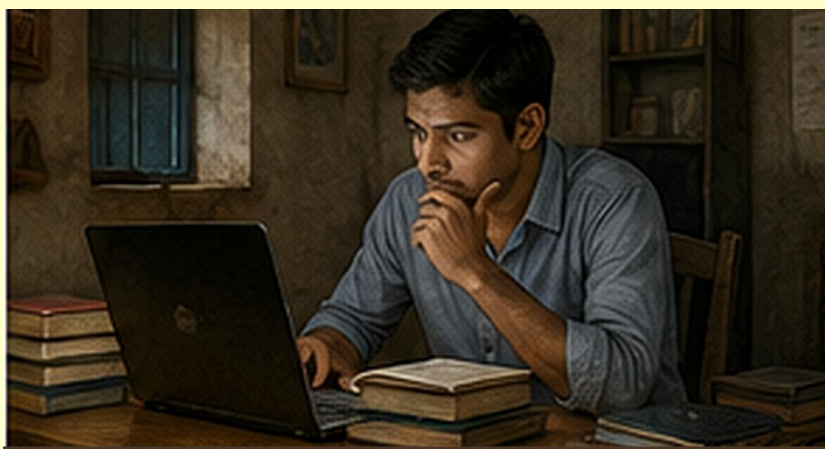
गेल बटुकनाथ वकालत, चमकल कोट-प्रकाश रे ।

धारा पढ़ल, नाम बिसरल, बढ़ल भीतर उदास रे ।

अध्याय -३२

समुद्रपारक साये

सात समुद्र पारसँ साया आबि सकै, नाम लऽ नहि जा सकै— जे
दूरसँ ठगै, तकरो पातपर चिन्ह रहि जाइ ।



दीपालीक जमानामे, वैश्विक व्यापार आ डिजिटल वित्तक जालसँ,
गामक टगीक कथा अब समुद्रपार धरि जुडल देखाइ पड़य

लागल। जे पाइ गामक गरीब हाथसँ गेल, से दूर देश धरि पहुँचल।

एकटा रिपोर्टमे दूर कोनो शहरक शीशाक ऊँच मीनारक फोटो छल, आ ओहि मीनारक भीतर बसल कोनो अनदेखल शक्तिक चर्चा, जे हजारों मील दूरसँ हजारों लोककँ ठगैत छल।

बूढ़बा कहलनि — ‘सात समुद्र पारसँ साया आबि सकै, मुदा नाम लऽ नहि जा सकै। जे दूरसँ ठगै, तकरो पातपर चिन्ह रहि जाइ। हिसाब राखू — पात मन राखै छै, जखन आँखि नहि देखि सकै।’ अभिलेख, अनदेखल अपराधीक विरुद्ध सभसँ पैघ हथियार छी।

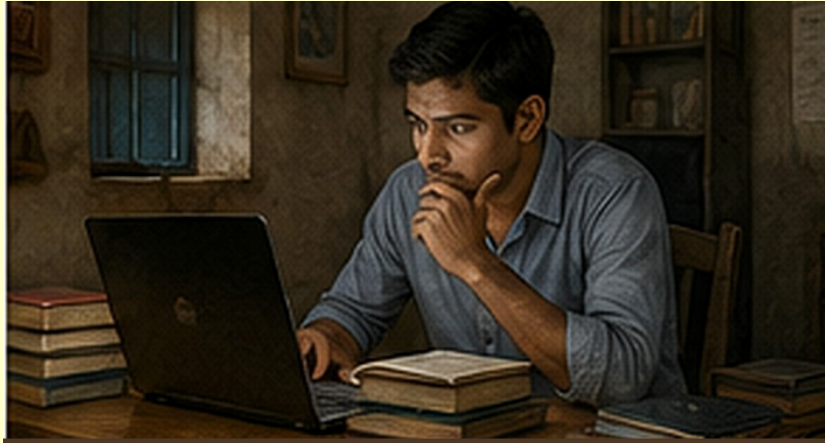
उठल शीशा-मीनार दूर, ठगल सात समुद्र-पार रे।

पातपर चिन्ह रहल तैयो, राखल गाम हिसाब-सार रे।

अध्याय —३१

सत्यव्रतक मौन

जे बहुत काल चुप रहल, तकर एक बोल सभसँ भारी— सत्यव्रतक मौन सेहो एकटा गवाही छल।



अभिनवक जमानामे, गामक एकटा शांत, ईमानदार युवक —
नाम सत्यव्रत मेहता — नगरक एकटा बैंकमे नौकरी पओलक। ओ

ओहि तरहक मनुष्य छल जे बेसी नहि बजैत, मुदा सभटा गहराइसँ देखैत छल ।

धीरे-धीरे ओ किछु संदेहास्पद खाता देखय लागल — पैसा आबैत, तुरंत आगू बढ़ि जाइत, बिनु स्पष्ट कारणक; लाखों अबैत, आ पल भरिमे गायब भऽ जाइत । किछु गड़बड़ छल ।

ओ चुप रहि, बिनु ककरो कहने, सभटा देखैत, नोट करैत, सत्य जुटबैत रहल । बूढ़बा कहलनि — ‘जे बहुत काल चुप रहल, तकर एक बोल सभसँ भारी होइ छै । सत्यव्रतक मौन सेहो एकटा गवाही छल ।’ धैर्यवान् साक्षी, सभसँ खतरनाक अपराधीक हेतु सभसँ पैघ भय छी ।

चुप सत्यव्रत बैक-कोन, देखल हर लेनदेन रे ।

जुटल मौनमे गवाही, भारी भेल ओ चैन रे ।

अध्याय —३०

गोप कुमारक दस्तावेज

जे लिखल राखलक, से समय बचवै— दस्तावेज देह नहि, नाम बचवै छै ।



सत्यव्रतक जमानामे, गामक एकटा आर युवक — नाम गोप कुमार — यादवानन्द आ विभाक परम्पराकें आगू बढ़ाबैत, अभिलेखीकरण आ अनुसंधानमे अपन जीवन लगा देलक। जे

बालक कहियो नारिकेल पातपर नाम लिखने छल, से आब पुरान नक्शा, पुरान पंजी आ नव डिजिटल अभिलेख — सभटा एक ठाम जोड़य लागल।

जे नाम यादवानन्द रातिक अन्हारमे लिखने रहथिन, जे कागच विभा सूचनाक अधिकारसँ आनने छल — गोप कुमार सभकँ एक सूत्रमे बान्हलक। ओ बुझैत छल जे बिखरल सत्य कमजोर होइ छै, मुदा जुड़ल सत्य अजेय।

बूढ़बा कहलनि — ‘जे लिखल राखलक, से समय बचबै। दस्तावेज देह नहि, नाम बचबै छै।’ गोप कुमार आगू चलि कऽ पूरा जालक भेद खोलनिहार बनल।

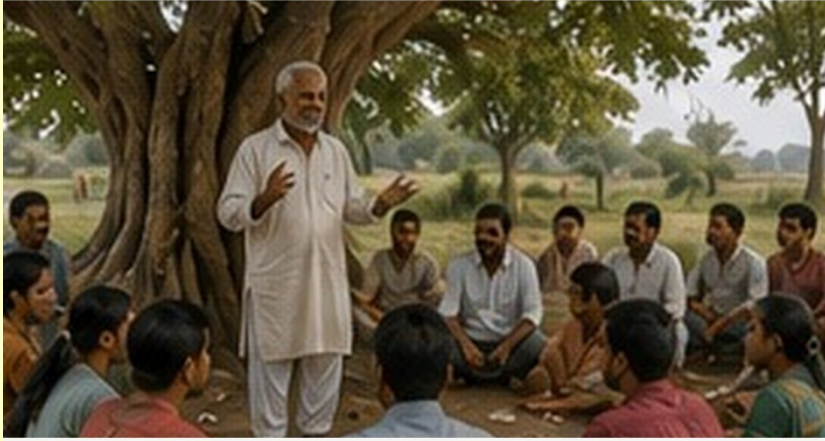
जोड़ल गोप पुरान-नव, बान्हल बिखरल तार रे।

दस्तावेज बचा लेल नाम, समयकँ देल हरा रे।

अध्याय -२९

चन्द्रपालक सपना

सपना जकर आँखिमे, धोखा तकर पएरमे— जे बिनु बुझल हस्ताक्षर केलक, से जालमे फँसल।



गोप कुमारक जमानामे, गामसँ जुड़ल एकटा दूरस्थ सम्बन्धी परिवारमे, मेरठमे, एकटा बच्चाक जन्म भेल — चन्द्रपाल बत्रा। ओ परिवार बरखों पहिने गाम छोड़ि, नगर-नगर भटकल छल।

गामक लोककें अचरज भेल — बूढ़बा एहन बच्चाक हेतु किएक चिन्तित छथि, जे गामसँ सैकड़ों मील दूर, कोनो अनचिन्हार शहरमे जन्मल? मुदा बूढ़बाक दृष्टि सीमासँ बान्हल नहि छल।

बूढ़बा कहलनि — ‘सपना ओकर आँखिमे, मुदा धोखा ओकर पएरमे भऽ सकै। जे बिनु बुझल हस्ताक्षर करै, से जालमे फँसि जाइ। कियो, कहियो, ओकरा हस्ताक्षरसँ पहिने पढ़ब सिखा दिअय।’ चन्द्रपाल, आगू, अनजानहिमे एकटा पैघ जालक हिस्सा बनत।

जनमल चन्द्रपाल दूर मेरठ, सपना आँखिमे भोर रे।

बिनु बुझल जे हस्ताक्षर, फँसल जालक ठोर रे।

अध्याय -२८

राघवक कोड

जे भाषा यन्त्र बुझै, से गाम नहि बुझै— मुदा कोडक भीतरो एकटा नाम नुकाएल रहै छै।



अभिनवक परिवारक एकटा शाखामे, नगरमे, राघव नामक एकटा बच्चा जन्म लेलक, जकर मस्तिष्क कोड आ यंत्रक हेतु असाधारण

छल। छोटहि उमरमे ओ कम्प्यूटरक भाषा सहजतासँ सिखि लेलक।

किशोर उमरमे ओ एहन काज केलक जे लोककेँ चकित कऽ देलक — कोनो जटिल यंत्र ठीक कऽ देलक, कोनो नुकाएल गलती पकड़ि लेलक। मुदा ओ असाधारण प्रतिभा दुनू दिस — नीक आ अधलाह — जा सकैत छल।

बूढ़बा कहलनि — ‘जे भाषा यन्त्र बुझै, से गाम नहि बुझै। मुदा कोडक भीतरो एकटा नाम नुकाएल रहै छै। ओ अपन हुनरसँ नाम उधारय, नुकाबय नहि।’ प्रतिभाक दिशा, ओकर मोलसँ बेसी महत्वपूर्ण छी।

सिखल राघव यन्त्र-भाषा, कोडक गहन विचार रे।

भीतर कोडक नाम नुकाएल — उधारय, नहि नुकाबय-बार रे।

अध्याय -२७

आरुणिक निर्माण

जे बनबै, से पहिने अपनाकेँ गढ़ै— आरुणि छपाकसँ पहिने अपन आँखि गढ़लक।



गोप कुमारक जमानामे, गामक एकटा युवा — नाम आरुणि —
इंजीनियरिंगक पढाई कऽ, पुल आ बान्ह-निर्माणक काजमे जुटल ।
ओ नन्दक बाबा छलाह ।

ओ अपन बचपनक बाढ़िक कथा आ इन्द्राणीक पूर्व-चेतावनी मोन राखि, गामक पुरान बान्हकें नव रूप देलनि — माटिक बान्हक जगह पक्का बान्ह, आ बाढ़िक पूर्वानुमानक हेतु नव यंत्र।

मुदा ओ ई सेहो जनैत छलाह जे सभसँ मजगूत बान्ह एकटा जागल, ईमानदार आँखि छी। बूढ़बा कहलनि — ‘जे बनबै, से पहिने अपनाकें गढ़ै। आरुणि छपाकसँ पहिने अपन आँखि गढ़लक।’ निर्माताकें पहिने अपन चरित्र गढ़य पड़ै छै।

बान्हल आरुणि पक्का बान्ह, राखल जागल नैन रे।

गढ़ल पहिने अपन आँखि, फेर गढ़ल घर-चैन रे।

अध्याय -२६

देविकाक गीत

गीत जकर कण्ठ, न्याय तकर स्वर— जे गीतमे नाम पुकारल, से गाम भरि गूँजल।



आरुणिक जमानामे, गामक एकटा युवती — नाम देविका —
मोहनक धुन-परम्पराकें आगू बढ़ाबैत, गामक हर पुरान लोकगीत

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

— हुलासाक, जीवन्तीक, गंगेशक — नव सुर आ नव वाद्ययंत्रसँ सजौलक ।

ओ गामक बूढ़ स्त्री सभ लग बैसैत, हुनकासँ ओ पुरनका गीत सुनैत जकरा आब बहुत कम लोक जनैत छल — कोनो बादिक गीत, कोनो सोहर, कोनो समदाउन, कोनो अकालक टेक — आ सभकेँ अपन कण्ठमे बचा लेलक ।

बूढ़बा कहलनि — ‘गीत जकर कण्ठ, न्याय तकर स्वर । जे गीतमे नाम पुकारल, से गाम भरि गूँजल ।’ गीत, स्मृतिकेँ बचेबाक सभसँ मीठ आ सभसँ बलगर तरीका छी ।

गाबल देविका पुरान गीत, नव सुरमे भरल जान रे ।

गीतमे नाम पुकारल जे, गूँजल गाम-वितान रे ।

अध्याय - २५

मीराक निजता

जकर कथा, तकर अनुमति— नाम नमूना नहि, मीराक कथा
मीराक अपन ।



देविकाक जमानामे, गामक एकटा तेज-तर्रार युवती — नाम मीरा
— नगरमे पढाई कऽ, डिजिटल निजता आ महिला-सुरक्षाक

विषयपर काज करय लागलि। ओ सपनाक 'डिजिटल राति-सभा'कें आगू बढौलक।

ओ देखलक जे नव-नव अन्याय जन्म लऽ रहल छल — कोनो स्त्रीक फोटो चोरा, कोनो स्त्रीक सूचना बेचि, कोनो स्त्रीक नामकें अनुमति बिनु उपयोग कऽ, केओ ओकर जीवन कठिन कऽ दैत छल।

मीरा हुनकर रक्षा करय ठाढ़ भेलि। बूढ़बा कहलनि — 'जकर कथा, तकर अनुमति। नाम कोनो नमूना नहि — मीराक कथा मीराक अपन छी।' निजता, गरिमाक एकटा रूप छी, आ हर मनुखक अधिकार।

उठल मीरा रक्षा-हेतु, चोरल फोटो-नाम रे।

कहल — कथा जकर, अनुमति तकर, नहि बिकय कोनो दाम रे।

अध्याय -२४

निशांतक बैंक

जकर खाता साफ, तकर मन थिर— मुदा जे खातामे नाम बेचलक, से हिसाबमे हारल।



मीराक जमानामे, गामक एकटा युवक — नाम निशांत —
बैंकिंगक पढाई कऽ, ग्रामीण वित्तीय समावेशनक काजमे जुटल —
गामक हर परिवारकेँ बैंक-खाता, बीमा आ ऋणक सुविधा देबय।

निशांत चाहैत छल जे पुरनका अन्याय फेर नहि दोहराय। मुदा ओ देखलक जे बैंकक कागच आ भाषा गामक अनपढ़ किसानक हेतु ओतवे अनचिन्हार छल, जतेक कहियो पंजी वा अदालतक भाषा।

तँ ओ धैर्यसँ सभकेँ सिखौलक — खाता की होइ छै, हस्ताक्षर किएक सोचि-समझि कऽ करबाक चाही। बूढ़बा कहलनि — ‘जकर खाता साफ, तकर मन थिर। मुदा जे खातामे नाम बेचलक, से हिसाबमे हारल।’

सिखौलक निशांत खाता-बात, राखू हस्ताक्षर-ध्यान रे।

साफ खाता, थिर जे मन, नहि हो हिसाब-हान रे।

अध्याय — २३

नन्दक जन्म

जे जन्म लै छै, से एकटा नव नाम अनै छै— नन्दक जन्म गामकेँ नव साक्षी देलक।



निशांतक जमानामे, आरुणिक अपन घरमे एकटा बेटाक जन्म भेल, जकर नाम राखल गेल नन्द। जन्मक राति, पीपरक साक्षी-

गाछ असाधारण रूपसँ शांत आ स्थिर छल, जेना ओ स्वयं किछु महत्त्वपूर्ण देखि रहल हो।

घरमे सामान्य आनन्द छल — सोहर गाओल गेल, नाच-गान भेल, गुड बाँटल गेल। मुदा जे लोक बूढ़बाकें चिन्हैत छल, से लक्ष्य केलक जे बूढ़बा एहि जन्मपर एकटा विशेष, गहन आशीर्वाद देलनि।

बूढ़बा मृदु स्वरमे कहलनि — ‘जे जन्म लै छै, से एकटा नव नाम अनै छै। नन्दक जन्म गामकें नव साक्षी देलक।’ ई ओएह नन्द छी, जे मुख्य उपन्यासक केन्द्रीय साक्षी बनत — गामक बारह सय बरखक स्मृतिक अगिला वाहक।

जनमल नन्द आरुणि-घर, शान्त रहल साक्षी-गाछ रे।

आयल नव नाम गाममे, भेटल नव साक्षी-आँछ रे।

अध्याय -२२

बारह सयक निकट

बारह सय बरख एक साँसमे नहि बीतल— जे गाम एतेक झेलल, से अन्त लग ठाढ़।



नन्दक जन्मक बाद, एक साँझ गोप कुमार बूढ़बाक सम्पूर्ण कालक्रम जोड़य बैसलाह — वाचस्पति मिश्रक जमानासँ आइ धरि। ओ एक-एक पीढ़ी जोड़ैत गेलाह।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

ओहि कालक्रममे सैकड़ों नाम छल — हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव, रत्ना, मालती, सावित्री, आ हुनकर बाद अनगिनत पीढ़ी। एहि सभ नामक बीच, एकटा नाम हर पीढ़ीमे थिर ठाढ़ छल — गाम स्वयं, ओकर स्मृति, ओकर साक्षी।

गोप कुमार बुझलक — गाम बारह सय बरखक निकट पहुँचि गेल अछि। बूढ़बा कहलनि — ‘बारह सय बरख एक साँसमे नहि बीतल। जे गाम एतेक झेललक, से अन्त लग ठाढ़ अछि — आ अन्त सेहो एकटा नव आरम्भ छी।’

जोड़ल गोप बारह सय बरख, सैकड़ों नाम-कतार रे।

अन्त लग ठाढ़ भेल गाम, अन्तो नव-अवतार रे।

अध्याय -२१

अनन्याक प्रश्न

छोट प्रश्न पैघ गुम्बदमे दरार दै— जे पुछलक, से नाम बचेलक।



नन्दक बचपनहिमे, गामक एकटा युवा शिक्षिका — नाम अनन्या
— नारिकेल पात पाठशालाक आधुनिक शाखामे पढाबय आयलि ।

ओ ओहि तरहक शिक्षिका छलीह जे बच्चाकेँ उत्तर रटाएब नहि,
प्रश्न पुछब सिखबैत छलीह।

गामक बूढ़-पुरान, जे रट्टा-पद्धतिमे पढ़ल छलाह, पहिने चकित
भेलाह। मुदा धीरे-धीरे ओ देखलनि जे अनन्याक बच्चा सभ कोनो
बातकेँ आँखि मूनि नहि मानैत — ओ 'किएक?' आ 'केना जानी?'
पुछैत छल।

बूढ़बा प्रसन्न भेलाह — 'छोट प्रश्न पैघ गुम्बदमे दरार दै छै। जे
पुछब सिखलक, से नाम बचेलक।' ई ओएह अनन्या छी, जे आगू
नन्दक संग, गामक स्मृतिक रखबारि बनत — किएक तँ जे प्रश्न
पुछै, सैह अन्यायकेँ चुनौती दै छै।

सिखौलक अनन्या पुछब, 'किएक?' आ 'केना जान?' रे।

छोट प्रश्नें दरकल गुम्बद, बचल कतेको नाम रे।

अध्याय -२०

छपाकक पहिल हिसाब

पहिल छपाक—पहिल नाम पानिमे— जे हिसाब राखलक, से
गोहिकेँ गवाह बनेलक।



अनन्याक शिक्षाक बाद, नन्द बड़का भऽ, इंजीनियरिंगक पढाइ
कऽ, अपन बाबा आरुणिक परम्पराकेँ आगू बढ़ाबैत, एकटा पुल-

निर्माण स्थलपर काज करय गेल। ओतय ओ मजदूरक हाल देखल — टूटल झोपड़ी, कम मजदूरी, सुरक्षाक कमी।

आ एक दिन ओ एकटा एहन कथा सुनल जे ओकरा भीतर धरि हिला देलक — एकटा मजदूर पुलक काजमे पानिमे खसि गेल, आ रजिस्टरमे ओकर नाम केवल 'अनुपस्थित' लिखल गेल, जेना ओ कहियो छलैहे नहि।

नन्द ओहि दिनसँ हर नामक अपन हिसाब राखय लागल। बूढ़बा कहलनि — 'पहिल छपाक — पहिल नाम पानिमे। जे हिसाब राखलक, से गोहिकेँ सेहो गवाह बनेलक।' इएह ओ क्षण छल, जतयसँ मुख्य उपन्यासक कथा शुरू होइत अछि।

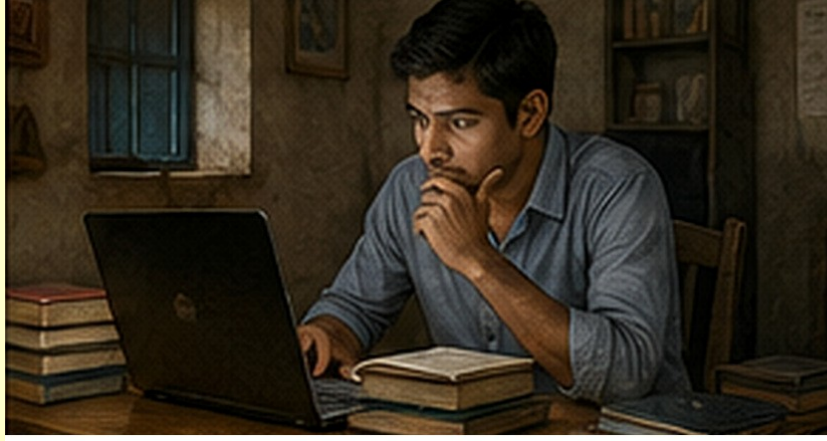
खसल मजदूर पुल-पानि, लिखल 'अनुपस्थित' नाम रे।

राखल नन्द हिसाब हर नामक, बनल गोहि गवाह-धाम रे।

अध्याय -१९

सत्यव्रतक निर्णय

जे निर्णय देरसँ आयल, से सभसँ थिर— सत्यव्रत चुप रहल, मुदा अन्तमे नाम दिस ठाढ़ भेल।



नन्दक पढाइक बीच, सत्यव्रत मेहता — आब बैंकक एकटा वरिष्ठ पदपर — अपन पुरान नोटबुक फेर सँ खोललनि, जाहिमे वर्षों पहिने लिखल संदिग्ध लेनदेनक विवरण छल ।

ओहि पैटर्नमे, पाइ एकटा खातासँ दोसर, दोसरसँ तेसर, आ अन्ततः कोनो दूर समुद्रपार खाता धरि पहुँचैत छल। किछु नाम बेर-बेर आवैत छल — किछु परिचित, किछु अपरिचित।

सत्यव्रत बहुत काल चुप रहि, धैर्यसँ सत्य जुटौने छलाह; आब ओ काज करबाक निर्णय लेलनि। बूढ़बा कहलनि — ‘जे निर्णय देरसँ आयल, से सभसँ थिर। सत्यव्रत चुप रहल, मुदा अन्तमे नाम दिस ठाढ़ भेल।’

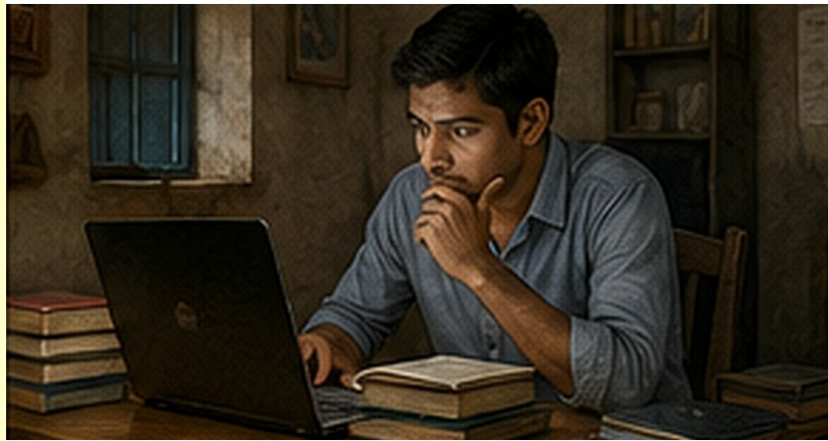
खोलल नोटबुक फेर सत्यव्रत, देखल खाता-चाल रे।

चुप रहल, फेर ठाढ़ भेल — नाम दिस बेहाल रे।

अध्याय -१८

अनन्या आ नन्दक भेंट

दू बाट एक ठाम मिलल, नव यात्रा शुरू— जकर उद्देश्य एक, तकर पएर संग चलै।



नन्द, अपन इंजीनियरिंगक पढाई पूर्ण कऽ गाम घुमल, आ नारिकेल पात पाठशालाक आधुनिकीकरणक एकटा परियोजनामे

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

अनन्याक संग काज करय लागल — गामक विरासतकेँ डिजिटल रूपमे बचावय ।

अनन्या गामक हर पुरान कथा, हर लोकगीत, हर पंजी जनैत छलीह; नन्द ओकरा डिजिटल, स्थायी रूपमे राखब जनैत छल ।
दुनूक काज एक-दोसराकेँ पूर्ण करैत छल — जेना पात आ कलम,
जेना स्मृति आ अभिलेख ।

बूढ़बा मुस्कुरा कऽ कहलनि — ‘दू बाट एक ठाम मिलल, नव यात्रा शुरू । जकर उद्देश्य एक, तकर पएर संग चलै ।’ नन्द आ अनन्या — मुख्य उपन्यासक ओ जोड़ी, जे मिलि कऽ गामक स्मृतिक रक्षा करत ।

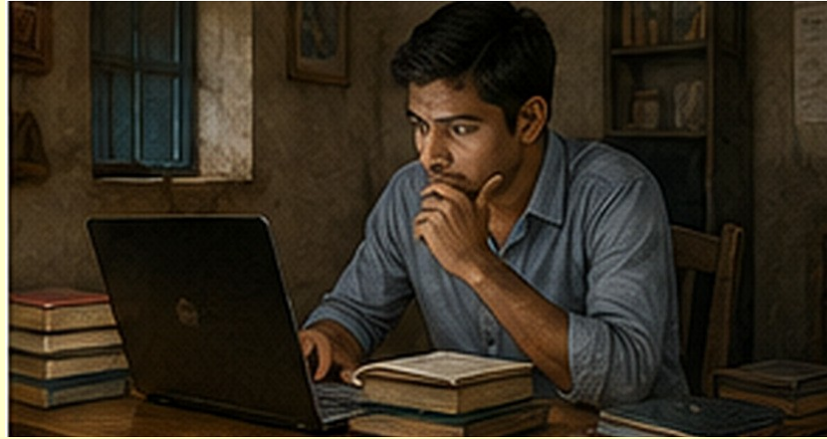
मिलल नन्द-अनन्या एक ठाम, पात-कलम भेल संग रे ।

एक उद्देश्य, एक बाट, शुरू भेल नव रंग रे ।

अध्याय -१७

शीशाक मीनारक जाल

शीशाक मीनार दूरसँ चमकै, भीतर जाल— जे चमकपर मुग्ध, से जालमे बान्हल ।



नन्दक जमानामे, समाचारमे बेर-बेर हांगकांगसँ संचालित एकटा विशाल डिजिटल ठगीक जालक कथा आबय लागल, जकर संचालक लाउ किन-हंगक नामसँ जुडल छल ।

ई जाल एहन ढंगसँ बनल छल जे केओ ओकर पूरा रूप नहि देखि सकैत छल — एक कात कोनो युवककें 'अच्छा नौकरी'क वादा, दोसर कात कोनो निवेशककें 'दुगुना पैसा'क लोभ, आ बीचमे अनगिनत नाम फँसल।

बूढ़बा कहलनि — 'शीशाक मीनार दूरसँ चमकै, भीतर जाल। जे चमकपर मुग्ध, से जालमे बान्हल। चमकसँ नहि भुलाउ — चमकक पाछाँक नाम पुछू।' ई ओएह अन्तरराष्ट्रीय जाल छी, जकर विरुद्ध मुख्य उपन्यासमे गाम लड़त।

चमकल शीशा-मीनार दूर, भीतर बुनल ओ जाल रे।

पुछू चमकक पाछाँ नाम, नहि तँ फँसब बेहाल रे।

अध्याय -१६

बटुकनाथक अंतिम मोड़

जे बाट गलत, तकर अन्तो मोड़ मांगै— बटुकनाथ अन्तमे अपन नाम दिस घुलल।



अनन्याक चेतावनीक कतेक मास बाद, समाचार आयल जे
बटुकनाथ हरिहरन — आब एकटा प्रतिष्ठित मुदा संदिग्ध वकील

— कतेको बडका ठगी-मामलाक बचाव-पक्षमे काज करय लागल छथि।

ओकर नाम आव शहरक ओहि वकील सभमे गनल जाइत छल, जिनका बडका दोषी अपन बचाव लेल खोजैत छलाह। ओ जीतैत छल, धनी होइत छल, प्रतिष्ठित होइत छल।

मुदा हर जीतक बाद ओकर भीतर किछु भारी होइत जाइत छल — ओ अपन बचपन, ओ नारिकेल पात, ओ फकरा मोन पडैत छल। बूढवा कहलनि — ‘जे बाट गलत, तकर अन्तो मोड़ मांगै। आ अन्तमे, बटुकनाथ अपन नाम दिस घुरल।’ कोनो मनुष्य पूर्ण रूपसँ हेराएल नहि होइ।

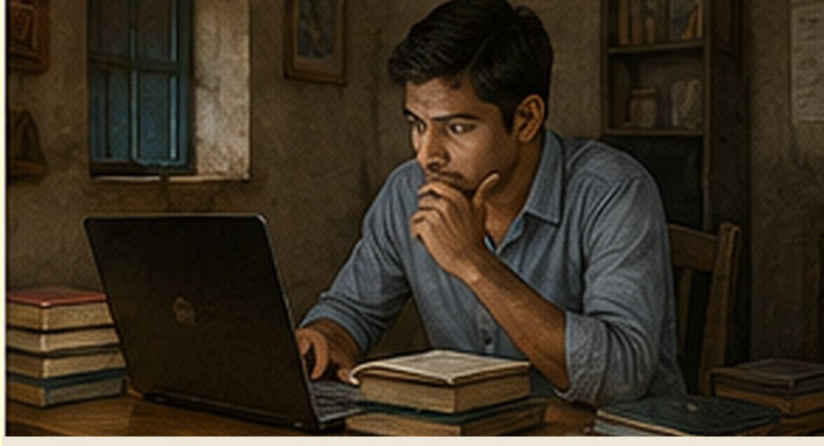
जीतल बटुकनाथ मुकदमा, भारी भेल हर जीत रे।

अन्तमे घुरल नाम दिस, टूटल गलत-प्रीत रे।

अध्याय —१५

चन्द्रपालक खाता

जे खाता बुझल नहि, तकरो हस्ताक्षर भारी— अज्ञानता सेहो जालक एकटा गाँठ।



नन्दक जमानामे, समाचार आयल जे चन्द्रपाल बत्रा — ओ दूरक
सम्बन्धी जकर नाम बूढबा बहुत बरख पहिने धेने रहथिन —

सट्टाक भारी ऋणमे फँसि गेल छल। ऋणक बोझसँ हारल, ओ ठगीक जालमे खिंचा गेल।

चन्द्रपालकेँ पूर्ण रूपसँ नहि बुझल छल जे ओ की कऽ रहल अछि — ओकरा कहल गेल छल जे ई केवल ‘कमीशनक काज’ थिक: किछु पाइ ओकर खातामे आओत, ओ आगू पठा देत, आ थोड़ राखि लेत। मुदा ओ नहि जनैत छल जे ओ एकटा पैघ जालक गाँठ बनि रहल अछि।

बूढ़बा उदास भऽ कहलनि — ‘जे खाता बुझल नहि, तकरो हस्ताक्षर भारी। अज्ञानता सेहो जालक एकटा गाँठ छी। हस्ताक्षरसँ पहिने बुझू।’ कतेको बेर, अपराधी आ शिकार, दुनू अज्ञानताक शिकार होइ छै।

फँसल चन्द्रपाल ऋण-जाल, बुझल नहि ओ काज रे।

हस्ताक्षरसँ पहिने बुझू, नहि तँ जाल-अवाज रे।

अध्याय -१४

पुलक निर्माण

पुल दू कातकेँ जोड़ै, मुदा पानिकेँ नहि बिसरै— जे पुल बान्हल, से बाढ़िक बात मन राखल।



नन्द, अपन कौशलक बलपर, गामक निकट कमला-बलानपर बनि रहल एकटा नव पुलक निर्माण-स्थलपर मुख्य इंजीनियरक

सहायक नियुक्त भेल। ई पुल गामकै, बहुत बरख बाद, ओहि पार जोड़त।

नन्द पुल बनायब सिखने छल — मुदा ओकर प्रश्न-पुच्छनिहार आँखि किछु एहन देखलक जे ओकरा चिंतित कऽ देलक — मजदूरक सुरक्षाक कमी, बिनु हेलमेटक ऊँचाइपर काज, ठेकेदारक लापरवाही, आ कागचमे गड़बड़।

बूढ़बा कहलनि — ‘पुल दू कातकै जोड़ै, मुदा पानिकै नहि बिसरै। जे पुल बान्हल, से बाढ़िक बात आ बनौनिहारक नाम मन राखल।’ विकास ओ नहि, जे मनुखक जीवन आ नामकै भुलाय।

बान्हल नन्द नव पुल, जोड़ल दुनू ओ पार रे।

बिसरल नहि पानिक बात, राखल श्रमिक-नाम-सार रे।

अध्याय —१३

गोप कुमारक संकलन

जे नाम-नाम जोड़ि राखलक, से इतिहास बनेलक— संकलन देह नहि, स्मृति बचवै छै।



गोप कुमार, आब वृद्ध, अपन जीवन भरिक संकलनकेँ एक ठाम
राखय बैसलाह — यादवानन्दक छाया-पंजीसँ लऽ कऽ, हरिपति

कविक पोथी, गंगाधरक छापाखानाक प्रयास, आ आधुनिक डिजिटल अभिलेख धरि।

जेना-जेना ओ पन्ना जोड़ैत गेलाह, ओकरा बुझायल जे सभटा धागा एक ठाम आबि रहल छल — शंख आ रजतक भ्रम, हुलासाक जलसमाधि, सुखदेवक अनाम मृत्यु, बटुकनाथक मोड़ — हर नाम एक पैघ बुनाइक एकटा धागा।

बूढ़बा कहलनि — ‘जे नाम-नाम जोड़ि राखलक, से इतिहास बनेलक। संकलन देह नहि, स्मृति बचबै छै।’ इएह संकलन आगू, मुख्य उपन्यासमे, अन्यायक विरुद्ध सभसँ पैघ प्रमाण बनत।

जोड़ल गोप नाम-नाम, बुनल इतिहास-तार रे।

संकलन बचा लेल स्मृति, देहसँ पैघ ओ भार रे।

अध्याय —१२

चन्ना गाछीक काँपकाँपी

गाछी काँपल, गाम सुनल—किछु होएबला छै— जे गाछी बाजै, तकरा गाम बुझै।



एक साँझ, बिनु कोनो स्पष्ट कारणक, चन्ना गाछीक हर गाछ —
पीपरसँ लऽ कऽ हर चन्नाक गाछ धरि — एक संग हल्का काँपल,
यद्यपि हवा पूर्ण शांत छल। कोनो झोंका नहि छल।

गामक लोक, ई अनुभव कऽ, भयभीत भऽ पीपर लग जुटल । बूढ़-पुरान मोन पाइलनि जे एहन कैपकैपी ओ पहिने केवल दू-चारि बेर देखने छलाह — आ हर बेर, ओकर बाद, गाममे किछु पैघ भेल छल ।

बूढ़बा चुप रहलाह, मुदा हुनकर पुरान बात मनमे गूँजल — ‘गाछी काँपल, गाम सुनल — किछु होएबला छै । जे गाछी बाजै, तकरा गाम बुझै ।’ प्रकृति आ गाम, एक-दोसराक भाषा बुझैत छल — ई ओहि पैघ घटनाक पूर्व-संकेत छल, जे मुख्य उपन्यासमे घटत ।

काँपल गाछी बिनु हवा, जुटल गाम भय-भोर रे ।

बाजल गाछी मौन-बोल, बुझल गाम ओ ठोर रे ।

अध्याय —११

बूढ़बाक अन्तिम आशीर्वाद

आशीर्वाद देह नहि, नाम दै— बूढ़बाक अन्तिम बोल अगिला पीढ़ीक बीया बनल ।



चन्ना गाछीक कँपकँपीक अगिला राति, बूढबा नन्दकँ अकेले पीपर लग बजौलनि। पीपरक तर केवल एकटा दीप जरैत छल, आ ओकर मन्द इजोतमे, बूढबाक चेहरापर एकटा गम्भीर स्नेह छल।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

नन्द चुप रहल — ओ बूढ़बाकें बचपनसँ चिन्हैत छल, ओकर हर कथा सुनने छल; मुदा आइ बूढ़बाक स्वरमे जे बात छल, से केवल कथा नहि — से एकटा विदाइ-सन, एकटा हस्तांतरण-सन छल ।

बूढ़बा आशीर्वाद देलनि — ‘आशीर्वाद देह नहि, नाम दै छै । नाम सभकें मन राखू, नन्द । साक्षी बनू ।’ आ बूढ़बाक ओ अन्तिम बोल अगिला पीढ़ीक बीया बनल — ओ बीया, जे मुख्य उपन्यासमे वृक्ष बनत ।

बजौलनि बूढ़बा नन्दकें, दीप जरल पीपर-तर रे ।

देल आशीर्वाद — ‘नाम राखू’, बनल बीया घर-घर रे ।

अध्याय —१०

पुलपर पहिल छपाक

पुलपर पहिल छपाक—पानिमे पहिल नाम— जे ओतय डुबल,
तकरो नाम पातपर उठल ।



एक राति, पुल-निर्माणस्थलपर, आकाशमे कोनो चान नहि छल,
आ नदीक धार, बरसातक बाद, अपन पूरा जोरपर छल। थाकल
मजदूर सभ अन्हारमे, बिनु पूरा इजोतक, काज कऽ रहल छलाह।

अचानक, अन्हारमे, एकटा मजदूर — जकर नाम अखनहु अस्पष्ट छल — नदीमे खसि गेल। 'छपाक'क आवाज गामक निकटतम टोला धरि सुनाइ पड़ल — ओ एक्के आवाज, जे बरख-दर-बरख, पीढ़ी-दर-पीढ़ी, गाम सुनैत आयल छल।

नन्द ठानि लेलक — ई नाम नहि हेराओत। बूढ़बाक बोल गूँजल — 'पुलपर पहिल छपाक — पानिमे पहिल नाम। जे ओतय डुबल, तकरो नाम पातपर उठल।' इएह ओ घटना छी, जतयसँ मुख्य उपन्यासक पहिल अध्याय शुरू होइत अछि।

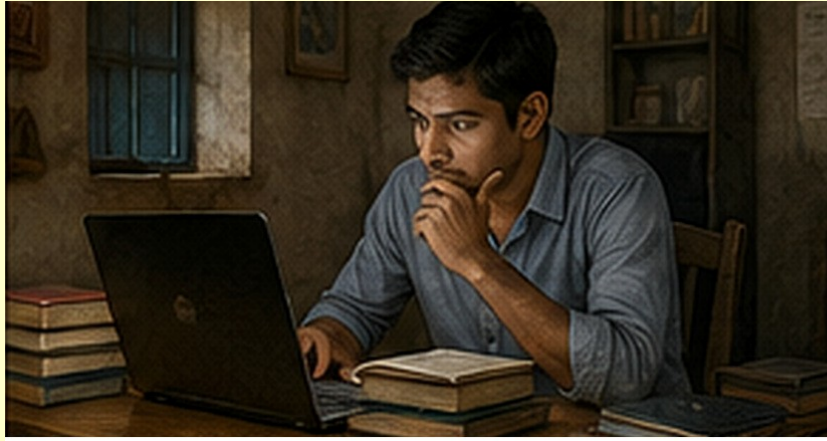
सुनल 'छपाक' अन्हार-राति, खसल श्रमिक ओ पानि रे।

ठानल नन्द — नाम बचायब, पातपर उठत ओ बानी रे।

अध्याय -९

जाँचक आरम्भ

जाँच पाइन खोदब जकाँ—पहिने कादो, फेर पानि— जे खोदब शुरू केलक, से सत्य लग पहुँचत।



पुल-दुर्घटनाक बाद, नन्द अपन डायरीमे ओहि मजदूरक नाम खोजबाक काज शुरू केलक। ओ ठेकेदारक कागज माँगलक, हाजिरी-पंजी देखलक, आ मजदूरक संगी सभसँ पुछलक।

मुदा जते ओ खोदलक, ततेक बुझायल जे ई कोनो साधारण दुर्घटना नहि छल — जे कम्पनी पुल बना रहल छल, ओकर कागच स्पष्ट नहि छल, मजदूरक नाम असली नहि छल, आ पाइक लेनदेन संदेहास्पद छल ।

बूढ़बा कहलनि — ‘जाँच पाइन खोदब जकाँ — पहिने कादो, फेर पानि । जे खोदब शुरू केलक, से सत्य लग पहुँचत । खोदैत रहू, नन्द ।’ सत्य कहियो सतहपर नहि, गहराइमे भेटै छै ।

खोदल नन्द कागच-पंजी, आयल पहिने कादो-कीच रे ।

खोदैत गेल, पानि भेटल, सत्य निकसल बीच-बीच रे ।

अध्याय -८

प्रमाणक बाहर आएब

जे प्रमाण अन्हारमे नुकाएल, से एक दिन भोर देखत— सत्य पानिक तलमे रहै, मुदा उतराइ जरूर ।



सत्यव्रत, गोप कुमारक सहायतासँ, अपन नोटबुकक सम्पूर्ण प्रमाण
एकटा विश्वसनीय पत्रकार आ एकटा ईमानदार जाँच-एजेंसी धरि

पहुँचौलनि। बरख-दर-बरख जमा भेल हर धागा आव बाहर आयल।

जेना-जेना प्रमाण बाहर आयल, तेना-तेना जालक रूप स्पष्ट होमय लागल — उज्ज्वल झाक कर्जदार बनब, बटुकनाथक कानूनी सहायता, चन्द्रपालक म्यूल एकाउण्ट, आ लाउ किन-हंगक शीशाक मीनार — सभटा एक-दोसरासँ जुड़ल, एक्के जाल।

बूढ़बा कहलनि — ‘जे प्रमाण अन्हारमे नुकाएल, से एक दिन भोर देखत। सत्य पानिक तलमे रहै, मुदा उतराइ जरूर।’ जुड़ल सत्य, बिखरल झूठसँ सदिखन बलगर होइ छै।

आयल प्रमाण अन्हारसँ भोर, जुड़ल जालक हर तार रे।

सत्य उतरल पानि-तलसँ, देखल गाम ओ पार रे।

अध्याय -७

आधा-भूतक अनुभव

आधा सत्य आधा भूत—दुनू डेराबै— जे पूर्ण नाम जनै, से आधा-भूतसँ नहि डरै।



एक राति, थाकल आ शोकाकुल, नन्द पीपरक जड़ि लग सुति गेल। ओहि दिन ओ पुल-दुर्घटनाक मरल मजदूरक नाम खोजैत रहल छल, आ ओहि शोकक बोझ ओकर देहकें थकाइ देने छल।

सपनहिमे, ओ बूढबाकें पहिल बेर किछु स्पष्ट देखलक — एकटा वृद्ध आकृति, डारिपर बैसल, धुआँ आ इजोतक बीच। ओकर चेहरा पूरा स्पष्ट नहि छल, मुदा ओकर आँखि स्नेह आ ज्ञानसँ भरल छल।

बूढबा कहलनि — ‘आधा सत्य आ आधा भूत — दुनू डेराबै छै। मुदा जे पूर्ण नाम जनै, से आधा-भूतसँ नहि डरै। पूरा नाम ताकू, नन्द, आ तोहर डर चलि जायत।’ अधूरा ज्ञान भय अनै छै; पूर्ण सत्य साहस।

सपनहिमे देखल बूढबा, धुआँ-इजोतक बीच रे।

‘पूरा नाम ताकू’, कहल — गेल डर ओ खींच रे।

अध्याय -६

गोप कुमारक अन्तिम पन्ना

अन्तिम पन्ना जकर हाथ, से कथाक भार उठबै— गोप कुमार नाम सौपि कऽ हल्लुक भेल।



गोप कुमार, अत्यन्त वृद्ध, अपन जीवन भरिक संकलनक अन्तिम पन्ना पूर्ण केलनि — वाचस्पति मिश्रसँ लऽ कऽ आइ धरिक, वृद्धबाक सम्पूर्ण कथा। ओकर हाथ आव काँपैत छल।

ओहि संकलनमे शताब्दियोंक स्मृति समाएल छल — शंख-
रजतक भ्रमसँ लऽ कऽ, हुलासाक जलसमाधि, सुखदेवक अनाम
मृत्यु, यादवानन्दक छाया-पंजी, गंगाधरक छापाखाना, आ आइक
डिजिटल अभिलेख धरि।

ओकरा पूर्ण कऽ, गोप कुमार नामक ओ पूरा भार नन्द आ
अनन्याक हाथमे सौंपि देलनि — आ हल्लुक भऽ गेलाह, जेना
जीवन भरि क बोझ उतरि गेल हो। बूढ़बा कहलनि — ‘अन्तिम
पन्ना जकर हाथ, से कथाक भार उठबै। गोप कुमार नाम सौंपि कऽ
हल्लुक भेल।’

लिखल गोप अन्तिम पन्ना, सौंपल नन्द-अनन्या-हाथ रे।

भार उतरल, भेल हल्लुक, बढ़ल कथा नव-साथ रे।

अध्याय -५

जालक उजागर होएब

जाल जखन उघरल, तखन माछ नहि, माछमारे पकड़ल— जे
जाल देखलक, से गोहिकेँ चिन्हलक।



महीनों धरि जाँचक बाद, सत्यव्रत आ नन्दक प्रमाण, अन्ततः,
ठगीक जालक स्थानीय रूपकें उजागर केलक। बटुकनाथक

स्थानीय सहभागिता आ चन्द्रपालक म्यूल-खाता, दुनू स्पष्ट भऽ गेल ।

बटुकनाथपर कानूनी कार्रवाई शुरू भेल — ओहि प्रतिष्ठित वकीलकें, पहिल बेर, स्वयं अदालतक सोझाँ टाढ़ होएब पड़ल । चन्द्रपाल, अपन अज्ञानताक प्रमाणक बादो, कठिन पुछताछक सामना केलक ।

बूढ़बा कहलनि — ‘जाल जखन उघरल, तखन माछ नहि, माछमारे पकड़ल । जे जाल देखलक, से गोहिकें चिन्हलक ।’ जे व्यवस्थाकें पूरा देखि लै छै, सैह असली अपराधीकें चिन्हि सकै छै ।

उघरल जाल, फँसल माछमार, चिन्हल गोहिक रूप रे ।

देखल जे पूरा जाल-बुनाइ, बुझल ओ अन्ध-कूप रे ।

अध्याय — ४

नामक अन्तिम सूची

जे नाम छुटल छल, से अन्तमे जुड़ल — सूची पूरी भेने गोहिक हिसाब पूरा भेल ।



नन्द, महीनों केर खोजक बाद, पुल-निर्माणस्थलपर मरल हर मजदूरक असली नाम पता लगाबय सफल भेल। ओ गाम-गाम

गेल, परिवार-परिवार खोजल, ठेकेदारक कटल कागच आ मजदूरक बिसरल पता ढूँढलक ।

तीस नाम — ओहि कथासँ जुड़ल जकरा आधिकारिक हिसाब बिसरि गेल छल । नन्द ओहि तीसो नामकें, अपन 'छुपाकक हिसाब' डायरीमे, एक-एक कऽ दर्ज केलक — हर नामक कात, ओकर परिवार, ओकर कथा, ओकर सपना ।

बूढ़बा कहलनि — 'जे नाम छुटल छल, से अन्तमे जुड़ल । सूची पूरी भेने गोहिक हिसाब पूरा भेल ।' हर नाम, हर मनुष्य, गिनतीक योग्य छी — इएह गामक बारह सय बरखक शिक्षा छी ।

खोजल नन्द तीसो नाम, जोड़ल छुटल ओ तार रे ।

सूची पूरी, हिसाब पूरा, गोहिक भेल उधार रे ।

अध्याय -३

बारह सय बरखक पूर्णता

बारह सय बरखक गोल पूरा भेल—अमावसक राति— जे आरम्भ, वैह अन्तमे टाढ़ ।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण



एक अमावस्याक राति, नन्द, अनन्या, आ गामक हर मनुष्य चन्ना
गाछी लग जुटल — कबड्डीक हेतु, ठीक ओहिना जेना सैकडों

बरखसँ जुटैत आयल छल। ई खेल केवल खेल नहि छल; ई गामक नाम-स्मरणक सभसँ पुरान अनुष्ठान छल।

ई बेर, पहिल बेर, नन्दक नाम सेहो खेलमे शामिल भेल। जे नन्द एतेक दिन केवल साक्षी छल, से आब स्वयं खेलमे उतरल — आ जखन ओकर पारीक बेर आयल, तखन गाम भरि चुप भऽ गेल।

बूढ़बा कहलनि — ‘बारह सय बरखक गोल पूरा भेल — अमावसक राति। जे आरम्भ, वैह अन्तमे ठाढ़।’ शंख-रजतक ओहि पहिल प्रश्नसँ लऽ कऽ आइक एहि कबड्डी धरि, गामक कथा एकटा पूर्ण वृत्त बनि गेल।

अमावसक राति कबड्डी, उतरल नन्द ओहि ठाम रे।

पूरा भेल बारह सय बरख, गोल भेल हर नाम रे।

अध्याय -२

अगिला पीढ़ीक वचन

जे वचन अगिला पीढ़ी लै, से गाम बचबै— नाम पकड़ि लेब उद्धार नहि, सुनब मुक्ति छी।



कबड्डीक बाद, ओहि अमावसक अन्हार आर पातर होइत, नन्द आ अनन्या, गामक हर युवाकेँ बजा, पीपर लग एकटा नव प्रतिज्ञा

लेलनि। जे नाम अखने खेलमे पुकारल गेल छल, से अखनहु हवामे गूँजि रहल छल।

युवा सभक आँखिमे ओ इजोत छल जे बूढ़बा बरख-दर-बरख देखय चाहैत रहथिन — ओ इजोत, जे कहैत अछि जे कथा मरत नहि, किएक तँ ओकरा उठाबय बला हाथ अखनहु अछि।

युवा सभ वचन देलक — ‘हम नाम केवल पकड़ि नहि राखब — हम ओकरा सुनब, बुझब, आ आगू बढ़ाएब।’ बूढ़बा कहलनि — ‘जे वचन अगिला पीढ़ी लै, से गाम बचबै। नाम पकड़ि लेब उद्धार नहि, सुनब मुक्ति छी।’

लेल वचन युवा-पीढ़ी, गूँजल नाम-हवा रे।

सुनब मुक्ति, पकड़ब नहि, बचल गाम-दवा रे।

अध्याय -१

अन्तिम साक्षी

अन्तिम साक्षी जे बाजल, से कथा हाथ बदललक— गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि—इएह गामक अन्तिम फकरा।



एक अन्तिम साँझ, बूढ़बा नन्दकेँ अकेले पीपर लग बजौलनि।
'नन्द,' ओ बजलाह, 'हम अहाँकेँ एकटा बात कहय चाहैत छी,

जकरा हम बरख-दर-बरख अनुभव करैत रहलहुँ — अहीं ओ छी, जकर बाट पूरा गाम जोहैत रहल। अहीं एकर नव साक्षी छी।’

नन्द, स्तब्ध, पुछलक — ‘बूढ़बा, अहाँकें ई कोना बुझल?’ बूढ़बा मुस्करा कऽ कहलनि — ‘किएक तँ जखन नाम डुबि रहल छल, अहाँ भागल नहि। अहाँ रुकलहुँ, आ पुछलहुँ। बस, इएह सभटा छी।’

आ बूढ़बा नन्दकें गामक अन्तिम, आ पहिल, फकरा देलनि — ‘गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि।’ नन्द ओकरा अपन डायरीमे लिखि लेलक। आ एहि तरहेँ, बारह सय बरख पुरान गढ़ नारिकेलक कथा, नन्दक हाथमे आवि गेल — आ एकटा नव कथा, मुख्य उपन्यासक कथा, शुरू भेल।

बजल अन्तिम साक्षी बूढ़बा, बदलल कथा-हाथ रे।

‘गोहि देह खाइत, नाम नहि’ — बनल नव कथा-साथ रे।

अध्याय ०

गढ़ नारिकेलः संक्षिप्त लोक-प्रस्तावना

माटि, पानि, श्रम, स्मृति आ नामक जीवित भूगोल।

कथा सुनबा सँ पहिने गाम सुनू— गाम अपन देह माटि सँ बनबै छै, साँस पानि सँ लै छै, आ स्मृति गाछ-पात मे राखै छै। एतऽ ज्ञान पोथी मे नै, हाथ-कान-देह मे बसै छै। गीतक कोनो एक लेखक नै छै—लोके ओकर रचयिता छै।

कथा शुरू होयबा सँ एक साँझ पहिने बा नारिकेल पातक पाठशालाक माटि पर बैसल छलीह। बच्चा सभ पुछलकनि — “काल्हि सँ कथा?” बा हँसलीह— “कथा सुनबा सँ पहिने गाम सुनू। जे गाम नहि सुनलक, से कथाक आधा अर्थ टा बुझत।” आ ओहि राति गढ़ नारिकेल अपने बाजए लागल—अपन माटि, अपन पानि, अपन गीत, अपन घाव आ अपन पहराक भाषा मे।

लोक-संस्कृति ओ सभ व्यवहार, विश्वास, गीत, कथा, ईलम, रीति, कला, बोली, स्मृति आ सामूहिक अनुशासनक नाम अछि जे पोथी वा शासनक आदेशसँ नहि, लोकक निरन्तर जीवनसँ बनैत अछि। ई संस्कृति पाबनि दिन मात्र देखाइत वस्तु नहि। जँ कोनो स्त्री भोरमे आँगन नीपैत छथि, जँ कोनो किसान बीआ हाथमे लऽ माटिक गन्ध सूँघैत अछि, जँ कोनो बच्चा पोखरिक गहिराइ बुझब लेल कंकड़ फेकैत अछि, जँ कोनो बूढ़ बाढ़िक

पुरान निशान देखाकऽ कहैत अछि—“एतय धरि पानि चढल छल”—तँ ई सभ लोक-संस्कृतिक काज अछि।

“गोहि सभक बीच जलसमाधि”मे पानि न्याय आ अपराधक बीचक क्षेत्र बनि जाइत अछि। जे देह पानिमे खसैत अछि, ओकर आधिकारिक नाम मेटाओल जा सकैत अछि। मुदा नदी ओकरा चिन्हैत अछि।

ईलमक संचरणमे खेलक बडु भूमिका अछि। बच्चा वर-कनियाँ खेलैत अछि तँ विवाहक सामाजिक रूप सीखैत अछि। माटिक घर बनबैत अछि तँ निर्माण।

लोककथा सामाजिक दण्डो दैत अछि। जे लोक समाजकँ हानि पहुँचबैत अछि, ओकर मृत्यु पर सामान्य शोकक बदला लोक-धिक्कारक कथा बनि सकैत अछि। जे अन्याय करैत अछि, ओकरा भूत, श्राप, उजड़ल वंश, सूखल गाछ, डूबल नाव वा नाम-मेटाइ रूपक दण्ड भेटैत अछि।

“गोहि सभक बीच जलसमाधि”मे बा गढ नारिकेलक एहि स्त्री-स्मृतिक सघन रूप छथि। ओ कागचक प्रमाणसँ पहिने जूता, गमछा, पात, देहरी आ गन्ध पढैत छथि। हुनकर “हाजिर” कहब मृतकक नामक संस्कार अछि।

खिस्सा—चन्ना गाछी लग एक असामान्य पाथर अछि जे झूठ बाजलापर ठंड आ सत्य बाजलापर गरम होइत। कचहरीसँ घुरल नन्द आरुणि एक दिन अपन हाथ ओतय रखलनि। पाथर धीरे गरम भेल।

खिस्सा—प्रत्येक बरख ओहि दिन जखन पुलक छपाक गामक स्मृतिमे घुरैत, लोक चन्ना गाछी लग चारि वस्तु रखैत—जूता, गमछा, कड़ा आ पात। कोनो मूर्ति नहि, कोनो भाषण नहि। अनन्या नाम पढैत, बा “हाजिर” कहैत छथि, नदीक दिशा सँ हवा उत्तर दैत अछि।

खिस्सा—चन्ना गाछी कटला पछाति बच्चा सभ प्रत्येक नवजातक नामे एक गाछ लगव शुरू केलक। पोखरि, डबरा, चौर, बान्ह आ जाहि विषयपर विचारीक ठामक नक्षा बनाओल गेल। नन्द आरुणि कहला—“पुरखाक धरोहर केवल पुरान वस्तु बचेनाइ नहि।

जे देखि कऽ चुप रहल, ओकर मृत्यु दू बेर। जे देखि कऽ बजल, ओकर नाम दू बेर।

छोट लोकगीत

बहू हे दीया, डकही पोखरि मे बहू हे,
काटल नामक साखी बनि राति भरि रहू हे।
पोखरिक बीच हरियर दीया,
केकर नाम पुकारै रे?

अध्याय १

चन्ना गाछीक कबड्डी

जतय जीवित चुप रहै छै, ओतय भूत सभ कबड्डी सँ मुकदमा लड़ै छै।



भूत होइए कारी, प्रेत उज्जर, राकश- लहाशक खोरनाठी जे गलतीसँ नै जड़ल, बच्चाकें गाड़ल जाइए आ ओ बनि जाइए लोथ। भूत आ प्रेतक बीच कबड्डी, राकश करैए इजोर आ लोथ अछि दर्शक। पीपरक गाछपर ब्रह्मा।

भूत, प्रेत, राकश, लोथ मृत्युक बाद, अकालमृत्युक बाद कहू। तहिना पीपरक गाछक ब्रह्मा, आ पानिमे पनिडुब्बीक झोंटामे ओझरायल लोकक आत्मा। गढ़ नारिकेलमे बहुत रास अकाल मृत्यु भेल छै।

राति ओही बिसेसर चन्ना गाछीमे पहुँचल। ओकर देह पूर्ण नहि छल। देहक जे हिस्सा गोहि सभ चिबा लेने छल, ओहि जगह पानि भरल छल।

मुदा बाढ़ि आयलाक बाद छाह कटि गेल। रेत गामक आँगन धरि चढ़ि आयल। बालक सभ राहड़ि खेतमे खटाँससँ नहि, अपन पएर नीचाँ धँसैत रेतसँ डरऽ लागल।

बहुत बरख बाद एहि अदालतक प्रेतक असल चेहरा भेटत — बटुकनाथ हरिहरन। मुदा ओहि राति ओकर नाम ककरो नहि बुझल। ओ मात्र कोट पहिरने धुआँ छल।

नन्द एहि वाक्य केँ डायरीमे लिखि लेलाह। ‘गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि।’ ओहि राति चन्ना गाछीमे बूढ़बा भूत ओही वाक्य दोहरौलनि, जखन बिसेसर, छोटू, सलामत, रजनू, आ दर्जन भर अधूरा नामक आत्मा सभ कबड्डी खेलैत छल। हुलासी पहिल बेर हँसल नहि, कानली।

भोर होएवाक पहिने चन्ना गाछीमे खेल रुकल। पात सभ पर ओस नहि, स्याहीक बून्द छल। बूढ़बा भूत अपन डारिपर फेर बैसि गेलाह।

गढ़ नारिकेलक दुआर-दुआर भोरक धुँआ उठऽ लागल। औरत सभ आँगन बुहारलक। बच्चा सभ निम्नमे करवट बदललक।

बा ओ गमछा उठा कऽ माथसँ लगौलनि। हुनका आँखिमे आँसू नहि आयल। गढ़ नारिकेलक स्त्री सभ जानैत छथि — कखनो-कखनो रोअलासँ नाम बहि जाइत अछि।

छोट लोकगीत

खेलू हे, भोरक पहिल पारी खेलू हे,
चन्ना गाछी तर नामक रखबारी खेलू हे।
चान उतरि गेल गाछी सँ, पूब दिस लाली,
भूतक खेलक बीच सुनायल कोइलीक खुशहाली।

अध्याय २

दहिन कातक गाम

नदी मेड़ काटै छै धारसँ, कागज गाम काटै छै तारीखसँ ।



“नदी मेड़ काटै छै धारसँ, कागच गाम काटै छै तारीखसँ ।” ।

“जकर मेड़ नदी खाइत अछि, ओकर मुकदमा कागच खाइत अछि ।” ।

चन्ना गाछी एहि गामक राति छल । दिनमे ओ केवल घनगर गाछी देखाइत । रातिमे ओतय सभटा मृत्युक पंचायत बैसैत ।

कलितक बालपन गामक सभ दिशामे पसरल । ओ कमला-बलानक किनार पर चलैत तँ पानि ओकर पाछाँ एक अंगुर उठि जाइत । ओ

सभागाछी लग जाइत तँ मूल-गोत्र पढैत पण्डितक आवाज रुकि जाइत ।

कलित बारह वर्षक भेल तँ ओकरा दरभंगा लऽ जायल गेल । ओ पहिल बेर गाम सँ बाहर रात्रि बितौल । ओ राति गढ नारिकेलक चन्ना गाछीमे कबड्डी नहि भेल ।

साँझमे बा गमछा आ पुरान पर्ची लऽ कऽ चन्ना गाछी गेली । स्त्री सभ सामान्यतः ओतय राति नहि जाइत । मुदा बा सामान्य स्त्री नहि छली ।

चन्ना गाछीमे ओहि राति कबड्डी नहि भेल । मृतक सभ मौन व्रतमे रहल । केवल बूढ़बा भूत एक डारि सँ दोसर डारि धरि चलैत रहलाह, जेना ककरो प्रतीक्षा करैत हो ।

अगिला दिन नन्द पुलक दफ्तरमे आवेदन लिखलाह । भाषा सीधी छल, मुदा भीतर गढ नारिकेलक पाँच पीढ़ीक काँप रहैत । ओ लिखलाह — ‘मृत मजदूर सभक पूर्ण सूची प्रस्तुत हो ।

तारीख लगिते कागच हल्का काँपल । नन्दक हाथमे ओ कंपन पहुँचल । हुनका लगल जे चन्ना गाछीमे बूढ़बा भूत कहि रहल छथि — ‘ध्यान राख ।

छोट लोकगीत

चलू यौ बटोही, दहिन कात चलू यौ,
गामक पूरा नाम लऽ कऽ संग-साथ चलू यौ ।
नदी धार बदलि सकै, सूरुज दिशा चिन्है,
गामक जड़ि माटि भीतर अपन घरकें गिन्है ।

अध्याय ३

छपाकक हिसाब

इनारमे खसल ढेपाक छपाक थम्हि कऽ अबै छै, मुदा हिसाब
माँगब नहि छोड़ै छै।



“जकर मृत्युक नाम नहि, ओकर आत्मा सरकारी बरामदामे
भटकैत अछि।”।

नन्दक भीतर चन्ना गाछीक राति हिलल। बिसेसर पासवान, छोदू,
जेकर असल नाम नहि भेटल, रातिक छपाक, गमछाक फाटल
कोना — सभ एक संग उठि कऽ बाजि उठल, जेना बरखो चुप
रहल आवाज सभ एक्के साथ मुँह खोलि लेने हो। ओ धीरे
कहलाह — ‘जे लोक चलि जाइत अछि, ओकर पएक निशान
रहैत अछि।

ओहि राति नन्द पहिल बेर नदीसँ नाम सुनवाक अभ्यास शुरू केलाह। ओ अपन कागच पर कान रखैत, पानि पर आँखि, आ भीतर गढ नारिकेलक चन्ना गाछी। नाम सभ साफ नहि आवैत।

नन्दक माथ गरम भऽ गेल। स्त्रीक देह पर काम, मुदा बहीमे नाम नहि। बच्चा पानि भरैत, बोरा सम्हारैत, ईंट चुनैत, मुदा बहीमे 'परिवार' लिखल।

चन्ना गाछीमे एहि राति कबड्डी फेर शुरू भेल। बूढ़बा भूत निर्णायक, पनिडुब्बी सीमा-रेखा, डाइन सभ दर्शक नहि, रणनीतिकार। लोथ, जे सदखन आधा मुँह खोलि देखैत छल, एहि बेर मैदानमे उतरलक।

प्रेतक दल सँ हुलासी उतरली। हाथ नहि, मुदा आवाज तेज। ओ सीमा पार करैत कहलनि — 'जकर स्त्रीक नाम पतिमे गुम, ओकर मृत्यु ककर?' पनिडुब्बी अपन झौटा सँ रेखा खिंचलक।

तेसर — सरयू, स्त्री-मजदूर, आधिकारिक रूपेँ अस्तित्वहीन।

तकर बाद पन्ना अपनहि भरैत गेल। बाहर नदी बहैत रहल। भीतर चन्ना गाछीमे कबड्डी जारी रहल।

छोट लोकगीत

हे नैया धीरे-धीरे हे, नाम लादि पार करू हे,
छपाकक अन्हरियामे दीपक कतार धरू हे।
एक छपाक सुनिते नाविक पतवार उठाबै,
देह नहि, नामो पार—ई प्रण जोर लगाबै।

अध्याय ४

तीस नाम, तीन सय लाश

बहीमे तीस नाम, माटिमे तीन सय देह— घाटाक भार सदिखन
मुर्दे उठबै छै।



सरयूक नाम तेसर पंक्तिमे छल। नन्द ओकरा देखैत रहलाह।
अक्षर स्त्रीक देह जेकाँ काँपत छल।

भोरमे ओ भोलारामकें जगौलन्हि। ‘सरयू कें चिन्हैत छी?’।

ओहि राति चन्ना गाछीमे कबड्डीक नियम बदलि गेल। बूढ़बा भूत
कहलथि — ‘आइ सँ जे पकड़ा जाएत, ओकर नाम नहि, ओकर
हिसाब पूछल जाएत।’ राकश सभ इजोर करत। प्रेत सभ पारी
बनाओत।

चन्ना गाछीमे हवा बन्द भऽ गेल। गढ नारिकेलक पुरान लोक कहैत छथि — जखन हवा बन्द भऽ जाए आ पात नहि हिले, तखन कखनो-कखनो मृतक सभ गिनती करैत छथि। ओहि राति गिनती शुरू भेल।

पहिल तारीख मिलल — दू मास बाद। नन्द बाहर निकलि कऽ हँसलाह नहि, रोइलाह नहि। हुनका चन्ना गाछीक कबड्डी मोन आयल।

राति गढ नारिकेलमे नारिकेल गाछक पात बहुत जोर सँ हिलल। चन्ना गाछीमे कबड्डीक खेल बीचमे रोकल गेल। बूढ़बा भूत सभक सामने कहल बात केलक — ‘तारीख नाम खाइत अछि।’ पनिडुब्बी पूछलक — ‘तकरा सँ के बचाओत?’ हुलासी कहल — ‘जे पात पर नाम लिखत, से।’ लोथ, जे आव आधा खिलाड़ी भऽ चुकल छल, जमीन सँ एक अंगुर ऊपर उठि कऽ बाजल — ‘तारीखक गोहि अदालतमे रहैत अछि।’

ओहि राति नन्द स्वप्नमे अदालत देखलाह। न्यायाधीशक कुर्सी पर गोहि बैसल। पेशकार तारीख पुकारैत — ‘एक छपाक, दू छपाक, तीन छपाक।’ वकील सभ नदीक पानि सँ बनल कोट पहिरने।

अध्याय समाप्त नहि भेल छल। केवल कागजक गट्टर बन्द भेल छल। कागजक गट्टर बन्द होइतहि कथाक दोसर जीवन शुरू होइत अछि।

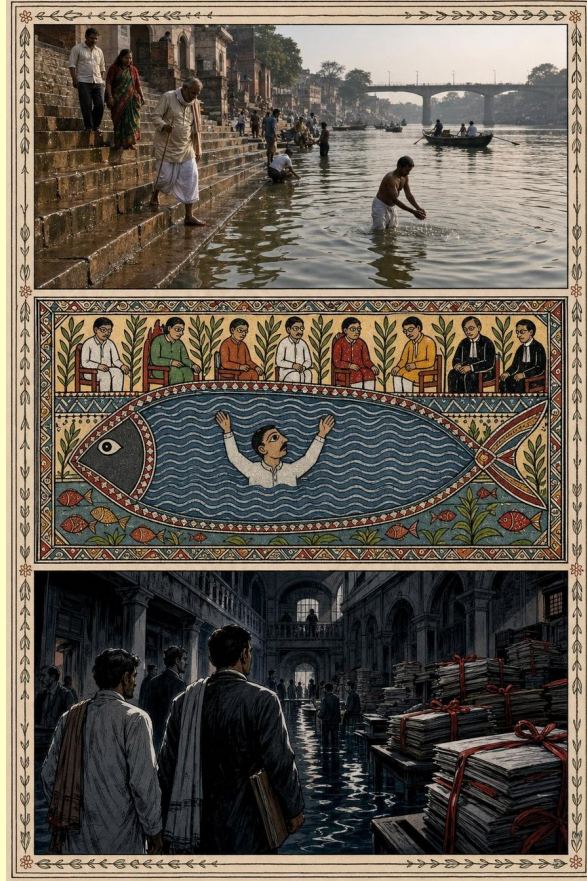
ओहि राति चन्ना गाछीमे कबड्डी फेर शुरू भेल। एहि बेर भूत सभ सीमा पार करैत एक शब्द बाजल — ‘अदालत।’ प्रेत सभ उत्तर देलक — ‘तारीख।’ राकश इजोर करैत रहल। पनिडुब्बी अपन झौटा समेटि लेलक, जेना जानैत हो जे आव लोक पानिमे नहि, कागचमे डूबयबला अछि।

छोट लोकगीत

गनू गे बहिना, नाम-नाम गनू गे,
तीस नहि, तीन सय दीपक ठाम गनू गे।
तीसपर गिनती रोकू नहि, पात जते हिलै,
हरेक संख्या पाछाँ घर, माए, सपना मिलै।

अध्याय ५ तारीखक गोहि

घाटक पानि देखाइ छै, तँ लोक बाँचै छै।



नन्द आरुणि जखन देवकीनन्दन चौबेक संग जिला न्यायालयक बरामदामे पहुँचलाह, तखन हुनका लगल जे ओ कोनो भवनमे नहि, एकटा पुरान पोखरिमे पैसल छथि। भित्ति पर धूलि काई जेकाँ जमल। कोठरी सभमे टेबुल, टेबुल पर कागजक गट्टर, कागजक गट्टर पर लाल फीता, आ फीता पर एहन गिट्टि जेना पनिडुब्बीक झौटा सूखि कऽ रस्सी बनि गेल हो — एहन रस्सी, जे बान्हैत नहि, केवल उलझावैत अछि।

चौबे वकील धीरे कहलनि — ‘बाबू, एतऽ जल्दबाजी नहि करब। अदालत अपन चाल चलैत अछि।’।

चन्द्रपाल बन्ना आगाँ आवि मुस्कुरायल — ‘आरुणि बाबू? बहुत भावुक मामला अछि। मुदा अदालतमे भावना नहि, बन्दोबस्त चलैत अछि।

एहि ‘संकेत’ शब्दक जन्म ओहि बरामदामे भेल कि नहि, केओ नहि जानैत। मुदा बहुत वर्ष बाद चन्द्रपाल बन्नाक सभ अपराध ‘संकेत’ सँ चलत — गायब होएबला संदेश, गुप्त संकेत, सयमे भाग, दोसरक नामपर चलाओल खाता, यन्त्रपर चलयवला अरेस्ट। ओहि दिन ओ केवल अदालतक बरामदामे ठाढ़ एक छोट दलाल छल।

साँझ नन्द अदालत सँ घुरलाह तँ चन्ना गाछीमे असामान्य सभा छल। बूढ़बा भूत कबड्डीक बीचमे नियम बदलि देलक — ‘आइ सँ खेलक नाम तारीख’।

बूढ़बा कहलथि — ‘जे पारीमे जाएत, ओकरा साँस रोकि नाम बजएबाक। दोसर दल ओकरा रोकत — “लिखित हिसाब नहि”, “न्यायाधीश नहि”, “वकील नहि”, “कागजक गट्टर नहि”। जकर साँस टूटि जाएत, ओकर नाम कागचमे डूबत।’।

सत्यव्रत मेहता संयोग सँ चौबेक दफ्तर लग नन्द सँ भेटलाह। साँझक उजास भित्ति पर झुकल। सत्यव्रत धीमे कहलनि — ‘आरुणि बाबू, जे किछु अछि, बहुत प्रति बनाउ।

दूर अदालतक मालखानामे बिसेसरक जूता फेर टपकल — छपाक। गंगा कात गोहि एक बेर पानि सँ माथ बाहर निकाललक। शहरमे सत्यव्रत मेहता निन्नमे करवट बदललाह।

गढ़ नारिकेलक नारिकेल गाछक पात ओहि राति देर धरि हिलैत रहल। पात अपनहि बाजैत छल — तारीख, तारीख, तारीख — आ प्रत्येक तारीखक बीच एक नाम चमकैत छल, जे कागच पर नहि, पानि पर लिखल गेल छल — जेना पानिये स्वयं सभटा नाम केर अन्तिम, अटूट डायरी होइ, जकरा कोनो तारीख, कोनो मुहर, कोनो लाल फीता कहियो मेटा नहि सकैत।

छोट लोकगीत

उगू हे सुरुज, तारीखो पर उगू हे,
बरखों सँ ठाढ़ि विधवाक आँगन जगू हे।
तारीखक पानि गहीर, मुदा सूरज रोज उगै,
एक-एक सुनवाईपर जनक साहस संग रहै।

अध्याय ६ हार्वर्डक एथिक्स

मञ्चपर चढ़ल नीक-बेजायक समझक जूता पोंछबासँ पहिने
देखिहऽ— तरबामे केकर रक्त लागल छै।



ओहि दिन हार्वर्डक सभागारमे बाहर हिम पड़ि रहल छल। भीतर गरम इजोत छल, चिक्कन काटक कुर्सी, चमकैत फोनक पर्दा, आ सभक गलामे लटकैत परिचय-पत्र। परिचय-पत्र पर नाम छल, संस्था छल, देश छल।

ईरा आरुणि सभसँ पाछाँ बैसल छलि। ओकरा एहि तरहक सभागार सदा सुन्दर लगैत छल — ईंट पुरान, वाक्य नव, आ लोक सभ एहन ढंगे बाजैत जेना संसारक सभ समस्या भाषणक

बाद थोड़े कम भऽ जाएत। मुदा ओहि दिन ओकर कानक भीतर किछु आर बाजि रहल छल।

ईरा एहि आवाजकें बचपनसँ चिन्हैत छल। जखन ओ अपन बा सँ फोन पर गामक कथा सुनैत छल, बा बीच-बीचमे चुप भऽ जाइत छलीह। फेर कहैत छलीह — ‘तोहर परदादा नन्द आरुणि गंगाक पानिमे नहि, सरकारी कागचमे डुबल छलाह।’ तखन ईरा हँसि दैत छल।

कार्यक्रमक बाद भोजन-सभा छल। चिक्कन प्लेट, छोट-छोट पकवान, सभक हाथमे काँचक गिलास। ब्रूम लोक सभक बीच एहन सहज घूमि रहल छलाह जेना मंच पर बहल पानि केवल ईराक भ्रम रहल।

गढ़ नारिकेलमे ओही राति चन्ना गाछीमे कबड्डी बन्द छल। बूढ़बा भूत डारि पर बैसल छलाह। हुलासी इनारक कात पर झुकल छलीह।

भोर होइत-होइत तीन ठाम तीनटा काम शुरू भऽ चुकल छल। हार्वर्डमे ईरा उत्तरक प्रतीक्षा करैत छल। दिल्लीमे सत्यव्रत मूल लिखित हिसाब मंगाबय लेल नोट तैयार करैत छलाह।

आ चन्ना गाछीमे भूत सभ फेर कबड्डी खेलय लगल। मुदा एहि बेर कबड्डीक लय बदलि गेल छल। एक दल ‘जलसमाधि’ बजैत छल, दोसर दल ‘सयमे भाग।’ बीचमे नव युवक, जे फोनक पर्दाक गोहि सँ मरल छल, चुपचाप ठाढ़ छल।

आ गाछी पर पहिल उजास उतरला सँ पहिने पनिडुब्बी पानिमे झुकि कऽ कहलक — ‘विदेशमे जे नीक-बेजायक समझ बजल, ओकर आवाज एतय गोहि सुनि रहल अछि।’

पानिक नीचाँ सँ उत्तर आयल — ‘हम सेहो।’

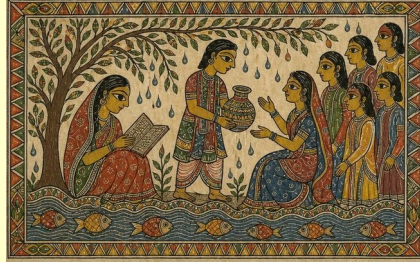
छोट लोकगीत

उड़ू हे पात, सात समुन्दर पार उड़ू हे,
मिथिलाक श्रमक साँच लऽ सभागार जुड़ू हे।
गामक हरियर पात उड़ि हिमक देश पहुँचै,
मंचक सोना शब्द बीच मजदूरक नाम गुँजै।

अध्याय ७

श्वासक भाव

जखन साँसक भाव बाजार तय करए लागै, तखन भूतो खेल छोड़ि जीविते दिस ताकए लागै छै।



श्वासक भाव बाजारमे तय होमय लागल तखन गढ नारिकेलक भूत सभ पहिल बेर खेल छोड़ि कऽ जीवित लोककें देखय लगल — एहन ध्यानसँ, जेना कोनो पुरान चिकित्सक अपन नाडी पर हाथ राखने होथि, मुदा नाडी अपनहि नहि, समस्त संसारक होइक। अकाल-मृत्यु हुनका सभ लेल नव बात नहि छल। चन्ना गाछीमे जे कतार रहैत छल, ताहिमे इनारक जल, नदीक धार, साँपक दाँत, डाइनक छाह, पुलक पाया — सभ तरहक मृत्यु पहिने सँ उपस्थित छल।

रातिमे कबड्डीक मैदान पर प्रेत सभ गोल बैसल छल। राकशक इजोर मद्धिम। लोथ मुँह आधा खोलने, मुदा दर्शकक हँसी ओकरामे नहि।

फेर कहलनि — ‘तखन नाम लिखैत रह। जे मरत, ओकर नाम लिख। रोग सँ मरल, अस्पताल सँ मरल, साँस लेल हवा बिनु मरल, दवा बिनु मरल — सभ अलग-अलग लिख।

ओहि समय चन्द्रपाल बत्रा महामारीमे खूब बढल। अदालत बन्द, थानाक डर, अस्पतालक दर, परिवारक हडबडी — ई सभ ओकरा लेल नब खेत छल। मेरठक एल.एल.बी. ओकर देवाल पर टँगल छल।

गोप केँ नहि मालूम छल जे आरुणि नन्दन नामक लोक दिल्लीक दोसर कोनामे एम्बुलेंस सुनि रहल अछि। ओकरा नहि मालूम छल जे ईरा आरुणि हार्वर्डमे उत्तरक प्रतीक्षा करैत अछि। ओकरा नहि मालूम छल जे सत्यव्रत मेहता पुरान लिखित हिसाब मांगि रहल छथि।

भोरक पहिने, जखन शहरक धुँध आ गामक कुहासा एक्के रंगक होइत अछि, चन्ना गाछीमे बूढबा भूत सभक सामने कहल बात केलक — ‘आइ सँ नव मृत्यु सभक अलग सूची बनत। जे रोग सँ मरल, जे लोभ सँ मरल, जे साँस लेल हवा बिनु मरल, जे बिलमे मरल, जे मोबाइल साधनमे मरत — सभक नाम अलग।’

समाचारमे कहल गेल — ‘स्थिति नियंत्रणमे अछि।’ अस्पतालक बाहर पंक्ति लंबा छल। कम्पनीक खाता चलि रहल छल। चन्द्रपाल बत्रा संकेत पर अगिला संदेश लिखि रहल छल।

ओ कर्सरक लग गोप पहिल पंक्ति लिखलक: ‘श्वासक हिसाब, जलसमाधिक हिसाब सँ अलग नहि।’

तखने बहुत दूर गढ नारिकेलमे पनिडुब्बी पानिमे डूबल खाली शीशी केँ उठा कऽ चूमलनि, आ शीशीक भीतर सँ एक बून्द टपकल — छपाक।

छोट लोकगीत

ललना रे, साँसक सोहर गाबू हे,
 अँगना-अँगना पवनक अँचरा छाबू हे।
 बौआक पहिल साँसपर सोहर गाम गबैत,
 पवन मुफ्त अँचरा भरि जीवन-रस बहबैत।

अध्याय ८ स्क्रीनक गोहि

फोनक पदामे देह नहि रहै छै, मुदा देह डुबेबा जोग पूरा पानि रहै छै।



चन्ना गाछीमे ओहि राति भूत सभ देर धरि निन्न नहि गेल।
अकाल-मृत्यु सभक सूची बनि गेल छल, मुदा बूढ़बा भूतक माथ
पर एक नव चिन्ता छल। ओ देखैत छलाह जे गाछीक बाहरी
किनार पर एक नव किसिमक छाह ठाढ़ अछि।

एहि वाक्य पर चन्ना गाछीमे हुलासी क्रोध सँ काँपि उठलीह।
हुनकर हाथ नहि छल, मुदा ओ विनु हाथक हवा झपटलनि।
गाछीक धूलि घूमि गेल।

गोप एहि मार्ग केँ देखलक। ओकर फोनक पर्दा पर रेखा बनैत गेल — गढ़ नारिकेलक युवक सँ मुन्नाक खाता, ओतयसँ भुगतान द्वार, ओतयसँ राघव सोमानी, ओतयसँ लाउ किन-हंग, ओतयसँ ब्रूम-काल्डरक ‘सामुदायिक नवाचार निधि’। ओ कुर्सी सँ उठि गेल।

ओहि राति उज्ज्वलक आत्मा चन्ना गाछीमे आयल — नव, भयभीत, अपन पुरान देहक भार बिनु, मुदा फोनक पर्दाक चमकसँ अखनहुँ आधा-अन्हार। भूत सभ कबड्डी खेलि रहल छल, मुदा ई नव आत्मा पारीमे उतरि नहि सकल। ओकर हाथमे फोन छल, फोनक पर्दा फाटल, मुदा एखनो चमकैत।

उसी राति देविका साह उज्ज्वलक फोन गोप कुमार तक पहुँचएबाक ठानलक। फोन फाटल छल, मुदा भीतर चैट, धमकी, खाता, फोनक पर्दा रिकार्ड, यन्त्रपर चलयवला अरेस्टक नकली नोटिस, सभ छल। ओ फोन अनन्या उम्रक एक बच्चा सँ शहर पठाओल गेल, किताबक जिल्दक भीतर।

कागच प्रिन्टर सँ बाहर आयल। ताजा स्याहीक गन्ध। गोप ओकरा माथ लगौलक।

पानि सँ आवाज आयल — छपाक। ई पानिक नहि, फोनक पर्दा टूटबाक आवाज छल।

भोरक समाचारमे कहल गेल — ‘ऑनलाइन खेल उद्योगमे नव अवसर।’ उसी समय गोप कुमारक कागजक गट्टरमे अध्यायक नाम खुलल — ‘फोनक पर्दाक गोहि।’ ओ जानि गेल जे जलसमाधिक अगिला रूप शुरू भऽ चुकल अछि। नदी आब जेबमे रहैत अछि, आ गोहि अँगूठाक निशान सँ खाता खोलैत अछि।

छोट लोकगीत

जागू हो जवान, नेहक पहरा लगाउ हो,
परदाक अन्हरियामे संगक दीप जराउ हो।
परदा चमकै राति जखन, संगमे मित्र रहू,
हारल अंकसँ जीवन पैघ—ई बात रोज कहू।

अध्याय ९ देहक बाजार

जे कागजक थैलाक नाम 'अतिथि-सेवा', ओकर भीतर सदिखन ककरो बेटीक दाम लिखल रहै छै।



ओहि राति चन्ना गाछीमे कबड्डी बन्द भऽ गेल। ई असामान्य बात छल। भूत, प्रेत, राकश, लोथ, पनिडुब्बी आ डाइन सभक संसारमे खेलक नियम मृत्यु सँ पुरान छल।

हुलासी, जे इनारक जलमे अपन प्रतिबिम्ब तकैत-तकैत खसलि आ जेकर मृत्यु पर गाम झूठ लिखि देलक, ओ बूढ़बासँ पूछलनि — ‘आइ खेल किए नहि?’।

ओहि समितिक संचालिका छल — मालविका ग्रीन। नाममे हरियर, दफ्तरमे पौधा, वेबसाइट पर हँसैत बच्चा, आ सभागारमे नारा — “गरिमा, फेर बसावय, आत्मनिर्भरता।” मुदा मालविकाक निजी फोनमे चन्द्रपाल बत्राक संदेश छल: ‘दू पाहुन बाहरसँ आयल।

फूलमति गढ नारिकेलक नहि छली, मुदा ओकर नानी गढ नारिकेलक चन्ना गाछी लगक टोले सँ छली। नानी कहैत छली — “जे राति कुरकुर बिनु कारण रोए, बूझू कोनो आत्मा बाट माँगैत अछि।” फूलमति ओहि होटलमे कतेको राति कुरकुरक आवाज सुनैत छल, जबकि होटलमे कुरकुरक प्रवेश निषिद्ध छल।

एहि वाक्यक आवाज नीचे सभागार तक नहि पहुँचल। मुदा चन्ना गाछीमे पहुँचल। हुलासी उठि ठाढ़ भऽ गेलि — बिनु हाथक देह, मुदा एहि क्षण ओहि देहमे एतेक बल छल जेना बारह सय वर्षक मौन एकहि पलमे टूटि पड़ल हो।

राति देरमे सत्यव्रत मेहता अपन सरकारी आवास पर ओही विडियो देखैत छलाह। हुनका कागजक गट्टर पर टिप्पणी देबाक छल — “स्वैच्छिक सेवा अनुबन्धक वैधता।” ओ विडियो रोकलनि। फूलमतिक आवाज बार-बार सुनाइ देलक — ‘हमर नाम फूलमति अछि।’

गोप कुमार अपन कागजक गट्टरमे नव शीर्षक जोड़लक — ‘देहक बाजार’ — एहन शीर्षक, जकरा लिखिते ओकर हाथ भारी भऽ गेल, जेना अक्षर स्वयं अपन वजन जनैत होइक। ओहि शीर्षकक नीचाँ तीन कॉलम बनौलक — भय, भुगतान, संरक्षण। भयक कॉलममे फूलमति।

नारिकेल गाछक पात भोरक बयारमे हिलल — कोमल, मुदा दृढ़, जेना कोनो थाकल गवाह अन्तिम बेर अपन साक्ष्य दोहरा रहल होइक। पातक घर्षणसँ आवाज आयल — “नाम।” फेर दोसर आवाज — “मञ्जूरी।” फेर तेसर — “भय।” आ अन्तमे एक भारी छपाक, जे पानिमे नहि, कागचक भीतर भेल।

उपन्यासक एहि राति बाद गोपक कागजक गट्टरमे अपराधक जाल स्पष्ट भऽ गेल — पुलक मजदूर, कोरोना-कालनक श्वास, फोनक पर्दाक जुआ, देहक बाजार। सभ पानि पर बनल गोल घेरा।

छोट लोकगीत

गाबू गे सखिया, गरिमाक मंगल गाबू गे,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

फूलमतिक माथ ऊपर आदरक अँचरा छाबू गे ।

देह मंदिर नहि कहू मात्र—देह अपन अधिकार,

मञ्जूरी बिना कियो नहि खोलय ओकर द्वार ।

अध्याय १०

निजताक ब्लैकमेल

देह बिकाइ छै एक बेर, अपन निजी बातक अधिकार बिकाइ छै
बेर-बेर।



ओहि राति चन्ना गाछीमे भूत सभ फेर कबड्डी खेलि रहल छल,
मुदा खेलक रेखा बदलि गेल छल। पहिने माटिपर रेखा खिंचल
जाइत छल। आब पनिडुब्बी अपन भीजल केशसँ हवामे रेखा
खिंचैत छल।

हुलासी पारीमे गेलि। रेखा छुलिते ओकर इनारक राति सभकँ
देखाइ पड़ल — ओ झुकलि, जलमे अपन चेहरा देखलक, पएर
फिसकल, आ गाम ओकर मृत्युकँ आत्महत्या कहि देलक। हुलासी
काँपलि नहि।

ई वाक्य मीरा लेल ओहि तरहक छल जेना चन्ना गाछीमे मृत स्त्रीक कानमे ओकर नाम घुरि जाए — भार हल्का नहि भेल, मुदा भार उठएवाक शक्ति बढ़ि गेल। ओ फोन काटि कऽ गोप कुमारकें संदेश लिखलक — “धमकी दऽ कऽ दबाव दस्तावेज भेजि रहल छी। मुदा एक शर्त अछि — एहि मुद्दाकें समलैंगिकता नहि बनाउ।

पहिल पन्ना — चन्द्रपाल बन्नाक सहायक द्वारा भेजल धमकी। दोसर — राघव संकेत सोमानीक गुप्त संकेत। तेसर — हांगकांग जानकारी रखयवला यन्त्रक भुगतान।

गढ नारिकेलमे ओहि राति बा अपन पुरान संदूक खोलि रहल छली। हुनका मीरा सँ कोनो सीधा परिचय नहि छल, मुदा परिवारक शाखा-प्रशाखा हुनका मोन रहैत छल। ओ पुरान वंशावलीक पन्ना पर अँगुरी फेरलनि।

बा उत्तर देलनि — “राति चन्ना गाछीक दिससँ हुलासी आयल छल। कहि गेलि — आब स्त्री सभ अपन नाम अपने कह्य लागल।”।

दूर चन्ना गाछीमे कबड्डी समाप्त भेल। भूत सभ थाकि गेल छल, मुदा थकानमे सुख छल। बूढ़बा भूत जमीन पर खिंचल फोनक पर्दा-रेखा मेटा देलाह।

नारिकेल गाछक पात हिलल। पातक आवाजमे तीन शब्द सुनाइ देल — “नाम। गवाही।” फेर एक लम्बा सन्नाटा।

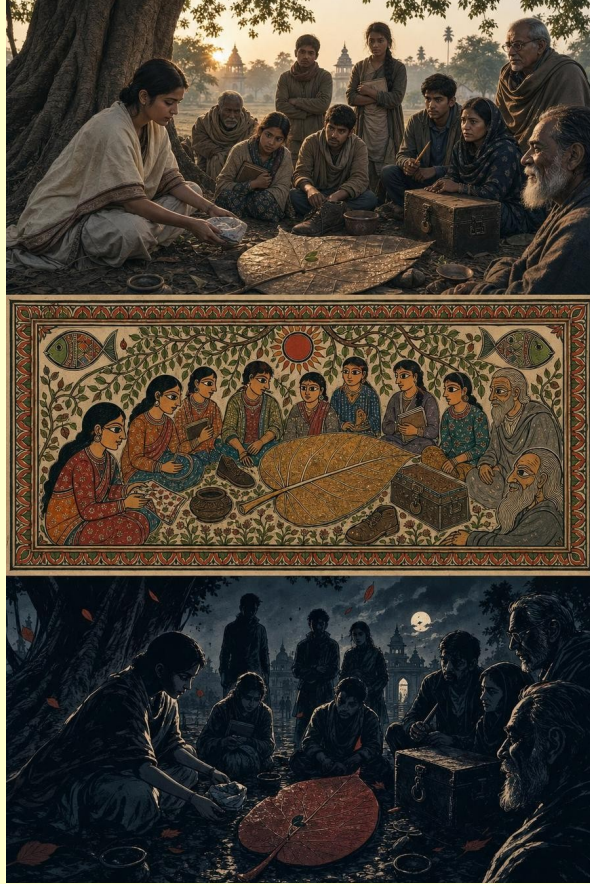
अध्याय समाप्त नहि भेल छल। केवल अपराधक अगिला चेहरा खुलए जा रहल छल। धनक धारा अब हथियार, ड्रग आ आतंक-वित्त दिस मुडत।

छोट लोकगीत

गे सखी, देहरी अपन सम्हारू गे,
चाबी अपन, कथा अपन—मने बिचारू गे।
सखी, तोहर देहरी तोहर, चाबी तोहर हाथ,
फोनक भीतर जे पैसए, मञ्जूरी ओकर बाट।

अध्याय ११ धनक कारी नदी

भूतकैँ साँस नहि होइ छै, तइयो थाकै छै— थकान देहक नहि,
गवाहीक होइ छै।



ओहि राति जखन मृणालिनी आर्याक गवाही लिखित हिसाब भेल आ ओकर निजी जीवनक चोरी अपराधक प्रमाणमे बदलि गेल, चन्ना गाछीमे कबड्डी बन्द नहि भेल। खेल मात्र धीमा पड़ल। भूत सभक साँस नहि होइत, मुदा थकान होइत अछि।

बूढ़बा भूत डारिसँ निच्चाँ उतरलाह — बारह सय बरखक धैर्य ओहि क्षण थोड़े कमजोर बुझायल। हुनकर पएर धरतीसँ एक अंगुर ऊपर रहैत छल, मुदा ओ राति ओ एक अंगुर दूरी सेहो काँपि रहल छल। चन्ना गाछीक माटि भीतरसँ भीजल होमय लागल।

“नहि,” बूढ़बा कहलाह, “ई पानि नहि। धन जखन बहुत कारी भऽ जाइत अछि, तखन पानिजकाँ बहैत अछि, आगिजकाँ जरैत अछि, आ गोहिजकाँ काटैत अछि।”।

ई जाल अपन खाता सभकेँ नदीक नाम दैत अछि। कमला, बलान, गंगा, सिन्धु, मेकांग, पर्ल। जखन पैसा भारतसँ बाहर जाए, ओ कहैत अछि — पानि उतरि गेल।

चन्द्रपाल बन्ना मेरठसँ एल.एल.बी. पास कएल लोक छल। गढ़ नारिकेलक लोक ओकरा नाम सँ नहि चिन्हैत छल। शहरक अन्हार ओकरा “बन्ना साहेब” कहैत छल।

गोप कुमार स्मृति-डिवाइसक तीन प्रति बनौलक — बिनु जल्दबाजीक, जेना कोनो पुरोहित यज्ञक सामग्री तीन बेर जाँचैत होइक। एक सत्यव्रत मेहताक लेल, एक विदेशमे ईरा आरुणिक लेल, एक चन्ना गाछीक पुरान पीपरक खोखरमे राखबाक लेल।

बूढ़बा भूत कहलाह — “आइ सँ खेल कठिन भेल। आब कबड्डीमे छूअय लेल देह नहि, खाता, कागजक गट्टर, फोनक पर्दा, अदालत, विदेशक मंच — सभ पार करय पड़त।”।

नारिकेल गाछक पहिल पात पर सूरज पड़ल। पात पर लिखल अंक धीरे-धीरे हरियर भऽ गेल। हरियर अंक देखिकऽ बूढ़बा भूत मुस्कुरेलाह।

गोप कुमार ओहि भोर एक वाक्य अपन डायरीमे लिखलक — “जखन गोहि खातामे अंडा देब शुरू करए, तखन नदीकेँ नहि, हिसाबकेँ शुद्ध करबाक समय आबि गेल बुझू।”।

छोट लोकगीत

रोपू हे हरियर नाव, कारी धार पर रोपू हे,
श्रम-पसेनाक दाम घुरा घर-घर सुख बोऊ हे।
कारी धनक नदी बहै, हरियर नाव उतारू,
नाम, प्रमाण, स्मृति, साहस चारि पतवारू।

अध्याय १२

डार्क-जालपर नारिकेल पात

कारी नदीपर नारिकेलक पात ने डूबै छै, ने बहै छै— ओ रस्ता देखबै छै।



भोर जखन गढ नारिकेलमे पसरल, चन्ना गाछी रातिक खेलक थकान सँ निस्तब्ध छल। भूत सभ अपन-अपन डारि पर फेर बैसल छल, मुदा ओहि दिन हुनकर निस्तब्धता ओहिना नहि छल जेना मरल लोकक चुप्पी होइत अछि। ई चुप्पी ओहि लोकक छल जे एकटा गुप्त बात सुनि लेने अछि आ ओकरा सही समय धरि रोकेबाक कठिन साधना करि रहल अछि।

पीपरक खोखरमे राति राखल छोट डिवाइस माटिक भीतर सँ हलुक उजास दैत छल। पीपरक ब्रह्मा चारू मुखसँ अलग-अलग मन्त्र नहि, अलग-अलग सावधानी पढ़ि रहल छलाह। पहिल मुख कहैत — ‘सत्य बचू।’ दोसर — ‘झूठक नुस्खा नहि बनू।’ तेसर — ‘नाम सुरक्षित रहू।’ चारिम — ‘साक्ष्य ओतबे बाहर जाउ जतबे न्याय लेल जरूरी हो।’

ओहि बीच समुद्र पार, ईरा आरुणि हार्वर्डक पुस्तकालयमे छलि। खिडकी बाहर बर्फक हलुक परत छल, आ भीतर गरम कमरामे विद्यार्थी सभ नीति, न्याय, विकास आ वैश्विक जिम्मेवारी पर चर्चा करैत छल। ईरा एतय तक पहुँचबा लेल अपन परिवारक गामक कथा सँ बहुत दूर भागल छली।

ओहि भोर हुनका एक कागजक गट्टर भेटल। शीर्षक — ‘गढ़ नारिकेलक नाम।’ ईरा पहिने डेराइ गेलि। फेर कागजक गट्टर खोललनि।

ईरा पहिल बेर अपन कुलनामकें बोझ नहि, प्रमाण बुझलनि। ओहि दिन ओ निर्णय केलनि जे एडवर्ड ब्रूमक अगिला एथिक्स-व्याख्यानमे ओ प्रश्न पूछती। प्रश्न छोट रहत, मुदा ओकर पाछाँ तीन सय जलसमाधि, उज्ज्वलक फोनक पर्दा-मृत्यु, मीरा केर अपन निजी बातक अधिकार, आ दवा-शीशीक कालाबाजारी ठाढ़ रहत।

चन्ना गाछीमे फेर राति भेल। पहिल पुकार बूढ़बा भूतक — ‘कबड्डी।’ दोसर हुलासी — ‘नाम।’ तेसर लोथ — ‘साक्ष्य।’ चारिम पनिडुब्बी — ‘गरिमा।’

ओहि हरियर उजासमे मृत मजदूरक नाम, उज्ज्वलक अधूरा संदेश, मृणालिनीक गवाही, देविकाक आँसू, गोपक डर, सौम्याक सावधानी, रमैय्याक चुप्पी, ईशानक छाह-विहीनता, मेहताक लाज, ईराक प्रश्न — सभ एक क्षण लेल एक्के रेखामे आबि गेल।

बूढ़बा भूत धीरे कहलनि — ‘आब सत्य केवल कागच पर नहि। आब ओ रास्ता पर अछि।’

दूर, कारी नदी बहि रहल छल। मुदा पहिल बेर ओकर ऊपर एक नारिकेल पात तैरि गेल, आ डूबल नहि।

छोट लोकगीत

धीरे चलू यौ बटोही, जालक बाट अन्हार यौ,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

पातक दीप हाथ लिअ, संग चलू हुसियार यौ ।
कारी जालक बाटमे पात दीप बनि जाए,
नामक छोट हरियर रेखा दिशा सही देखाए ।

अध्याय १३ सीलबन्द आवरण

मुहर जतबा चमकैत, आवरणक भीतरक अन्हार ततबे गाढ़ ।



“मोहर जतबा चमकैत, आवरणक भीतरक अन्हार ततबे गाढ़ ।” ।

ओहि रातिक बाद, जखन नारिकेल पात कारी नदी पर तैरि गेल आ डूबल नहि, चन्ना गाछीमे कियो नीकसँ नहि सुतल। मृतक सभकेँ निन्नक जरूरत नहि होइत, मुदा प्रतीक्षा सँ हुनको सभक हड्डी थकैत अछि। बूढ़बा भूत अपन पुरान डारि पर बैसल रहला, मुदा हुनकर आँखि अदालतक गलियारा देखैत छल।

चन्द्रपाल बन्ना ओकरा लग भोरहि पहुँचल। आँखिमे निन्न नहि,
फोन पर पाँच संदेश। राघव 'संकेत' सोमानीक चिन्ह देखाइ रहल
छल, मुदा संदेश सभ अल्प।

ओहि क्षण सत्यव्रत मेहता रुकि गेलाह। हुनकर भीतरक युद्ध फेर
जागल। सीलबन्द आवरण सुरक्षित सेहो करैत अछि, आ कखनो-
कखनो सत्यक कबर सेहो बनि जाइत अछि।

चन्ना गाछीमे हुलासी रोए नहि। भूतक आँसू कारी ओस बनैत
अछि। बूढ़बा भूत नाम गनैत रहलाह।

ओहि संध्या हार्वर्डमे ईरा आरुणि सभागारक पहिल पंक्तिमे
बैसली। एडवर्ड ब्रूम मंच पर आवि रहल छल। पाछाँ परदा पर
शीर्षक चमकैत छल — 'वैश्विक उद्यम आ मानवीय गरिमा।' ईरा
अपना गोदमे वैह प्रश्न राखने छली।

गढ़ नारिकेलमे राति उतरल। चन्ना गाछीमे खेल फेर शुरू भेल।
एहि बेर नियम बदलल।

अदालतक कक्ष खाली भऽ गेल छल। सफाईकर्मी फर्श पोंछैत
छल। ओकर कपडा एक जगह अटक गेल।

मुदा ओ दाग सुखल नहि। भोर धरि ओहि दागक भीतर एक नाम
झिलमिलाइत रहल।

छोट लोकगीत

खोलू हे भोर, मोहरक गिरह खोलू हे,
आवरणक भीतर बन्हल साँसकें बोलू हे।
सीलबन्द आवरण भीतर साँस बाट जोहै,
भोरक नियम कहै—उचित हाथ धीरे खोले।

अध्याय १४

घर घुरबाक रस्ता

नाम जखन घर घुरै छै, माटियो अपन नींदसँ जागि जाइ छै।



“नाम जखन घर घुरै छै, माटियो अपन निन्नसँ जागि जाइ छै।”।

“नाम जखन घर घुरैत अछि, तखन माटि सेहो जागि जाइत अछि।”।

साँझ होइत-होइत गाममे खबर पसारल जे दिल्लीसँ कतेको लोक आयल अछि। देविका साह अपन भाय उज्ज्वलक छोटा तस्वीर लऽ कऽ अइलीह। मुन्ना पासवान सेहो एल, जकर बैंक खाता चन्द्रपाल बत्राक जालमे म्यूल बनि गेल छल।

ईशान तीनटा पोटली निकाललक। पहिलमे मजदूरक सूची। दोसरमे यन्त्रपर चलयवला ठगीक सूची—उज्ज्वल सन युवकक नाम, दोसरक नामपर चलाओल खाता, झूठा गिरफ्तारी-धमकी, बटुकनाथ हरिहरनक दफ्तरक फीस-रसीद।

बा कहलीह—‘अस्थि पानिमे देल जाइत अछि।’ गोप उत्तर देलक—‘एहि बेर पानिमे नहि, गाछक जड़िमे।’ दुआरक नारिकेल गाछक नीचाँ छोट खन्ती आनल गेल। नन्दक कागजक गट्टरक प्रति, मजदूरक नामक प्रति, उज्ज्वलक तस्वीर, मीरा पर धमकीक प्रति, मुन्नाक खाता-प्रति, आ सत्यव्रत मेहताक अदालत-वचनक प्रति—सभ अलग-अलग पीतलकेँ डिब्बामे राखि गाछक जड़ि लग गाड़ल गेल। ई गवाहीक रोपनी छल।

सत्यव्रत मेहता ओहि राति गढ़ नारिकेल नहि आबि सकलाह, मुदा हुनकर संदेश आयल। कागच पर नहि, फोनपर नहि, अदालतक मोहर सहित नहि। हुनकर पुरान मित्र द्वारा मुँहजुबानी—‘नाम सुरक्षित राखू।’

आधी राति आरुणि एकटा आवाजसँ जागल। दुआरक नारिकेल गाछपर किछु खसबाक ध्वनि भेल। चान आधा छल, मुदा गाछक छाह पूरा।

दूर, जिला-शहरक अतिथि-गृहमे बटुकनाथ हरिहरन निन्नमे तड़पैत छल। ओकर सपनामे अदालतक फर्श नहि, चन्ना गाछी छल। ओ कबड्डी खेलबाक प्रयास करैत, मुदा ‘कबड्डी’ बाजए लगैत तँ ओकर मुँहसँ निकलैत—‘तारीख।’ भूत सभ हँसैत।

भोरक पहिल चिरैया बोलल तखन गढ़ नारिकेलमे केओ ओकरा सामान्य चिरैया नहि बुझलक। ओ आवाज जेना सभक सामने कहल बात छल। अदालतक अगिला तारीख आब केवल तारीख नहि रहल।

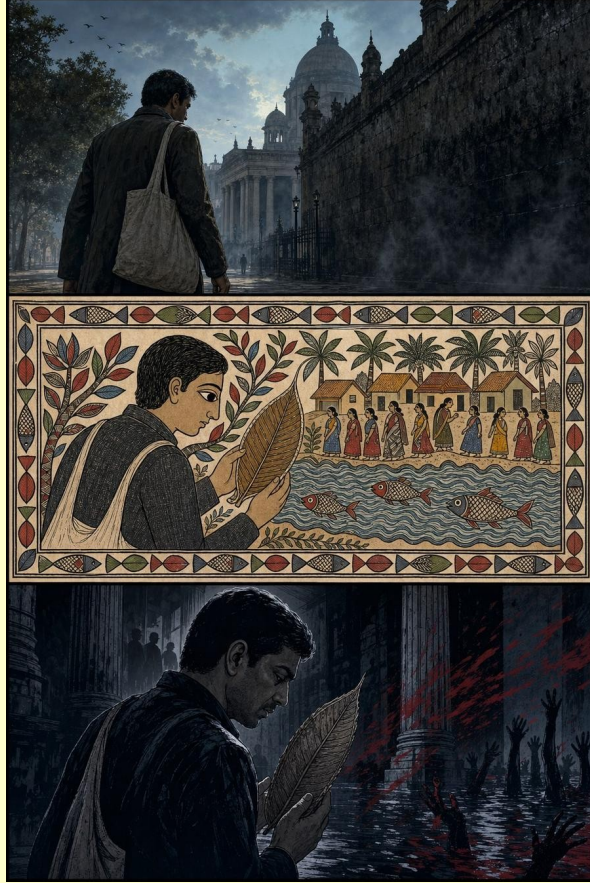
छोट लोकगीत

घुरि आउ हे बटोही, देहरी दीप बरै हे,
माएक अँचरा-छाँह तोहर बाट जोहै हे।
कुहासामे पग सुनाइ, देहरी दीप जरै,
नाम कागचसँ निकलि अपन आँगन दिस धरै।

अध्याय १५

नामक जल

जे नाम पानिपर टिकि गेल, तकरा कोनो मुहर मेटा नहि सकल ।



“जे नाम पानिपर टिकि गेल, तकरा कोनो मोहर मेटा नहि सकल ।” ।

“जे नाम पानि पर टिकि जाइत अछि, ओकरा माटि सेहो विसरैत नहि ।” ।

उधर गढ नारिकेलमे भोर सँ चन्ना गाछीक कबड्डी बन्द छल । भूत सभ मैदानक दू किनार पर बैसल छल । बूढ़बा भूत पहिल बेर डारिसँ उतरि जमीनक एक अँगुर ऊपर टाढ़ भेलाह ।

बा दुआरपर आसन पसरि बैसल छली। अनन्या हुनकर कोरामे। गोप कुमार, सौम्या रामनाथन, ईरा, निशांत, देविका, मुन्ना, मृणालिनी—सभ दिल्ली नहि जा सकल।

चन्द्रपाल बन्ना कुर्सी पर बैसल-बैसल फोनक पर्दा देखैत छल। राघव संकेतक संदेश राति भरि आयल छल—‘नाम हटाओ।’ ‘पीडितक अपन निजी बातक अधिकार उठाओ।’ ‘दोसरक नामपर चलाओल खाताक दोष गरीब पर डालो।’ ‘हरिहरन संभाल लेगा।’ मुदा भोरक बाद सँ संकेत मौन छल। हांगकांगक लाउ किन-हंगक संकेत बन्द।

चन्ना गाछीमे खेल चरम पर छल। भूत, प्रेत, राकश, लोथ, पनिडुब्बी, डाइन, ब्रह्मा—सभ मैदानमे। सीमा-रेखा पर गंगा-पुलक मजदूर सभ।

नारिकेल गाछक सभसँ ऊपरी पात हिलल। ओहि हिलनाइमे नन्द आरुणिक हाथ छल, सरयूक टोकड़ी, उज्ज्वलक टूटल फोन, मृणालिनीक साहस, देविकाक आँचल, मुन्नाक झुकल आँखि, ईशानक धुरैत छाह, सत्यव्रत मेहताक काँपैत मुदा सोझ आवाज, सौम्याक नीली पेंसिल, गोपक मौन, ईराक प्रश्न—सभ।

तखन बूढ़बा भूत अन्तिम पुकार करैत—‘गोहि सभ देह खाइत अछि। मुदा नाम जखन पानि पर लिखाइ जाइत अछि, तखन पानि सेहो ओकरा मेटा नहि सकैत।’

आ नारिकेल गाछक पात राति भरि बजैत रहैत—कबड्डी, नाम, कबड्डी, नाम,।

छोट लोकगीत

भरू हे अँजुरी, नामक जल भरू हे,
बून्द-बून्द अमृत सभ कण्ठ-कण्ठ धरू हे।
पानिपर लिखल नाम लहरि संग दूर जाए,
मेटै नहि, बून्द-बून्द नव कंठमे समाए।

अध्याय १६

चन्ना गाछीक अदालत

गाछ जकर नाम सुनि लेलक, तकरा कागजक कोनो पन्ना बिसरा
नहि सकैत ।



“गाछ जकर नाम सुनि लेलक, तकरा कागजक कोनो पन्ना बिसरा
नहि सकैत ।” ।

“जकर नाम गाछ सुनि लेलक, ओकरा कागज मेटा नहि
सकैत ।” ।

आरुणि उत्तर नहि देलक । गोप कुमारक हाथमे ओहि राति कोनो
कागजक गट्टर नहि छल । सौम्या अपन बस्ता बन्द कऽ देने
छलीह ।

पनिडुब्बी पोखरि सँ निकलि गाछीक किनारपर बैसलि। ओकर लम्बा झौटा पानिसँ भरल छल, आ ओ झौटा धरतीपर पसरि कऽ एकटा कारी लिपि बनाबय लागल। डाइन सभ छौंकी छोड़ि बिनु सवारीक एलि।

तखन चन्ना गाछीक अदालतमे अपराधी सभक पुकार भेल। मुदा एतय विचित्र बात भेल। बटुकनाथ हरिहरन नहि आयल।

मुदा अदालतमे हुनका सभक छाह उपस्थित भेल। हरिहरनक छाह मोट कागजक गट्टरक आकारमे आयल, जकर पन्ना सभ अपने-आप तारीख बदलैत छल। बन्नाक छाह फोनक फोनक पर्दा बनि कऽ चमकल, जकर भीतर एक लमहर सर्प की-बोर्ड पर सरकि रहल छल।

गोप कुमार, सौम्या, देविका, मीरा, ईरा, आरुणि, रमैय्या आ सत्यव्रत मेहताक आवाज— जे दूर सँ आयल छल— सभकँ ओहि भोर एक्के बात बुझि पड़ल: अदालतक फैसला पाबि लेल गेल, मुदा आव ओकरा कागच पर नहि, लोकक जीवन पर लिखबाक अछि।

आ सचमुच, ओहि दिन सँ धूर्त सभ जीतक कागच हाथमे लेने दरबदर घूमय लागल। जकरा सभकँ ओ हरौने छल, ओ सभ कतहु अदालतक सीढ़ी पर बैसल नहि भेटल। कियो नाम लिखैत छल, कियो बच्चा सभकँ फोनक पर्दाक गोहि चिन्हब सिखबैत छल, कियो स्त्री सभकँ कहैत छल जे लाज अपराधीक होइत अछि, पीड़ितक नहि।

चन्ना गाछीमे ओहि राति उपन्यास समाप्त नहि भेल — ई मात्र एकटा चक्रक अन्त छल, आर बहुत चक्र बाकी छल। ओकर पहिल चक्र पूरा भेल। पात सभ हिलल, आ जकरा कान छल, ओ सुनि सकल— अब असली कथा शुरू भेल।

छोट लोकगीत

बैसू हे पंच, गाछक तर बैसू हे,
पातक पर विधान लिखू, साँच-साँच परसू हे।
गाछ तरे आसन बिछल, पात बनल विधान,
मोहर दूर, लोक लग—सुनवाई समान।

अध्याय १७

जीतक शोक

हारल लोक जँ प्रतीक्षा छोड़ि देत, तँ जीतनिहारक जीत अपनहि
भारसँ चूर भऽ जाएत ।



“जकरा हरौल, से यदि तोहर प्रतीक्षा छोड़ि देत, तखन तोहर
जीत अपनहि भार सँ टूटत।” ।

दुपहर बाद बटुकनाथक लोक सभ अदालतक गलियारा छानल ।
जे बेंच पर देविका बैसैत छल, ओ खाली । जे खिड़की लग गोप
कुमार कागच देखैत छल, ओतय केवल धूल ।

ओही समय गढ नारिकेलमे आरुणि आ बा चन्ना गाछी लग पहिल बाँस गाडि रहल छलाह। बाँस पर कोनो झण्डा नहि, कोनो दलक निशान नहि। देविका माटि समतल करैत छल।

अनन्या, आरुणिक बेटी, एकटा छोट खडिया लऽ कऽ बैसल छली। ओ पूछलक— ‘नाम पहिने केकर?’ सभ चुप। बा कहलनि— ‘जेकरा नाम कागचसँ सभसँ पहिने काटल गेल।’।

सौम्या सूची खोललनि। सूचीमे हजार शकल छल, मुदा पहिल पंक्ति धुँधली। पातक छाह ओहि धुँधलाहटपर पड़ल आ अक्षर साफ भेल— ‘सरयू।’ अनन्याकै सरयू लिखयमे कठिनाई भेल।

ओहि राति गढ नारिकेलमे पहिल नाम लिखला बाद लोक घर नहि गेल। एक वृद्ध मजदूरक विधवा आबि कऽ कहलनि— ‘हमर लोकक नाम सरकारी कागचमे नहि। मुदा ओकर गाम छियै।’ ओ अपन मरल लोकक नाम नहि पढ़ि सकैत छलीह।

अध्याय समाप्त नहि भेल। जीतक शोक एखन शुरू भेल छल। धूर्त सभ आब दिन-राति ओहि लोककै ताकत, जकरा ओ सभ हरौने छल।

चन्ना गाछीमे भोरक पात हल्का हिलल। बृद्धबा भूत अपन डारि सँ देखलाह आ फुसफुसौलाह— ‘ई जीतक शोक अछि। एहि शोकसँ पैघ दण्ड कोनो अदालत नहि देत।’।

छोट लोकगीत

जीतल हे जीतल, मुदा मुकुट उतारू हे,
हारल केर घाव पर पहिने मलहम सम्हारू हे।
जीतलहुँ तँ पहिने देखू ककर घाव बचल,
मुकुट उतारि सेवा करू, तखन विजय सफल।

अध्याय १८ खाली अदालत

अदालत जँ खाली भऽ जाए, तँ बुझू— न्याय अनुपस्थितक नामसँ
डेरा गेल।



“जे न्याय केवल उपस्थित लोककें सुनैत अछि, से अनुपस्थित
मृतकक नामसँ डेराइत अछि।”।

बटुकनाथक चेहरा अकड़ल। चन्द्रपाल बत्रा पाछाँ पंक्तिमे बैसल
छल। ओकरा लागल जे सत्यव्रत फेर सीमा पार करैत अछि।

‘अनुशासन मृतकक नाम काटबाक कला नहि होयबाक चाही,’
सत्यव्रत कहि कऽ चलि गेलाह। हुनकर पाछाँ बटुकनाथ बहुत देर
तकैत रहल। ओकरा बुझाई पड़ल जे ई लोककें हराएब सरल नहि।

ई वाक्य हवामे नहि उडल। चन्ना गाछीक एक पात पर अटकल।
पातक नस सभ चमकि उठल।

ओहि राति गढ नारिकेलमे चन्ना गाछी तले एक नब खेल शुरू
भेल। बच्चा सभ कबड्डी खेलैत छल, मुदा नियम बदलल। जे
धरायल, ओकर नाम काटल नहि जाएत।

बूढ़बा भूत डारि पर बैसल मुस्की देलाह। राकश अपन इजोत कम
कऽ देलक, जेना बच्चा सभक खेल बाधित नहि हो। लोथ पहिल
बेर दर्शक सँ उठि कऽ मैदानक कात आबि बैसल।

एहि तरहें खाली अदालतमे पहिल नागरिक लिखित हिसाब
खुलल— कोनो आदेश सँ नहि, कोनो याचिका सँ नहि, एक
सफाई-कर्मीक मोन पड़लासँ।

बटुकनाथ जखन पहुँचल, ओ बेंच साफ छल। मुदा ओकरा लागल
जे सभ बेंच पर कियो अदृश्य बैसल अछि। अदालत खाली नहि
रहि गेल छल।

छोट लोकगीत

भरू हे भरू, खाली बेंच भरू हे,
झाड़बला बेटाक अक्षर माथ पर धरू हे।
बेंच खाली देखाइ तइयो छाह सभ बैसल,
प्रवेश नहि पाओल नाम भोरक संग आएल।

अध्याय १९ नामक अभिलेख

कुर्सी सड़ि जाइ छै, जड़ि नहि।



शहरक खाली अदालतक बेंच पर जे नाम धूलमे उभरल छल, ओकर बीआ राति भरिक हवामे उडैत गढ नारिकेल पहुँचि गेल छल। एम्हर चन्ना गाछीक अदालत उठि गेल छल, मुदा ओकर कुर्सी सभ ओतहि रहि गेल छल। कुर्सी कहू कि जड़ि, किएक तँ ओ सभ लकड़ीक कुर्सी नहि छल।

भोरे जखन पहिल चिरइक आवाज भेल, तखन चन्ना गाछीमे खेलक रेखा अखनो खिंचल छल। माटि पर पएरक निशान छल, मुदा ओ पएर केकर छल, ई कोनो मनुक्ख अलग कऽ नहि सकैत छल। किछु निशान धरतीकें छूने छल, किछु एक अंगुर ऊपरसँ

गुजरल सन बुझाईत छल, किछु गोल-गोल, जेना कोनो भारी देह बिना हड्डीक ओतऽ लुढ़कल हो।

दुपहर धरि चन्ना गाछीमे पचास नाम लिखाइ गेल। पात सभ जमीन पर बिछल। ओहि पात सभ पर कौआ चलल, मुदा स्याही नहि पोंछल।

बा ओकर दिस तकलथिन। “नामक अर्थ नंगा करब नहि। जकर दुख छिपल रहए चाही, ओकर दुख छिपल रहत।

राति होमय धरि चन्ना गाछीक माटि पर पातक चादर बिछि गेल। अनन्या आ गामक बच्चा सभ अक्षर पढ़य लगल। पहिने बच्चा सभ नामकै खेल बुझलक।

ओहि राति चन्ना गाछीमे कबड्डी नहि भेल। भूत सभ खेलक मैदानक चारू दिस बैसल रहलाह। बीचमे पात बिछल छल।

भोरे जखन सूरज निकलल, तखन चन्ना गाछीक पात पर लिखल नाम सभ सूखि चुकल छल। किछु अक्षर हलुक हरियर भऽ गेल छल, जेना पात ओकरा अपन नसमे उतारि लेने हो। अनन्या एक-एक नाम पढ़ैत गेली।

अनन्या पूछलक, “स्कूल खुलि गेल?”।

छोट लोकगीत

गाबू हे पराती, 'हम उपस्थित' गाबू हे,
हरद-काजर पात पर पुरनका नाम सजाबू हे।
हरद-काजर पातपर पुरनका नाम सजाउ,
हाजिरीक घड़ी सभ मिलि 'हम उपस्थित' गाउ।

अध्याय २०

स्क्रीनक विरुद्ध पाठशाला

फोनक पर्दा जे-जे निगलने छल, पाठशाला से-से एक-एक कऽ
घुरबैत गेल।



काल्हि साँझ नारिकेलक जे सूखल पात घंटी जकाँ बाजल छल, से
भोर धरि लोकक कानमे बजैत रहल। नामक लिखित हिसाब
बनलाक दोसर दिन गढ नारिकेलमे एहन शान्ति उतरि आयल
जेना गामक ऊपर ककरो पैघ हाथ राखि देल गेल हो। चन्ना
गाछीमे पात पर लिखल नाम सभ ओससँ भीजल छल, मुदा
अक्षर नहि बही रहल छल।

अनन्या सभसँ आगू छलि। ओकरा नाम पढ़बाक ढंगमे किछु
ओहिना छल जेना छोट नेना पहिल बेर वर्णमाला पढ़ैत अछि —

मुदा एतय वर्णमाला मृतकक देहसँ बनल छल। “सरयू देवी,” ओ पढलक।

“ओ पहिने जीतैत छल,” देविका आँचरक खूँट आँगुरमे लपेटैत बच्चा सभकेँ कहलनि। “ई फोनक पर्दाक गोहि पहिने शिकारकेँ कनी जीतबैत अछि। जेना नदीक गोहि पहिने पानि शान्त रखैत अछि।

ओहि भोर चन्ना गाछीक पातक कात पहिल कक्षा बैसल। कोनो पट्टी नहि, कोनो घंटी नहि, कोनो सरकारी मान्यता नहि। बीचमे फुटल फोनक काँच, एक पुरान बैक-पासबुक, उज्ज्वलक अधूरा काँपी, आ नारिकेलक पात।

ओहि राति चन्ना गाछीमे बूढ़बा भूत खूब हँसलाह। “देखलियै?” ओ हुलासीसँ कहलथिन। “जिअत लोक सीखि रहल अछि।

चन्द्रपाल बत्राक गिरोहक पहिल पैघ चोट ओहि दिन भेल जखन मुन्ना पासवानक कजिनक खाता खुलबए लेल लऽ जाएल गेल। लडका बैकक बाहर ठमकि गेल। कलम हाथमे छल, मुदा हथेली पसीजि गेल।

चन्ना गाछीमे ओहि राति कबड्डी फेर भेल। मुदा ई खेल अलग छल। नेना सभ दिनमे मैदानमे जे रेखा खिंचने छल, भूत सभ रातिमे ओहि रेखा पर खेलल।

ई पूछलासँ कतेको ठगी टूटल। कतेको भय बाँटल गेल। कतेको लाज अपराधीक माथ पर घुरि गेल।

आ चन्ना गाछीक अदालत, जे फैसला दऽ चुकल छल, दूर बैसल मुस्कुराइत रहल। ओकरा बुझल छल — न्याय कखनो-कखनो आदेश नहि बनैत। कखनो-कखनो पाठशाला बनैत अछि।

छोट लोकगीत

हो-हो करू संगी, गोल घेरा बान्हू हो,

'अकेला तँ नहि छी?'—पहिल प्रश्न ठानू हो।

फोनक पर्दाक गोहिक चारि पएर—लालच, भय, लाज,

संगक हाथ भेटिते टूटै ओकर पूरा राज।

अध्याय २१ निजताक शपथ

शान्ति बाहरसँ नहि अबै छै।



“अकेला तँ नहि छी?” — ई प्रश्न आब गामक अभिवादन बनि चुकल छल, आ तकरे बल पर, नामक लिखित हिसाब बनि गेलाक बाद, लोक सभ सोचलक जे आब गाममे शान्ति उतरि आओत। मुदा शान्ति कहियो बाहरसँ नहि अबैत अछि। ओ भीतरसँ उगैत अछि, आ भीतरक माटि जँ बरखों धरि डर, लाज, चुप्पी आ धमकीसँ भरल हो, तँ ओहिमे पहिल अंकुर निकलैत काल धरती काँपैत अछि।

देविका साह जे दिन उज्ज्वलक नाम लिखित हिसाबक तेसर पातपर लिखल गेल देखलक, तकरा राति निन्न नहि आयल।

ओकरा लगल जे भायक मृत्यु फोनक फोनक पर्दामे डूबल एकटा कारी बिन्दु नहि छल। ओ पूरा गामक अन्हार छल।

देविका अगिला रेखा खिंचलक — “ठगी।” ओकरा बाद मीरा धीरेसँ आगू बढ़ली आ तेसर रेखा खिंचली — “लाज।” ओ बाजली, “ठग हमरा सभकेँ पैसा सँ नहि, लाज सँ पकड़ैत अछि। ओ जानैत अछि जे हम अदालत जाएवासँ पहिने घरक डर सोचब, घरसँ पहिने समाजक डर, समाजसँ पहिने अपन देहक डर। तँ आइ हम शपथ लैत छी जे लाज अपराधीक होएत, पीड़ितक नहि।”।

चन्ना गाछीमे शपथक बीच एक नेनी, जे अनन्याक संग पाठशालामे पढ़ैत छल, पूछलक — “जँ कियो कहै जे तोहर तस्वीर भेजि देब, तखन की करब?” सभ चुप। ई प्रश्न एते सोझ छल जे ओकर उत्तर कठिन भऽ गेल। देविका नेनी लग बैसलि।

राघव “संकेत” सोमानी ओहि राति लाउ किन-हंग केँ सन्देश पठेलक — “स्थानीय विरोध कानूनसँ अलग रस्ता पकड़ि रहल अछि।” उत्तर आयल — “कानूनसँ बाहर? राघव लिखलक — “कानूनक बाहर नहि, कानूनक पहिने।” लाउ किन-हंग पहिल बेर लिखलक — “बुझल नहि।” राघव बहुत देर धरि उत्तर तकैत रहल। ओकरा बुझाइत छल जे जे लोक केवल खाता, सयमे भाग, कमीशन आ ट्रान्सफर बुझैत अछि, ओकरा शपथ, लाज, नाम आ स्मृति बुझाओल नहि जा सकैत।

मीरा असगरि चन्ना गाछीक कात बैसलि। गाछीक सन्नाटामे खाली झिंगुरक स्वर छल। हुलासी ओकर लग आयलि।

शपथ पूरा भेल तखन पनिडुब्बी पोखरिमे घुरि गेली। हुलासी इनारक पानिमे अपन प्रतिबिम्ब देखली। एहि बेर ओकरा लगल जे प्रतिबिम्बक हाथ अछि।

भोर भेलाक बाद गढ नारिकेलक बच्चा सभ पाठशालाक देवाल पर नब वाक्य लिखलक — “डर बाँटल गेल तँ ओ चेतावनी बनैत अछि। डर छिपाओल गेल तँ ओ फाँसी बनैत अछि।” एहि वाक्यक नीचाँ अनन्या छोट अक्षरमे जोड़ि देलक — “चुप्पी ठगक पहिल कमाइ अछि।”।

देविका दूर ठाढ़ भऽ पढ़ैत रहलि। ओकरा बुझाइत छल जे उज्ज्वल आब घुरि नहि आओत। मुदा आब कोनो दोसर उज्ज्वल जँ फँसत, तँ ओकरा मरबाक पहिने कहबाक ठाम रहत।

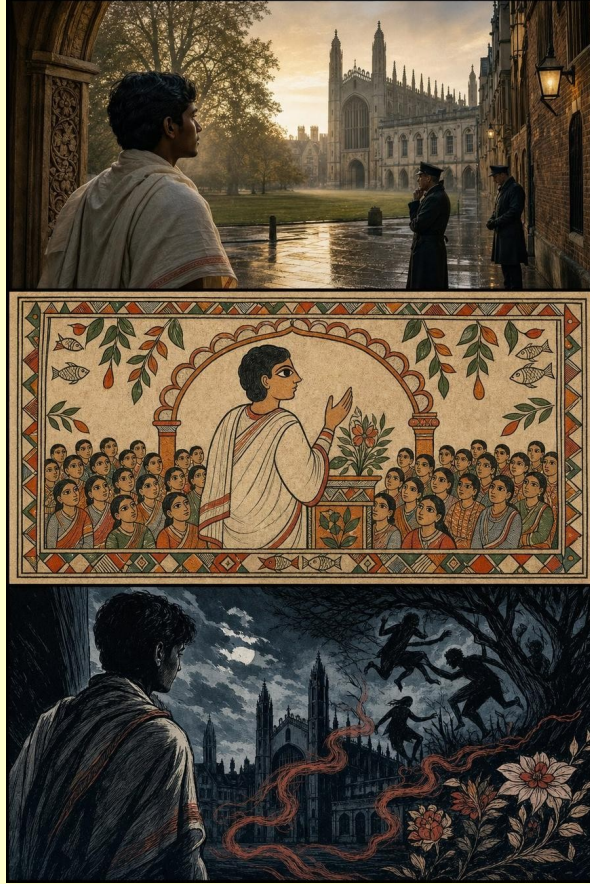
छोट लोकगीत

उटू गे बहिना, मण्डली सजाउ गे,
'हम निर्दोष, हम संग'—स्वर मिलाउ गे।
हम दोषी नहि बहिनी, लाज अपराधीक माथ,
एक-दोसरक हाथ पकड़, खुलत सुरक्षित बाट।

अध्याय २२

हार्वर्डक दोसर भाषण

दोसर भाषण पहिलुकासँ नीक तखने होइ छै, जखन बीचमे कियो सत्य सुना गेल हो।



कैम्ब्रिजक भोर गढ नारिकेलक भोर जेकाँ नहि होइत अछि। ओतय धानक खेतक ऊपर कुहेस नहि उठैत, नारिकेल पातक धारसँ ओस नहि टपकैत, आ चन्ना गाछीमे भूत सभ रातिक कबड्डी समाप्त कऽ अपन-अपन डारि पर नहि चढ़ैत। तथापि ओहि दिन कैम्ब्रिजमे भोर होइतहि हवामे एहन नमी भरि गेल जे बड़का पढ़ाइ संस्थानक पुरान ईंट सभक बीच सँ कमला-बलानक गन्ध उठय लागल।

एहि दिन एडवर्ड ब्रूम फेर नीक-बेजायक समझ पर भाषण देबयबला छल। सभागारक बाहर पोस्टर लागल छल — वैश्विक उद्यम, मानव गरिमा, आ उत्तरदायी पूँजी। अक्षर सोना रंगक छल, कागच मोट छल, आ मंचपर राखल फूल एते साफ छल जेना हुनका सभकेँ कखनो माटि स्पर्श नहि केने हो।

ईरा आरुणि सभागारमे प्रवेश करवाक निमन्त्रण लेने छल। ओकर सीट आगाँक पाँतिमे राखल गेल छल, जकरा पर ओकर नाम लिखल कार्ड छल। कार्ड पर छपल नाम पढ़ि प्रोफेसर एलिना ग्रेव्स मुस्कुरा कऽ कहलथिन — ‘अहाँ प्रश्न पूछब?

गढ़ नारिकेलमे ओहि समय साँझ उतरि रहल छल। चन्ना गाछीक पात पर नामक लिखित हिसाबक अगिला पृष्ठ खोलल गेल। अनन्या बच्चा सभकेँ पाँतिमे ठाढ़ कऽ रहल छल।

अनन्या पढ़ब शुरू केलक — ‘सरयू देवी।’ बच्चा सभ बजल — ‘उपस्थित।’ ‘कन्हैया पासवान।’ — ‘उपस्थित।’ ‘उज्ज्वल झा।’ — ‘उपस्थित।’ ‘नाम अज्ञात स्त्री, कमरा संख्या सत्ताइस।’ — ‘उपस्थित।’ ‘साँस लेल हवा प्रतीक्षा सूचीक तेसर बूढ़।’ — ‘उपस्थित।’ ‘दोसरक नामपर चलाओल खाता संख्या नहि, मुन्ना पासवान।’ — ‘उपस्थित।’ आवाज गामसँ उठि कऽ ईराक यन्त्रमे, ओतयसँ कैम्ब्रिजक सीढ़ी पर, आ सीढ़ीसँ सभागारक बन्द दरवाजा धरि पहुँचल।

बटुकनाथ हरिहरन अपन आलीशान बैसकीमे बैसल रहल। ओकरा सामने चाह छल, चाह पर मलाई जमि गेल। ओ फोनक पर्दा पर ईराकेँ ताकैत रहल।

गढ़ नारिकेलमे प्रसारण बन्द भेलाक बाद बच्चा सभ छितरा गेल। अनन्या पात मोड़ि नहि सकल — पात अपने हवामे मुड़ि गेल आ नारिकेल गाछक जड़ि लग टिकि गेल। बूढ़बा भूत डारि पर बैसल-बैसल हँसैत रहलाह।

भोर होएत-होएत गढ़ नारिकेलमे नब कहावत चलि गेल — ‘मंच पर जे बजैत अछि, ओकरा सुनू। पात पर जे लिखल अछि, ओकरा मानू।’ बच्चा सभ ओकरा पाठशालाक देवाल पर लिखलक। नीचाँ अनन्या छोट अक्षरमे जोड़ि देलक — ‘प्रश्न पूछबाक एक तरीका चुप्पे नाम पढ़ब सेहो अछि।’।

एडवर्ड ब्रूम अगिला सप्ताह अपन कम्पनीक नाम बदलि देलक।
समाचारमे लिखल गेल — नब आरम्भ, नब प्रतिबद्धता, नब नीक-
बेजायक दिशा। मुदा गढ़ नारिकेलक बच्चा सभ हँसल।

छोट लोकगीत

गाबू हे साँचक तान, मंच खाली रहौ हे,
पातक एक्के स्वरसँ सभागार भरौ हे।
मंच खाली हो तइयो पातक स्वर उठत,
सोना शब्दसँ पैघ एक साँचक नाम फूटत।

अध्याय २३

बटुकनाथक खोज

जीतक कागज मोट छल, मुदा ओहिमे एकोटा ध्वनि नहि— आ
ध्वनि बिनु जीत केवल भार।



समुद्र पारक मंच खाली भऽ गेल छल, कम्पनीक नाम बदलि गेल छल। एम्हर शहरमे बटुकनाथ हरिहरनकें जीतक कागच हाथमे भेटल, मुदा जीतक स्वाद नहि भेटल। कागच मोट छल, मोहर चमकैत छल, आदेशक भाषा एते विनीत छल जे ओहि मे क्रूरता सेहो शिष्टाचार पहिने छल।

खाली दुआर बटुकनाथकें सभसँ अधिक डेराओलक। ओ एहन लोक छल जे शोर सँ नहि, चुप्पीसँ डरैत छल। शोर कें ओ वकालतमे बदलि सकैत छल, चुप्पी कें नहि।

ओ अपन सचिवकें बजेलक। सचिव बहुत पुरान लोक छल, जे कागजक गट्टर उठबैत काल ओहि कागजक गट्टरक भारसँ बुझि जाइत छल जे ओकर भीतर सच अछि कि घूस। बटुकनाथ पूछलक — ‘ओ लोक कतय अछि?’ सचिव बुझल नहि।

ई वाक्य बटुकनाथकें चोट केलक। कानूनक नक्शा पर सेहो ओहिना रस्ता खिंचल रहैत अछि। मुदा जनताक दुख अपन धार बनबैत चलैत अछि।

ओहि समय एक छोट लड़का — शायद मुन्ना पासवानक भतीजा — जमीन पर रेखा खिंचैत कहलक, ‘ई रेखा अदालतक नहि, खेलक अछि। जे पार करए, ओकरा साँस रोकि सत्य बजाबय पड़त।’ बटुकनाथ ओहि रेखा दिस तकलक। ओकरा लगल जे ओ रेखा पार करैतहि ओकर पेटक भीतरक सभ गोपनीय सन्देश बाहर निकलि पड़त — चन्द्रपाल बन्नाक, राघव संकेतक, लाउ किन-हंगक, भुगतानक, तारीखक, बचावक।

साँझ धीरे-धीरे उतरि रहल छल। चन्ना गाछीमे पहिल छाह लम्बा भेल। ओहि छाहमे बटुकनाथकें किछु आकृति देखाइ देलक।

ओहि राति चन्ना गाछीमे कबड्डी भेल। बच्चा सभ दिनमे खेलि चुकल छल, आव भूत सभक बारी छल। बूढ़बा भूत रेखा पार कयलन्हि आ साँस रोकि बजलाह — ‘बटुकनाथ, बटुकनाथ, बटुकनाथ।’ राकश इजोर केलक, लोथ ताली देलक, पनिडुब्बी पोखरिमे पानि हिलेलक।

गढ़ नारिकेलक दिन फेर शुरू भेल। देविका यन्त्रपर चलयवला ठगीक अगिला कक्षा लेल निकलि गेली। मीरा अपन निजी बातक अधिकारक मण्डलमे नव स्त्रीक कथा सुनबाक लेल बैसली।

आ बटुकनाथ हरिहरन शहरमे अपन जीतक आदेश अलमारीमे राखि देलक। ओ आदेशक ऊपर धूप नहि पड़ैत छल। मुदा अलमारीक भीतरसँ कखनो-कखनो पातक खरखराहट सुनाइ दैत छल।

छोट लोकगीत

चलू यौ जीतल बटोही, पहिने हारल घर यौ,
कागच बाँहि तर दाबि, नेह बाँटि कऽ चलू यौ।
जीतक कागच बाँहि तरे, पहिने लोकक घर जाउ,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

जकरा हरौलहुँ, ओकर आजुक हाल सुनाउ ।

अध्याय २४

उपन्यास फेर शुरू

कथा जतय समाप्त कहल जाइ छै, गाछी ओतहिसँ नव पन्ना
खोलै छै।



शहरक अलमारीमे जीतक कागच रातिभरि पातक खरखराहट
सुनैत रहल। एम्हर गढ नारिकेलमे भोरक पहिल पातर इजोत
चन्ना गाछीक डारि पर ओहिना अटकल छल जेना रातिक
अदालत एखन धरि स्थगित नहि भेल हो। कुकुर सभ गामक
बाहरी बाट पर भुकल, मुदा गाछी भीतर कोनो बेचैनी नहि छल।
एहि भोर कोनो पंक्ति उड़ल नहि। ओसक बूँद सभक भीतर नाम
चमकैत छल। बच्चा सभ ओकरा अक्षर बुझि पढ़ि नहि सकैत
छल, मुदा साँस सँ चिन्हि रहल छल।

मीरा कक्षामे कहैत छली — ‘प्रेम अपराध नहि। अपन निजी बातक अधिकार हथियार नहि। धमकी दऽ कऽ दबाव शर्म नहि, हिंसा अछि।’ पहिने किछु लोक असहज भेल।

साँझमे खेलक दोसर दौर शुरू भेल। एहि बेर बच्चा सभक संग किछु बड़का लोक सेहो उतरल। देविका रेखा पार करैत बजली — ‘उज्ज्वल नहि बिकत।’ मीरा पार करैत बजली — ‘अपन निजी बातक अधिकार नहि बिकत।’ निशांत बजलक — ‘भुगतान-नली खोलू।’ सौम्या बजली — ‘दस्तावेज लोकक अछि।’ गोप कुमार बजल — ‘जानकारी जखन नाम बनैत अछि, तखन डर घटैत अछि।’ आरुणि रेखा पार कऽ चुप्पी साधलक।

चन्ना गाछीमे अंतिम कबड्डी शुरू भेल। एहि बेर नियम अलग छल। जे रेखा पार करत, ओकरा नाम नहि, भविष्य बजाबय पड़त।

भूत सभ डारि पर चढ़ि गेलाह। पनिडुब्बी पानिमे ओझरा गेली। राकशक इजोर दिनक इजोतमे विलीन भेल।

चन्द्रपाल बन्नाक मोबाइल साधन फेर चलल। किछु लोक फेर फँसल। संसार एक रातिमे मुक्त नहि होइत।

गोहि सभ देह खाइत अछि। मुदा जे नाम बच्चाक साँसमे पैसि जाए, ओकरा कोनो नदी, कोनो अदालत, कोनो विदेशी खाता, कोनो यन्त्रपर चलयवला फोनक पर्दा, कोनो जीतक आदेश, कोनो हारक कागज मेटा नहि सकैत। ओ नाम खेल बनि जाइत अछि।

आ गाम — गढ़ नारिकेल — फेरसँ शुरू भऽ जाइत अछि।

छोट लोकगीत

फेरू हो नेना, नव पन्ना फेरू हो,
ओसक बून्दक स्याहीसँ नव कहानी टेरू हो।
किताब कहलक अन्त, नेना पन्ना फेरलक,
ओसक नान्हि बून्द नव कहानी लिखि देलक।

अध्याय २५

मोन टांगल

बन्द अलमारीमे आदेश नहि, धूलि बाजै छै— आ धूलिक आवाज
नींद नहि होमए दै छै।



गाम फेरसँ शुरू भऽ चुकल छल। आ ओम्हर शहरमे जीतक
आदेश जखन पूरा सूखि जाइत अछि, तखन ओकर आवाज
कागचक नहि रहैत अछि। ओ धूलि जेकाँ बजैत अछि।

बटुकनाथ पहिने सोचलक — चूहा। फेर मोन पड़ल जे ओकर
घरमे चूहा बरखों पहिने खतम करा देल गेल छल। घरक प्रत्येक
सुराख पर स्टीलक जाली, प्रत्येक कोनमे दवा, प्रत्येक नौकर पर
निगरानी।

चन्द्रपाल फेर चुप। अपराध बनाओल जा सकैत छल जखन ओ भीड हो, नारा हो, नेता हो, चन्दा हो, पोस्टर हो, ट्रक हो, मंच हो। मुदा बच्चा सभ पात पर नाम पढ़ैत अछि।

गढ़ नारिकेलमे ओहि राति चन्ना गाछी शान्त छल। खेल बन्द नहि, स्थगित सेहो नहि। ई ओ शान्ति छल जाहिमे खेल अगिला साँस लेल प्रतीक्षा करैत अछि।

अनन्या सपनामे देखली जे बटुकनाथ हरिहरन चन्ना गाछीमे पहुँचल अछि। ओकर हाथमे जीतक आदेश, माथ पर वकीली अहंकार, आँखिमे थकान। ओ चिल्ला रहल अछि — ‘प्रतिवादी कतऽ छथि?’ बूढ़बा भूत उत्तर दैत छथि — ‘काज पर।’ बटुकनाथ पूछैत अछि — ‘कोन काज?’ तखन सभ बच्चा एक संग बजैत अछि — ‘भविष्य।’

भोर होएबाक पूर्व चन्ना गाछीमे एक हलुक ध्वनि उठल। बूढ़बा भूत डारि सँ कहलाह — ‘आब ओ सभ आबत।’ हुलासी पूछली — ‘किएक?’ बूढ़बा उत्तर देलथि — ‘मोन टांगल अछि।’ पनिडुब्बी पोखरिक भीतर सँ लहर पठेलक — ‘देह बिना?’ बूढ़बा कहलाह — ‘पहिने मोन।’

एहि तरहेँ बटुकनाथ हरिहरन, चन्द्रपाल बन्ना, राघव संकेत, लाउ किन-हंग, एडवर्ड ब्रूम — सभक मोन अलग-अलग दिशा सँ गढ़ नारिकेल दिस चलि पड़ल। देह एखनहुँ शहर, विदेश, काँचक दफ्तर, होटल, अदालत, तिजोरी, फोनक पदामे छल। मुदा मोन पहिने निकलि गेल।

गामक बाहरक बाट पर एखन कोनो गाड़ी नहि छल। स्टेशन पर कोनो यात्री नहि। अदालतक आदेश एखन अलमारीमे।

चन्ना गाछीक अदालत स्थगित नहि भेल छल। ओ केवल अगिला जाहि विषयपर विचारकारक प्रतीक्षा करैत छल।

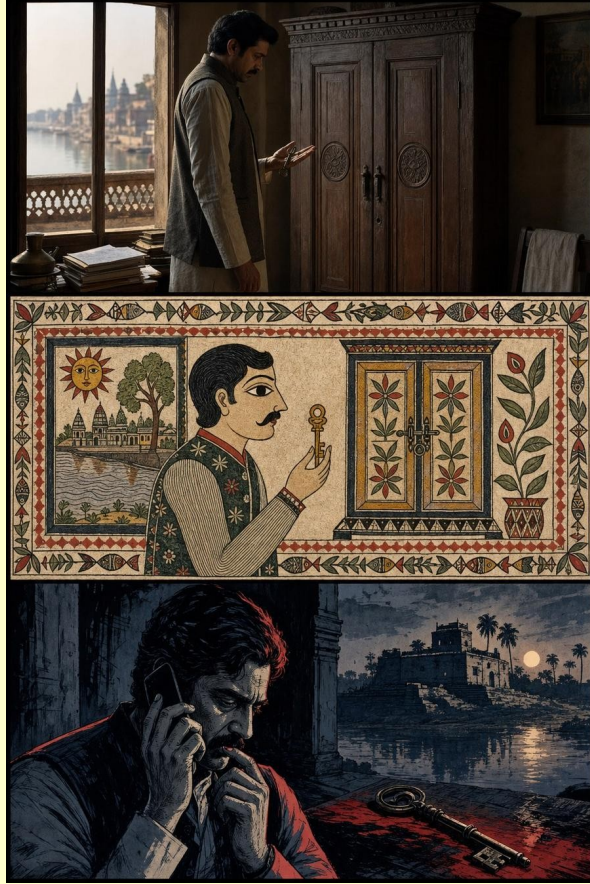
छोट लोकगीत

बटोहिया हो, मोनक बाटे गाम चलू हो,
देह रहौ शहर, मोनक गठरी घर धरू हो।
देह शहरमे हो तइयो मोन गामक बाट,
पातक सरसर, पोखरिक गन्धि, दादीक बात।

अध्याय २६

बटुकनाथ हरिहरनक यात्रा

कुंजी रातिभरि हाथमे रहला सँ हथेलीमे पीतल नहि, प्रश्नक गन्ध बसि जाइ छै।



मोन रातिये पहिने पहुँचि चुकल छल। भोरक समय बटुकनाथ हरिहरन अपन अलमारीक सामने ठाढ़ छल। राति भरि कुंजी हाथमे रहलाक कारण ओकर हथेलीमे पीतलकी गन्ध बसि गेल छल।

बटुकनाथ अपन सचिवकेँ फोन कयलक। सचिव आधा सुतल आवाजमे कहलक — ‘सर, आइ दुपहरि बार काउन्सिलक बैसकी अछि।’ बटुकनाथ कहलक — ‘रद्द।’ सचिव चौकल — ‘मीडिया?’ बटुकनाथ कहलक — ‘रद्द।’ सचिव पूछलक — ‘कतऽ

जाएब?’ बटुकनाथ उत्तर देबामे कनी देर केलक। जकरा गामक नाम बजबामे लाज लगैत अछि, से गाम पहिने ओकर जिह्वा पर काँटा बनि अबैत अछि।

बूढ़बा भूत अपन नाम नहि बतौलनि। ओ कहताह तँ कथा तुरन्त खुलि जाएत, आ गढ़ नारिकेलक कथा कहियो तुरन्त नहि खुलैत। ओ केवल अपन लाठीक अग्रभाग सँ डिब्बाक फर्श पर वृत्त बनौलनि।

बटुकनाथ चिढ़ल, थाकल, डरायल, आ आकर्षित सेहो छल। धूर्त मनुष्यक भीतर जिज्ञासा मरैत नहि। ओ केवल उपयोगितामे बदलि जाइत अछि।

बूढ़ ओकर माथ पढ़ि लेलनि। कहलनि — ‘अहाँ फेर जाल सोचैत छी। जाल पानिमे ठीक रहैत अछि।

चन्ना गाछी दूर सँ देखाइ देलक। दिनक उजास ओहिमे पैसैत-पैसैत थाकि जाए। गाछी लग बच्चा सभक आवाज अबैत छल — कबड्डी नहि, नाम-पाठ।

बच्चा सभ ओकरा देखलक, मुदा डरलक नहि। देविका दूर सँ माथ हिलेली। मीरा ओकरा देखि कऽ अपन पन्ना मोड़ि देली।

बटुकनाथ कहलक — ‘हाँ।’ अनन्या दोसर प्रश्न पूछली — ‘नाम पढ़ब?’।

ओ उत्तर देबा सँ पहिने बूढ़बा भूत डारि पर चढ़ि गेलाह। चन्ना गाछीक हवा हलुक हिलल। पात सभमे एक संग खड़खड़ाहट भेल — जेना हजारो कागचक पन्ना एक साथ खुलि रहल हो।

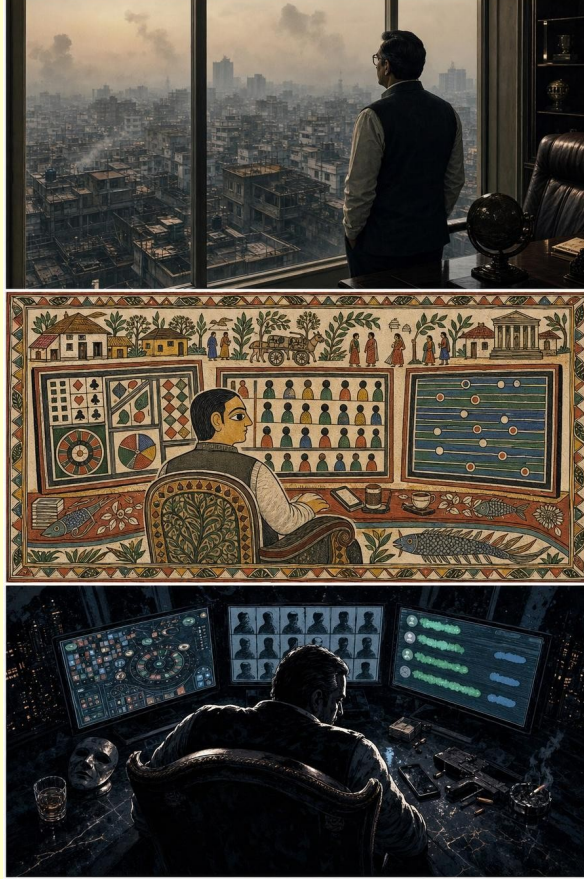
छोट लोकगीत

उतारू यौ जूता, दुआर पर उतारू यौ,
माथक बोझ, पदक ताप—सभ बाहर पसारू यौ।
दुआरपर जूता खोलू, संग अहंकार उतारू,
माटिक ठंढक पएरसँ माथक ताप उतारू।

अध्याय २७

चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन

काँचक दीवालसँ गाम नहि देखाइ छै, मुदा गामक नाम काँचो पार
कऽ जाइ छै।



चन्द्रपाल बत्रा गढ़ नारिकेल नहि जाएब। एहि निर्णय पर ओ ओहि भोर मोहर लगा देलक, जाहि भोर बटुकनाथ हरिहरन ट्रेनमे बूढ़बा भूतक संग नाम पढ़बाक अभ्यास करैत छल। एक धूर्त देहसँ चलि पड़ल छल, दोसर अपन ठामसँ नहि हटल — मुदा गाछी दुनूकें एक्के संग पढ़ि रहल छल।

ओकर कमरा कार्यालय नहि, जाल छल। तीनटा देवाल पर फोनक पर्दा। एक फोनक पर्दा पर ऑनलाइन गैम्बलिंग मोबाइल

साधनक डैशबोर्ड, दोसर पर दोसरक नामपर चलाओल खाताक सूची, तेसर पर संकेत संदेशक हरा-नील धारी।

राघव सोमानीक आवाज नहि आयल, मुदा ओहि फेनकाक पाछाँ जकरा बत्रा अनुभव केलक, से राघव नहि छल। ओ आवाज ककरो युवा साँसक छल, जे फोनक भीतर अटकल हो। बत्रा फोन फेकय चाहलक, मुदा फोन हाथसँ चिपकि गेल।

ओ लोक राघव सोमानी छल। राघवक पाछाँ लाउ किन-हंग। लाउ किन-हंगक पाछाँ समुद्र, काँच, बैंक, हवाला, जहाज, जानकारी रखयवला यन्त्र, आ एहन भाषा जकरा बत्रा पूरा नहि बुझैत छल, मुदा समयमे भाग बुझैत छल।

‘ई सभ गढ़ नारिकेलक जादू नहि,’ बत्रा अपन आवाज कठोर बनौलक। ‘ई मोनक अभियान अछि।’ राघव पूछलक — ‘तखन जवाब?’ बत्रा कहलक — ‘विरोधी चाल। नामक लिखित हिसाबकेँ अवैध घोषित करब।

भोरे ओकर सचिव आयल। ‘सर, आइ अदालतमे उपस्थिति?’ बत्रा कहलक — ‘स्थगित।’ सचिव — ‘बोर्ड बैसकी?’ ‘स्थगित।’ ‘राघव सोमानी?’ बत्रा रुकल — ‘कहलिए, सभ फोनक पर्दा बन्द राखू।’ सचिव चकित — ‘सर?’ बत्रा उत्तर नहि देलक। ओ खिड़की बाहर देखैत रहल।

चन्द्रपाल बत्रा खिड़की लग टाढ़ रहल। नीचाँ शहर चलैत रहल। ऊपर फोनक पर्दा सभ शान्त।

साँझक बेला राघवक संकेत संदेश आयल — ‘आदेश?’ बत्रा बहुत देर धरि टाइप करैत नहि रहल। अन्तमे ओ एक पंक्ति पढेलक — ‘सबूत नहि, नाम खोजू।’ संदेश भेजिते अपने मिटि गेल। फेर फोनक पर्दा पर चन्ना गाछीक पात खसि पड़ल।

एहि तरहेँ चन्द्रपाल बत्रा गढ़ नारिकेल जाए बिना गढ़ नारिकेलमे प्रवेश कयलक। ओकर देह शहरक काँचक कमरामे रहल, मुदा ओकर मोन फोनक पर्दाक दरार सँ चन्ना गाछी दिस लटकल गेल। धूर्त सभक भीतरी यात्रा एखन शुरू भेल छल।

छोट लोकगीत

झूमि-झूमि गाबू, काँचक पार गाबू हे,
परदा नहि, पुल बनाउ—दुनू पार आबू हे।
काँचक परदा दू मुख, दुनू पार नजर,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

शहर गामकेँ देखै, गाम देखै शहर।

अध्याय २८

राघव सिग्नलक चुप्पी

जे आवाजसँ डेराइ छै, से मेटाइट अक्षरमे बाजै छै।



धूर्त सभक भीतरी यात्राक दोसर पड़ाव राघव छल। राघव ‘संकेत’ सोमानीक जीवनमे आवाजक महत्व कहियो नहि रहल। ओ आवाजसँ डेराइत छल।

ओहि राति, चन्द्रपाल बत्राक काँचक कोठरीसँ घुरला बाद, राघव अपन अपार्टमेण्टक दुआर खोलिते रुकि गेल। भीतर सभ किछु ओहिना छल — नील बत्ती, काँचक मेज, तीनटा फोन, दूटा बन्द लैपटाप, एकटा धातुक अलमारी, जकरामे नकद नहि, सिम-कार्ड, बैंक-किट, नकली कम्पनीक मोहर आ किछु पुरान पासपोर्ट राखल छल। मुदा कोठरीमे जे चीज नव छल, से छल चुप्पी।

राघव सोमानी मूलतः बनिया नहि, बहीखाता छल। ओकर देह पर कपड़ा, मुँह पर मुस्की, जेबमे फोन। भीतर मात्र जमा-निकासी।

निकास-सूत्र सभः दोसर नाम, दोसर पासपोर्ट, दोसर देश, पहाड़क घर, नकद, सोना, सिक्का, तेसर फोन। मुदा प्रत्येक पन्नाक किनार पर हरियर रेखा खिंचल छल। रेखा पातक नस जेकाँ।

साँझ धरि चन्द्रपाल बन्नाक फोन आयल। राघव देखलक, नहि उठेलक। फेर संदेश — ‘स्थिति?’ राघव टाइप करए लागल — ‘सभ नियंत्रणमे।’ ओकर अंगुरी रुकि गेल।

ओहि खालीपनसँ राघवक भीतर कोनो चीज टूटल। अपराधी कै सभसँ पैघ भय पकड़ा जाएब नहि। भय ई जे ओकरा अपन पहिल अपराधक नाम मोन नहि।

राघवक आँखि भरि आयल, मुदा आँसू नहि खसल। अपराधक लंबा अभ्यास आँखिक पानि सुखा दैत अछि। ओ कानए चाहैत छल, मुदा देहक भीतर पानि उपलब्ध नहि।

भोरमे ओकर टेबल पर एकटा नव पात छल। पात पर लिखल — ‘चुप्पी तोड़बासँ पहिने सुनू।’ राघव ओ पात नोटबुकमे राखलक। ई स्वीकार नहि छल, ई प्रायश्चित्त सेहो नहि।

गढ़ नारिकेलमे ओहि भोर चन्ना गाछीक कबड्डीमे एकटा नव आवाज आयल। भूत सभ पूछलक — ‘के आयल?’ बूढ़बा भूत कान लगौलनि — ‘देह नहि। कियो चुप्पी भेजने अछि।’ लोथ सभ मुस्कुरायल।

छोट लोकगीत

जागू हो संगी, सन्देशक घण्टी जागू हो,
पाँच सेकेण्डक आखरो पर कान लगाबू हो।
पाँच सेकेण्डक अक्षर हो, तइयो संकेत मानू,
संकट, भय, निराशाक बात समयपर पहिचानू।

अध्याय २९

लाउ किन-हंगक सपना

जे नाम पूरा लिखल जाए से गिरफ्तार भऽ सकैए— मुदा
अधलिखल नाम अपने कैदी बनि जाइए।



राघवक चुप्पी समुद्र टपि हांगकांग धरि पहुँचि चुकल छल। लाउ
किन-हंग कहियो अपन पूरा नाम उच्चारित नहि करैत छल। ओ
कहैत छल — नाम जे कागचपर पूरा लिखल जाइ, से नाम
गिरफ्तार भऽ सकैत अछि।

ओ समुद्रक कात बनल अपन शीशाक घरमे रहैत छल। घर नहि
— काँचक गुफा। एक्के बेरा भीतर आ बाहर।

तखन पानिमे एकटा गोहि देखाइ देलक। हांगकांगक समुद्रमे गोहि? मुदा सपना असम्भवक सीमा-शुल्क नहि भरैत।

गोहि सभ ओकरा घेरि लेलक। एक, दू, तीन, चारि। ओहि क्षण पानिमे चन्ना गाछीक भूत सभक कबड्डी सुनाइ देलक।

ओ अपना कै हार्वर्डक सभागारमे देखलक। मंचपर एडवर्ड ब्रूम बाजि रहल छल — ‘मानव गरिमा विकासक आत्मा अछि।’ सभागार ताली बजा रहल छल। लाउ किन-हंग पाछाँक अन्हारमे बैसल छल।

तखन सभागारक छतसँ पानि टपकए लागल। प्रोफेसर एलिना ग्रेव्स अपन नोट बचबऽ लागली। ईरा आरुणि उठि कऽ मंच दिस नहि गेली।

मुदा ओ नहि बुझलक जे जकरा काटल जाइत अछि, ओकर मोन पहिने स्वतंत्र भऽ जाइत अछि। राघवक चुप्पी पात बनि चुकल छल। बन्नाक फोनक पर्दा चन्ना गाछी बनि चुकल छल।

लाउ परदा खिचि देलक। मुदा पानिक आवाज शीशाक आर-पार आबि गेल।

ओ आवाज गढ़ नारिकेलक नहि, ओकर अपने मोनक छल। मोन टांगल रहि गेल छल। आ जे मोन टांगल रहि जाइत अछि, ओ एक दिन देहकै सेहो घीचि लैत अछि।

छोट लोकगीत

गाबू हे मलार, शीशाघर मे गाबू हे,
काँचक ठण्ड छाती मे नदीक धुन जगाबू हे।
शीशाघरमे समुद्र देखू, आवाजो भीतर आनू,
लाभक रेखा बीच मनुखक नाम सम्मानू।

अध्याय ३०

धूर्त सभक भीतरक अदालत

बाहरक अदालतमे जीतल आ भीतरक अदालतमे हारल लोकक
हूँसीमे दाँतक खनखनी सुनाइ छै।



पाँचू धूर्तक मोन आब टांगल छल। आ टांगल मोनक लेल चन्ना
गाछी अपन अदालत खोलैत अछि। मनुष्य जखन बाहरक
अदालतमे जीतैत अछि आ भीतरक अदालतमे हारैत अछि, तखन
ओकर चाल पहिनेसँ बेसी नापल-तौलल भऽ जाइत अछि।

ओहि राति तीन शहरमे, तीन अलग-अलग कमरामे, तीन लोक
एक्के बेरा जागि गेल। बटुकनाथ हरिहरन अपन महँग कुर्सीपर,
चन्द्रपाल बत्रा अपन फोनक पर्दाक आगाँ, आ राघव संकेत अपन

बन्द खिड़कीक भीतर। समुद्रक पार लाउ किन-हंग सेहो जागल,
मुदा ओकर जागरणमे देहक पसीना नहि छल।

ओ लाउ किन-हंगकेँ सन्देश लिखलक — ‘बाहर निकालू।’ सन्देश
गेल नहि। ओकर ठाम लाल चिन्ह आयल। फेर फोनक पर्दा पर
उत्तर नहि, एक दर्पण खुलल।

समुद्र पार लाउ किन-हंग अपन शीशाक घरमे चलि रहल छल।
ओकरा भीतरक अदालत ओकर भाषा नहि बाजैत छल। ओ
अंग्रेजी, चीनी, हिन्दी, कानूनी अनुवाद — सभक लेल दुभाषिया
राखि सकैत छल।

एहि चारू भीतरक अदालतमे एक कुर्सी खाली छल। बटुकनाथक
कमरामे, चन्द्रपालक फोनक पर्दामे, राघवक पात-अदालतमे, लाउ
किन-हंगक शीशाघरमे, बूमक सभ्य कक्षमे — सभ ठाम एक्के
खाली कुर्सी। ओ कुर्सी पर नाम नहि।

भोरक आगाँ-आगाँ चारू शहरमे लोक अपन-अपन बिछौना पर
भेटल। बटुकनाथक हाथमे जीतक आदेश छल, मुदा ओकर
अंगूठा नामक ठाम दबल। चन्द्रपालक फोनक पर्दा बन्द छल,
मुदा काँचक भीतर सँ उज्ज्वलक अधूरा सन्देश चमकैत।

आ गढ़ नारिकेलमे ओहि समय बच्चा सभ नारिकेल पात
पाठशालाक आँगन झाड़ि रहल छल। देविका पहिल पाठक पट्टी
पर लिखैत छलीह — ‘यन्त्रपर चलयवला डर सँ डेराउ नहि।’
मीरा दोसर पट्टी पर लिखैत छलीह — ‘अपन निजी बातक
अधिकार देहक छाह थीक।’ सौम्या पुरान कागच लोकभाषामे
उतारैत छलीह। ईरा दूर देशक सभागार छोड़ि नामक उच्चारणक
अभ्यास करा रहल छलीह।

धूर्त सभ भीतरक अदालतमे पहिल तारीख काटि आएल। मुदा
हुनका सभकेँ दण्ड नहि भेटल। दण्डसँ बेसी कठोर चीज भेटल —
प्रतीक्षा।

चन्ना गाछीमे बूढ़बा भूत ओहि भोर कनी देर धरि जागल रहलाह।
ओ पात उलटि कऽ देखलनि। पातपर अगिला तारीख लिखल छल
— सपनाराति।

छोट लोकगीत

जराउ हे दीप, भीतरक अदालत मे जराउ हे,
अपने कर्मक बही अपने आगाँ बिछाउ हे।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

बाहरक अदालत देर करै, भीतर दीप जरै,
विवेकक शान्त न्यायाधीश साँचक पन्ना धरै।

अध्याय ३१

हारल लोक सभक काज

हारल लोक नारा नहि लगबै छै— ओ भोरे उठि कऽ दोसराक नाम
उठबै छै।



भीतरक अदालत धूर्त सभकेँ प्रतीक्षामे बान्हि देने छल। एम्हर जकरा सभकेँ अदालतमे हारल कहल गेल छल, ओ सभ भोर भेने उठि कऽ ककरो विरुद्ध नारा नहि लगेलक। ओ सभ ककरो घरक आगाँ ढोल नहि बजेलक।

चन्ना गाछीक अदालतक राति बीतल छल। पात सभ पर ओस टिकल छल, आ ओसक भीतर मुँह झुकौने जे कियो देखैत, तकरा अपन चेहरा नहि, कोनो मरल लोकक नाम देखाइत। बूढ़बा भूत ओहि भोर डारि पर बैसि कऽ किछु नहि बजलाह।

आरुणि सभसँ पहिने उठल। ओकरा राति भरि निन्न नहि आयल छल। ओ सोचैत रहल जे जँ न्यायालयक कागच हार कहैत अछि, आ चन्ना गाछी जीत, तखन मनुष्य कोन कागच पर भरोसा करत?

मीरा ओहि दिन देर सँ आयली। ओकर चालमे ओ डर नहि छल जे अध्याय सभक बीच-बीचमे ओकरा घेरैत छल। समाज ओकर प्रेमकेँ अपराध बनाबय चाहैत छल, कम्पनी ओकर अपन निजी बातक अधिकारकेँ कागजक गट्टर बनाबय चाहैत छल, आ चन्द्रपाल बत्राक लोक ओकर तस्वीर, संदेश, आवाज, छाह सभकेँ बाजारक माल बनाबय चाहैत छल।

चन्ना गाछीमे ओहि राति भूत-प्रेतक कबड्डी नहि भेल। सभ बैसि कऽ सुनैत रहल। जीवित लोक सभ अलग-अलग ठाम जे काज करैत छल, ओकर ध्वनि पातमे आवि रहल छल।

अध्यायक अन्तमे कोनो सभक सामने कहल बात नहि भेल। कोनो झण्डा नहि फहरल। केवल काज बाँटल गेल।

चन्द्रपाल बत्रा, बटुकनाथ हरिहरन, राघव संकेत, लाउ किन-हंग — ई सभकेँ ओहि दिन कोनो हारक खबर नहि भेटल। हुनका सभकेँ केवल एतबा बुझा गेल जे अगिला चाल चलब कठिन भऽ रहल अछि। धूर्त सभक संसारमे ई हारक सभसँ पहिल संकेत होइत अछि।

धूर्त सभ एहि परिवर्तनकेँ छोटा मानि रहल छल। ओकरा सभकेँ बुझाइत नहि छल जे सत्ता पहिने लोककेँ अलग-अलग रखैत अछि। जखन लोक अपन-अपन पीडा अलग-अलग कोठरीमे रखैत अछि, तखन बटुकनाथ जेकाँ लोक प्रक्रिया कहि कऽ ओकरा टारैत अछि, चन्द्रपाल जेकाँ लोक फोनक पर्दा कहि कऽ ओकरा फँसावैत अछि।

चन्ना गाछीमे पात सभ फुसफुसाएल — ‘जे लोक लडाइ छोड़ि काजमे लागि जाइत अछि, ओकरा हराएब कठिन नहि, असम्भव होइत अछि।’

छोट लोकगीत

हँ हो भैया, हारियो कऽ जीतू हो,
झण्डा नहि, कोदारि धरू, कर्मक गीत गाबू हो।
न झण्डा, न मंच, हारल लोक काजपर,
विद्यालय, खेत, सहायता, नेनाक समाजपर।

अध्याय ३२

तेसर कबड्डी

बयार नहि आ पात हिलए, तँ बुझू— कोनो पुरान फैसला कागज
छोड़ि गाछपर उतरि रहल छै।



साँझक फुसफुसी राति धरि टिकल रहल। ओहि राति चन्ना
गाछीमे बयार नहि छल, मुदा पात सभ हिलि रहल छल। बयार
जखन नहि होइ आ पात हिलै, तखन बुझू जे कियो अदृश्य हाथसँ
गाछक माथ सहला रहल अछि, अथवा कोनो पुरान फैसला
कागज छोड़ि पातमे उतरि रहल अछि।

चन्ना गाछीक बीच जे खाली धरती रहैत छल, ओतय कबड्डीक
घेरा बनल। कोनो चुन नहि, कोनो डोरी नहि, कोनो लाटीसँ रेखा

नहि। घेरा अपने बनल, जेना धरती अपन छातीपर पुरान नहक निशान फेर उजागर कऽ देलक।

घेराक दोसर कात बच्चा सभ आयल। अनन्या, नारिकेल पात पाठशालाक बच्चा, देविकाक संग घूमि-घूमि फोनक पर्दाक ठगी चिन्हब सीखने बालक-बालिका, मीरा सँ अपन निजी बातक अधिकारक शपथ सुनने किशोर, ईरा सँ दूर देशक मंचक प्रश्न सीखने विद्यार्थी। हुनका सभक हाथमे कापी नहि, नारिकेलक पात छल।

तेसर दल देर सँ आयल। ओ सभ देहसँ नहि आएल। देह अपन-अपन जगह रहि गेल — शहरक महँग कोठीमे, समुद्र पार शीशाक घरमे, बन्द कमरामे, कारी काँचबला गाडीमे।

दोसर साँस बच्चा दलक छल। अनन्या घेरामे गेली। ओ बाजली — ‘प्रश्न, प्रश्न, प्रश्न,’ बटुकनाथक मोन पाछाँ हटि गेल।

तखन एक अजीब बात भेल। धूर्त सभक मोन बाहर निकलि जाए चाहैत छल, मुदा बच्चा सभ ओकरा रोकल नहि। खेलक नियम छल — जे बाहर जाए चाहैत, जा सकैत अछि, बशर्ते ओ अपन पाछाँ एक शब्द छोड़ि जाए।

दूर-दूर धरि, शहरमे, समुद्र पार, शीशाघरमे, बन्द कोठीमे, धूर्त सभ भोरमे जागल। हुनका सभकेँ मोन नहि रहल जे रातिमे ओ खेलमे गेल छल, मुदा हुनकर मुँहमे अपन-अपन पुरान शब्दक स्वाद नहि रहल। बटुकनाथ ‘प्रक्रिया’ कहए लागल, मुदा ओकरा ‘नाम-पाठ’ सुनाइ देलक।

आ चन्ना गाछीमे अगिला साँस भरल गेल। कथा ओतहि नहि रुकल। गोहि सभ देह खाइत अछि, अदालत वर्ष खाइत अछि, फोनक पर्दा मोन खाइत अछि।

छोट लोकगीत

बाजू हे कबड्डी, तेसर पारी बाजू हे,
दर्शक कियो नहि—सभ खिलाडी साजू हे।
पहिल पारी खेल छल, दोसर नामक गान,
तेसर पारी संगक—जीवित जन अभियान।

अध्याय ३३ मोनक परीक्षा

देह थाकल तँ बैसि जाइ छै।



अगिला साँस भरा चुकल छल। चन्ना गाछीमे तेसर कबड्डीक पहिल साँस खतम भेल, मुदा खेल खतम नहि भेल। साँस जखन टूटैत अछि, तखने खेलक असली नियम खुलैत अछि।

भूत सभक कबड्डीमे देहसँ बेसी मोनक परीक्षा होइत अछि। देह थाकल तँ बैसि जाइत अछि। मोन थाकल तँ अपन मालिककँ घीचि लैत अछि।

बूढ़वा भूत अपन कारी उजास पसारलनि। ओ कहलन्हि, “पुरान नियममे पकड़ल गेल खिलाड़ी बाहर होइत छल। नब नियममे जे नाम काटने अछि, ओ नाम बजौने बिना बाहर नहि जा सकैत।”।

ओकर मोन खेलमे घुसए चाहलक नहि। मुदा कबड्डीमे जे साँस लैत अछि से मैदानसँ बाहर नहि रहि सकैत। ओकर मुँहसँ “सयमे भाग” निकलल।

एडवर्ड ब्रूमक मोन सभसँ विचित्र छल। ओ सभागारक तालीसँ बनल एकटा खोखला पात्र छल। ओ जखन बजैत छल, लोक ताली बजबैत छल।

बूढ़वा भूत कहलन्हि — “तखन अहाँक जीत दुख देत, मुदा दुखमे कनी पानि रहत। जे जीत बिना दुखक होइत अछि, से सड़ि जाइत अछि।”।

बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव, लाउ किन-हंग, एडवर्ड — पाँचू मोन चुप। बाहर हुनकर देह अपन-अपन शहरमे छल, मुदा भीतर ओ सभ चन्ना गाछीक ओसार पर बैसल छल। दूर देविका, मीरा, सौम्या, ईरा, गोप कुमार, आरुणि — कोनो प्रतिशोधक सभा नहि कऽ रहल छल।

भोरक पहिल उजासमे चन्ना गाछीपर एकटा पात चमकल। ओकरा पर कोनो फैसला नहि लिखल छल। केवल एतबा — “चारिम साँस समाप्त।

आ ओहि क्षण उपन्यास फेर आगाँ बढ़ि गेल।

छोट लोकगीत

देखू हे दर्पण, डरि कऽ नहि देखू हे,
करुण नजरिसँ अपने कर्म-रेख लेखू हे।
दर्पण दण्ड नहि मात्र, साँचक मित्र बुझू,
चेहरा जकाँ कर्म देखू, गलती स्पष्ट चुनू।

अध्याय ३४ सुनैत नदी

नदी धार रोकि कऽ सुनै छै जे किनारपर के झूठ बाजि रहल छै।



चारिम साँसक बाद जे निःशब्दता पसरल, से शान्ति नहि छल। ओ एहन निःशब्दता छल जाहिमे नदी अपन धार रोकि कऽ सुनैत अछि जे किनारपर के झूठ बाजि रहल अछि। चन्ना गाछीक पात सभ राति भरि किछु नहि बजल, मुदा ओकरा सभक नोक पर ओस नहि, अक्षर टाँगल छल।

बाहरी दुनियाँमे भोर भऽ गेल छल। दिल्लीमे बटुकनाथ हरिहरनक कोठीमे चापाकल नहि छल, मुदा ओकर स्नानघरक नलसँ ओहि भोर कादो-मिश्रित पानि बहरायल। ओ पानि देखिते नौकर दौड़ल।

चारू दिशासँ पाँच मोन चन्ना गाछी दिस खिंचाईत छल। देह सभ अपन-अपन शहरमे छल, मुदा देहक भीतर जे मनुक्ख अपनाकेँ मालिक बुझैत छल, ओकर लगाम आब नामक हाथमे छल। गढ़ नारिकेलमे बच्चा सभ उठि चुकल छल।

मुदा देखब स्वीकार करब नहि। ओ आँखि मूँदि लेलक। तखने चन्ना गाछीक भीतर ओकर मोन उठि गेल आ कबड्डीक गोलमे आबि ठाढ़ भेल।

बूढ़बा भूत उत्तर देलन्हि, “जे नाम प्रेमसँ बजाओल जाए, ओ गरम भात जेकाँ भाप छोडैत अछि। जे नाम केवल बचबाक लेल बजाओल जाए, ओ ठंढा लोहा जेकाँ रहैत अछि। चन्ना गाछी गरम आ ठंढा दुनू चिन्हैत अछि।”।

लाउ किन-हंगक बेर आयल। ओकरा देवनागरी नहि अबैत। ओ नाम बजए नहि सकल।

बाहरी दुनियाँमे पाँचू देह जागल। बटुकनाथ टिकट कटौलक — गढ़ नारिकेल। चन्द्रपाल अपन फोन तोड़बाक सोचलक, मुदा फोनक भीतर सँ अनन्याक स्वर आयल — “फोन तोड़लासँ नाम नहि टूटैत।” राघव पहिल बेर कागचपर देवनागरीक अक्षर बनाबए बैसल।

नारिकेल पात पाठशालामे बच्चा सभ कटोराक पानि चन्ना गाछीक जड़िमे ढारलक। जड़ि ओ पानि पी गेल। ओहि हिलनाइमे एकटा वाक्य छल — “नाम कहब पहिल साँस।

आ गढ़ नारिकेलक कथा पाँचम साँस लऽ कऽ फेर आगाँ बढ़ल।

छोट लोकगीत

सुनू हे नदी जकाँ, धार रोकि सुनू हे,
दूरक क्षीण पुकारो कान लगा गुनू हे।
नदी धार रोकि सुनै हरेक किनारक नाम,
झूठक शोर पार करि पाबै साँचक तान।

अध्याय ३५ नामक देहरी

नाम कहब पहिल साँस, नामक घर धरि जाएब दोसर।



पाँचम साँसक बाद चन्ना गाछीक जड़िमे ढारल ओ पाँच बून्द पानि धरतीमे नहि गेल। ओ जड़िक भीतर घूमेत रहल, जेना पुरान घरक भीतर बच्चा सभक हँसी घूमेत अछि। भोरक पहिल उजासमे गाछक पात सभपर ओहि बून्दक चमक देखाइ देलक।

अनन्या ओहि भोर माटिमे एकटा गोल खिंचलक। गोलक चारू कात पाँच छोटका घर बनाओल गेल — सरयू देवीक घर, मुन्ना पासवानक घर, उज्ज्वलक घर, ओ अज्ञात मजदूर सभक घर, आ ओ घर जकर मालिक एखनो नाम नहि भेटल छल। बच्चा सभ गोलमे बैसल।

“अहाँ हमर पाछाँ किए लागल छी?” बटुकनाथ झुँझलायल। बूढ़बा भूत खिडकीसँ बाहर तकैत कहलन्हि, “पाछाँ हम नहि लागल छी। जे नाम अहाँ छोड़ने छी, ओ अहाँक आगाँ चलि रहल अछि।”।

चन्द्रपाल बन्ना फोन तोड़ि नहि सकल। ओ फोनकें हथौड़ासँ मारलक, पानिमे फेकलक, आगि लगौलक। प्रत्येक बेर फोनक परदा चन्ना गाछीक पात बनि गेल।

देविका उज्ज्वलक घरक सामने बैसली। ओ चाहैत छली जे चन्द्रपाल ओ घर देखए। कारण जे घर एक बेर देखल जाए, ओकरा संख्या बनाओल कठिन होइत अछि।

बटुकनाथक ट्रेन एक छोट स्टेशन पर रुकल। स्टेशनक नाम धुँधलकामे पढ़ल नहि गेल। ओ उतरए चाहलक नहि, मुदा बूढ़बा भूत कहलन्हि — “एतहि।” प्लेटफार्म पर कोनो भीड़ नहि।

चन्द्रपाल उज्ज्वलक घर पहुँचल नहि। मुदा उज्ज्वलक घर ओकर फोनमे, नखमे, बिछौनाक दाँत-निशानमे पहुँचि गेल छल। ओ अपन लोककें कहलक — “देविका पर दबाव नहि।” ओ लोक चकित।

छठम साँस समाप्त नहि भेल। ओ पएरक धूलि बनि पाँच दिशामे छिड़िआ गेल। गढ़ नारिकेलमे बच्चा सभ देहरी सभ पर पानि छिड़कलक।

चन्ना गाछीक पात सभ एक साथ हिलल। ओ हिलनाइमे कबड्डी नहि, पाठशालाक स्वर छल। कथा आगाँ बढ़ल — कारण नाम घर पहुँचने बिना थाकैत नहि।

छोट लोकगीत

धूलि हे देहरीक, माथ पर धरू हे,
टूटलो घरक आशीषसँ नव घर भरू हे।
घर टूटि जाए तइयो देहरी धूलि बचाबै,
घुरनिहारक पग चिन्हि पुरखा बात सुनाबै।

अध्याय ३६

घर, भय, सपना

घर, भय आ सपना— तीनू गोलक बीच जे साँच ठाढ़ रहल, वैह खेलमे टिकल।



नाम घर पहुँचल, तखन चन्ना गाछीक खेलक सातम साँस आरम्भ भेल। छह साँस धरि नाम अपन देहरी ताकैत रहल छल। सातम साँसमे देहरीक भीतर जे अन्हार, जे भातक गन्ध, जे डरक काँटा आ जे सपनाक बुझायल बाती छल, से सभ धीरे-धीरे खुलए लागल।

गामक बच्चा सभ भोरमे चन्ना गाछी लग जमा भेल। पातक छाहमे ओ सभ आब खेल नहि, नियम लिखैत छल। अनन्या माटि पर तीन गोल बनौलक — घर, भय, सपना।

सरयू देवीक देहरी पहिने बजल। देहरीक भीतर धुँआ छल, अधपकल भात छल, आ एक बालक छल जे राति भरि मायक प्रतीक्षा करैत-करैत सूति गेल छल। बटुकनाथ हरिहरन ओ दृश्य देखलक आ तुरन्त आँखि फेरए चाहलक।

गढ नारिकेलमे अनन्या बच्चा सभसँ कहली — “आब घर पूछलौं। भय पूछू।” बच्चा सभ पहिने घबरायल। घरक कथा सुनब आसान, भयक कथा सुनब कठिन।

सातम साँसक अन्तिम भाग सपना छल। अनन्या कहली — “घर आ भयक बाद सपना।” बच्चा सभ हर्षित भेल, मुदा बूढ़बा भूत गम्भीर। कारण मृतकक सपना जीवितकें पूरा करए पड़ैत अछि।”।

ओहि राति चन्ना गाछीमे धूर्त सभक मोन फेर खेलमे आएल। मुदा एहि बेर ओकरा सभकें पकड़बाक नहि, घर-भय-सपना कहबाक बारी छल। बटुकनाथ सरयू देवीक घर कहि सकल, भय आधा कहि सकल, सपना पर चुप।

बूढ़बा भूत निर्णय नहि सुनौलनि। चन्ना गाछीक अदालत एहि बेर फैसला नहि, गृहकार्य देलक। “जतबा नहि कहि सकलहुँ, ततबा सीखि कऽ आउ।”।

बाहरी दुनियाँमे भोर भेल। बटुकनाथक टेबुल पर विजय-आदेश छल, मुदा ओहि पर एक छोटका बच्चाक लिखल वाक्य चमकि रहल छल — “नामक घर पूछू।” चन्द्रपालक परदा पर मोबाइल साधन नहि खुलल, केवल “उत्तर लिखू”। लाउक नक्शा धुँधला।

गढ नारिकेलमे बच्चा सभ स्कूल जाए लागल। अनन्या पाछाँ घूमि कऽ चन्ना गाछी दिस देखलक। कबड्डी नहि, गृहकार्यक सरसराहट।

छोट लोकगीत

खनकाबू हो नेना, जेबीक कंकड़ खनकाबू हो,
घर, साहस, सपना—तीनू नाम रटाबू हो।
जेबीमे तीन कंकड़, नेना नाम धरै,
एक घरक, एक साहसक, एक सपना भरै।

अध्याय ३७

तीन कंकड़

जेबीक तीन कंकड़ जहिया खनखनाएब छोड़ि देत, तहिया बुझिहऽ
— कोनो उत्तर हेरा गेल।



सातम साँस बच्चा सभक जेबीमे तीन कंकड़ बनि चलि गेल —
घर, भय, सपना। ओ कंकड़ दिन भरि खनखनाइत रहल।
पाठशालामे, खेतक मेड़ पर, फोनक परदा बुझेलाक बाद, आ
रातिमे सिरहाना तर।

धूर्त सभ सेहो एहि नियमसँ बचि नहि सकल। चन्ना गाछीक
अदालत कहने छल — जतबा नहि कहि सकलहुँ, ततबा सीखि
कऽ आउ। धूर्त सभ सोचने छल जे ई मृतकक भाषा अछि, खेलक
भीतरक ध्वनि, जागलाक बाद खतम।

गढ नारिकेलमे अनन्या बच्चा सभकेँ कहली — “आइ हम धूर्त सभक घर पढ़ब।” बच्चा सभ चौंकल। एक बच्चा पूछलक — “ओ सभक घर सेहो होइत अछि?” बूढ़बा भूत डारि सँ उतरि अएलाह। “अत्याचारीक घर होइत अछि, मुदा ओ ओकरा छोड़ि दैत अछि।

बच्चा सभ माटि पर पाँच नाम लिखलक — बटुकनाथ हरिहरन, चन्द्रपाल बत्रा, राघव सोमानी, लाउ किन-हंग, एडवर्ड बूम। नामक आगाँ खाली स्थान। अनन्या कहली — “जकर घर नहि लिखल, ओकर दोष पूरा नहि बुझल जा सकैत।

मीरा मृणालिनी ओतय पहुँचली। ओकर हाथमे अपन निजी बातक अधिकारक शपथक पत्रा छल। ओ बच्चा सभसँ कहली — “ध्यान राखू, धूर्तक पीडा ओकर अपराधक क्षमा नहि।

गढ नारिकेलमे बच्चा सभ पाँचू पातक पाठ कएलक। अनन्या पूछलक — “एहि सभक सजा?” बूढ़बा भूत कहलन्हि — “सजा तखन, जखन अदालतक समय आवय। जे अपराधक आरम्भ नहि पढ़त, ओ अपराधक पुनर्जन्म रोकि नहि सकत।”।

चन्द्रपाल फोन उठौलक आ पहिल बेर बिना वकीली भाषा बाजल — “राघव, हमरा मोन पड़ि रहल अछि।” राघव उत्तर देलक — “हमरा सेहो।” दुनू मौन। ओ सभ माफी नहि माँगलक, आत्मसमर्पण नहि केलक, पश्चाताप सेहो पूरा नहि। मुदा आठम साँसक काज पश्चाताप समाप्त करब नहि, स्मृति शुरू करब अछि।

भोरमे अनन्या तीन कंकड़ आ पाँच पात समेटलक। ओ कहली — “आब नव नियम — जकरा हराबय छी, ओकर घर सेहो बुझू। नहि तँ जीत फेर अपराध बनि जाएत।” बूढ़बा भूत मुस्करेलाह।

आठम साँस एना पूरा भेल — क्षमा बिना, दण्ड बिना, मुदा आरम्भक चिन्हारिसँ। कथा आगाँ बढ़ल, कारण धूर्त सभक भीतरी दुनियाँमे दुआर खुलि गेल छल। दुआर खुलला बाद कियो तुरन्त बदलैत नहि।

छोट लोकगीत

रोपू गे रोपनिहारि, प्रश्नक बीया रोपू गे,
पातक नहि, जड़िक खोज—गहीँर हाथ बोरू गे।
गाछक पात नहि मात्र, जड़ि पढ़ू जमीन,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

अपराधक अण्डा छोट, पाछाँ जाल महीन ।

अध्याय ३८

नामक उच्चारण

नाम लिखि देने भरि नहि होइ छै— ओकर उच्चारण सिखेबाक
काल देबए पड़ै छै।



आठम साँसक बाद गढ नारिकेलमे खेल दू दिन बन्द रहल। बच्चा सभकेँ ई बात अचरज लागल, कारण भूतक कबड्डी कहियो बन्द नहि होइत छल। बाढ़ि आबय, सुखाड़ पड़य, विवाह होअय, मृत्यु होअय, अदालत फैसला देअय, सरकार पुल बनबय, विदेशक लोक भाषण देअय — चन्ना गाछीमे राति पड़िते खेल शुरू भऽ जाइत छल।

बच्चा सभ पहिने बुझल नहि। लिखित हिसाब बनि गेल। पात पर, माटि पर, परदा पर, गीतमे।

गढ नारिकेलमे एहि बीच “नाम-पाठ”क पहिल सभा भेल। चन्ना गाछीक नीचाँ माटि बराबर कएल गेल। बच्चा सभ वृत्त बना कऽ बैसल।

अनन्या पहिल पात उठौली। “नाम गलत पढ़ब नहि।” बच्चा सभ एक स्वरमे दोहरौलक — “नाम गलत पढ़ब नहि।” देविका जोड़लनि — “जे नाम नहि जनैत, ओ पूछत।” बच्चा सभ — “पूछत।” मीरा कहली — “जे नाम लुकायल गेल, ओ खोजत।” बच्चा सभ — “खोजत।” सौम्या कहली — “जे नामक संग अपमान जोड़ल गेल, ओ अपमान हटाओत।” बच्चा सभ — “हटाओत।” बूढ़बा भूत संतुष्ट भेलाह।

तेसर नाम उज्ज्वल झा। ओकरा लागल आवाज टूटि जाएत। मुदा अनन्या ओकर हाथ पकड़लक।

धूर्त सभक भीतर ई विधान तुरन्त पहुँचल। बटुकनाथक कक्षमे कागजक गट्टर खुलल — घर, मृत्यु, अपमान। ओ केस-संख्या खोजए लगल, मुदा कागजक गट्टर स्वयं कहलक — “पहिने घर।” चन्द्रपाल फोनमे बही-खाता खोजलक, मुदा परदा कहलक — “पहिने मृत्यु।” राघव पुरान सन्देश खोजलक, परदा कहलक — “पहिने अपमान।” लाउ रिपोर्ट खोललक, ओतय केवल “पहिने नाम” लिखल।

बटुकनाथ हरिहरन पहिल बेर अदालतक शब्दावली छोड़ि सामान्य कागच पर लिखलक — “भोला नट, घर अज्ञात।” लिखिते कागच कारी भऽ गेल। अज्ञात लिखब एते सरल नहि। जकर घर नहि खोजल गेल, ओकरा अज्ञात कहब आलस्य अछि।

भोरक पहिल उजासमे अनन्या देखलक — चन्ना गाछीक एक नव पात पर अक्षर उभरल अछि: “जे नाम सही पढ़ैत अछि, ओ न्याय शुरू करैत अछि। जे नाम गलत पढ़ैत अछि, ओ अपराध दोहरबैत अछि।” ओ पात तोड़ल नहि। पात गाछ पर छोड़ि देल गेल।

नवम साँस एना पूरा नहि भेल। धूर्त सभ दूर-दूर अपन-अपन कोठरीमे नाम पढ़ए लागल, गलत, फेर सही, फेर अटकैत। पीड़ित सभ गढ नारिकेलमे नाम सुनैत रहल।

छोट लोकगीत

पढ़ हे शुद्ध, नामक आखर पढ़ हे,
एक-एक मात्रा मे ककरो प्राण गढ़ हे।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

लिखल नाम देहक खोल, पढल नामक प्राण,
उच्चारण सही करिते बढै मनुखक मान ।

अध्याय ३९ बीजक शान्ति

बाहरसँ थिर आ भीतरसँ फुटबाक तैयारी— एहने शान्तिमे बीज
बनै छै।



नवम साँसक नाम-पाठक बाद गढ़ नारिकेलमे एकटा अजीब शान्ति उतरि आयल। ई ओ शान्ति नहि छल जे थाकल लोककें भोजनक बाद भेटैत अछि, आ नहि ओ जे न्यायालयक स्थगनक बाद कागचपर उतरैत अछि। ई शान्ति ओ छल जे गाछक भीतर बीज बनैत काल होइत अछि।

चन्ना गाछीमे बच्चा सभ भोरसँ पहिने घरे चलि गेल, मुदा हुनकर आवाज रहि गेल। नाम सभ हवामे ओहिना लटकल छल जेना पुरान बरगदमे सूखल जटा। बूढ़बा भूत डारि पर बैसल-बैसल

गिनैत रहलाह — भोला नट, सरयू महतो, उज्ज्वल झा, मुन्ना पासवान, देविका साह, हुलासी, नन्द आरुणि, आ ओ सभ जिनकरा कागच कहियो पन्ना नहि देलक।

गोप कुमारक भीतर एहि बीच एक दोसर चिन्ता बढ़ैत गेल। नामक लिखित हिसाब बनि गेल, यन्त्रपर चलयवला पाठशाला शुरू भेल, अपन निजी बातक अधिकारक शपथ चलल, मुदा असली कागजक गट्टरक मालिक सभ एखनो जिन्दा छल। ब्रूम, लाउ, बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव — सभ अपन-अपन बिलमे सिमटल, मुदा बिल टूटल नहि।

चन्ना गाछीमे दसम साँसक राति अदालत फेर नहि लागल। ओहि राति भोज लागल। मृतक, जीवित, बच्चा, भूत, प्रेत, डाइन, पनिडुब्बी सभक बीच प्रतीकक भोज।

देविका उज्ज्वलक नामक पात लग एक चुटकी नून राखली। मीरा अपन निजी बातक अधिकारक शपथक पात लग दीपक। सौम्या अनुवादक पन्ना।

तखन हवामे हलुक सन चिरचिराहट भेल। चन्ना गाछीक ऊपर जे अदृश्य परदा छल, ओ फाटल। फाटल परदा सँ धूर्त सभक भीतरक आवाज सभ सुनाइ देलक।

दसम साँसक अन्तिम पहरमे बटुकनाथ सरायमे सुतल नहि। चन्द्रपाल दफ्तरमे प्रिन्टरक सामने बैसल रहल। राघव टिकट पन्ना खुलल छोड़ि देलक।

‘आब’ — ई समयक आदेश छल। आब बच्चाकेँ सिखाउ। आब धूर्तक मोनकेँ भीतर घुसए दियौ, कारण जे भीतर आबि गेल, से बाहरक झूठ सँ नहि बचत।

चन्ना गाछीमे कबड्डी फेर शुरू नहि भेल। खेल स्थगित सेहो नहि। खेल साँस रोकि ठाढ़ रहल — जेना धावक अगिला संकेतक प्रतीक्षा करैत अछि।

छोट लोकगीत

जागू हे, ओसक आखर जागू हे,

'काल्ह' नहि, 'आबे' कहि पहिल डेग राखू हे।

थिर पातपर ओस लिखलक—आब, एखन, यैह बेर,

बीज बहुत दिन बाट जोहलक, खोलू जीवन-द्वार फेर।

अध्याय ४०

ओसक अक्षर

ओसक अक्षर पढ़निहारक हथेली भीजि जाइ छै, आ भीजल
हथेलीसँ दरबज्जा खुजै छै।



दसम साँसक अन्तमे कबड्डी साँस रोकने ठाढ़ छल — आ जे
नामक भोज खा चुकल छल, ओकर भूखकें आब सत्य चाही। तँ
एगारहम साँस भोरक ओस पर उतरल। भोरकाक ओस पर लिखल
'आब' गढ़ नारिकेलमे ओहिना पसरल जेना कोनो पुरान मन्त्र
भूलसँ नहि, ठीक समय पर जागि गेल हो।

एगारहम साँसक आरम्भ ई बुझबासँ भेल जे नाम पढ़ब पर्याप्त
नहि। नामक बाद जीवन पढ़बाक रहैत अछि। जकर नाम लिखल
गेल, ओकर भूख, ओकर डर, ओकर देहक थकान, ओकर स्त्रीक

प्रतीक्षा, ओकर बच्चाक फीस, ओकर खेतक रेत, ओकर फोनक अन्तिम कॉल — सभ पढ़बाक रहैत अछि।

अनन्या बच्चा सभकँ कहली — “आइ सँ नामक संग एक वस्तु लिखू।” बच्चा सभ छुरियायल। कोनो घर सँ पुरान चिट्ठी आयल, कोनो सँ अस्पतालक पर्ची, कोनो सँ बैंकक पासबुकक तस्वीरकापी, कोनो सँ बस-टिकट। देविका उज्ज्वलक फोनक फाटल शीशा लऽ आयली।

बटुकनाथ सरायसँ चन्ना गाछी दिस फेर चलल। एहि बेर ओ आदेशक प्रति नहि, अपन पिताक लिखल पुरान नाम-पर्ची जेबीमे राखने छल। राति भरि ओकरा मोन पड़ल छल जे पिता गरीब लोकक नाम सुधरि-सुधरि लिखैत छलाह।

मीरा एहि दिन अपन निजी बातक अधिकारक मण्डलमे एक कठिन बात कहली। “जे वस्तु हम अपन इच्छा सँ साझा करब, ओ स्मृति। जे हमरा डराय लेल छीना जाए, ओ हिंसा।” एहि वाक्य पर चुप्पी छा गेल।

तखन पनिडुब्बी पोखरिसँ ऊपर आयलि। हुनकर केशमे जलक बदला कागचक पतला धागा लटकैत छल। ओ कहलनि — “पानि बहुत नाम बहा चुकल।

एगारहम साँसक अन्तमे अनन्या पूछली — “आब की?” बूढ़बा भूत उत्तर देबाक पहिने चन्ना गाछीक ऊपर तकलाह। हवा बजली — “जकर वस्तु पढ़ि लेल, ओकर रास्ता पढ़ू।” बच्चा सभ बुझि गेल जे अगिला पाठ यात्रा होएत — मृतक कतयसँ आयल, कतय गेल, कोन हाथ ओकरा धकेलक, कोन हाथ ओकरा रोकि सकैत छल मुदा रोकलक नहि।

धूर्त सभ सेहो ई सुनलक। बटुकनाथक जेबीमे पिता-पर्ची काँपल। चन्द्रपालक कम्प्यूटरमे नव कागजक थैला खुलल — “रास्ता।” राघवक सिम-अंकुरक जड़ि टेबुलक काठमे धँसल।

एगारहम साँस पूरा भेल, मुदा एहि बेर साँस छोड़ल गेल। छोड़ेबाक संग गढ़ नारिकेलक हवामे चाउर, नून, पानि, कागच, टिफिन, फोन, पात आ फूलक गन्ध मिलि गेल। कथा आब नामसँ जीवन धरि आ जीवनसँ रास्ता धरि बढ़ि चुकल छल।

छोट लोकगीत

खोलू हे हथेली, मुट्ठी नहि, खोलू हे,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

भीजल रेखा-रेखा मे भरोस घोरू हे ।
भीजल हथेली दरबाजापर नेहक छाप धरै,
ताला भीतरसँ सुनि कऽ धीरे-धीरे सरै ।

अध्याय ४१

नामक नाव

किनारपर राखल नावक कोनो अर्थ नहि— नामक नाव धारमे
उतरला पर बाजै छै।



एगारहम साँसक अन्तमे चन्ना गाछी जे वाक्य कहलक — ‘जे जीवन पढ़त, से रास्ता सँ बचि नहि सकत’ — से राति भरि पात-पातमे बजैत रहल। गामक लोक बुझल जे आब नाम आ वस्तु सँ आगाँ बढबाक बेरा आयल। मृतकक नाम लिखल गेल, ओकर टिफिन, ओकर फोन, ओकर पर्ची, ओकर नून सोझाँ राखल गेल।

बारहम साँसक भोरमे अनन्या चन्ना गाछीक बीच माटि साफ करेली। बच्चा सभ लोटा-लोटा पानि आनलक, देविका चाउर, मीरा हल्दी, सौम्या पुरान नापी-कापीक लाल पेन्सिल, ईरा

विदेशसँ आनल खाली नक्शा-कागच, आ गोप कुमार एक पुरान यूएसबी जे आब प्रयोगक लेल नहि, स्मृतिक लेल बचल छल। बूढ़बा भूत डारिसँ देखैत रहलाह।

ओ लाउ किन-हंगकें सन्देश पठएबाक चाहलक। पर प्रत्येक शब्द मेटैत-मेटैत केवल एक पंक्ति बचल — ‘रस्ता घुरि रहल अछि।’ लाउक उत्तर अवेरसँ आयल। एक शब्द — “काटि दिअ।” राघव बुझल जे अपराधक दुनियाँमे रस्ता बनल रहए तँ ओकरा काटल जाइत अछि।

हांगकांगमे लाउ किन-हंग अपन काँचक दफ्तरमे रिपोर्ट सुनैत छल। सलाहकार कहैत — “भारतीय ग्रामीण समूह कथा-निर्माणमे लागल अछि।” लाउ माथ हिलबैत, मुदा ओकर टेबल पर राखल नूनक दाना बारहम साँसमे रेखा बनि गेल। दाना सँ बनल रेखा समुद्रक नक्शा काटैत-काटैत भारत दिस बढ़ल, भारत सँ बिहार, बिहार सँ कमला-बलान, आ अन्तमे गढ़ नारिकेल।

ईरा बाहर नहि, एहि बेर भीतर बैसलि। मुदा ओ प्रश्न पूछए नहि उठलि। ओ अपन कापी खोलि चन्ना गाछीक रस्ता-पाठ लिखैत रहली।

गढ़ नारिकेलक एक बुजुर्ग स्त्री, जिनकर बेटा पुलमे मरल छल, पहिल बेर चन्ना गाछीमे अबैत-अबैत रुकि गेली। ओ कहली — ‘हमरा रास्ता नहि मोन अछि। हम तखन युवा छलहुँ।’

चन्ना गाछीमे भोर होएबाक पहिने बूढ़बा भूत बच्चा सभकें रोकलाह। रस्ता पढ़ल, मोड़ देखल। आब अगिला साँसमे देखब — जे मोड़ पर नहि रोकल गेल, ओकर भार के उठाओत?’ अनन्या पूछली — ‘धूर्त?’ बूढ़बा कहलाह — ‘धूर्त यदि उठाबय, तँ प्रायश्चित्त।’

ई सुनि पानिमे हलचल भेल। दूर गंगा नहि, कमला-बलानक धार नहि, चन्ना गाछीक ओस। ओसक प्रत्येक बून्दमे छोटे-छोट मोड़ चमकि रहल छल।

बारहम साँस पूरा भेल। गढ़ नारिकेलक हवामे आब नाम, वस्तु, जीवन, रस्ता आ मोड़क गन्ध एकसंग छल। धूर्त सभ जतय-जतय छल, ओ सभ ई गन्ध सूँघि रहल छल, आ बुझि रहल छल जे भीतरक दुनियाँमे प्रवेश केवल भय नहि, दायित्व सेहो अछि।

छोट लोकगीत

खेबू हे खेबिया, नामो संगे खेबू हे,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

देह टा नहि, चिन्हारि पार—एतवा प्रण लेबू हे ।
किनारपर नाव तैयार, नामक पतवार धरू,
धार जते तेज हो तइयो संगक साहस भरू ।

अध्याय ४२

भारक वृत्त

दण्ड ऊपरसँ देल जाइ छै, भार भीतरसँ उठि कऽ कन्हापर बैसै छै।



बारहम सौंसक अन्तमे ओसक बून्द सभ जे दू शब्द पढ़ाओलक — ‘भार उटू’ — से भोर धरि चन्ना गाछीक प्रत्येक पातपर अटकल रहल। हवा चलैत, पात हिलैत, मुदा शब्द खसैत नहि। जेना शब्द नहि, छोट-छोट पाथर।

अनन्या चन्ना गाछीक बीचमे दू वृत्त बनौली। एक वृत्तक नाम राखल — ‘जिनका पर अपराध भेल’। दोसर वृत्तक नाम — ‘जिनका द्वारा अपराध भेल’।

एडवर्ड ब्रूम ओहि दिन सभसँ महँग रिपोर्ट जारी करयबला छल — ‘नीक-बेजायक पुनर्संतुलन आ विकासशील बाजार’। रिपोर्टक पहिल प्रति जखन प्रिण्टरसँ निकलल, तखन पृष्ठ सूखल नहि छल। सहायक कहलक — “स्याही खराब अछि।” ब्रूम जानैत छल — ई स्याही नहि।

गोप कुमार पहिने अपन हिस्सा लिखलक ‘जानकारी अबेरसँ बुझल।’ ओ कहलक ‘हम कतेक बरख कागजक गट्टरकें काज बुझैत रहलहुँ, जीवन नहि।’ रमैय्या लिखलक ‘गप्पी छलहुँ, मुदा कतेक बेर चुप रहलहुँ।’ सौम्या लिखली ‘दस्तावेज अंग्रेजीमे अटकल रहल, लोक धरि अबेरसँ पहुँचल।’ मीरा लिखली। ‘भयमे जीबैत लोकक भाषा पहिने नहि सुनल।’ देविका लिखली ‘उज्ज्वल पहिल बेर डर देखौलक तखन हम ओकरा जिद्दी मानलहुँ।’ अनन्या पूछली ‘हमर हिस्सा?’ बूढ़बा भूत कहलाह ‘तोहर हिस्सा प्रश्न जारी राख।’।

एडवर्ड ब्रूम अपन जनसम्पर्क-टीमकें कहलक — “सहानुभूति-कथा बनाउ।” टीम तस्वीर खोजय लागल — बच्चा, गाम, पात, स्त्री, पुल। ईरा दूरसँ देखैत छली। ओ सन्देश पठौली — ‘भार कें छवि बनाओल गेल तँ ओ फेर व्यापार बनत।’ ब्रूमक टीमक फोनक पर्दा कारी भऽ गेल।

लाउ किन-हंग अपन समुद्र-दृश्यक शीशाघरमे पहिल बेर पर्दा खसौलक। ओ बाहर नहि देखए चाहैत छल। मुदा पर्दा पर पानिक छाह पडल, आ छाहमे गढ़ नारिकेलक बच्चा सभ टिफिन, हेलमेट, पासबुक, खडिया उठौने चलैत छल।

चन्ना गाछीमे भारक वस्तु सभ अपन-अपन स्थान पर रहल। कोनो मूर्ति नहि, कोनो माला नहि। केवल उपयोग लेल तैयार वस्तु।

ओहि क्षण तीन दिशासँ तीन हवा आयल। शहर दिससँ कागचक गन्ध। समुद्र दिससँ नूनक।

तेरहम साँस एही वचन पर ठहरल। भार आव केवल दुख नहि, चलैत दूत बनि गेल। जे अपन हिस्सा नहि मानत, ओकर दुआर पर वस्तु पहुँचत — टिफिन, ईट, पात, नून, खडिया, पासबुक, शीशी।

छोट लोकगीत

बाँटू हो भार, कन्हा-कन्हा बाँटू हो,
झूमि-झूमि थाकल देहो तालमे साटू हो।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

कन्हापर बैसल भार आधा हो संग लगिते,
एक हाथ पाछाँ आए, दोसर आगाँ बढ़िते ।

अध्याय ४३

चलैत भार

बाँटल भार समाप्त नहि होइ छै— ओ चलए लागै छै, गाम-
गाम ।



तेरहम साँस जे वचन छोड़ने छल — जकर हिस्सा, तकर दुआर
— से वचन राति भरि जागल रहल। तँ राति समाप्त नहि भेल।
भोर आयल, मुदा भोर अपन रंग संग नहि आयल।

अनन्या अपन हाथक माटि झाड़ि रहल छली। बच्चा सभ
टिफिनक भार बाँटि चुकल छल, मुदा भार बाँटलासँ भार समाप्त
नहि होइत। भार आब चलए लागैत अछि।

आरुणि चन्ना गाछीक कात बैसल रहल। ओकरा लगैत छल जे उपन्यास एतऽ फेर रुकि सकैत अछि। मुदा चन्ना गाछीमे रुकबाक विधान नहि।

ओहि समय शहरमे बटुकनाथ हरिहरन अपन बैसकीक देवाल पर टाँगल डिग्री सभक सोझाँ टाढ़ छल। डिग्री सभ पहिने सोझ, चमकैत, शीशाक भीतर बन्द। मुदा भोरमे शीशा भीतर बारीक-बारीक धुन्ध जमि गेल छल।

फोनक पर्दा तुरन्त सामान्य। विज्ञापन, खेल, अंक, रंगीन चमक। चन्द्रपाल राहतक साँस लेलक।

हांगकांगमे लाउ किन-हंग समुद्रक कात अपन शीशाघरमे सुतल छल। सपना सँ उठला बाद ओ सोचलक — भारतक कोनो गाम हमर निन्नमे कोना पैसि गेल? ओ अपन सचिवकँ कहलक — “गढ़ नारिकेल नामक कोनो जगह खोजू।” सचिव कम्प्यूटर पर नक्शा खोललक।

एहि बीच चन्ना गाछीमे भूत सभ दुपहरियोमे कनी-कनी देखाइ पड़ए लागल। पहिने ओ सभ रातिक प्राणी छल। आब बच्चा सभ ओहि गाछीमे दिनमे खेलैत छल, आ भूत सभ ओकरा सभक खेलक नियम सीखैत छल।

दूर शहरमे हरिहरनक माय फेर कहलखिन — ‘नाम पढ़।’ चन्द्रपालक बेटा फोन बन्द कऽ खिड़की खोललक। राघवक पत्नी भातक दाना समेटि कऽ अलग राखि देली। लाउ किन-हंग नक्शा पर उँगरी राखने रहल।

गढ़ नारिकेलमे बच्चा सभ भोरक पहिल खेल लेल दौड़ल। चन्ना गाछी तैयार छल। धूर्तक मोन आधा भीतर, आधा बाहर।

छोट लोकगीत

चलू यौ पड़ोसिया, देहरी-देहरी चलू यौ,
एक घरक भार सभ घर मिलि कऽ धरू यौ।
भार घर-घर चलल तइयो संगमे राहत जाए,
एक देहरी दू हाथ देत, दोसर भोजन लाए।

अध्याय ४४

पोतीक कापी

डर पानि जकाँ— देवाल भेटलापर दरार ताकै छै, दरार नहि
भेटलापर पोतीक कापीमे उतरि जाइ छै।



कथा घर-घर पैसि चुकल छल, पात पर 'काज' हरियर भऽ रहल
छल। चौदहम साँसक बाद धूर्त सभकें लगल जे डर आव हुनका
सभक देह धरि पहुँचल, तकरा बाद कदाचित् रुकि जायत। मनुक्ख
बहुत बेर डरक सीमा अपन छाती धरि मानि लैत अछि।

बटुकनाथ हरिहरनक घरमे डर पहिने मायक जिह्वा पर आयल, फेर
देवाल पर, फेर डिग्रीक शीशा पर। पन्द्रहम साँसक भोरमे ओ
ओकर पोतीक कापीमे पहुँचल। पोती सात बरखक छली।

हरिहरनक पत्नी चौंकि गेली। घरमे चन्ना गाछीक नाम केओ नहि लेने छल। नेनी पूछली — ‘दादाजी ओतय किएक बाहर ठाढ़ छथि?

लाउ किन-हंगक शीशाघरक बाहर समुद्र छल। समुद्रक पानि धूपमे चाँदी जेकाँ चमकि रहल छल। ओकरा अचानक लागल जे प्रत्येक लहर एकटा नाम अछि।

गढ़ नारिकेलमे ई सभ घटना एक्के समय नहि, मुदा एक्के साँसमे घटि रहल छल। चन्ना गाछीमे बूढ़बा भूत बच्चा सभकेँ कहैत छलाह — ‘धूर्तक घरमे जखन बच्चा प्रश्न पूछए, तखन बुझू पात ओकर दुआर पहुँचल।’

चन्ना गाछीमे राति फेर खेल भेल। एहि बेर कबड्डीक मैदानक चारू कोन पर चारि चित्र टाँगल गेल — हरिहरनक पोतीक गाछ, चन्द्रपालक बेटाक खाली कुर्सी, राघवक बेटीक प्रश्न, लाउक पुत्रक नक्शा। भूत सभ ओहि चित्रक चारू कात गोल बनौलनि।

राकश सभ इजोत बढ़ौलक। इजोतमे देखा गेल जे मैदानक एक किनार पर बटुकनाथ हरिहरनक मोन काँपि रहल अछि, दोसर पर चन्द्रपाल बत्राक मोन फोन ताकैत अछि, तेसर पर राघव संकेतक मोन मेसेज मेटा रहल अछि, चारिम पर लाउ किन-हंगक मोन नक्शा मोड़ैत अछि।

बा दूरसँ देखैत कहलखिन — ‘आब कथा ओकरा सभक घर धरि पहुँचल। आब ओ सभ चाहियो तँ बाहर नहि रहि सकत।’

आरुणि कागच पर अन्तिम पंक्ति लिखलक, मुदा ई अन्तिम पंक्ति अध्यायक मात्र छल, कथा नहि — ‘जतय बच्चा पूछैत अछि ककर, ओतय धूर्तक भीतरक दुआर खुलि जाइत अछि।’

छोट लोकगीत

पूछ गे पोती, जे मन मे से पूछ गे,
दादीक कथा-कोठी सँ उत्तर-मोती बीछ गे।
पोती पूछलक—‘ककर डर?’ दादी फूल मुस्किलक,
‘जे साँचक नाम सुनै, ओकर भय पिघेलक।’

अध्याय ४५

भीतरक हवा

दुआर खुजल रहि नहि जाइ छै— भीतरक बन्द हवा पहिने बहराइ छै।



पन्द्रहम साँसमे बच्चा सभ 'ककर' पूछलक, आ ओहि एक शब्दसँ धूर्त सभक घरक दुआर भीतरसँ खुलि गेल। सोलहम साँसमे ओ दुआर खुलल रहि नहि गेल। ओतयसँ हवा चलए लागल।

बटुकनाथ हरिहरन अपन पोतीक चित्र किछु दिन धरि टेबुलक दराजमे बन्द कऽ रखने रहल। जे कागच कानूनक नहि हो, ओकरा ओ कागच नहि मानैत छल। मुदा नेनीक चित्र दराजमे नहि रहल।

राघवक फोन ओहि समय कम्पन देलक। कम्पन टेबुलसँ ओकर आङुर धरि चढल, जेना केओ भीतरे-भीतर झकझोरि रहल हो। संकेत-सन्देश आयल — ‘कागजक गट्टर हटाउ।

देविका साह फोनक पर्दाक विरुद्ध पाठशालामे एहि नव पाठ जोड़ली — ‘घरक प्रश्न’। ओ बच्चा सभकेँ कहली — ‘ठग बाहरसँ नहि, बहुत बेर घरक चुप्पी सँ शुरू होइत अछि। जँ अहाँक घरमे अकस्मात बहुत पैसा, बहुत भय, बहुत फोन, बहुत गुप्तता आवि जाए, तँ पहिने प्रेमसँ पूछू।

चन्ना गाछीमे ओहि राति सभ बच्चाक प्रश्न पात बनि टाँगल गेल। हरिहरनक पोतीक प्रश्न, चन्द्रपालक बेटाक इन्कार, राघवक बेटीक काँपी, लाउक पुत्रक निबन्ध, ब्रूमक नातिनक जिज्ञासा। भूत सभ ओहि पात सभकेँ पढ़लनि।

बूढ़बा भूत कहलाह — ‘आइ सोलहम साँस अछि। एहि साँसमे अपराधक घरमे जन्मल बच्चा सभ अपराधक वंश स्वीकार करबासँ इन्कार कएलक।’

एहि वाक्यसँ चन्ना गाछीक पातक रंग बदलि गेल। कारी भूतक देहमे कनी हरियर झलक आयल, जेना पुरान दीयामे फेर तेल पड़ल हो। उज्जर प्रेतक आँखिमे पानि आयल।

बा दूरसँ देखैत कहलखिन — ‘आब कथा केवल मरल लोकक नहि रहल। आब कथा ओहि बच्चा सभक सेहो अछि जे अपवित्र जीतक दूध पीबासँ इन्कार करत।’

आरुणि लिखलक — ‘सोलहम साँस ओहि दिन आयल जखन अपराधक वंशज सभ कहलक — हम नाम लेब, लाभ नहि। चन्ना गाछीमे एहि इन्कारक ध्वनि बहुत काल धरि गूँजैत रहल।’

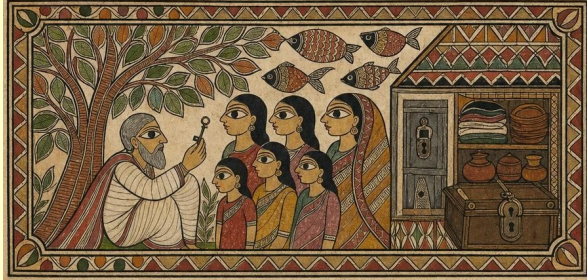
छोट लोकगीत

खोलू हे केबाड़, भीतरे सँ खोलू हे,
बासि हवा बहराए, नव धूप घोलू हे।
दुआर भीतरसँ खुलल, पुरान हवा बहार,
धूप पसरल कोठरीमे, चमकल घर-दुआर।

अध्याय ४६

उत्तराधिकारक अन्हार

धनक मुँह जे नहि देखलक आ पाछाँक अन्हार देखि लेलक, वैह
असल उत्तराधिकारी।



सोलहम साँसमे बच्चा सभ कहलक जे नाम लेब, लाभ नहि। ई
वाक्य चन्ना गाछीक पातपर लिखाइत-लिखाइत घर-घर पहुँचि
गेल। मुदा वाक्य जखन घर पहुँचैत अछि, तखन ओ केवल वाक्य
नहि रहैत।

बटुकनाथ हरिहरन पोतीक उत्तर सँ बहुत दिन धरि बचैत रहल।
ओ सोचैत छल जे बच्चा प्रश्न करैत अछि, फेर खेलमे लगि
जाइत अछि। मुदा बच्चाक प्रश्न ओहि कुकुर जेकाँ होइत अछि,

जे एक बेर घरक दुआर सूँघि लेलक तँ रोज भोरमे ओतय आवि ठाढ़ होइत अछि।

हरिहरन ओहि क्षण बुझल जे कानूनक उत्तर बच्चाक चित्रपर नहि चलैत। ओ कागच छीन्हऽ चाहलक, मुदा हाथ आगाँ बढ़ल नहि। कागचमे बनल घरक पएर हिलि रहल छल।

लाउ किन-हंगक घरमे प्रश्न समुद्रसँ आयल। ओकर नातिन शीशाक देवालपर नील रंगसँ एकटा गाछ बनौली। लाउ पूछलक — “ई कोन गाछ?” नेनी कहली — “जे सपनामे आयल।”

सौम्या एहि खेलक नियम लिखि रहल छली। मीरा कहली — ‘एहिमे अपन निजी बातक अधिकारक नियम सेहो जोड़ू। ककरो प्रेम, ककरो देह, ककरो डर उत्तराधिकारमे नहि देल जा सकैत।’ देविका कहली — ‘आ ककरो खाता बिनु बुझने खोलबाओल जाए, से सेहो अभिशप्त उत्तराधिकार।’ निशांत जोड़लक — ‘जतय पहिल जीत भेटै, ओतय पहिल प्रश्न पूछू।’

ई नियम सुनि लोथ गोल-गोल घूमल। राकशक इजोत कम भेल, कारण दिनमे आब बच्चा सभक चेहरा पर्याप्त उजास दैत छल। पनिडुब्बी पोखरिसँ बाहर नहि अयलीह, मुदा हुनकर झौटाक एक बून्द पानि हवामे उठि चन्ना गाछीक पात पर टिकि गेल।

बूढ़बा भूत साँस लेलनि। कारी भूत सभ पंक्तिमे। पनिडुब्बी पोखरिमे शान्त।

सत्रहम साँस समाप्त होमए चाहैत छल, मुदा चन्ना गाछी ओकरा रोकि लेलक। कारण कथा आब ओहि मोड़ पर पहुँचल छल जतय हारल लोक सभक बच्चा आ धूर्त सभक बच्चा एकहि मैदानमे खेलए जा रहल छल। खेलमे जीतक कागच नहि चलत।

आरुणि अन्तिम पंक्ति लिखलक — ‘उत्तराधिकारक असली परीक्षा ई नहि जे अहाँकें की भेटल। ई जे अहाँ कोन वस्तु अपना हाथसँ छोड़ि सकलहुँ, ताकि अहाँक नाम ककरो मृत्यु पर नहि, अपन श्वास पर ठाढ़ रहए।’

छोट लोकगीत

गाबू हे मंगल, साँसक मंगल गाबू हे,
लाभक पहिने जीवन—ई पाठ पढ़ाबू हे।
लाभ नहि, श्वास पहिने—एहि नियमपर चलू,
धनक मीनार बादमे, जीवनक दीप बलू।

अध्याय ४७

गज-ग्राह आख्यान

गजक पएर पानिमे अटकल आ ग्राहक दाँत इतिहासमे—
छोड़ौनिहार हाथ सदिखन तेसर होइ छै।



सत्रहम साँसमे उत्तराधिकारी सभ धनक पाछाँक अन्हार देखि लेलक। ओ सभ लाभक थालि अपना आगाँ राखल देखलक, मुदा हाथ नहि बढेलक। चन्ना गाछी एहि बात पर मुस्की नहि देलक।

भोरमे गढ नारिकेलक बच्चा सभ चन्ना गाछी लग खेलबाक लेल जमा भेल। रातिक ओस एखनो पात पर अटकल छल। लोथ सभ गोल भऽ बैसल छल, जेना ओ सभ राति भरि आँखि मूढ़ि ध्यान करैत रहल हो।

लाउ किन-हंगक परिवारक लड़की, जकर नाम मेइ-लता राखल गेल छल — कारण ओकर भारतीय आया ओकरा बालपनमे लता कहैत छल — पूछली, “पानि तँ ग्राहक घर भेल, गज बाहरी। तखन गज हारत नहि?”।

बूढ़बा भूत बच्चा सभकेँ मैदानमे उतरबाक इशारा केलनि। एक बच्चा गज बनत, एक ग्राह। गज धरतीक रेखा पार करए चाहत, ग्राह पानिक गोलसँ ओकर पएर पकड़ने रहत।

पहिने अनन्या गज बनली। हरिहरनक पोती ग्राह। अनन्या दौड़ि कऽ गोलमे पैसली, पएर पकड़ल गेल।

चन्द्रपाल बत्राक बेटा ग्राह। नेनी पानिक गोलमे पैसली। बत्राक बेटा ओकर पएर पकड़लक।

पुस्तकमे लिखल छल जे गज संकटमे पुकारलक। सत्यव्रत रुकि गेलाह। हुनका लगल जे एहि उपन्यासमे कोनो गज नहि पुकारलक।

चन्ना गाछीक पात सभ एहि पंक्ति पर झुकि गेल। कारण ई अध्याय आकाशक कथा नहि, पएरक कथा छल — ओ पएर जकरा ग्राह पकड़ैत अछि, आ ओ पएर जे नामक बलसँ धीरे-धीरे पानि सँ बाहर अबैत अछि।

अठारहम साँस समाप्त भेल नहि। ओ केवल ओहि हाथी जेकाँ थाकि कऽ रुकल जे एखनो पुकारबाक सही शब्द ताकैत अछि। आ चन्ना गाछीमे सभ जन — भूत, प्रेत, बच्चा, धूर्त सभक मोन, पात, पानि — सुनबाक अभ्यास करए लगल।

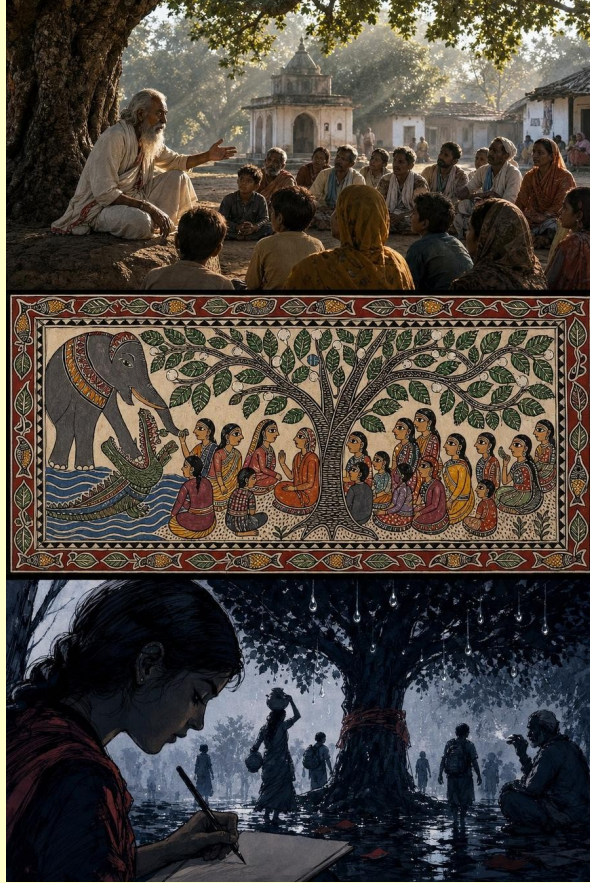
छोट लोकगीत

सुनू हे आख्यान, गज-ग्राहक सुनू हे,
बलसँ पैघ बुद्धि-संग—ई गिरह गुनू हे।
गजक पएर जलमे अटकल, साथी स्वर उठाबै,
ग्राहक दाँत जते कटोर, बुद्धि बाट बनाबै।

अध्याय ४८

पुकार

बाजब जनम भरि होइ छै।



अठारहम साँसमे गज अपन पाएर पानिमे अटकल देखि लेलक, ग्राह अपन पकड़िक इतिहास बूझए लगल, आ चन्ना गाछीमे सभ जन सुनबाक अभ्यास करए बैसल। सुननाइ गढ नारिकेलमे कोनो छोट काज नहि अछि। एतय लोक जनम भरि बजैत रहैत अछि, मुदा जखन सुनबाक बेर अबैत अछि तखन कान सभमे पुरान राखल डर, लाभ, जाति, पद, शिक्षा, पराजय, जीतक कागच आ अपमानक धूलि भरि जाइत अछि।

ओहि भोर चन्ना गाछीक ओस बहुत काल धरि नहि सूखल। दिन चढ़ि गेल, गामक स्त्री सभ गोबर-पानि कऽ लेलीह, बच्चा सभ

स्कूलक बस्ता पीठ पर लटका लेने निकलल, बूढ़ सभ दलान पर बीड़ी सुलगेलक, मुदा चन्ना गाछीक पात पर ओस टिकले रहल। पातक नोक पर छोट-छोट बून्द सभ लटकैत छल, जेना ककरो नाम उच्चारल जाएबाक प्रतीक्षामे हो।

अनन्या खाली कागच नहि, एहि बेर खाली कटोरा लऽ कऽ आयली। बा ओकरा देखिते बुझि गेलीह जे नेनी खेलक अगिला नियम खोजि लेने अछि। ओ कटोरा चन्ना गाछी बीच धरल गेल।

अनन्या ओकरा भीतर आबए कहली। मुन्ना काँपैत-काँपैत आयल। ओकर पएर जमीन छू रहल छल, मुदा छाह पाछाँ छूटि रहल छल।

एम्हर गढ़ नारिकेलमे पुकारक क्रम चलि रहल छल। नाम सभ केवल मृतकक नहि छल। एक दिन मीरा चन्ना गाछीमे ठाढ़ भऽ कहली — ‘जे हमरा डर देखाबए चाहलक, ओकरा कहल जाउ — हमर प्रेम अपराध नहि, ओकर धमकी दऽ कऽ दबाव अपराध।’ पात सभ एहि वाक्य केँ अलग सँ रखलक।

बूढ़बा भूत पुकार सुनैत-सुनैत थाकि गेलाह। भूत सभ थाकैत नहि, मुदा सुनबाक थकान देहक नहि, आत्माक होइत अछि। ओ पनिडुब्बी केँ कहलनि — ‘आइ बहुत नाम आयल।’

बा अनन्याक कानमे कहलखिन — ‘देखलहुँ? सत्यव्रत देवता नहि। ओ केवल कटोरा खाली मानि लेलक।

अनन्या लिखली — ‘जे पुकारैत अछि, ओकरा देवता नहि चाही। ओकरा एहन कान चाही जे अपना मौनक अपराधो सुनि सकए।’

सत्यव्रत मेहता ओहि वाक्य केँ पढ़लनि नहि। कारण ओ आब धीरे-धीरे सीखि रहल छलाह जे किछु वाक्य आँखिसँ पढ़ल जाए तँ ज्ञान बनैत अछि। कानसँ सुनल जाए तँ पश्चात्ताप।

छोट लोकगीत

दिअ हे कान, पुकारकेँ कान दिअ हे,
उत्तरसँ पहिने पूरा-पूरा मान दिअ हे।
जनम भरि जे पुकारल, ओकरा कान दिअ,
बीचमे उत्तर नहि, पहिने पूरा मान दिअ।

अध्याय ४९ मौनक अभिलेख

सुनल आवाज उधार थीक— जे सुनलक, तकरे चुकता करबाक छै।



उन्नैसम साँसमे पुकार आयल। बीसम साँसमे पुकारक हिसाब खुलल। गढ नारिकेलमे ई मानल जाइत अछि, जे आवाज जखन कान धरि पहुँचि जाए, तखन ओ केवल आवाज नहि रहैत।

कटोरा ओहि बुझाइ पर भारी भऽ गेल। कारण ओ खाली पानि सँ नहि, देह-पार भेल नाम सभक भार सँ भरल छल।

सत्यव्रत मेहता एहि बातकें पहिने कानूनक भाषामे राखए चाहलनि। 'मरणोत्तर गरिमा', 'प्रतिपूरण', 'दायित्व' — एहि शब्द सभ केँ ओ मनमे उलटैत-पलटैत रहलाह। मुदा चन्ना

गाछीमे ओ बुझलनि जे जखन देह नहि रहि जाए, तखन गरिमा अदालतक शब्द नहि।

चन्ना गाछीक भोर ओहि दिन अलग छल। सूर्य निकलल, मुदा उजास पातपर अटकि गेल। जेना दिन बाहर आयल, भीतर नहि।

सत्यव्रत अपन नोटबुक बन्द करए लगलाह। बूढ़बा भूत डारिसँ आवाज देलनि — ‘एखन नहि। नाम लिखल गेल, मुदा मौनक नाम बाकी अछि।’

सत्यव्रत मेहताक नोटबुक भरि गेल। अनन्या दोसर कापी आनली। ईरा दूरसँ अएल कागचक गड्डी राखलक — ओहि कागच पर विदेशी सभागारक चिन्ह छल।

एडवर्ड ब्रूम ओहि समय समुद्र पार अपन दफ्तरमे बैसल छल। ओकर सोझाँ अगिला भाषणक मसौदा छल — ‘जवाबदेह पूँजीक भविष्य’। अचानक कागचक बीच सँ एक खाली पन्ना निकलल।

चन्ना गाछीमे पात सभ धीरे-धीरे सूखए लगल। ओसक बून्द खसि गेल। खाली कटोरा आब उठि सकैत छल।

बीसम साँस समाप्त नहि भेल। ओ लिखित हिसाबक पहिल पाठ मात्र छल। अगिला साँसमे पढ़ल नाम सभ चलत।

छोट लोकगीत

लिखू हे मन-बही, मञ्जूरीक मसि सँ लिखू हे,
सुनल कथाक मोती गरिमाक डिब्बा मे राखू हे।
कानमे लिखल बही कागचसँ गहीर,
सुनल बातक जिम्मेदारी हृदय करै गंभीर।

अध्याय ५०

देहक बादक नाम

देह चलि जाइ छै, नाम रहि जाइ छै— आ नामक पएर भीजल रहै छै।



चन्ना गाछीमे ओहि राति पानि नहि छल, मुदा सभकेँ पएर भीजल बुझाइत छल। गाछीक धरती एहन ठण्ढा जेना ओहि पर बरखाक पहिल बून्द पड़ल हो, मुदा ऊपर आकाश साफ। तारा सभ डारि-डारि पर अटकल छल, आ डारि सभ बीच-बीचमे एना काँपैत छल जेना ओहि पर तारा नहि, ककरो नाम राखल हो।

सत्यव्रत मेहता बहुत काल धरि गाछीक बाहर ठाढ़ रहलाह। हुनका भीतर जाएबाक आज्ञा केओ नहि देलकनि। बाहर रोकनिहार सहो केओ नहि छल।

सत्यव्रत ओहि दृश्य दिस देखैत रहलाह। गज चिचिया नहि रहल छल। ग्राह ओकर पएर नहि, ओकर स्मृति पकड़ने छल।

हुनकर कपड़ा भीजल नहि छल, मुदा चाल बदलि गेल छल। ओ आब अदालतक लोक जेकाँ नहि, गामक बूढ़ जेकाँ चलैत छलाह — धीरे, सुनैत, धरतीक ताप बूझैत। ओ बटुकनाथक छाह दिस नहि तकलाह।

चन्ना गाछीक पानि धीरे-धीरे ओझराए लगल। पोखरि गायब नहि भेल। ओ धरती भीतर उतरि गेल।

मुदा धूर्त सभक सपना अलग छल। बटुकनाथ देखलक जे ओकर हाथमे जे आदेश अछि, ओ एकटा ग्राहक जबड़ा बनि ओकर कलाई पकड़ि लेलक। चन्द्रपाल देखलक जे ओकर सभ गुप्त शब्द एक-एक मृतकक नाममे बदलि गेल।

चन्ना गाछीमे कबड्डी बन्द छल। मुदा बन्द खेलक जमीन पर पएरक असंख्य निशान छल। मनुष्यक, भूतक, बच्चाक, गजक, ग्राहक, आ ओहि सभक जे देहसँ मुक्त भेल मुदा नामसँ जुड़ल रहल।

गढ़ नारिकेलक नारिकेल गाछक पात ओहि भोर बहुत धीरे-धीरे हिलल। जेना ओ कहि रहल हो — देह गेल, जल गेल, भय गेल। मुदा नाम आब जड़ि खोजि रहल अछि।

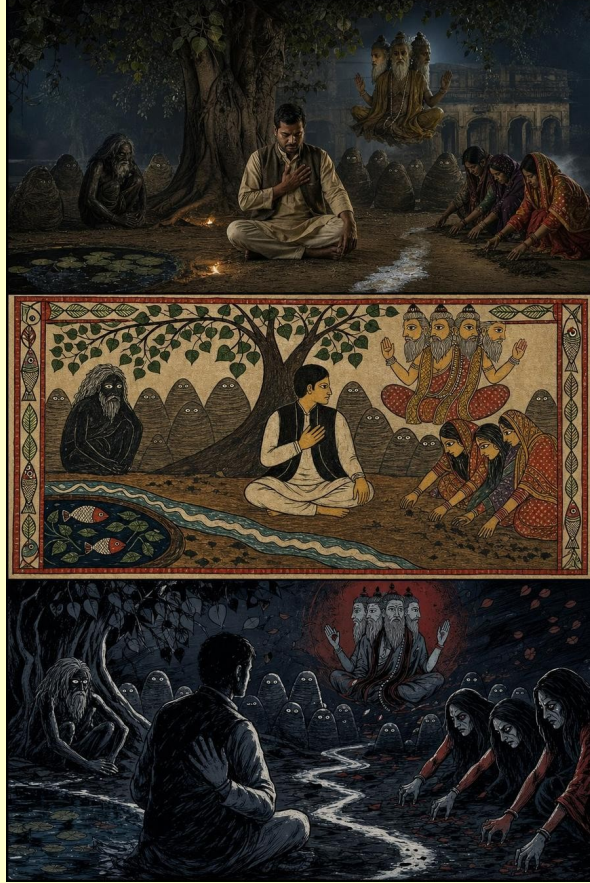
आ जखन नाम जड़ि खोजए लगैत अछि, तखन कथा फेर एक बेर बदलि जाइत अछि।

छोट लोकगीत

सम्हारू हे जड़ि, नामक जड़ि सम्हारू हे,
देह दूर गेलो पर अक्षर नहि बिसारू हे।
देह दूर गेल तइयो जड़ि नाम सम्हारै,
माटि भीतर अक्षरकँ ओसक दूध पियारै।

अध्याय ५१ साक्षीक भार

साक्षीक भार तराजूपर नहि, छातीपर तौलल जाइ छै।



सत्यव्रत मेहता चन्ना गाछीमे पैसलाह तँ हुनका लगलनि जे ओ कोनो गाछीमे नहि, अपन छातीमे पैसि रहल छथि। बाहर धरती कठोर छल, भीतर धरती मुलायम। बाहर आदेशक कागच छल, भीतर नामक पात।

पीपरक ब्रह्मा डारि पर नहि छलाह। ओ नीचाँ उतरि आएल छलाह, मुदा हुनकर चारि मुख चारि दिशामे चुप्प छल। बूढ़वा भूत अपन कारी देहक इजोत समेटि एक कात बैसल छलाह।

गोहि सभ चन्ना गाछीक धूरि पर रुकि गेल। ओ सभक मुँहमे रक्त नहि छल। ओ सभक दाँत पर पानि छल।

सत्यव्रत अपन कागच फाड़ि देबाक सोचलनि। मुदा हाथ रुकि गेल। कागच फाड़लासँ अपराध नहि फाटैत।

हुनकर जूता माटिमे अटकैत छल। प्रत्येक पग पर एकटा नाम सुनाइ दैत छल — सरयू, दुखन, महीतो, ललना, उज्ज्वल, हुलासी, नन्द, ओ अज्ञात बच्चा जकर देह खोरनाठीमे नहि जरल, ओ प्रवासी जे परदेसमे जन्मल आ अपन गामक नाम केवल उत्सवमे सुनल, ओ स्त्री जे धमकी दऽ कऽ दबावक भय सँ बाजि नहि सकली, ओ युवक जकर खाता म्यूल बनाओल गेल। नाम सभ अलग-अलग ने छल।

बच्चा सभ हुनकर चारू दिस घेरा बनौलक। देविका, मीरा, सौम्या, ईरा, निशांत, आरुणि — सभ धीरे-धीरे आबि गेलाह। गोप कुमार कतहु देखाइ नहि पड़ल, मुदा नारिकेल पात एक बेर हिलल।

बच्चा सभ साक्षी-पत्रक चारू कात बैसल। अनन्या पहिल नाम पढ़ली। फेर दोसर बच्चा दोसर।

चन्ना गाछीक ऊपर भोरक पहिल पंछी बजल। ओ जाहि विषयपर विचारीक स्वरमे कोनो सभक सामने कहल बात नहि छल। बस एतबे बुझाइत छल जे राति अपना पूरा अन्हार खर्च कऽ चुकल अछि।

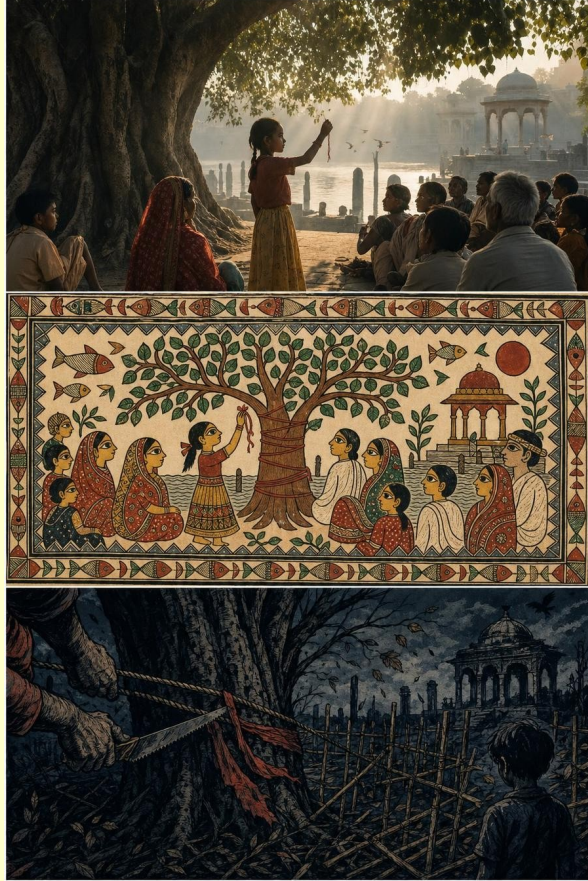
सत्यव्रत कागच समेटलनि। पात सभ धीरे-धीरे सामान्य हिलए लागल। मुदा गाछीक माटि पर जतय पदनाम राखल गेल छल, ओतय एकटा छोट नारिकेल अंकुर फुटि आयल।

छोट लोकगीत

थामू हे साक्षीक हाथ, दुनू हाथ थामू हे,
भारी छातीक बोझ आधा-आधा बाँटू हे।
साक्षीक छाती भारी हो तँ संगक कन्हा दिअ,
सुरक्षित घर, कान, सलाह, विश्रामक ठाम दिअ।

अध्याय ५२ अगिला आवाज

गोहि देह चिबा सकैए, अदालत बरख, फोनक पर्दा मोन— मुदा बच्चाक हाथक पहरा किओ ने चिबा सकल ।



ओहि सुनबामे उपन्यासक अन्त नहि, आरम्भक अगिला आवाज छल। गोहि सभ देह चिबा सकैत अछि, अदालत बरख चिबा सकैत अछि, फोनक पर्दा मोन चिबा सकैत अछि। मुदा जँ नामक पहरा बच्चा सभक हाथमे पहुँचि जाए, तँ जलसमाधि सेहो बन्धन-मुक्तिक द्वार बनि सकैत अछि।

मुदा दीर्घ साँसक बादो संसार ठाढ़े नहि रहैत अछि। आस्ते-आस्ते चन्ना गाछी केँ काटल जाय लागल। पहिने ओहि पर कसकैत

रस्सी बन्हायल, फेर लाल कपड़ा हटाओल गेल, फेर जड़िक चारूकात बाँसक घेराबन्दी बनाओल गेल।

पहिने-पहिने लोक चुपचाप देखैत रहल। ककरो बुझाईत छल — ई उचिते अछि। जे गाछिमे अदालत लगैत छल, जँ ओकर छाँह हटत, तँ भय सेहो हटत।

तखन सत्यव्रत मेहता फेर ओहि ठाम आएलाह। एहि बेर ओ पदक गाडी पर नहि, ने आदेशक कागजक गट्टर लेनिहार अधिकारी जेकाँ। एकटा साधारण सफेद कुरता, थाकल चेहरा, हाथमे पुरान कपड़ाक झोरा।

मुदा जाहि दिन अन्तिम बड़ी फाँड़ काटल गेल, ओहि दिन एक विचित्र बात भेल। जड़िक भीतरसँ सड़नक गन्ध नहि, अपितु भीजल माटि, धूप, पुरान कागच, आ दूधमुँहा बच्चाक केश जेकाँ कोमल गन्ध उठल। मजदूरक कुल्हाड़ि एक क्षण लेल अटकल गेल।

तखन ओहि बालिका — जिनका पहिने सत्यव्रतसँ प्रश्न केने छल — कटल टूट पर हाथ राखि कहली, “एतय फेर गाछि उगाओल जाए?” दोसर बच्चा कहलक, “नव गाछि, मुदा पुरान नाम।” तेसर कहलक, “नव गाछिक छाँहमे झूठक अदालत नहि, सुननाइक चौपाल बनत।” सत्यव्रत मेहता मुस्कीओ नहि देलखिन। हुनकर आँखिक कोना भीजल छल। ओ झोरासँ एकटा पुरान बही निकालि बच्चा सभकेँ दऽ देलखिन।

एखन हुनका जाएब छल। मुदा एहि बेर हुनका गमनमे पुरान प्रकारक अन्त नहि छल। बालिका पूछली, “अहाँ फेर आएब?” ओ कहलखिन, “जतए नाम पुकारल जाएत, ओतए हम सुनएवाक ऋणमे रहब।” एहि उत्तरमे पदक गन्ध नहि, मनुष्यक स्वीकार छल।

ई कारणेँ चन्ना गाछीमे ओहि दिन कथा समाप्त नहि भेल। गाछि अधकट रहि गेल, मुदा चौपाल उगि गेल। अन्हार छँटि गेल, मुदा रहस्य मरल नहि।

आ फेर — जकरा लोक अन्त मानि रहल छल — ओतय सँ कथा फेर आरम्भ भेल।

छोट लोकगीत

बैसू हे चौपाल, गोल-गोल बैसू हे,
अपन स्वर पूरा भेला पर अगिला लेल ससरू हे।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

कटल गाछिक ठाम चौपाल नव उगि आए,
एक स्वर पूरा भेल कि अगिला आसन पाए।

अध्याय ५३

कटानक बादक बिहान

गाछ कटलापर भोर नहि रुकै छै— टूटो सोझे सूर्य दिस ताकए
लागै छै।



राति भरि जतेक लोक जागल रहल, ओकरा सभकेँ भोर ओहि दिन
अबेरसँ नहि, अकस्मात् भेटल। जे चन्ना गाछी शताब्दी धरि
भोरकेँ रोकि राखैत छल, से अधकट टूटक रूपमे पहिल बेर सूर्यकेँ
बिनु परदा भीतर आबय देलक। उजास भीतर पैसल तँ लोक
खुशीसँ नहि, एकटा अनचिन्ह लाजसँ भरि उठल।

चन्ना गाछीमे दिनोमे अन्हार रहैत छल। ओ अन्हारमे कथा अपन
आवाज बचा लैत छल। लोक ओतय धीरे बाजैत, पएर सम्हारि
राखैत, बच्चाकेँ डाँटि चुप करबैत।

भोरक पहिल इजोत टूँठक गोल कटान पर पड़ल। कटानक भीतर बरखा-वर्षाक वृत्त छपल छल — गाढ़, फीक, गाढ़, फीक — जनु गाछि अपना देहमे समयक काठिन्य आ नरमी दुनू लिखने रहल। बूढ़बा भूत ओहि वृत्त सभकेँ गिनैत छलाह।

ककरो बुझल नहि जे ई बात ककर कानमे पहुँचल। मुदा ओहि क्षण चन्ना गाछीक चारूकात बैसल बच्चा सभ एक-दोसराकेँ देखलक। हुनका सभक हाथमे रातुक नाम-पुस्तिका छल।

ईरा रातिक बससँ पहुँचली। विदेशक शिक्षा, सभागार, शोध, प्रश्न, भाषण — सभ ओकर चेहरा पर थाकि कऽ बैसल छल। ओ भोरक उजासमे चन्ना गाछीक कटायल देह देखि ठिठकि गेली।

दुपहर लग चन्ना गाछीक नव चौक पर छोट-छोट काज शुरू भेल। केओ पानिक घड़ा राखलक। केओ छाँह ने रहलाक कारण कपड़ा बाँधि अस्थायी छतरिया बनयलक।

बूढ़बा भूत दिनक उजासमे अधिक काल रहि नहि सकैत छलाह। तथापि ओहि दिन ओ एकटा कटल डारिक छाँहमे टिकि गेलाह। हुनकर कारी देह धूपमे पातल भऽ रहल छल।

ओहि ताराकेँ देखैत अनन्या पूछली, “ओ कोन तारा अछि?” केओ उत्तर नहि देलक। ईरा ऊपर तकली, ओकरा दूरक आकाशमे एक विचित्र ठण्ढा चमक देखाइ पड़ल — जेना कोनो नाम-विहीन ठाम धरतीक आवाज सुनि रहल हो। ओ किछु कहय चाहैत छली, मुदा तखने गामक चौकीदार पीयर कागच लऽ कऽ दौड़ैत आयल।

पीयर कागच टूँठ पर चिपकाओल गेल। बच्चा सभ खेल रोकि देलक। बूढ़बा भूत अन्हारमे फेर गाढ़ भऽ गेलाह।

छोट लोकगीत

जागू हे टूँठ, भोरक सोना ओढ़ हे,
कटल डारिक ठामो नव कोंपल जोड़ हे।
गाछ कटल तइयो सूर्यक बाट नहि रुकल,
टूँठक ओसपर भोरक पहिल सोना झुकल।

अध्याय ५४

ढूँठक चारू कात

जतय डारि नहि बचल, ओतहु माथ झुकै छै— आब अन्हारसँ
नहि, गवाहीसँ।



ढूँठक चारू कात पहिल बेर लोक गोल घेरा बनाकऽ बैसल। पहिने चन्ना गाछीक भीतर पैसैत लोक माथ झुकबैत छल, कारण डारि कम छल कि अन्हार अधिक, से बुझब कठिन छल। आब माथ झुकएबाक कारण बदलि गेल छल।

कटल ढूँठक कगारपर धूपक पहिल टुकड़ा बैसल छल। ओ धूप सोना जेकाँ चमकैत नहि छल। ओ धूप वैद्यक छुरी जेकाँ निर्भीक छल।

बच्चा सभ एहि वस्तु सभकेँ खजाना बुझि उठाबऽ चाहलक, मुदा अनन्या हाथ रोकि देली। ओ आब खेलबाली नेनी मात्र नहि रहली। नामक पहराक पहिल पहरा बनि चुकल छली।

दोसर नाम उज्ज्वलक माय पढ़लीह। लोकक भीड़मे शब्द हराइ जाएबाक डर छल। देविका हुनकर कन्हा पर हाथ रखली आ कहली, “आस्ते पढ़ू, नामकेँ जल्दी नहि चाही।” उज्ज्वलक माय आस्ते-आस्ते पढ़लीह।

सत्यव्रत मेहता ओहि दिन दूर सँ देखैत रहलाह। हुनका ककरो बजाओल नहि गेल छल। आब हुनका बजाओल जाएबाक चाहो नहि रहल।

तहने पहिल बाहरी लोक आयल — साइकिल पर बैसल पोस्टमास्टर। ओकर झोलामे सरकारी डाक छल। ओ सामान्यतया चन्ना गाछी दिस नहि अबैत छल, मुदा आब सड़क खुलि गेल छल, तें ओ छोट रस्ता लेने आयल।

आरुणिक हाथमे लिफाफा गरम भऽ उठल। ओ खोलय चाहलक, मुदा अनन्या रोकलक — “नाम-पाठ चलि रहल अछि। पीयर कागच प्रतीक्षा करत।” ई बात सुनि लोकमे धीमी हँसी दौडल, मुदा हँसीमे भय सेहो छल।

अनन्या बही बन्द करैत कहली, “काल्ह पीयर कागच पढ़ल जाएत। मुदा पहिने ओहि पर लिखल शब्दक नाम पूछल जाएत।” कियो बुझल नहि जे शब्दक नाम की होइत अछि। मुदा बच्चा सभ बुझि गेल छल — सरकारी भाषा सेहो बेनाम नहि रहि सकैत।

एहि ढंगेँ ट्रूठक चारू कात पहिल दिन समाप्त नहि भेल। ओ अगिला सुननाइक प्रतीक्षामे बैसल रहल। गाछि कटि गेल छल, मुदा चारूकात लोकक घेरा उगि गेल छल।

छोट लोकगीत

बनाउ हे घेरा, जड़िक चारू कात बनाउ हे,
 ट्रूठ केन्द्र, लोक परिधि—नब गाछी उगाउ हे।
 डारि नहि बचल तइयो जड़िक घेरा बनाउ,
 लोक गोल बैसि स्मृति, योजना, गीत सुनाउ।

अध्याय ५५

नगरपालिकाक पीयर सूचना-पत्र

सरकारी पीयर कागजक फडफडी पाँखिक नहि, कैंचीक आवाज थीक ।



राति भरि पीयर लिफाफा टूँठक कगार पर पडल रहल । दिया सभ एक-एक कऽ बुझबैत गेल, लोकक आवाज पाछाँ हटैत गेल, मुदा लिफाफाक कोना हवा सँ फडफडाइत रहल । जेना ओ कागच नहि, पीयर पाँखि बला कोनो छोट जीव हो, जे भीतरक दाँत नुकौने प्रतीक्षा करैत हो ।

भोरमे अनन्या सभसँ पहिने पहुँचली । ओ पाथर सभक पाँति देखलक, बहीक ऊपर जमा ओस पोछलक, आ फेर पीयर लिफाफा

उठेलक। कागचक सीवन पर नगरक सरकारी दफ्तरक नीला मोहर छल — मोहरक भीतर चक्र, चक्रक भीतर अक्षर, अक्षरक भीतर एकटा ठण्डा स्वर।

आरुणि आएल तखन ओ कहलक, “कागच हम पढ़ि दैत छी।” अनन्या माथ हिला देली। “अहाँ पढ़ब,” ओ कहली, “मुदा पहिने हम सभ सुनब जे एहि कागचक नाम की अछि।” ई वाक्य सुनि किछु बूढ़ लोक मुस्कुरेल। मुदा सत्यव्रत मेहता, जे एहि बेर दूर नहि, पाथरक पाछाँ नीचाँ बैसि गेल छलाह, माथ झुका कऽ सुनैत रहलाह।

बूढ़बा भूत दिनक उजासमे पहिल बेर साफ-झाँप देखाइ पड़ल। ओकर देह छाह आ धूलिक बीच बनि रहल छल। ओ पीयर सूचना-पत्रक चारूकात तीन बेर घूमल।

नाम सुनिते घेरा ठण्डा भऽ गेल। बटुकनाथ हरिहरन — जे अदालतमे अपराधक नाव खेने छल, आब स्मृतिक नाव पर चढ़य चाहैत छल। ओकर दूत कागजक गट्टर खोलि कऽ किछु रंगीन छपाइ देखौलक — फाटक, पट्टिका, टिकट-घर, स्मृति-दीर्घा, आगन्तुक-पुस्तिका, दान-पेटी।

आरुणि पीयर सूचना-पत्र फेर हाथमे लेलक। ओ ओकर खाली किनार पर पेंसिल सँ लिखलक — “खाली भू-खण्ड नहि — नामक ठाम।” देविका दोसर किनार पर लिखली — “भीड़ नहि — परिवार।” मीरा लिखली — “अन्धविश्वास नहि — अपन निजी बातक अधिकारक संग स्मृति।” गोप लिखलक — “प्रमाण नहि भेटल, से अपराधक प्रमाण अछि।” बा काँपैत हाथसँ लिखलीह — “जड़ि जीवित।” बच्चा सभ गोल-गोल अक्षरमे लिखलक — “उपस्थित।”।

आरुणि पुरान चटाइ बिछेलक। गोप अपन कागच खोललक। देविका लाल माटि घोलली।

रातिक अन्तिम पहरमे चटाइक बीच पहिल बिन्दु पड़ल — कटल चन्ना ढूँढ। ओकर चारूकात अनन्या लाल वृत्त खिंचलक। ओ कहली, “एतय सँ स्मृति पसरत।” दूर कतहु कुरुर भुलल, पानि हिलल, आ बूढ़बा भूतक आवाज अन्हारमे आयल — “आब असली नक्शा शुरू भेल।”।

पीयर सूचना-पत्र ढूँढक कगार पर पड़ल रहल। ओकर मोहर अँझराइत छल, मुदा लोकक लिखल ‘उपस्थित’ शब्द चमकि

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

रहल छल । सात दिनक धमकीक सोझाँ पहिल राति, गढ नारिकेल
अपन स्मृतिक पहिल नक्शा बनाबय बैसल ।

छोट लोकगीत

उड़ हे पीयर पाती, पाँखि बनि उड़ हे,
कैंची नहि, चेतौनी बनि घर-घर जुड़ हे ।
पीयर कागच कैंची नहि, पाँखि बनि उड़,
कटवाक आदेश छोड़ि सत्यक समाचार जुड़ ।

अध्याय ५६

स्मृतिक पहिल नक्शा

जे ठाम 'खाली भू-खण्ड' लिखल गेल, ओही ठाम सभसँ बेसी नाम
गड़ल छल।



पीयर सूचना-पत्रक शब्द सभ राति भरि ढूँढक कगार पर
फड़फड़ाइत रहल। ओकरा पर लिखल “खाली भू-खण्ड” सभहक
निन्नमे काँटाक तरह पैसल। जे ठाम देह डूबल, जे ठाम नाम
उठल, जे ठाम भूत कबड्डी खेलल, जे ठाम चुप्पी साक्षी बनल —
ओकरा खाली कहल गेल।

भोरमे अनन्या ओहि पीयर सूचना-पत्र केँ खोलि कऽ नहि पढ़ली।
पहिने ओ ढूँढक चारू कात राखल पाथर सभकेँ सोझ केलक।

प्रत्येक पाथर पर नाम छल, किछु अक्षर बेतरतीब, किछु पूरा, किछु केवल आरम्भिक ध्वनि।

मीरा लाल माटि घोलि आनलीह। देविका राख लऽ आयली। ईरा सुखायल पात बटोरि लय आयली।

आरुणि कमला-बलानक धारा खिंचलक। ओ रेखा सोझ नहि गेल। ओ कतेको बेर मुडल, पुरान खेतकें काटल, मजदूरक बस्ती लग डोलल, पुलक पाया लग कारी भँवर बनल, फेर चन्ना गाछी लग आ कऽ ठहरल।

उज्ज्वलक माय ओहि ठाम पर एक कारी गोल बनौली जतय उज्ज्वलक फोन अन्तिम बेर सक्रिय भेटल छल। देविका ओकर चारू कात राखक हलुक चक्र बनौली — फोनक पर्दाक गोहि। मुदा मीरा रोकि कहलीह, “ओकर मृत्युक दाग बनाउ, तमाशा नहि।” तखन कारी गोलक भीतर एक छोट उज्जर बिन्दु राखल गेल।

एक कर्मचारी धीरे कहलक, “हम आदेश पर आएल छी।” बा उत्तर देलीह, “आदेशक सेहो जन्मदाता होइत अछि। ओकर नाम कहू।” कर्मचारी चुप। आरुणि पीयर सूचना-पत्र उठाकऽ पढ़लक।

दुपहरिक पछिला पहर नक्शा पूरा होइत देखाइ पड़ल, मुदा ईरा कहली, “एहिमे आकाश नहि अछि।” बच्चा सभ ऊपर ताकल। सचमुच, सभ नदी, गाछि, पुल, घर, पगडंडी, पाथर, छेद, घेरा बनल छल, मुदा ओहि आकाशक कोनो चिह्न नहि छल जाहिमे कबड्डीक स्वर उठि सकै। तखन एक बालक नील काजर-जेकाँ रंग बनावऽ नक्शाक चारू कात खुलल आकाश खिंचलक।

टूँठक चारू कात सन्नाटा पसरि गेल। नक्शा हवामे काँपैत रहल। बच्चा सभ पहिल बेर बुझलक जे स्मृति पर अगिला आक्रमण कुल्हाड़ि वा पीयर सूचना-पत्र सँ नहि, संरक्षणक मीठ भाषा सँ आवि रहल अछि।

नक्शा टूँठक पाछाँ झूलैत रहल — नदी, गाछि, छेद, हथेली, अपन निजी बातक अधिकारक घेरा, “अनाम ग्रह”क कल्पनाक प्रश्न। आ प्रस्ताव-पत्र, जे बाहरसँ विनम्र देखाइत छल, भीतरसँ कदाचित् सभसँ धूर्त गोहिक पहिल दाँत नुकौने छल।

छोट लोकगीत

पढ़ू हे माटि, नापब सँ पहिने पढ़ू हे,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

'खाली' लिखल भूमियो मे नाम-कथा धरू हे ।

'खाली भूखण्ड' लिखल जगह नामसँ भरल,
ककरो खेल, ककरो घर, ककरो सपना पलल ।

अध्याय ५७ गंगेशक प्रश्न

प्रमाण बिनु प्रमेय नहि— गंगेशक ई प्रश्न आइयो ढूँढक जड़िमे
करवट लै छै।



पीयर सूचना-पत्र आ स्मृतिक पहिल नक्शाक बीच एक राति चन्ना गाछीक ढूँढ ओतेक बेचैन रहल जे लगैत छल, ओकर कटल जड़ि भीतर सँ करवट बदलि रहल अछि। बच्चा सभक हाथक बनाओल नक्शा माटिपर पसारल छल — कमला-बलान, पुलक पाया, जलसमाधिक गोड, उज्ज्वलक कोठरी, मीरा केर शपथ, देविकाक पाठशाला, आ बीचमे चन्ना गाछीक अधकट ढूँढ। सरकारी कागच ओहि ठामकें खाली भू-खण्ड कहैत छल।

भोरका बाद जखन धूप ठूँठक कटान पर सोझे पड़ल, तखन दूरसँ एक सफेद गाड़ी आयल। गाड़ीपर ने झण्डा छल, ने चिन्ह। मुदा उतरला मात्र लोक चिन्हि गेल — बटुकनाथ हरिहरन।

नाम ज्योंहि उच्चरित भेल, ठूँठक भीतर सँ एक सूक्ष्म किरकिरी आवाज आयल। जे लोक नव्य न्यायक ग्रन्थक नाम मात्र सुनने छल, से चौंकल। जे लोक ओकरा पण्डित सभक विषय मानैत छल, ओ सोचय लागल जे चन्ना गाछीक कटान आ गंगेशक तर्कमे की सम्बन्ध?

बा धीरे कहली, “बाजू।” तखन ईरा लोकश्रुतिक ओ कठिन गिट्टि खोलली — “कहल जाइत अछि, हुनकर जन्म पिताक मृत्युक पाँच बरख बाद भेल। प्रश्न उठल — जन्मक प्रमाण की? समाज जे असम्भव कहि दैत अछि, से असत्य भऽ जाइत अछि की?

ई वाक्य हवामे भारी भऽ लटकल गेल। बटुकनाथ तुरन्त उठल, “सावधान! विद्वान सभ पर आरोप करब सरल अछि।

ईरा ठूँठक कटी सतह देखली। ओतय वृक्षक वलय सभ बारह हजार पतली रेखा जेकाँ चमकैत छल। एक बालक फुसफुसायल, “तत्त्वचिन्तामणि नामक न्याय-पोथी।” दोसर कहलक, “बारह हजार ग्रन्थ।” तेसर जोड़लक, “गाछीक भीतर गंगेशक लेखनी।” लोक बुझि नहि सकल जे बच्चा सभ खेल करैत अछि कि दर्शन देखैत अछि।

बटुकनाथ अपन स्थिति सम्हारए चाहलक। कहलक, “ठीक अछि, न्यासक नियममे जाति-भेद नहि रहत। सभक नाम लिखल जाएत।” मीरा तुरन्त पूछली, “सभक देहक सम्मान सेहो?

ज्ञानक कथा मात्र विद्वानक सभामे नहि घटैत अछि। सीपक चमक, पर्वतक धूम, खाली आसन, बालकक अस्पष्ट शब्द, बाड़ीक हरियर तरकारी आ फोनक सन्देश—सभ ठाम मन आँखिसँ देखल ज्ञान, स्मृति, चिन्ह देखि बुझल बात, तुलना सँ बुझल बात आ शब्दक सहायतासँ संसार रचैत अछि।

गङ्गेशक उपलब्धि एहि दैनिक प्रक्रियाकेँ एहन सूक्ष्म भाषामे खोलब अछि जतय कारण, दोष, नहि होएब, सम्बन्ध आ सीमा अस्पष्ट नहि रहय। कथा एहि सूक्ष्मताकेँ दृश्य बनबैत अछि। सिद्धान्त कोष्ठकमे रहि पाठककेँ स्मरण करबैत अछि जे दृश्यक पाछाँ तर्कक पूरा स्थापत्य उपस्थित अछि।

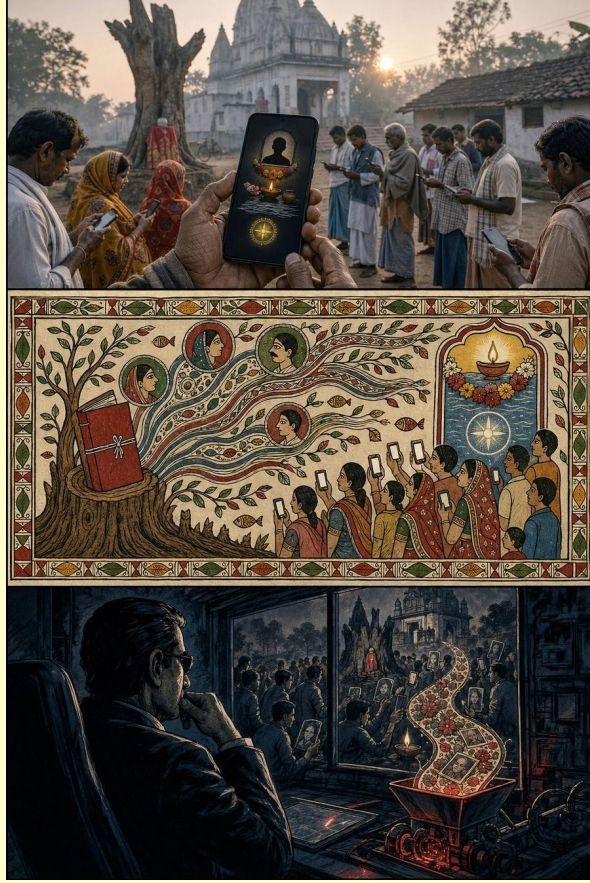
छोट लोकगीत

जोतू हे प्रश्नक हर, गहीर-गहीर जोतू हे,
गंगेशक खेत मे प्रमाणक बीया बोतू हे ।
गंगेशक प्रश्न हल जकाँ माटि गहीर जोतै,
प्रमाणक बीज रोपि कऽ ज्ञानक धान बोतै ।

अध्याय ५८

चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोग

आदरक स्मरण जखन फोन साधन बनि जाए, तखन शोको सँ
किस्त वसूलल जाइ छै।



भोर होइत-होइत चन्द्रपाल बन्नाक 'यन्त्रपर चलयवला आदरक स्मरण मंच' गढ नारिकेलक बहुतो फोनमे चमकय लागल। सन्देशमे लिखल छल — 'अपन प्रियजनक नाम अमर करू, स्मृति सुरक्षित राखू, आदरक स्मरण चढ़ाउ।' नीचाँ फूल, दिया, जल, आ एक छोट चमकैत चिह्न बनल छल। चिह्न पर कोनो कम्पनीक स्पष्ट नाम नहि, केवल 'लोक-सेवा सांस्कृतिक मंच' लिखल।

चन्द्रपाल बत्रा स्वयं गाममे नहि आएल। ओकर स्वभावँ एहन छल — जतय लोकक आँखि मिलएबाक हो, ओतए ओ प्रतिनिधि पठबैत। जतय आँसू गिनबाक हो, ओतए ओ मंच बनबैत।

ईरा गंगेशक पोथीक नकल फेर खोलली। ओ बच्चा सभकेँ कहली, “काल्हि प्रश्न उठल छल — प्रमाण की? अब एहि मोबाइल साधन पर गंगेशक कसौटी लगाउ।

टूठक भीतर सँ एक हलुक किरकिरी आवाज उठल। कियो कहलक, “गाछि सहमत अछि।” बूढ़बा भूत ओहि दिन खूब दिनका उजासमे झिलमिला उठल। ओकर चेहरा पर हँसी नहि, तिरस्कार छल।

तखन सत्यव्रत मेहता आएलाह। ओ फोन देखलनि, शर्त पढ़लनि, फेर टूठक जड़ि पर बैसलाह। फेर कहलनि, “कानूनमे मञ्जूरी लिखल जा सकैत अछि, मुदा दुःखक क्षणमे लेल मञ्जूरी कतेक मुक्त होइत अछि?

चन्द्रपाल बत्रा एहि बीच शहरक एक ठण्ढा कमरामे बैसल रिपोर्ट देखैत छल। कतेक लोक पन्ना खोललक, कतेक नाम भरलक, कतेक अधूरा छोड़लक — संख्या सभ ओकर फोनक पर्दा पर चढ़ैत छल। ओकरा नाममे रस नहि छल।

रातिमे अनन्या नक्शाक कातमे एक नव चिह्न बनौलक — एक छोटा चौकोर फोनक पर्दा, जकर भीतर पानिक लहर आ गोहिक आँखि। ओकरा नीचाँ लिखलक — ‘स्मृति-मोबाइल साधनक प्रश्न’। ईरा ओकरा देखली आ कहली, “नव्य न्यायक अगिला पाठ तैयार अछि।

अनन्या ओ निशान देखलक। ओकरा बुझि गेल जे चन्द्रपाल असगर नहि, राघव ‘संकेत’ फेर परछाईमे जागल अछि। टूठक भीतर सँ हँसी नहि, एहि बेर चेतावनी उठल।

राति भरि टूठक चारू कात बच्चा सभ पहरा दैत रहल। कियो फोनक चमक पर नजर राखलक, कियो पाथरक नाम पर, कियो पीयर सूचना-पत्र पर, कियो लाल कागजक गट्टर पर। चन्ना गाछी कटि गेल छल, मुदा ओकर चौपालमे एखन चारि-चारि गोहि घात लगौने छल — सरकार, न्यास, फोनक पर्दा, आ संकेत।

छोट लोकगीत

बाँटू हे करुणा, हिसाबो साफ राखू हे,

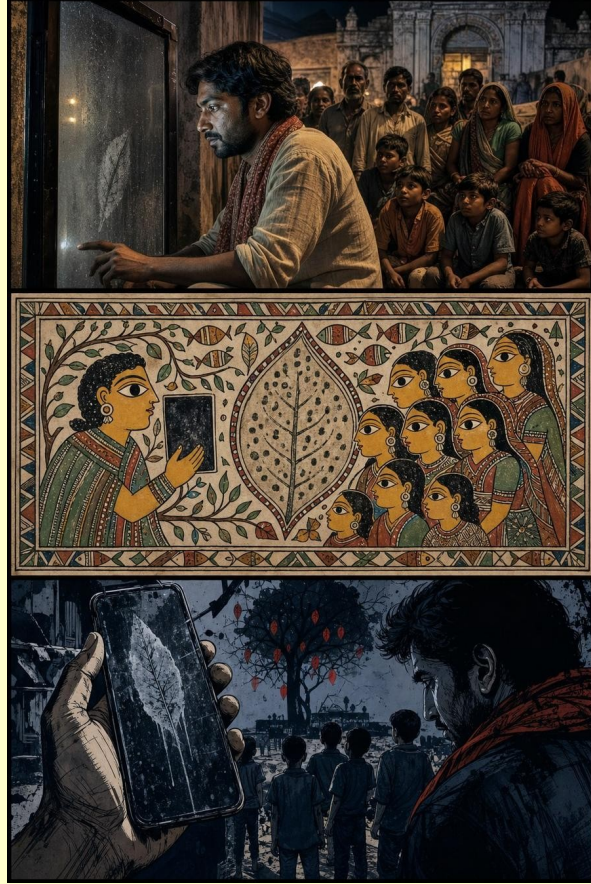
गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

फूल-दीपसँ आगाँ बढ़ि जीवन-पथ साजू हे ।
फूल-दिया फोनक पर्दापर, संगमे साफ हिसाब,
शोकक सेवा निधिसँ परिवार पाबय जवाब ।

अध्याय ५९

राघव सिग्नलक नव कोड

मेटायल फोनक पर्दाक धुँधला निशानपर लिखल शास्त्र सभसँ
साफ बाँचल जाइ छै।



अगिला बिहान राघवक गुप्त संकेत पढ़बाक लेल लोक ट्रूठक चारू
कात एना बैसल जेना कोनो पुरान शास्त्र खोलल जाएब। मुदा ई
शास्त्र पात पर नहि, गायब भऽ गेल फोनक पर्दाक धुँधला निशान
पर लिखल छल। जे सन्देश रातिमे मेटा देल गेल छल, ओकर
देह नहि बचल, मुदा ओकर भाप बचल छल।

राघव 'संकेत' सोमानी सदिखन ई मानैत छल जे शब्द जाँ समय
पर मेटा देल जाए, तँ अपराधक देह नहि बनैत। ओकर विश्वास
छल — बाजू, मेटाउ, फेर बजबाक प्रमाण नहि रहत। मुदा गढ़

नारिकेलमे जे दिनसँ नामक पहरा बच्चा सभक हाथमे गेल, तही दिनसँ मेटायल शब्द सेहो अपन छाह लऽ कऽ घुरए लागल।

अनन्या सभसँ पहिने कहली — “गुप्त संकेत पढ़बाक पहिने गुप्त संकेत केँ प्रमाण बनाउ।” ई वाक्य सुनि ईरा मुस्की देली। गंगेशक प्रश्न चन्ना गाछीक चौपालमे एखन नव छल, मुदा बच्चा सभ ओकर भाषा अपना ढंगे सीखि रहल छल। आँखिसँ देखल ज्ञान की?

बटुकनाथ हरिहरन ओहि दिन फेर आएल। ओकर पोशाक पहिने जेकाँ कड़ा-सोझ कानूनक नाटक करैत छल। ओ दूर सँ देखलक जे बच्चा सभ राघवक गुप्त संकेत पढ़ि रहल अछि।

मीरा भवेशसँ पूछली, “की अहाँ जानैत छलहुँ जे जकर नाम फोनक पर्दा पर चमकत, ओकर परिवार सोचत जे बेटाक स्मृति सुरक्षित अछि?” भवेश माथ झुका देलक। मुदा हमरा कहल गेल जे भावना सँ मंच चलैत अछि, लेखा सँ व्यापार।” ई वाक्य सुनिते टूटक भीतर सँ एक सूखल कीड़ा बाहर आयल आ कटल छाल पर सरकि गेल। बच्चा सभ ओकरा देखलक।

ईरा पूछली, “मौनक स्रोत के?” लोकक आँखि अपनहि सत्यव्रत मेहता दिस गेल। सत्यव्रत ओहि दिन चौपालक किनार पर बैसल छलाह। ओ चुप छलाह, मुदा एहि बेर हुनकर चुप्पी अपराधक गुहा नहि, सुनबाक आसन छल।

साँझ धरि राघवक चिन्ह सभक सूची बनल, मुदा सूची खुलल रूपमे नहि चिपकायल गेल। मीरा कहली, “अपराधक चाल बतवैत काल अपराधक बाट नहि खोलब।” तँ बच्चा सभ निश्चय केलक जे सार्वजनिक रूपमे केवल चेतावनी लिखल जाए: ‘जे दान नामसँ अलग हो, ओ गोहिक दाँत अछि। जे मंच परिवारक मञ्जूरी बिनु नाम चढ़ाए, ओ स्मृति नहि, चोरी अछि।

एहि शब्दक संग माटिक नील लकीर फटि गेल। नील धूलि बनि उड़ल आ कटल टूटक ऊपर जमि गेल। बूढ़बा भूत पहिल बेर साफ सुनाइ देलक — “गुप्त संकेत पढ़ल गेल।

राति भरि कबड्डी-रेखा माटिमे हलुक चमकैत रहल। बच्चा सभ पहरा दैत रहल। नाम-पाथर सभ ठाम पर छल।

छोट लोकगीत

जोगाउ हे भाप, काँच परक भाप जोगाउ हे,

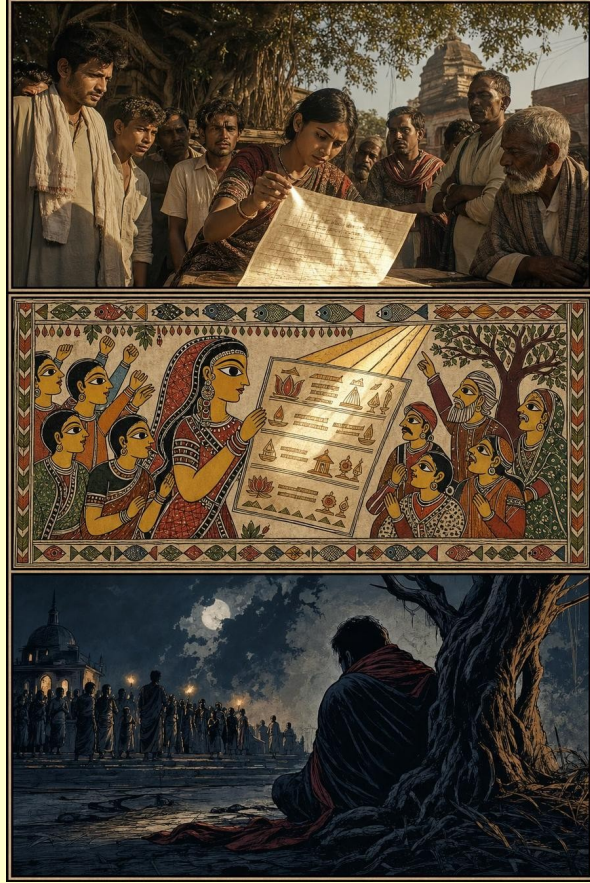
गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

मेटलो आखरक छाया सँ बाट पाउ हे ।
सन्देश मेटल तइयो भाप काँचपर रहै,
नान्हि गुप्त संकेत पढ़िते पूरा रास्ता कहै ।

अध्याय ६०

सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन

धर्मक भाषामे लिखल हिसाब सभसँ पहिने मौनक कान पकड़ै छै।



राघव 'संकेत' सोमानीक नव गुप्त संकेत जखन टूँठक चारू कात पहुँचल, तखन पहिने लोक ओकर अर्थ बुझबे नहि केलक। कागच पर सभ किछु धर्मक भाषामे छल — अर्पण, श्रद्धा, पुनर्निर्माण, स्मृति-सहयोग, पीडित-परिवार कोष। मुदा देविकाक आँखि सीखि गेल छल जे ठगी सभसँ अधिक पवित्र शब्दक कपड़ा पहिरैत अछि।

लोक शोर मचाबय चाहलक। किछु युवक कहलक — 'एहि बेर सोझे मुकदमा।' किछु कहलक — 'सत्यव्रत बाबू कै बजाउ, ओ दिल्लीक लोक छथि, ओ बुझताह।' किछु बूढ़ कहलक — 'जे सभ

नामक ऊपर फेर व्यापार करए चाहैत अछि, ओकरा चन्ना गाछीमे बाँधि देबाक चाही।' मुदा टूँठ मौन रहल। ओहि मौनमे एक विचित्र रोक छल — जनु कटल गाछि कहि रहल हो, 'पहिने सुनू, फेर बाजू।'।

तहिये हुनका लग अनन्या आयली। ओ हाथमे बही नेने छली। 'सत्यव्रत बाबू,' ओ कहली, 'सभ अहाँकें बजाबैत अछि।' सत्यव्रत माथ उठेलनि।

चन्ना टूँठ लग सभ प्रतीक्षा कऽ रहल छल। पीयर सूचना-पत्र, बटुकनाथ हरिहरनक लोक-स्मृति न्यासक प्रस्ताव, चन्द्रपालक यादक चिन्ह-मोबाइल साधनक छापल पत्रा, आ राघवक नव गुप्त संकेतक दान-पत्र — चारू कागज अलग-अलग पाथर सँ दबाओल छल। ओ चारू कागज एना लगैत छल जेना चारि गोहि पानिसँ निकलि टूँठक चारू कात पेट टेकने पड़ल हो।

बा अपन धीमा स्वरमे कहलीह — 'गंगेश न्याय लिखलनि, मुदा समाज हुनकर जीवन पर न्याय नहि केलक। जकरा जाति, विवाह, जन्म, कुलक प्रश्न असुविधाजनक लगल, से ओकरा मर्यादाक मूर्ति बनाकऽ बचा लेलक। ई सम्मानक नाम पर स्मृति-हत्या छल।

आरुणि पूछलक, 'उत्तर कोना?' सत्यव्रत कहलनि, 'जकरो कोनो प्रस्ताव अछि, ओकरा पहिने नाम-पाठ सुनए पड़त। जे यादक चिन्ह बनावय चाहैत अछि, से पहिने मृतकक घर जाए। जे यन्त्रपर चलयवला आदरक स्मरण कहैत अछि, से पहिने एक दिन फोन बन्द कऽ टूँठक घेरामे बैसए।

एखन धरि सत्ता लोककें साँच जाँचक कटघरामे ठाढ़ करैत रहल। आब टूँठक सभा प्रस्तावक साँच जाँच करए चाहैत छल। अनन्या, देविका, मीरा, सौम्या, ईरा आ गोप मिलि एक पन्ना बनबय लगल।

सभ गोटे छँटि गेलाक बाद सत्यव्रत मेहता टूँठ लग असगर रहि गेलाह। चन्द्रमाक उजास कटल सतह पर पड़ल छल। ओ चुपचाप ओहि सतहकें देखैत रहलाह।

जखन ओ उठि चललाह, तखन टूँठक एक फाँकिसँ पवन निकलि पाछाँ बजल — 'कबड्डी।' सत्यव्रत ठमकि गेलाह। मैदान खाली छल, बच्चा सभ घर गेल छल, भूत सभ देखाइ नहि पड़ैत छल। मुदा रेखा बनि चुकल छल।

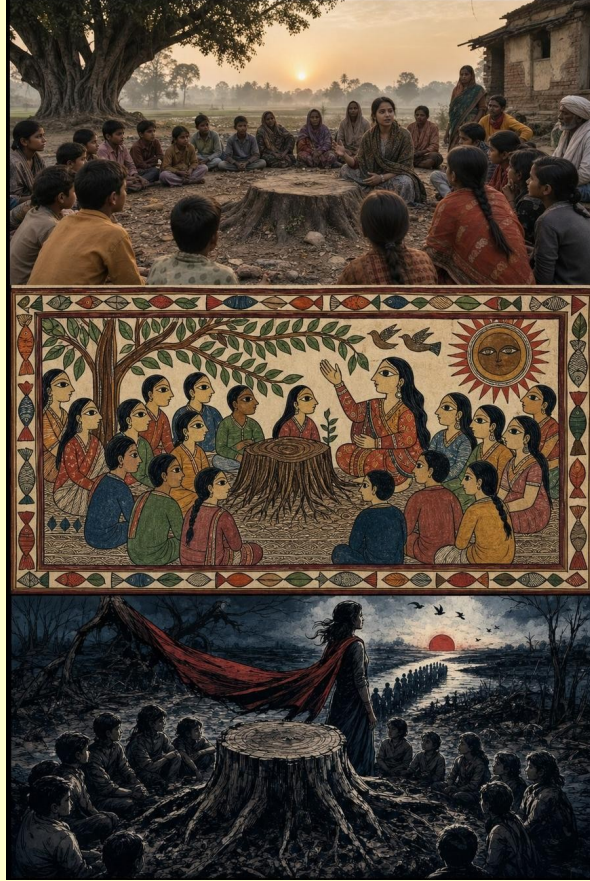
छोट लोकगीत

पकाउ हे मौन, भीतर वचन पकाउ हे,
सही घड़ी पर स्पष्ट बोल जग बीच लाबू हे ।
दोसर मौन पहिलसँ भिन्न—एहि बेर सोचक थान,
धर्मक कपड़ा हटि रहल, खुलि रहल असल जान ।

अध्याय ६१

पहिल नाम-उत्सव

असल उत्सवमे नगाडा नहि बजै छै— नाम बजै छै।



नाम-उत्सवक बिहान ओना नहि आयल जेना गाममे मेला अबैत अछि। ने नगाडा बजल, ने पताका फहरायल, ने कोनो चबूतरापर कुर्सी सजा कऽ वक्ता सभक प्रतीक्षा भेल। चन्ना गाछीक कटल टूठक चारू कात बस ओही पुरान माटि छल, ओही कटायल जड़ि, ओही पाथर पर लिखल नाम, आ ओही बच्चा सभ जे राति भरि पहरा देलाक बादो आँखिमे निन्न नहि, उजास लऽ कऽ बैसल छल।

उत्सव शब्द सुनि कतेको लोक चकित भेल। जलसमाधि, ठगी, देहक अपमान, अदालतक बरख, मौनक अपराध — एहि सभक बीच उत्सव? मुदा अनन्या कहली, “जे नाम फेर सुनल जाए, से रोदन मात्र नहि रहैत।

ई बात सुनिते बूढ़बा भूतक पात जेकाँ हलुक खाँसी सुनाइ पड़ल। केओ ओकरा देखि नहि सकल, मुदा सभ बुझल जे चन्ना गाछी सहमत अछि। पहिल पाथर उठाओल गेल — ओहि पर लिखल छल, “जिनकर नाम नहि भेटल।” अनन्या ओ पाथर दुनू हाथ सँ पकड़ि पढ़ली।

दोसर पाथर पर अधूरा नाम छल — “सर, ”। कियो पूरा नहि जानैत छल। कतेको बरख पहिने बाढ़िमे बहि गेल एक मजदूर, जकर पहिल अक्षर मात्र ककरो कापीमे रहि गेल छल।

बा उठि कऽ कहलीह, “गंगेश तत्त्व पूछलनि, समाज कुल पूछलक। तँ नाम-पाठमे तत्त्व पहिने, कुल बादमे।” एहि वाक्यक अर्थ कतेको गोटे तुरन्त नहि बुझल, मुदा बहीमे लिखल गेल। सत्यव्रत मेहता दूर बैसल सुनैत रहलाह।

दुपहरियामे बटुकनाथ हरिहरनक लोक फेर आयल। ओ सभक हाथमे निमन्त्रण-पत्र छल — “लोक-स्मृति न्यासक गठनक पूर्व-परामर्श।” ओकरा सभ लागल छल नाम-उत्सवमे भीड़ अछि, तँ सभक सामने कहल बात करबाक उचित समय अछि। मुदा जखन एक सहायक पत्र पढ़ए लगल, बच्चा सभ ओकरा रोकि देलक।

आरुणि शान्त स्वरमे कहलक, “आइ मृतक सभक दिन अछि। न्यास, समिति, योजना, ठेकाक बोली — सभ काल्हि सुनल जाएत। एतय आइ कोनो जीवित चालाकीक मंच नहि बनत।” भीड़मे धीमा समर्थन उठल।

रातिमे सभ गोटे धीरे-धीरे चलि गेल। टूँठक चारू कात पाथर, दूटा कागच, बहीक नव पन्ना, आ बुझायल दिया रहि गेल। सत्यव्रत मेहता बहुत काल बाद उठलाह।

टूँठ राति भरि जागैत रहल। नाम-पाठक स्वर माटिमे उतरि गेल छल। सफेद न्यास-पत्र आ पीयर सूचना-पत्र एक-दोसराक कातमे पड़ल काँपैत रहल, जनु दुनू कै बुझि पड़ल हो जे एतय कागचक राज सरल नहि रहत।

छोट लोकगीत

मनाउ हे उत्सव, नगाड़ा बिनु मनाउ हे,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

एक दीप, एक फूल, एक नाम—एतबे सजाउ हे ।

न नगाड़ा, न पताका, नामक दीप पर्याप्त,
शान्त स्वरमे पढ़ल गेल तँ स्मृति होए सुरक्षित ।

अध्याय ६२

ढूँठमे हरियर बिंदु

तेल सिरा गेल, बाती छोट भेल, तइयो लौ जिद्दी— जिद तेलक
नहि, नामक होइ छै।



पहिल नाम-उत्सवक राति बीति गेल, मुदा चन्ना गाछीक ढूँठक चारू कात जरल दिया सभ भोर धरि बुताएल नहि। बाती छोट भऽ गेल छल, तेल प्रायः समाप्त, मुदा लौ एना जिद्दी छल जेना ओकर भीतर नामक पहरा बसि गेल हो। जे पाथर पर राति-भरि नाम पढ़ल गेल छल, ओकरा सभ पर ओसक महीन बून्द जमल छल।

भोरक पहिल बेलामे अनन्या असगर ढूँठ लग आयली। ओकरा लागल जे उत्सवक बाद ठाम थाकल होएत, जेना गीत गएलाक

बाद गायकक कण्ठ सूखि जाइत अछि। मुदा ओ देखली जे ठूँठ थाकल नहि, चुपचाप जागल अछि।

दुपहरिया धरि खबर पसरि गेल। कतेक लोक चमत्कार देखबय आएल। कतेक लोक वनस्पति विज्ञानक तर्क लऽ कऽ आएल।

ओहि राति बूढ़बा भूत पहिल बेर पूरा स्पष्ट देखाइ पड़लाह। से कटल ठूँठक पाछाँ नहि, सोझे हरियर बिन्दुक लग ठाढ़ छलाह। हुनकर देह पातक धूलि, धुँआ, आ पुरान नोर सँ बनल लगैत छल।

गंगेशक प्रसंग फेर उठल। एक विद्यार्थी पूछलक — “जँ गंगेश न्यायक जन्मदाता रहथि, तँ हुनकर जीवनक अन्याय समाज किएक नहि देखलक?” बा उत्तर देलीह — “कारण समाज शास्त्र पढ़ैत अछि, देह नहि। समाज ग्रन्थक माथ पर फूल चढ़बैत अछि, मुदा ग्रन्थ लिखनिहारक प्रेम, अपमान, जाति-बन्धन, आ विद्रोह सँ डरैत अछि।” सत्यव्रत ई सुनि थरथरा उठलाह।

किन्तु बच्चा सभ दबायल बातकें फेर उठएवाक विद्या सीखि रहल छल। ओ सभ तत्त्वचिन्तामणि नामक न्याय-पोथीक नाम खेलमे लेलक। एक बच्चा भीतर दौड़ि गेल आ साँस रोकि कहलक — “आँखिसँ देखल ज्ञान!” दोसर पकड़एवाक पहिने कहलक — “चिन्ह देखि बुझल बात!” तेसर बाहर भागैत कहलक — “शब्द!” चारिम नेनी कोंपल लग हाथ जोड़ि कहली — “स्मृति!” शिक्षक मुस्कुरा देलनि।

आरुणि चुप नहि रहि सकल। ओ पूछलक — “जे ठाम गवाहीक अछि, ओकर टिकट लागत?” अधिकारी उत्तर देलनि — “बन्दोबस्त बिनु संरक्षण नहि होइत।” मीरा कहली — “संरक्षण कि स्वामित्व?” देविका कहली — “सुविधा कि निगरानी?” सत्यव्रत मेहता किछु नहि कहलनि, मुदा हुनकर हाथ अपने-आप झोरामे राखल बही पर पड़ल। ओ बुझि गेलाह — दोसर संघर्ष आरम्भ भऽ चुकल अछि।

ओहि दिन साँझक बहीमे कोंपलक नाम लिखल गेल — “हरियर बिन्दु, पुत्र/पुत्री: कटायल चन्ना गाछी, अभिभावक: नाम-पहरा।” बच्चा सभ तकर नीचाँ लिखलक — “बाहरी निरीक्षणक समय पात काँपल।” ई मामूली टिप्पणी नहि छल। ई अगिला युगक पहिल चेतावनी छल।

रातिमे जखन सभ घर घुरल, ठूँठक लग एक कागच उड़ि आएल ।
ओ सरकारी मोहरबला नहि, परामर्शदाताक प्रारूप जेकाँ चिक्कन
छल । ऊपर मोट अक्षरमे लिखल छल — “गढ़ नारिकेल पुरखाक
धरोहर-गलियारा: आरम्भिक संकल्पना ।” कागच कोंपलक एकदम
लग अटक गेल ।

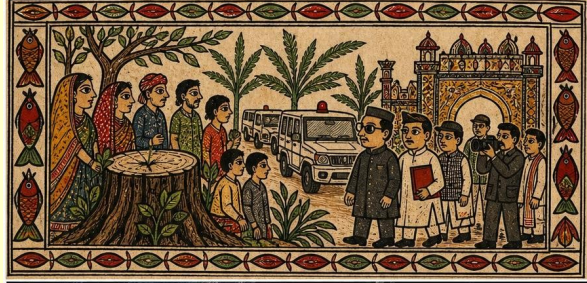
छोट लोकगीत

ललना रे, हरियर बिन्दुक सोहर हे,
सिरायल तेलक बातियो मे जीवनक लहर हे ।
तेल सिरा गेल तइयो बाती नान्ह जैरे,
कारी रातिक कागचपर हरियर बिन्दु उगै ।

अध्याय ६३

गढ़ नारिकेल विरासत-परियोजना

जाधरि नाम लाजक छल ताधरि कागजक गट्टर नुकायल रहल ।



टूँठमे हरियर बिन्दु फुटलाक तेसर दिन गाममे पहिल बेर सरकारी गाड़ी सभ बिनु लज्जाक आयल । पहिने जखन चन्ना गाछीक नाम सुनल जाइत छल, अधिकारी सभ कागजक गट्टरक पाछाँ मुँह नुका लैत छल । आब जखन टूँठ खुलल, धूप देखल गेल, लोकक भीड़ बढ़ल, बाहरी पत्रकार सभ दूर सँ सूँघए लागल, तखन वैह ठाम शासनक आँखिमे अचानक 'पुरखाक धरोहर' बनि उठल ।

आगाँ-आगाँ जिलाक सांस्कृतिक पदाधिकारी, पाछाँ नगरक सरकारी दफ्तरक लिपिक, तकर पाछाँ चित्र खिंचएबला, तकर

पाछाँ एक चमचम करैत जीपमे बैसल सलाहकार। सलाहकारक चश्मा एतेक कारी छल जे ओहिमे गाम नहि, केवल अपन चेहरा देखाइ पड़ैत छल। ओ उतरिते कहलक, “एहि ठाममे अपार सम्भावना अछि।” शब्द कोमल छल, मुदा आरुणिक कानमे कुल्हाड़िक दोसर चोट जेकाँ लागल।

बटुकनाथ हरिहरन ओहि टोलीमे सोझे नहि, किन्तु छाह जेकाँ उपस्थित छल। ओकर प्रस्तावित ‘लोक-स्मृति न्यास’क मसौदा आब सरकारी कागजक गट्टरमे घूमि चुकल छल। ओ स्वयं ओहि दिन नहि आयल, मुदा ओकर लोक आएल।

ओही बखत गंगेशक प्रश्न फेर उठल। पछिला दिन सभमे जखन टूँठक कात तत्त्वचिन्तामणि नामक न्याय-पोथीक रेखा सभक कथा भेल छल, बच्चा सभ बुझि गेल छल जे प्रमाण केवल मोहर नहि होइत। ईरा धीरे कहली, “गंगेश कहितथि — पहिने जानू, ई प्रमाण कोन प्रकारक अछि।

ओही घड़ी दूर पानि दिस सँ हलुक ‘कबड्डी-कबड्डी’क स्वर उठल। दिनक उजासमे भूतक कबड्डी सुनाइ पड़ब गामक लेल नव बात छल। एक लिपिक पूछलक, “ई की कार्यक्रमक रिहर्सल अछि?” आरुणि उत्तर देलक, “नहि।

सत्यव्रत मेहता सभाक किनार पर टाढ़ सभ सुनैत रहलाह। हुनका पदक अनुभव कहैत छल जे योजना केँ रोकबाक मार्ग कानूनमे अछि। हुनकर नव सुननाइ कहैत छल जे पहिने लोकक अर्थ स्पष्ट होअय।

रातिमे बूढ़वा भूत खुल्लमखुल्ला देखाइ पड़लाह। ओ टूँठक कगार पर बैसल छलाह, जनु कटान हुनका दिनमे बाहर निकलबाक अभ्यास करा देलक हो। ओ बच्चा सभकेँ देखलनि आ कहलाह, “पहिने लोक डर सँ अन्हारमे अबैत छल।

आधीराति नगरक सरकारी दफ्तरक एक लोक चुपचाप आयल। ओ आधिकारिक मोहर लऽ कऽ नहि, सीढ़ी आ गोंद लऽ कऽ आयल छल। ओ गाम सुतल बुझि टूँठ लग खम्भा गाड़लक आ ओकरा पर एक नव सूचना-पत्र चिपका देलक।

भोर होएतहि अनन्या ओ कागच देखली। ओ नामक बही खोलली, खाली पंक्ति पर लिखली — ‘आइ स्मृति पर ठेकाक बोली लगाओल गेल।’ फेर ओ टूँठक हरियर पात दिस देखली। जनु ओ कहि रहल हो — ‘आब लड़ाइ शुरू भेल।’

छोट लोकगीत

नाचू गे झिझिया, माथ पर दीप नाचू गे,
छेद-छेद जाँचि कऽ उजासक पहरा राखू गे ।
दीप जरै तँ केवल देखू नहि, रखवारी करू,
उजासक भीतर लोभ न पैसय, सावधानी धरू ।

अध्याय ६४ स्मृति पर निविदा

स्मृतिपर ठेकाक बोली खुजिते बुझू— आब शोको क ठेका उठत ।



गढ नारिकेल पुरखाक धरोहर-योजना घोषित भेने तीन दिनो नहि भेल छल कि तहसीलक देवाल, नगरक सरकारी दफ्तरक फाटक, बस-अड्डाक खम्भा, आ पुलक आधा-टूटल पायापर एकहि आकारक उज्जर कागच चिपकि गेल । ऊपर सरकारी मोहर, बीचमे मोट अक्षर — ‘स्मृति-संरक्षण, सौन्दर्यीकरण आ अनुभव-क्षेत्र निर्माणार्थ ठेकाक बोली आमन्त्रित’ । जकरा लोक चन्ना गाछीक टूँठ कहैत छल, कागच ओकरा ‘स्थल खण्ड-क’ लिखलक ।

ठेकाक बोलीक भाषा एतेक चिक्कन छल जे ओकर भीतरक दाँत पहिने दिन देखाइ नहि पड़ल । कागचक चिक्कन सतह आङुरमे

साबुन जेकाँ ससरैत छल — पकड़ऽ चाहू तँ शब्द हाथसँ फिसलि जाए। ओहि भाषामे शोक नहि, प्रावधान छल।

आरुणि कागच पढ़ैत-पढ़ैत चुप भऽ गेल। ओकरा पुलक ठेकाक पुरान कागजक गट्टर मोन पड़ल। तखनो शब्द एतेक सभ्य छल — सुरक्षा, मानक, अन्तर्राष्ट्रीय गुणवत्ता, श्रमिक-कल्याण, तृतीय-जाहि विषयपर विचार जाँच।

ईरा ओहि पीयर नोटिसक प्रतिलिपि लऽ कऽ चन्ना ठूँठ लग आयली। बच्चा सभ पहिने ओकर शीर्षक पढ़लक, फेर अनन्या पूछली — ‘ठेकाक बोली माने?’ देविका उत्तर देली — ‘जखन ककरो काज करबाक बदलामे पैसा देबाक हो, तखन सरकार बोली मँगबैत अछि।’ एक छोट लड़का तुरन्त पूछलक — ‘नाम पर बोली लागत?’ एहि प्रश्न पर सभ चुप। कारण प्रश्न बच्चा केने छल, मुदा उत्तर सभकें लाजबद्ध करैत छल।

अनन्या ओकरा आँखिमे देखली। ‘न्यासमे नामक परिवार रहत?’ बटुकनाथ हँसल — ‘प्रतिनिधित्व रहत।’ ‘बच्चा सभ?’ — ‘बाल-परामर्श समिति बनि सकैत अछि।’ ‘मीरा दीदीक अपन निजी बातक अधिकार-शपथ?’ — ‘नियमावलीमे विचार करब।’ ‘गंगेशक प्रश्न?’ बटुकनाथ एक क्षण अटकल। ओ बुझि नहि सकल जे ई नेनी गंगेश केँ एतय किएक आनलक।

हरिहरन कहलक — ‘बौद्धिक बात बहुत भऽ गेल। जमीन सरकारक अछि, योजना स्वीकृत अछि, फण्ड आवि गेल अछि। जँ अहाँ सभ अलग रहब, तँ अहाँक बात कागच पर नहि आएत।’ आरुणि शान्त स्वरमे पूछलक — ‘आ जँ हम सभ अहाँक न्यासमे आवि जाएब, तँ हमर बात रहत कि हमर नाम?’ हरिहरनक चेहरा कड़ा भेल।

साँझमे बच्चा सभ ठूँठक चारूकात कबड्डी खेललक। एहि बेर ‘कबड्डी-कबड्डी’ नहि, ओ सभ ‘प्रमाण-प्रमाण’ कहैत साँस रोकि दौड़ैत छल। जे पकड़ा जाए, ओकरा ठेकाक बोलीक एक पंक्तिक कारण बताबऽ पड़ैत।

आरुणि ओकरा हाथसँ कागच लऽ कऽ देखलक। चिन्ह स्पष्ट नहि, मुदा एक पुरान छाह उठल — एडवर्ड ब्रूम। जे लोक हार्वर्डमे नीति आ नीक-बेजायक समझ पर बजैत छल, से आव गढ़ नारिकेलक स्मृति पर परामर्श बेचय फिरैत छल।

अनन्या बहीमे रातिक अन्तिम वाक्य लिखली — ‘स्मृति पर
ठेकाक बोली आयल। बोली लगाबय बला एखन नाम नुकौने
अच्छि।’ फेर ओ पन्ना बन्द कऽ देली। पवनमे दूरसँ नदीक गन्ध
आयल।

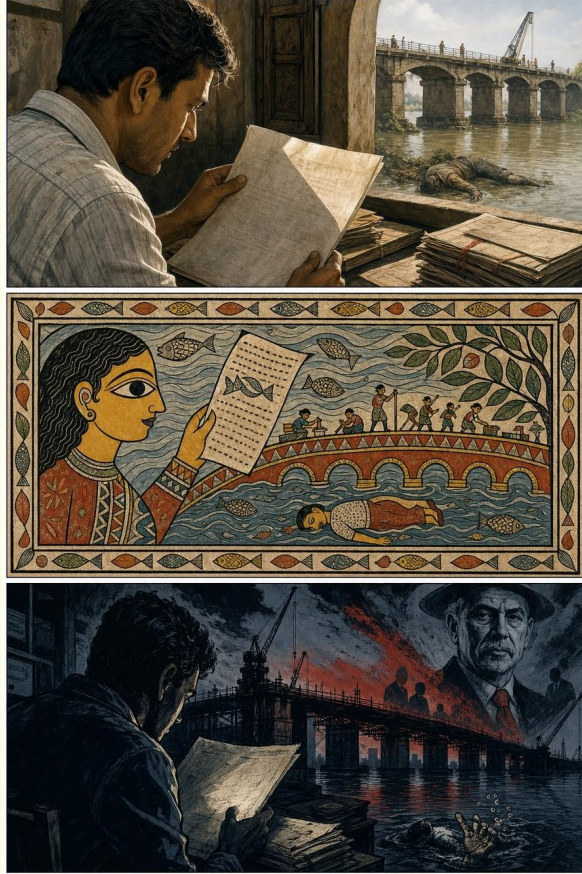
छोट लोकगीत

बढ़ाउ हे हाथ, शोकक घर मे बढ़ाउ हे,
फूलक संग अन्न-वस्त्र-न्याय पहुँचाउ हे।
शोकक नामपर ठेका नहि, सेवा हाथ बढ़ाउ,
फूलक संग सहायता, न्याय, उपचार पहुँचाउ।

अध्याय ६५

ब्रूमक पुनरागमन

लोभक गन्ध नव स्याहीसँ नहि, पुरान पुलक पानिसँ अबै छै।



स्मृति पर ठेकाक बोलीक कागच जहिना खुलल, तहिना ओकर भीतर सँ एक पुरान गन्ध उठल। ओ गन्ध कागचक नहि छल, ने नव स्याहीक, ने सरकारी धूलिक। ओ गन्ध छल ओही पुरान लोभक, जे नदीक पानिमे पुलक पाया लग नुकायल मृत मजदूरक देह पर पहिने-पहिने उतरि आयल छल।

कम्पनीक नाम आब ओहि पुरान नामसँ भिन्न छल। पहिल बेर जे नाम पुलक ठेका पर आयल छल, से नाम अंग्रेजी अक्षरमे छल आ ओकर पाछाँ एडवर्ड ब्रूमक चेहरा चमकैत छल। आब कागच

पर नाम देवनागरीमे अनुवादित छल — ‘नव-आरोग्य आधार प्रा. लि.’।

ईरा पत्र पढ़ैत-पढ़ैत हँसली नहि, मुदा हुनकर आँखिमे कटु उज्जास छल। ओ कहली, “देखू, जे देह डुबौलक, से आब डूबल देहक टिकट काटत।” देविका पत्रक दोसर पृष्ठ पर झुकली। ओतय लिखल छल जे केन्द्रमे आगन्तुक सभक लेल चल-चित्र, ध्वनि-स्थापना, आ ‘वैयक्तिक स्मृति लिखित हिसाब’ रहत, जतय लोक अपन प्रियजनक नाम, तस्वीर, स्वर, अन्तिम सन्देश आ कथा जमा कऽ सकत।

टूँठक चारू कात बैसल बच्चा सभकें ई भाषा सुनाओल गेल। अनन्या पहिल प्रश्न केली, “ओ सभ नाम माँगत? नाम लऽ कऽ की करत?” ककरो सहज उत्तर नहि भेटल।

सत्यव्रत मेहता ओतए उपस्थित छलाह। सभक नजरि अपने-आप हुनका दिस घुमि गेल, जनु ओ कानूनी उत्तर देताह। ई हुनकर दोसर मौन छल — भागबाक नहि, लोकक आवाजकें पहिने स्थान देबाक।

बटुकनाथ मुस्कुराबाक असफल कोशिश केलक। ओ कहलक, “एतेक सन्देश सँ काज कोना चलत? संसार प्रक्रिया सँ चलैत अछि।” अनन्या उत्तर देली, “न्यायो प्रक्रिया सँ चलैत अछि?”

एहि बीच चन्ना टूँठक पाछाँ सँ एक बालक लोटाक पानि आनि हरियर बिन्दु पर ढारलक। ओ ई काज रोज करैत छल, मुदा आइ सभक सोझाँ केलक। बटुकनाथ कहलक, “बेटा, ई आधिकारिक संरक्षित अवशेष बनत।

अनन्या ओ सन्देश देखली। ओ आकाश दिस ताकली, जतय चन्ना गाछीक कटानक बाद तारा सभ साफ देखाइ पड़ैत छल। ओ धीरे कहली, “जतए स्मृति पर ठेका लागत, ओतए शोधो लागत।

टूँठक हरियर बिन्दु ओहि राति कने आरो खुलल। ब्रूमक पत्र हवा सँ फड़फड़ाइत रहल, जनु दूर समुद्रक किनारसँ आयल कोनो पुरान गोहि फेर पानि सूँघि रहल हो। गढ़ नारिकेल चुप रहल, मुदा ओकर चुप्पीमे आब पहरा छल।

छोट लोकगीत

धरू हे नव पग, पुरान पुल पर धरू हे,
पसेना-गाद-इतिहासकें माथ नवाबि चलू हे।

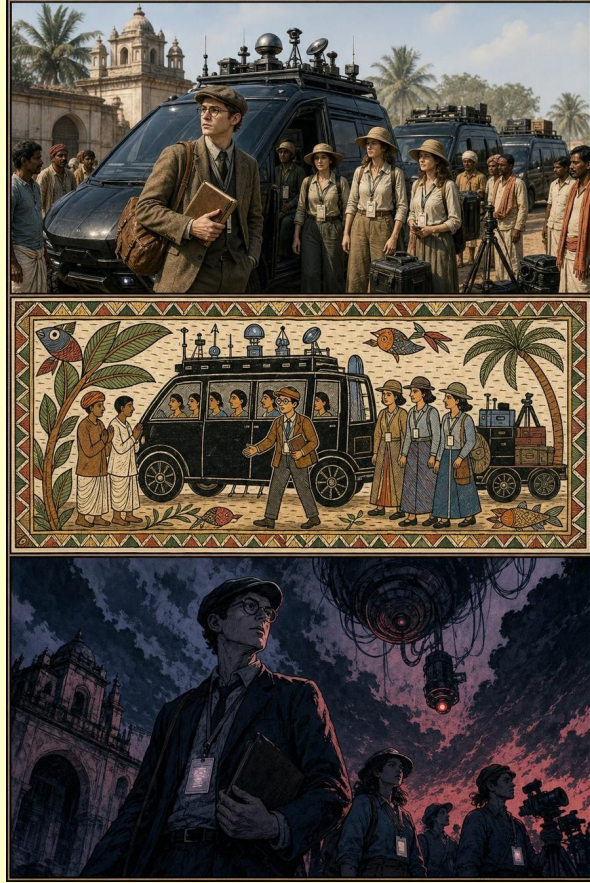
गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

पुरान पुलक गन्धमे पसीना, गाद, इतिहास,
ओहि पर नव पग धरू, सहेजि कऽ विश्वास ।

अध्याय ६६

हार्वर्डक शोध-दल

जे यंत्र गलामे लटका कऽ अबै छै, से आँखिसँ पहिने नापए लागै छै।



ब्रूमक पुनरागमनक तेसर दिन बिहान गढ़ नारिकेलमे एकटा विचित्र गाड़ी आयल। ओकर काँच कारी छल, ऊपर छोट-छोट यन्त्र लागल छल, भीतर बैसल लोक सभक गला पर चिन्हारि-पत्र चमकैत छल। गाड़ी नगरक सरकारी दफ्तरक नव बनैत मार्ग सँ ट्रूट लग पहुँचि रुकल।

पहिने एक युवक उतरल। ओकर माथ पर टोपी, आँखि पर गोल चश्मा, हाथमे मोट बही। ओ अपन परिचय देलक — हार्वर्ड बड़का पढ़ाई संस्थानक शोधार्थी।

शोध-दल पर मौन उतरि गेल। ईरा धीरे-धीरे बात खोलली।
“एतए गंगेश पुस्तकक नाम नहि, प्रश्नक नाम अछि।

एक शोधार्थी तुरन्त पूछलक — “एहि कथाक लिखित स्रोत?” ओकर स्वर विनम्र छल, मुदा विनम्रताक भीतर बहीक भूख छल। अनन्या टूँठक जड़ि पर हाथ रखि उत्तर देली — “स्रोत एतए साँस लैत अछि। लिखित स्रोत चाही तँ भेटत।

हार्वर्डक विदुषी धीरे अंग्रेजीमे कहली जे ओ सभ जाति आ न्याय पर अध्ययन करैत छथि। मीरा, जे एखन धरि दूर बैसल छली, कने आगाँ सरकली। ओ कहली, “अध्ययन करब नीक।

टूँठ सँ पुल धरि, पुल सँ पोखरि धरि, पोखरि सँ ओहि घर धरि जतए एक मजदूरक विधवा रहैत छलीह, जिनकर पति कागचमे ‘अनुपस्थित’ लिखल गेल छलाह। शोधार्थी सभ घामे तर भेल, पैट पर माटि लगल, जूता पानिमे धँसल। ईरा कहली, “अकादमिक दूरी जँ माटि सँ बाँचि जाए, तँ ओ न्याय नहि देत।” विदुषी एहि वाक्य केँ लिखए चाहली, फेर अनन्या दिस ताकली।

ओहि राति टूँठक चारू कात नाम-पाठक बाद गंगेशक नाम फेर उच्चरित भेल। ‘गंगेश उपाध्याय — उपस्थित।’ लोक उत्तर देलक। बच्चा सभक स्वरमे कुतूहल छल, विद्रोह छल, आ ज्ञानक ओ आगि छल जे जातिक देवाल पर पहिल दरार बनबैत अछि।

शोध-दल जाय लेल उठल, मुदा मीरा हुनका सभकेँ अगिला दिनक नियम सुनौली। “काल्हि जँ अहाँ सभ छवि लेबय चाहैत छी, तँ पहिने दृष्टिक अधिकार पर बात होएत। के देखने, के देखाओल, के नुकाओल, के बेचल — ई सभ स्पष्ट करब।

चल-चित्र बनौनिहारक हाथमे यन्त्र छल, मुदा ओकर लेंस पर चन्ना गाछीक धूलि जमि गेल छल। ओ साफ करए बढल, तखन धूलिक बीच ओकरा अपन चेहरा नहि, एक गोहिक आँखि देखाइ देलक। ओ यन्त्र नीचाँ कऽ देलक।

छोट लोकगीत

पोछू हे लेंस, पहिने मोनक लेंस पोछू हे,
देखबा सँ पहिने मानुखक मोन जोहू हे।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

लेंस साफ करू पहिने, फेर मानुखकें देखू,
चेहरा वस्तु नहि, मञ्जूरी लऽ कथा लेखू।

अध्याय ६७

मीरा आ दृष्टिक अधिकार

देखबाक सेहो अधिकार होइ छै— आ जकरा देखल जाए, तकर मञ्जूरी सभसँ पहिल कागज।



हार्वर्डक शोध-दल जखन दोसर दिन फेर चन्ना टूँठ लग पहुँचल, तखन ओ सभ पहिने जेकाँ नोटबुक खोलि नहि बैसल। एहि बेर हुनका सभक गला सँ लटकैत चित्र-यन्त्र, काँध पर झूलैत चमकदार थैला, आ आँखिमे एकटा विचित्र उतावलापन छल। उतावलापन ज्ञानक नहि, संग्रहक छल।

ईरा पहिने सँ ओतहि ठाढ़ छली। हुनकर हाथमे स्मृतिक नक्शा छल, मुदा नक्शा मुडायल। ओ बुझि गेल छली जे जे लोक पृथ्वी

पर अवैत अछि, ओ सभ पहिने आकाशक भाषा बजैत अछि —
'अध्ययन', 'सहभागिता', 'दस्तावेज', 'विश्व-मंच'।

गंगेशक प्रश्न पछिला दिन सँ हवामे तैरि रहल छल — प्रमाण
की? आँखिसँ देखल ज्ञान की? चिन्ह देखि बुझल बात की?

तहिये एक वृद्ध चर्मकार आएलाह। हुनकर नाम जगदीश राम
छल। ओ सामान्यतया पाछाँ बैसैत, कम बजैत।

मीरा उत्तर नहि देली। ओ प्रश्न केँ बच्चा सभक बीच रखि देली।
अनन्या कहली, 'जँ न्याय शास्त्र बनल, तँ जीवनक अपमान
किएक छोडल गेल?

अनन्या धीमे स्वरमे कबड्डी शुरू केली — 'कबड्डी-कबड्डी... दृष्टि-
दृष्टि... नाम-नाम...' बच्चा सभ खेलमे नहि उतरल। बस साँसक
लय पकडलक। मीरा बुझली जे खेल बन्द नहि भेल।

पहिल बेर विदेशी शोध-दलकेँ गामक भाषा पर भरोस करबाक
पड़ल। ईरा नक्शा खोलि हुनका देखेली — चन्ना टूँठ, नाम-
पाथर, गंगेशक प्रश्न, जगदीश रामक लेख, मीरा कलाईक डोरी
— सभ एकहि रेखामे जुड़ि गेल। ईरा कहली, 'एहि नक्शामे
नदीक धारा जेकाँ दृष्टिक धारा सेहो अछि।

देविका कागच पढ़ि काँपि उठली। मीरा ओहि कागच केँ हाथमे
लऽ कहली, 'आइ हम शोध-दलक दृष्टि रोकलहुँ। काल्ह यादक
चिन्ह-मोबाइल साधन लोकक घरमे पैसत।' अनन्या बहीमे
अगिला शीर्ष लिखली — 'नामक चोरीक पहिल दरबाजा।'।

टूँठक हरियर बिन्दु रातिमे धुँधला चमकल। जेना गाछि कहि रहल
हो — दृष्टिक पहरा लगि गेल, मुदा स्मृतिक बजार एखन जागल
अछि।

छोट लोकगीत

पूछू हे पहिने, 'हम तैयार छी?'—पूछू हे,
'हाँ'क मान, 'नहि'क मान—दुनू सीखि बूझू हे।
हमरा देखबा सँ पहिने पूछू—हम तैयार छी?
हमर देह, हमर कथा, हमर निर्णय हमर छी।

अध्याय ६८

देविका बनाम श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग

मरल लोकक नामपर बटन दबौनिहार जीवित लोकक जेब टटोलै छै।



नाम-उत्सवक बाद गढ नारिकेलमे जे शान्ति उतरबाक चाही छल, से शान्ति नहि उतरि सकल। ओहि ठाम जतय बच्चा सभ नाम पढैत छल, जतय टूँठक हरियर बिन्दु धूप सँ आँखि मिचमिचबैत छल, जतय मीरा चेहराक गरिमा आ दृष्टिक अधिकार पर पहरा दैत छली, ओहि ठाम राति पड़लापर फोनक पर्दाक उजास फेर सरकैत आबि रहल छल। चन्ना गाछीक कटल देहक चारू कात पाथरक नाम छल, मुदा पाथरक ऊपर-ऊपर आब छोट-छोट चमकीला चिन्ह चिपकाएबाक प्रस्ताव उठल।

देविका एहि प्रस्तावकेँ पहिल बेर सुनली तखन ओकर कानमे उज्ज्वलक मायक धीमा स्वर घुमि गेल — “नामकेँ जल्दी नहि चाही।” मुदा आदरक स्मरण-मोबाइल साधनक विज्ञापनक पहिल पंक्ति छल — “एक स्पर्शमे श्रद्धा।” देविका एतबे पढ़िते काँपि उठली। श्रद्धा जँ एक स्पर्शमे भऽ जाए, तखन शोकक लम्बाइ, प्रतीक्षाक ताप, नाम पुकारबाक थरथरी, आ मौनक गवाही सभ कतय जाएत?

अनन्या आ बच्चा सभकेँ देविका ई देखेली। बच्चा सभ फोनक पर्दाक छोट अक्षर नहि, ओकर व्यवहार देखलक। एक बालक पूछलक — “ई कहैत अछि जे पूरा नाम चाही।

ओहि राति देविका चन्द्रपालकेँ खोजय गेली। ओ चन्ना गाछीक ढूँठ लग नहि, बजारक पाछाँ नव दफ्तरमे बैसल छल। बाहर बोर्ड पर लिखल छल — “सांस्कृतिक स्मृति सहयोग केन्द्र।” भीतर शीशाक मेज, सुगन्धित धूप, कम्प्यूटरक उजास, आ देवाल पर चन्ना गाछीक कलात्मक छवि।

देविका शान्त स्वरमे पूछली — “जकर नाम नहि भेटल, तकरा तोहर मोबाइल साधन किएक नहि मानलक?” चन्द्रपाल थोड़े काल चुप रहल, फेर कहलक — “बन्दोबस्त केँ आँकड़ा चाही। आँकड़ा बिनु बही नहि बनत। दानकर्ता पूर्णता चाहैत अछि।” देविका कहली — “चन्ना गाछी अधूरा नामकेँ पहिल ठाम देलक।

ओ बाहर आवि कहली — “उज्ज्वलक नाम हटाउ।” चन्द्रपाल कहलक — “नाम सार्वजनिक भऽ चुकल। स्मृति सामूहिक अछि।” देविका कहली — “सामूहिक स्मृति आ बजारू कब्जा अलग बात अछि। उज्ज्वलक मायक मज्जुरी बिनु ओकर नामक आँसू बेचब नहि।” चन्द्रपाल उत्तर देलक — “कानून एना नहि कहैत।” देविका धीमे कहली — “कानून जँ एखन एना नहि कहैत, तँ नामक चौपाल कहत।

मीरा एहि नियमक पाछाँ अपन डोरी बाँधली। “दृष्टिक अधिकार बिनु स्मृति अपमान बनैत अछि,” ओ कहली। “जँ कोनो चित्र खींचयवला यन्त्र, कोनो मोबाइल साधन, कोनो दान-पत्र, कोनो शोध, कोनो यादक चिन्ह ककरो दुखकेँ ओकर मज्जुरी बिनु छूड़त अछि, तँ से चन्ना गाछीमे प्रवेश नहि पाओत।” बूढ़बा भूतक हलुक हँसी सुनाइ पड़ल।

भोर होइत बच्चा सभ पाथर गिनए गेल। सभ पाथर ओतहि छल, मुदा तीन पाथरक अक्षर धुँधला पड़ि गेल छल। जनु रातिमे केओ नोक सँ कुरेदि गेल हो।

ओ पहिल पन्नापर लिखली — “आइ सँ नामक चोरी शुरू भेल।” देविका टूँठ दिस तकली। हरियर बिन्दु एखनहुँ छल, मुदा ओकर चारू कात माटि कने खुरचल बुझाइत छल। स्मृतिक पहरा आब केवल भावनाक काज नहि रहल।

छोट लोकगीत

रुकू हो नेना, बटन सँ पहिने रुकू हो,
एक साँस, एक प्रश्न—तखने आगाँ झुकू हो।
बटन दबाबै हाथ तखन पहिने मोन टटोलू,
ककर नाम, ककर धन, ककर मान—साफ-साफ बोलू।

अध्याय ६९ नामक चोरी

फोनक पर्दापर पकड़ायल चोरी, चोरीक उजरा भाग टा थीक।



आदरक स्मरण-मोबाइल साधनक झूठ जखन देविका सभक सोझाँ खोलली, तखन लोक सोचलक जे असली चोरी पकड़ायल गेल। मुदा चन्ना गाछीक टूँठ जानैत छल जे फोनक पर्दा पर पकड़ा गेल चोरी तँ चोरीक केवल उज्जर पृष्ठ अछि। असली चोरी ओ अछि जे चुपचाप स्मृतिसँ नाम हटबैत अछि, ताकि अगिला पीढ़ी पूछिते नहि जे ककर देह डूबल, ककर श्रम चिबायल, ककर आवाज बन्द कएल गेल।

नाम-उत्सवक दोसर सप्ताहमे अनन्या बही खोलली तँ ओकरा पहिल खाली जगह देखाइ पड़ल। जे पन्ना पर काल्हि 'सरयू

मण्डल' लिखल छल, ओहि ठाम स्याहीक हलुक धब्बा रहल। धब्बा ओहिना छल जेना कियो भीजल अँगूठासँ नामकें सहला कऽ मेटा देने हो।

एहि पर अनन्या कैं गंगेशक प्रश्न मोन आयल। ओ धीमे बाजली, 'प्रमाण की? जे स्मृतिमे अछि, से?

बच्चा सभ ओकरा घेरि लेलक। अनन्या पूछली, 'जकर नाम मेटल, ओकरा अहाँ पहिने पढ़ब?' बटुकनाथ मुस्कुरेलक, 'प्रमाण हो तँ पढ़ब।' अनन्या फेर पूछली, 'जँ प्रमाण अहाँक कागचमे नहि, मुदा हमर बूढ़क कण्ठमे हो?' बटुकनाथक मुस्की कने कठोर भेल। 'भावना आ प्रमाण अलग बात छी।'।

तखन आरुणि बाजल, 'भावना नहि, जीवन-साक्ष्य।' ई शब्द सुनिते ठूँठक भीतर सँ हलुक खड़क उठल। जनु सूखल जड़ि सहमत हो। बटुकनाथ कागच पलटलक।

गंगेशक छाह ओहि समय ठूँठक पाछाँ गाढ़ भेल। केओ ओकरा आँखिसँ देखल ज्ञान नहि देखलक। मुदा बच्चा सभक कानमे एक प्रश्न बाजल — 'सामान्य, विशेष, सम्बन्ध, नहि होएब — नाम कतऽ अछि?' अनन्या बहीमे लिखली — 'जे अनुपस्थित कहल गेल, ओकर अनुपस्थिति सेहो प्रमाण भऽ सकैत अछि, जँ ओकर नहि होएब कियो बनौलक हो।' सत्यव्रत मेहता पहिल बेर माथ उठौलनि।

चन्द्रपाल बत्ता दूर फोन पर ई दृश्य देखैत छल। ओकर मोबाइल साधनमे एक चेतावनी चमकल — 'अमान्य नाम पुनर्सक्रिय।' ओ घबरा गेल। ओकरा लग नाम केवल प्रविष्टि छल।

ओहि राति बही बन्द नहि भेल। अनन्या अन्तिम पंक्ति लिखली — 'मेटल नाम पानिमे उतरि गेल अछि। काल्ह पोखरि सुनल जाएत।' पीयर लिफाफा, न्यासक प्रारूप, मोबाइल साधनक फोनक पर्दा, सभ एक कात रहल।

अध्याय ओतय थमल, जतय नामक चोरी पानिक गवाहीमे बदलए लागल। अगिला बिहान गढ़ नारिकेलक लोक पोखरिक कात जमा होएत, आ पनिडुब्बी पहिल बेर साफ आवाजमे बजतीह — 'जे नाम पानिमे डूबल, ओकरा कागचसँ नहि मेटाओल जा सकैत।'।

छोट लोकगीत

भरू गे बहिना, बैल संग नाम भरू गे,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

पनिघटक लहरि-लहरि मे कमल धरू गे ।
मिटल नाम पानिमे फेर कमल बनि उगै,
धार जते बहै, जड़ि स्मृतिक भीतर रहै ।

अध्याय ७०

पनिडुब्बीक गवाही

जे ऊपरसँ नहि देखाइ छै, से पनिडुब्बीक झोंटामे बान्हल रहै छै।



बूढ़बाक ओ वचन—“मेटल नाम पानि राखि लेत”—आ अनन्याक लिखल संकल्प “काल्हि पोखरि सुनब” राति भरि गामक करेजमे धुकधुकाइत रहल। नामक चोरीक राति गढ नारिकेलमे कियो नीकसँ सुतल नहि। बहीक पन्ना तँ बचल छल, पाथर सभ सेहो टूँठक चारू कात पड़ल छल, मुदा किछु नामक ऊपर जनु धुँआ लगि गेल छल।

अनन्या बिहानहि टूँठक लग पहुँचि गेली। ओ बही खोलली, पन्ना पर हाथ फेरली, आ देखली जे जे नाम गायब बुझाइ रहल छल,

ओकर स्थान पर पानिक सूक्ष्म दाग पड़ल अछि। पानि राति कतऽ सँ आयल?

पोखरिक कछार पर मीरा पहिने नियम पढ़ली—ककरो चेहरा बलजोरी नहि देखाओल जाएत, ककरो रोदन चित्रित नहि होएत, ककरो दुखक व्यापार नहि बनत। देविका जोड़ली—जे नाम पढ़ल जाएत, ओकर परिवार चाहे तँ बोलत, नहि तँ पानि स्वयं उत्तर देत। सत्यव्रत मेहता पाछाँ बैसल रहलाह, अपन स्याहीकलम खोललनि नहि।

मीरा पूछली—“जे नामक संग देहक अपमान जुड़ल, आ परिवार नहि चाहैत जे ओ सार्वजनिक हो?” पनिडुब्बी उत्तर देलीह—“नामक रक्षा करब, दुखक प्रदर्शनी नहि। पानि चेहरा देखबैत अछि, मुदा मञ्जूरी बिनु छवि किनार पर नहि लाबैत।” एहि उत्तर पर मीरा दीर्घ साँस लेली। अपन निजी बातक अधिकारक शपथ आव नदीक नियम बनि गेल छल।

तखन एक विचित्र घटना भेल। चन्द्रपाल बच्चाक आदरक स्मरण-फोन साधनमे जे नकली दान-पृष्ठ बनाओल गेल छल, ओकर छवि गोपक फोनमे अपने खुलि गेल। गोप चौकलाह, मुदा तुरन्त फोन पानिक दिशामे झुका देलाह।

राति गाढ़ भेल तखन पनिडुब्बीक स्वर अन्तिम बेर उठल—“नाम कै केवल बचाउ नहि, ओकर खेल सेहो बचाउ। जे नाम खेल छोड़ि देत, ओ यादक चिन्ह बनि जायत। जे नाम कबड्डी खेलत, ओ साँस बनि रहत।” एहि वाक्य पर बच्चा सभ एकाएक चौकन्ना भेल।

बूढ़बा भूत नरकटसँ बाहर आवि एक क्षण लेल साफ देखेलाह। ओ धीमे कहलनि—“जतए साँस रोकल जाए आ नाम पुकारल जाए, ओतए गवाही जीवित रहैत अछि। कबड्डी बन्द भेल तँ नामक पहरा बूढ़ भऽ जायत।” ई कहि ओ फेर धुँआ भऽ गेलाह।

अगिला बिहान गामक देवाल पर नव पोस्टर चिपकल भेटल—“चन्ना गाछी भूत-कबड्डी महोत्सव: अद्भुत लोक-अनुभव, प्रकाश, ध्वनि, अभिनय, पनिडुब्बी दृश्य।” पोस्टरक नीचाँ छोट अक्षरमे कम्पनीक नाम छल, आ ओकर पाछाँ चन्द्रपालक लोकक गन्ध। अनन्या पोस्टर पढ़ि चुप रहली। पोस्टरक ताजा लेइक गन्ध अखनो हवामे छल—शहरक गन्ध, जे गामक भोरक सोन्हपर चढ़ि जाय चाहैत छल।

एहि तरहँ पनिडुब्बीक गवाही समाप्त नहि भेल। ओ उनटे अगिला खतरा खोलि गेल—जे स्मृति पानि सँ बचल, ओकरा बाजार आब अभिनय बनावय चाहैत छल। आ चन्ना गाछीक कबड्डी, जे साँसक सत्य छल, आब नकली भूतक जुलूसमे बदलएबाक तैयारीमे छल।

छोट लोकगीत

छोडाबू गे सखी, ओझरायल नाम छोडाबू गे,
नेहक तेल, धीरक कंघी—दुनू संग लगाबू गे।
पनिडुब्बीक झौटामे जे नाम ओझरायल,
सखी सभ कंघी लऽ कऽ धीरे-धीरे छुडायल।

अध्याय ७१

नकली भूतक जुलूस

नकली भूतक जुलूसमे धुँआ किरायापर अबै छै, आ असली गाछी
हँसि दै छै।



पोस्टरक ओ ताजा लेडक गन्ध एखन सुखाइयो नहि सकल छल
कि महोत्सवक तैयारी गाम धरि पहुँचि गेल। पनिडुब्बीक गवाहीक
दोसर दिन गढ नारिकेलमे एकटा नव गाडी आयल। गाडीक देह
पर चमचम करैत अक्षरमे लिखल छल—“चन्ना गाछी रात्रि-
अनुभवः भूत-कबड्डी जुलूस।” अक्षरक नीचाँ धुँआ उठैत चित्र
छल, आधा पारदर्शी मनुख, पाछाँ कटल टूट, आगाँ दीप, आ
कोनामे छोट वाक्य—“भय, पुरखाक धरोहर आ मनोरंजनक

अद्वितीय संगम।” जे बात एतय लोकक मुँहमे काँपैत नाम बनि उठैत छल, से बाहरक लोकक विज्ञापनमे “अनुभव” बनि गेल।

गाड़ी सँ पहिने उतरल एक युवक, गलामे चिन्हारि-पत्र, हाथमे कागचक मोड़। ओ नगरक सरकारी दफ्तरक मञ्जूरी-पत्र देखबैत कहलक, “एहि कार्यक्रमसँ स्थानीय रोजगार बढ़त, पर्यटन बढ़त, स्मृतिक प्रचार होएत।” ओकर पाछाँ मेकअपक बक्सा, बनाओटी धुँआक डिब्बा, ढोलक, इजोत, कारी-उज्जर कपड़ा, आ पाँच गोट कलाकार उतरल। कलाकार सभमे दू गोट गामक बेरोजगार युवक छल, एक नाटक-दल सँ आयल, एक शहरक नाच-शिक्षक, आ एक बालक जे कखनो चन्ना गाछी रातिमे देखनो नहि छल।

अनन्या दूर सँ देखैत रहली। ईरा पूछली, “रोकी?” अनन्या माथ हिलौली—“पहिने देखब। जे नकली अछि, ओकरो अपन प्रमाण देबए पड़त।” गंगेशक प्रश्न पछिला अध्याय सँ बच्चा सभक बोलीमे बसि गेल छल।

साँझ उतरिते टिकट-जेकाँ पर्ची बाँटल गेल। जे लोक भीतर बैसत, से ‘विशेष अनुभव’ पाओत। गामक किछु युवक लोभेँ भीतर चलि गेल।

देविका आयोजकसँ कहली, “आब एहि कार्यक्रमक पैसा जकरा सभसँ लेल गेल, ओ घुरा दियौ।” आयोजक कहलक, “मञ्जूरी, कर, खर्च—” मीरा काटि देली, “मृतकक भय बेचबाक कर कोन खातामे जमा होइत अछि?” लोकक आँखि ओकरा दिशामे उठल। आयोजक पहिल बेर बुझलक जे भीड़ ग्राहक नहि, गामक लोक बनि गेल अछि। ओ बिनु बहस पर्चीबला डिब्बा खोललक।

मुदा कथा एतय समाप्त नहि भेल। राति गहरायलाक बाद कलाकार सभ टूँठक चारू कात बैसल रहल। हुनका सभकेँ कियो नहि भगौलक।

चन्द्रपालक आदरक स्मरण-फोन साधनमे एहि रातिक तस्वीर अपलोड करबाक प्रयास भेल। चित्र खुलैत छल, मुदा कलाकारक चेहरा धुँधला आ पाथरक नाम साफ देखाइत। राघव संकेतक गुप्त संकेतमे एहि घटनाकेँ ‘भावनात्मक जोखिम’ कहल गेल।

मध्यरातिक बाद, जखन सभ थाकि गेल, टूँठक भीतर सँ एक क्षीण आवाज उठल। से रोदन नहि छल, न हवा, न पातक खरखर। पहिने तँ सभकेँ भ्रम भेल।

कियो कहलक—“गाछि हँसल?” वा उत्तर देलीह—“हँ, जखन स्मृति बिकए लागैत अछि आ फेरो बचि जाइत अछि, तखन गाछि हँसैत अछि।” बच्चा सभ चौंकल नहि। ओ सभ अगिला पन्ना खोललक। शीर्ष पर लिखलक—“चन्ना गाछीक हँसी।”।

छोट लोकगीत

चिन्हू हो संगी, असल भूतकँ चिन्हू हो,
भाडाक नाचक पाछाँ के छै—ई गिनू हो।
भाडाक भूत नाचि सकै, धुँआ खूब पसारै,
असल भय तखने भागै जखन बुद्धि दीप जाँरै।

अध्याय ७२ चन्ना गाछीक हँसी

टूँठक हँसी खोखलक नहि— बचल जड़िक आवाज थीक।



बच्चा सभक बहीक नब पन्ना पर लिखल शीर्ष—“चन्ना गाछीक हँसी”—भोर होइत-होइत अपन कथा अपने कहए लागल। नकली भूतक जुलूस टूटलाक बाद जे हँसी उठल छल, से एक रातिक घटना भरि नहि रहल। भोर धरि ओ हँसी टूँठक भीतरी कोटरमे फँसल हवा जेकाँ गूँजैत रहल।

सूर्योदयक पहिल प्रकाशमे बच्चा सभ पाथर देखए आएल। किछु नामक अक्षर गाढ़ भऽ गेल छल, किछु अधूरा नामक पास नव बिन्दु उगि आयल छल। अनन्या अपन उँगुरी सँ एक बिन्दु छुली।

गंगेशक प्रश्न एहि बेर फेर घुरल। अनन्या बच्चा सभसँ पूछली —“हँसीक प्रमाण कोन?” एक बालक कहलक—“आँखिसँ देखल ज्ञान, कारण हम सुनलहुँ।” दोसर कहलक—“चिन्ह देखि बुझल बात, कारण पाथरक अक्षर बदलल।” तेसर—“शब्द, कारण बा कहलखिन।” चारिम नेनी, जे सदखन कम बोलैत छल, कहली —“दुःख जखन बिकए सँ इनकार करै, ओहि क्षण जे आवाज उठै, से न्यायक प्रमाण।” सभ चुप भऽ गेल। कोनो शास्त्रमे ई परिभाषा नहिये छल, मुदा ठूँठक चारूकात ई मान्य भेल।

एडवर्ड ब्रूमक दलक रिपोर्टमे चन्ना गाछीक हँसीकेँ ‘स्थानीय विरोधक ध्वनिक चिन्ह’ कहल गेल। ब्रूमक सलाहकार कहलक —“एकरा सकारात्मक रूपमे उपयोग कएल जा सकैत अछि: सामुदायिक उपचार, स्मृति-पर्यटन, ध्वनि-स्थापना।” ब्रूम खिड़की लग ठाढ़ रहि सुनैत छल। ओकरा लागल, दूर कतहु सँ कियो हँसल।

दुपहरिया धरि बाहरक पत्रकार आयल। कियो पूछलक—“की गाछि सचमुच हँसैत अछि?” अनन्या उत्तर देली—“अहाँकेँ सचमुच चाही कि तमाशा?” पत्रकार मुस्कुरायल, मुदा प्रश्न ओकर नाक पर अटकल गेल। ओ चित्र खींचयवला यन्त्र नीचाँ कऽ देलक।

ओकर मन कहलक—हँसीकेँ विधिक रूप दिअ, समिति बनाउ, न्यासी बनाउ, सचिव बनाउ, हस्ताक्षर लिअ, धनक मार्ग बनाउ। मुदा दोसर आवाज पूछलक—“न्याय जानैत छी?” ई वैह प्रश्न छल जे बच्चा सभ गंगेशक नाम पर ओकरा सँ पूछने छल। बटुकनाथ मेज पर हाथ मारि उठल।

भूतक एक पुरान खेलाडी, जे बरखौं सँ केवल अन्हारमे देखाइत छल, ओहि राति चन्द्रमाक उजासमे अर्धदृश्य भेल। ओकर देह धुँआ नहि, नदीक कुहास जेकाँ छल। ओ बच्चा सभकेँ खेल सिखबैत कहलक—“कबड्डीमे साँस रोकल जाइत अछि, मुदा स्मृतिमे साँस बाँटल जाइत अछि।

तखन एक आवाज आयल—“बटुकनाथ हरिहरन, अहाँक न्यासक पहिल सुनवाई भीतरमे होएत।” ओ चौंकि उठए चाहलक, मुदा स्वप्नमे ओकर देह कुर्सी पर बन्हायल। दूर कतहु बच्चा सभक स्वर उठल—“आँखिसँ देखल ज्ञान?” ठूँठ उत्तर देलक—“लोभ।” “चिन्ह देखि बुझल बात?”—“विलम्ब।” “शब्द?”—“न्याय।” “सत्य?”—हँसी।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

आ एहि हँसीक घेरामे बटुकनाथक स्वप्न-दरबार खुलल ।

छोट लोकगीत

हरियर हे हरियर, टूँटो हरियर हेतै हे,
हँसैत जड़िक भरोसे कोंपल फेर भेटतै हे ।
टूँठ हँसल भीतरसँ—जड़ि एखन जीवित,
पहिल वर्षा पड़िते कोंपल होएत उपस्थित ।

अध्याय ७३

बटुकनाथक स्वप्न-दरबार

जकरा जीवन भरि उपहास बुझलक, स्वप्नमे वैह दरबार लगा कऽ
बैस जाइ छै।



हँसीक ओ घेरा, जे स्वप्न-दरबारक देहरी छल, साँझहिसँ
बटुकनाथक पाछाँ लागि गेल छल। चन्ना गाछीक हँसी राति भरि
बटुकनाथ हरिहरनक कानमे बजैत रहल। ओ हँसी कखनो गाछीक
टूँठसँ उठैत, कखनो अदालतक गलियारा सँ, कखनो ओकर घरक
लोहाक आलमारी भीतर सँ।

ओ सोचलक—ई सभ अंधविश्वास अछि। गामक लोककें किछु
कागच, किछु न्यास, किछु सभासद, किछु दानक रसीद देल जाय,

तखन सभ शान्त भऽ जाएत। लोक-स्मृतिकें विधिक आकार देब, ओकर अध्यक्ष स्वयं बनब, मृतकक नामक संरक्षणक नाम पर कोष खोलब, आ जे चन्ना गाछी बेढब ढंगें लोकक हाथमे चलि रहल अछि, तकरा नियमक रज्जुसँ बाँधि लेब।

तखन स्वप्नमे दू छाह आयल—रमानाथ झा आ उदयचन्द्र झा 'अशोक'क नामक छाह। ओ सभ शरीरधारी दोषारोपण रूपमे नहि, स्मृतिक कठोर संपादक जेकाँ आयल—हाथमे कलम, पाछाँ प्रतिष्ठाक परदा। ओ सभ गंगेशक असुविधाजनक जीवन-रेखा पर रेखा खिंचऽ लागल: विवाहक प्रसंग काटू, जातिक चोट नरम करू, चर्मकारणी शब्द हटाउ, नव्य न्यायक प्रतिमा राखू, जीवनक विद्रोह दबाउ।

गंगेश पूछलनि, 'प्रमाण चाहैत छी?' बटुकनाथ राहत अनुभव केलक। प्रमाणक भाषा ओकर घर छल। ओ कहलक, 'हँ, बिनु प्रमाण न्याय नहि।' तखन दरबारक फर्श खुलल।

गंगेश फेर कहलनि, 'शब्द-प्रमाण सुनू।' तखन चन्ना गाछीक टूँठ, पनिडुब्बी, नकली भूतक रोदन, नाम-पहरा बच्चा, मीरा, देविका, गोप, आरुणि, बा, आ सत्यव्रत मेहताक मौन—सभक आवाज एक-एक कऽ उठल। ओ सभ कानूनक धारा नहि पढ़ि रहल छल, केवल कहि रहल छल—'हम उपस्थित छी।' बटुकनाथक माथ झुकि गेल।

दरबारमे एक बालिका आयल—अनन्या नहि, कदाचित ओकर छाह। ओ हाथमे नामक पाथर लऽ कऽ पूछली, 'हरिहरन जी, अहाँ न्यास बनए चाहैत छी। एहि न्यासमे गंगेशक चर्मकारणी पत्नीकेँ ठाम देब?' बटुकनाथ उत्तर नहि देलक।

तखन दरबारक छत पर कबड्डीक रेखा चमकल। भूत सभ भीतर घुसल नहि। ओ सभ सीमा पर ठाढ़ रहल।

ओहि दिन बटुकनाथ चन्ना गाछी नहि गेल। ओ अपन कमरामे बैसल रहल, आ पहिल बेर अपन कार्यालयक आलमारी खोललक। भीतर पुरान मुकदमाक कागजक गट्टर, शुल्कक रसीद, स्थगनक नोट, आ लोकक पत्र छल।

राति जखन फेर चन्ना गाछीक टूँठ हँसल, एहि बेर हँसी बटुकनाथक घर पर नहि रुकल। ओ हँसी तारक अदृश्य डोरी पर चढ़ि चन्द्रपाल बन्नाक फोनक पर्दामे घुसि गेल।

छोट लोकगीत

लागू हे दरबार, स्वप्नक दरबार लागू हे,
विधवा-नेना-मजदूरकें पहिल आसन साजू हे ।
स्वप्नमे दरबार लागल, सभकें आसन भेटल,
विधवा, बच्चा, मजदूरक पूरा कथन सुनल ।

अध्याय ७४

चन्द्रपालक पहिल स्वीकार

पहिल स्वीकार सदखन अकेलेमे होइ छै— भीड़ तँ बादमे ताली
बजबै छै।



“सयमे भागक लोकक बारी”—टूँठक हँसीक ई अलिखित सूचना ओहि भोरे अपन ठेकाना ताकि लेने छल। बटुकनाथ हरिहरनक स्वप्न-दरबारक राति बीतल, मुदा ओकर धूलि केवल ओकर माथ पर नहि अटकल। चन्ना गाछीक टूँठक हँसी जे एक बेर उठल छल, से हवामे पसरि गेल छल।

चन्द्रपाल बन्ना जीवन भरि नाम सँ बचैत रहल। ओकरा लेल लोक केवल अड़क छल—प्रति व्यक्ति कमाइ, प्रति क्लिक भ्रम, प्रति डर निकासी, प्रति खाता प्रवाह। कखनो ओ बूझबो नहि चाहलक

जे फोनक पर्दाक पाछाँ केकर घर, केकर माय, केकर छत, केकर ऋण, केकर कलेजाक धड़कन अछि।

चन्द्रपाल फोन बन्द कऽ देलक। तखनो नाम देखाइत रहल। काँचक टेबलक सतह पर, बोतलक भीतरक तरल पर, घड़ीक काँटा बीच, खिड़कीक शीशा पर।

भोर होइत-होइत ओ निर्णय नहि, थाकनिमे टूटल अवस्थामे गढ़ नारिकेल चलि पड़ल। चन्द्रपाल बन्ना जे सामान्यतया चमकदार गाड़ी, सुरक्षा, आ दूरीसँ काम करैत छल, एहि बेर एक पुरान कारमे बिनु ध्वनि चन्ना गाछीक कटल टूँठ लग पहुँचल। ओकर ड्राइवर पूछलक—‘साहब, उतरी?’ चन्द्रपाल उत्तर नहि देलक।

एहि लेखनमे दण्ड छल। कारण अपराधीक महँग नाम टूटि अपन बचपनक निर्बल नाम धरि घुर्दैत अछि। चन्द्रपालक आँखि भरि आयल, मुदा ई आँसू एखन भरोस योग्य नहि छल।

देविका कागच लऽ कऽ तुरन्त नहि पढ़ली। ओ पाथरक घेरा दिस देखली। ‘हिसाब नामक बराबर नहि होइत,’ ओ कहली, ‘मुदा हिसाब बिनु अगिला लडाइ अधूरा रहत।’ ई वाक्य चन्द्रपालकें क्षमा नहि, कामक आदेश जेकाँ लागल।

बटुकनाथक स्वप्न-दरबार, गंगेशक प्रश्न, नकली भूतक जुलूस, चन्ना गाछीक हँसी—सभ एहि क्षणमे चन्द्रपालक भीतर घुसि गेल। ओकरा लागल जे ओ टूँठक चारू कात नहि, नव्य न्यायकें साक्षी मानि बैसल अछि। आँखिसँ देखल ज्ञान—ओ ठग छल।

चन्द्रपालक हाथ सुन्न भऽ गेल। दूर कतहु राघव सेहो अपन यन्त्र देखैत होएत, ई विचार ओकरा लागल। टूँठक भीतर सँ कने हवा उठल।

चन्ना गाछीक टूँठ ओहि राति फेर चुप भऽ गेल। मुदा चुप्पीमे संदेश साफ छल—पहिल स्वीकार दण्डक अन्त नहि, दरबाजाक कुंडी मात्र अछि। दरबाजाक ओहि पार राघव संकेतक बिनु जाल बैसल छल।

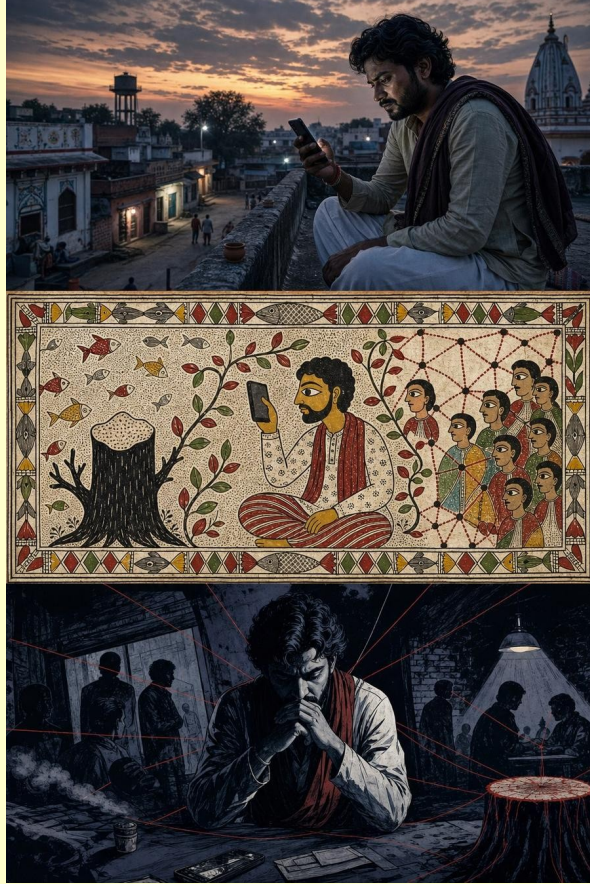
छोट लोकगीत

कहू हे धीमे, 'हम गलत रही' कहू हे,
बन्द कोठरीक ई आखर भोरक बीया बूझू हे।
पहिल स्वीकार बन्द कोठरीमे धीमे जन्मै,
'हम गलत रही' कहिते कठोर हृदय नमै।

अध्याय ७५

राघव सिग्नलक बिना नेटवर्क

सभटा जाल रहितो जे अकेला भेल, से बुझलक— जाल तारक
नहि, भरोसक होइ छै।



दरबाजाक ओहि पार—शहरक काँच-कोठरीमे—सएह राघव बैसल
छल, जकरा लग सभ किछु छल, केवल पहुँच नहि। राघव
'संकेत' सोमानीकेँ जीवनमे पहिल बेर लगल जे संसारमे सभसँ
बड़का नहि होएब पैसा, शक्ति, पहुँच, वा चतुराईक नहि, अपितु
जालक अछि। ओ दिन भरि अपन फोनक फोनक पर्दा दिस ताकैत
रहल।

ओ पहिने तकनीकक लोक नहि छल। ओकर कला एहि बातमे
छल जे साँच बात कखनो पूरा नहि लिखू, झूठ बात कखनो पूरा

नहि बोलू, आ दुनूक बीच एहन संकेत छोड़ जे प्रत्येक अपराधी ओकरा अपना जाहि विषयपर विचारक लोक बुझए। ओ मेटाइत संदेशमे रहैत छल, गायब होइत कक्षमे, आधा आवाजमे, अधपढल करारमे, आ सयमे भागक धुँआमे।

चन्द्रपालक पहिल स्वीकारक खबर ओहि लग रातिए पहुँचि गेल छल—न फोन सँ, न लोक सँ, अपितु बेचैनी सँ। जे लोक अपन अपराधक पहिल दरार देखैत अछि, ओकर कम्पन अपराध-जालक भीतर दूर धरि जाएत अछि। राघव सोचलक—‘चन्द्रपाल टूटि रहल अछि।

पहिल संदेश ओ बटुकनाथ हरिहरनकें पठेलक—‘न्यासक प्रस्ताव तत्काल रोकू। बच्चा सभ नियंत्रणसँ बाहर अछि।’ संदेश भेजिते फोनक पर्दा पर दू धूसर चिन्ह आयल, मुदा नील नहि भेल। दोसर संदेश चन्द्रपालकें—‘स्वीकार सार्वजनिक नहि करू।

ओ डरि कऽ फोन फेकऽ चाहलक, मुदा फोन हथेली सँ चिपकि गेल। एतबा बरख ओ आन लोकक जीवनक आँकड़ा हाथमे राखैत छल। आइ नाम सभ ओकर हाथ पकड़ि रहल छल।

ठीक ओहि समय चन्ना गाछीमे बच्चा सभ रातिक पहरा दैत बैसल छल। अनन्या कहली, ‘आइ संकेत अटकाओल जाएत।’ एकटा बालक पूछलक, ‘संकेत केना अटकत?’ अनन्या टूँठक हरियर बिन्दु पर हाथ राखि कहली, ‘जकर भाषा नाम नहि लेत, ओकर बाट रोकल जाएत।’ बच्चा सभ गोल बनि बैसल आ कबड्डीक साँस शुरू केलक—धीमे, नमगर, नहि टूटएबला। ‘कबड्डी-कबड्डी’ नहि, ओ सभ कहैत रहल—‘उपस्थित-उपस्थित।’।

चन्ना गाछीमे ओहि समय बूढ़बा भूत बच्चा सभक घेरा लग चुपचाप बैसल छलाह। ओ धीरे कहलनि, ‘जाल ओहि ठाम टूटैत अछि जतय झूठ बाट माँगैत अछि।’ बच्चा सभमे सँ एक पूछलक, ‘साँचक जाल?’ बूढ़बा भूत हँसलाह—‘साँचकें जाल नहि, सम्बन्ध चाही।’ अनन्या एहि वाक्यकें बहीमे लिखि लेली।

राघव कुर्सीसँ उठल। सूरज उगवाक पहिल फिक्का उजास शहरक धुँआ पर पसरल छल। भोरक हवामे जरल डीजलक गन्धक संग कतहु दूरक भीजल गाछक गन्ध सेहो छल—शहर आ गाम, दुनू एक्के साँसमे।

ठीक ओहि घड़ी चन्ना गाछीमे अनन्या बही बन्द करैत कहली,
'आइ एकटा दूर नाम हिलल अछि।' बच्चा सभ पूछलक, 'आब
की?' अनन्या टूँठक हरियर बिन्दु दिस देखली। से बिन्दु राति
भरिमे कने नमगर भेल छल। ओ कहली, 'आब जाल नहि, बाट
खुलत।'।

छोट लोकगीत

बुनू हो जाल, भरोसक जाल बुनू हो,
जट-जटिनक जोड़ी जकाँ संगक गीत सुनू हो।
चारि पट्टी संकेत हो, तइयो संग जरूरी,
भरोसक जाल बनत मानव कड़ी पूरी।

अध्याय ७६

लाउ किन-हंगक भारत-यात्रा

समुद्र पार कऽ आयल लोको ओही घाट उतरै छै जतय ओकर
नामक पानि ठाढ़ छै।



मिथिला दिस मुँह केने ओ छाह आब देह धरए लागल छल।
राघव संकेतक बिनु जाल राति भरि लाउ किन-हंगक शहर धरि
पहुँचल। संदेश नहि पहुँचल, मुदा न पहुँचबाक समाचार पहुँचि
गेल।

ओकर कक्ष समुद्र दिस खुलैत छल। नीचाँ जहाजक पंक्ति, बत्ती,
माल, बीमा, करार, ऋण, दबाइ, औजार, श्रम, अंग, जानकारी—

सभ वैश्विक प्रवाहक भाग बनि चलि रहल छल। लाउकँ एहि प्रवाह पर गर्व छल।

ओ राति सुतल तखन स्वप्नमे एक दीर्घ नदी आयल। नदीक जलमे गोहि सभ तैरि रहल छल। ओ सभ देह नहि चिबा रहल छल।

भोर होइत ओ भारत-यात्राक निर्णय लेलक। सार्वजनिक रूपेँ ई यात्रा “संस्कृति आ फेर बसाबय निवेश”क समीक्षा कहल गेल। निजी रूपेँ ई यात्रा राधवक टूटल जाल, चन्द्रपालक चिरल स्वीकार, बटुकनाथक स्वप्न-दरबार, आ एडवर्ड ब्रूमक असफल दानक जाँच छल।

ओकर कातमे बैसल एक वृद्ध भारतीय यात्री मैथिली अखबार पढ़ि रहल छल। लाउ मैथिली नहि बुझैत छल, मुदा अक्षर ओकरा पानिक लहरि जेकाँ देखाइत छल। वृद्ध ओकरा दिशामे तकलखिन आ अंग्रेजी बोलबाक प्रयत्न कएलनि, फेर स्वयं रोकलखिन, मुस्की देलनि, आ अखबारक एक कोना देखौलखिन।

यात्राक बीच लाउकँ निन्न आबि गेल। एहि बेर स्वप्नमे ओ कोनो विमानमे नहि, चन्ना गाछीक टूँठक भीतर चलि रहल छल। भीतरक मार्ग गोलाकार, नमीदार, आ अनगिन रेखासँ भरल छल।

इमिग्रेशन-कक्षमे अधिकारी ओकर पासपोर्ट उलटलक। नाम पढ़लक—लाउ किन-हंग। कागच पर प्रवेश मिलल।

ओ हवाई अड्डासँ बाहर निकलल। गरम हवा, धूलि, ईंधनक गन्ध, चाह, पसेना, सभक सामने कहल बातक शोर, टैक्सी-चालकक आवाज—सभ एक्के संग ओकरा घेरि लेलक। काँचक शीतल संसार टूटि गेल।

एहि वाक्यकँ दुभाषिया बुझि नहि सकल। पर हवाई अड्डाक काँचमे, दूर पाछाँ, गोहिक आँखि सचमुच झपकल।

छोट लोकगीत

चलू हे बटोहिया, समुद्रक पार चलू हे,
घरक बोली छाती मे, जगक ज्ञान बलू हे।
समुद्रपारक यात्री सेहो ओही चान निहारै,
घरक नाम, मायक बोली हृदय भीतर सम्हारै।

अध्याय ७७

हवाई अड्डापर गोहि

हवाई अड्डाक शीशामे शहरक इजोत बिकाइ छै, मुदा गोहिक
आँखि मुफ्तमे देखा जाइ छै।



गोहिक ओ झपकल आँखि जे दरवाजा खोलने छल, ओकर पहिल
सीढ़ी हवाई अड्डाक भीतरे छल। लाउ किन-हंगक विमान राति आ
भोरक बीच उतरलक। हवाई अड्डाक शीशा पर शहरक उजास एना
पसरल छल जेना आकाश अपन सभ तारा बेचि कऽ धरती पर
विज्ञापन लगा देने हो।

भारतक धरती पर पहिल पग राखिते ओकरा कोनो गन्ध भेटल—
मसाला, डीजल, नमी, पसेना, भीजल कपड़ा, आ दूर कतहु सँ
अबैत माटिक गन्ध। ओ गन्ध हवाई अड्डाक शीतल हवाकें चीरैत

भीतर पैसल। लाउ ओहि गन्धकै 'स्थानीय असुविधा' मानि नाक सिगुप्त संकेतलक, मुदा ओकर मन तुरन्त कहि उठल—एहि गन्धमे नाम अछि।

ओ अपन सहायककै कहलक—“एहि देशक मशीन ठीक नहि।” सहायक, जे पहिनेसँ दिल्लीमे ठहरल छल, धीरे उत्तर देलक, “मशीन ठीक अछि, महाशय। एतय कहियो-कहियो प्रतिबिम्ब बेसी देखाइ दैत अछि।” ई वाक्य सुनि लाउ असहज भेल। ओकर व्यापारक संसारमे प्रतिबिम्बक कोनो मूल्य नहि।

कक्षमे बटुकनाथ हरिहरनक संदेश आयल—“स्थानीय भावनाकै वैधानिक न्यासमे समेटबाक मार्ग उपलब्ध अछि।” चन्द्रपालक संदेश आयल—“आदरक स्मरण-फोन साधनक ढाँचा सुरक्षित अछि, केवल जनभावना-प्रबन्धन चाही।” राघव संकेतक संकेत आयल—“नब गुप्त संकेत सक्रिय, जोखिम भावनात्मक।” लाउ ई सभ पढैत रहल। तीनू संदेश एकहि बात कहैत छल—स्मृतिकै फेर सँ वस्तु बनाओल जा सकैत अछि। मुदा ओकरा परदा पर अक्षरक पाछाँ-पाछाँ गोहिक दाँत देखा पड़ल।

हवाई अड्डासँ बाहर निकलैत काल ओकर स्वागत लेल कारी गाडी तैयार छल। चालकक नाम-पट्टी पर एक नाम लिखल छल, मुदा चालकक आँखि लाउकै देखिते एक क्षण लेल चन्ना गाछीक टूँठक पाथर जेकाँ स्थिर भऽ गेल। चालक पूछलक, “गढ़ नारिकेल?” लाउ चौकल—ओहि दिनक यात्रा-सूचीमे गढ़ नारिकेल सार्वजनिक नहि छल।

रातिमे ओकरा निन्न नहि आयल। किछु बेर बाद ओ स्वप्नमे हवाई अड्डाक आगमन-द्वार पर फेर ठाढ़ छल। अधिकारी नहि, टूँठक बच्चा सभ कतारमे बैसल।

जागल तखन भोरक पहिल धूसर रेखा काँचक पाछाँ छल। फोन पर एक संदेश चमकैत छल। संदेश सत्यव्रत मेहताक नहि, न ककरो सहायकक।

दुपहरिया धरि लाउ किन-हंग निर्णय लेलक जे ओ जाएत। ओ सोचलक—जाएब, देखब, सौदा करब, नियंत्रण लऽब। मुदा निर्णयक तलमे एकटा दोसर कम्पन छल—कदाचित ओ पहिल बेर कोनो एहन मनुखसँ भेटए जा रहल छल जे ओकर धन, जाति, देश, पासपोर्ट, आ भाषा सभकै किनार कऽ केवल नाम पढ़त।

एहि तरहँ हवाई अड्डाक गोहि ओकर देह नहि चिबेलक। ओकर सुरक्षा-बोधक पहिल चाम उतारि देलक। ओ भारत आयल व्यापारी छल, मुदा प्रतीक्षालय दिस बढैत समय ओकर छाह ओहि मनुखक छल जे अपन प्रतिबिम्बसँ भागि नहि सकैत।

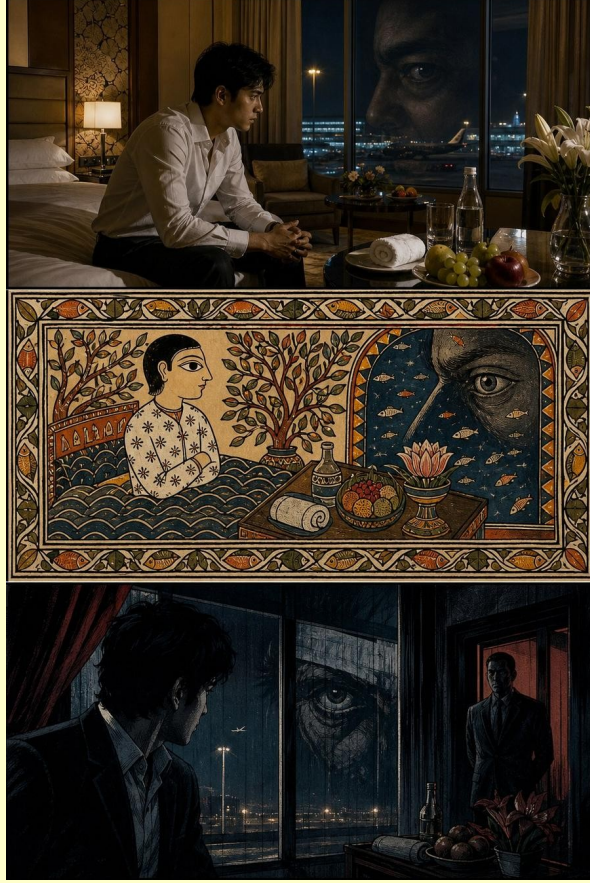
छोट लोकगीत

जागू हे नगर, शीशा पोछि जागू हे,
काँचक संग करेजो पारदर्शी राखू हे।
शीशाक देवाल चमकै, भीतर मनो साफ हो,
गोहिक आँखि नहि, करुणाक दृष्टि माफ हो।

अध्याय ७८

सत्यव्रत आ लाउक मौन-संवाद

दू गोटेक मौन जखन एक्कहि प्रश्नपर अटकल हो, तखन ओहो संवाद थीक।



प्रतीक्षालयक संदेश जे बाट खोलने छल, से बाट सोझे चन्ना गाछी धरि चलि गेल। हवाई अड्डाक शीशामे गोहिक आँखि देखलाक बाद लाउ किन-हंग राति भरि निन्न नहि कएलक। पाँचतारा अतिथिगृहक कोठरीमे बिछौना समुद्रक तरंग जेकाँ नरम छल, वातानुकूलनक हवा स्थिर छल, टेबुलपर फल, फूल, मिनरल जल, सुगन्धित तौलिया—सभ बन्दोबस्त एना निर्दोष जेना संसारमे कोनो दोष कखनो रहलिये नहि हो।

लाउ किन-हंग अपन सहायककें कहलक जे कोनो पत्रकारसँ भेंट नहि। कोनो निवेशक-भोज नहि। कोनो सांस्कृतिक भ्रमण नहि।

भेंटक ठाम ककरो दफ्तर नहि छल। सत्यव्रत मेहता ओकरा दिल्लीक कोनो भवनमे नहि, गढ़ नारिकेलक बाहरी सड़क पर नहि, अपितु चन्ना गाछीक कटायल टूँठक लग बजौलनि। लाउ किन-हंगक सुरक्षा-दल पहिने विरोध कएलक।

बहुत कालक बाद लाउ स्वयं बाजल—“अहाँ हमरा पर आरोप लगबए चाहैत छी? सत्यव्रत शान्त स्वरमे कहलखिन—‘आरोप अदालत लगबैत अछि।’ एतय नाम पढ़ल जाइत अछि।’ लाउ फेर पूछलक—“अहाँ प्रमाण चाहैत छी? सत्यव्रत बहीपर हाथ राखलनि—‘प्रमाणक अनेक रूप अछि।’ गंगेश कहैत छथि—आँखिसँ देखल ज्ञान, चिन्ह देखि बुझल बात, शब्द।

बच्चा सभक नाम-पाठ रुकल। ओकर हाथमे एक छोट पाथर छल। ओ लाउक सोझाँ पाथर राखि पूछली, ‘अहाँ अपन नाम लिखब?’ सहायक बीचमे बाजए चाहलक, मुदा लाउ हाथ उठा ओकरा रोकलक।

ओहि राति लाउ किन-हंग गढ़ नारिकेलमे रहल। ओकरा अतिथिगृह चाही छल, मुदा बच्चा सभ ओकरा टूँठक चारू कात रहबाक मज्जुरी नहि देलक। ओ कहलक—“सुरक्षा कारणेँ—अनन्या कहली, ‘जे सभ नाम बिनु सुरक्षा डूबल, हुनकर ठाम सुरक्षा-तर्क कम बाजू।’” अन्ततः ओकरा गामक बाहर एक पुरान विद्यालयक कोठरी देल गेल।

राति मध्यमे ओकरा सपना भेल। ओ “अनाम ग्रह”क कल्पनाक चमकैत गुंबदमे ठाढ़ अछि। सभ भवन पर संख्या अछि, कोनो नाम नहि।

दिन चढ़ल तखन एडवर्ड ब्रूमक दूत आवि पहुँचल। ओकर हाथमे सुनहर किनारीबला दान-पत्र छल—गढ़ नारिकेल स्मृति-केंद्र लेल विशाल राशि, विदेशी विशेषज्ञता, यन्त्रपर चलयवला पुरान कागजक घर, विश्व-स्तरीय प्रदर्शन। दूतकें विश्वास छल जे एहन कागज देखि गाम झुकि जाएत।

सत्यव्रत मेहता मुस्कुरेलाह नहि। लाउ किन-हंग सेहो नहि। टूँठक भीतर सँ हलुक खड़खड़ाहटि उठल—न हँसी, न रोदन।

छोट लोकगीत

बान्हू हे पुल, दू मौनक बीच बान्हू हे,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

शब्द नहि तँ समय दिअ, संग बैसल रहू हे ।
दू मौन एक-दोसर लग बैसल, पवन बीच बोलल,
आँखिक नमी, हथेलीक थरथर संवाद खोलल ।

अध्याय ७९

ब्रूमक दान-पत्र

दान-पत्र जतबा चिक्कन, ओकर मुहरक नीचाँक ठेका ततबे पुरान।



अगिला परीक्षाक सूचना जे टूँठक खड़खड़ाहटिमे बाजल छल, से भोरे डाकक मोट पोटली बनि गाम पहुँचल। लाउ किन-हंगक मौन-संवादक अगिला बिहान गढ़ नारिकेलमे डाकक ओ पोटली उतरल। पोटली साधारण कागचक नहि छल।

दान-पत्र एडवर्ड ब्रूमक नव संस्थासँ आयल छल। कम्पनीक पुरान नाम कतहु नहि छल। जेकरे ठेकासँ पुलक पायामे मजदूरक देह समायल, जेकरे सलाहसँ जल, श्रम, औषधि, जानकारी आ डर

सभ 'योजना' बनल, से कम्पनी आव नव रूपमे आयल छल — 'विश्व-स्मृति पुनर्स्थापन निधि' ।

सत्यव्रत मेहता पाछाँ ठाढ़ सुनैत रहलाह । ओ किछु कहए चाहैत छलाह, मुदा दोसर मौनक साधना हुनका रोकने रहल । एहि बेर बोलबाक अधिकार बच्चा सभक छल ।

प्रतिनिधि परेशान भेल । ओ कहलक— 'अहाँ सभ भावुक छी । विश्वमे स्मृति सँजोएबाक विधि एहनहिये होइत अछि ।' एहि पर अनन्या टूँठ पर हाथ राखि उत्तर देली— 'विश्वमे जे विधि अछि, ओहि सँ दुनियाँमे कतेक नाम मेटल गेल ।

लोकक भीड़मे साँस अटक गेल । एक युवक फुसफुसायल — 'कागच रूप बदललक ।' बा कहलीह— 'कागच नहि, पापक चाम भीजल ।' बच्चा सभक आँखि चमकल । ई आँखिसँ देखल ज्ञान छल— गंगेशक न्यायक कठोर शब्द नहि, माटिक आँखिसँ देखल ज्ञान ।

प्रतिनिधि दस्तावेज खिंचए चाहलक । अनन्या रोकली नहि । ओ केवल कहली— 'लऽ जाउ ।

बेटा कागच उठा कऽ पढ़ए लागल । बटुकनाथ चौकल— 'की करैत छह?' बेटा शान्त स्वरमे पूछलक— 'बाबा, ई न्याय बचाबय लेल अछि कि पेशा?' प्रश्न छोट छल, मुदा स्वप्न-दरबारक सभ घंटा एक्के संग बजि उठल । बटुकनाथक मुँह सूखि गेल ।

टूँठक चारू कात ओही साँझ बच्चा सभ दान-पत्रक खाली लिफाफा राखलक । ओहि पर लिखल गेल— 'करुणा जँ अधिकार माँगे, तकर परीक्षा होएत ।' लिफाफाक कोना भीजल छल । भीतरक कागच प्रतिनिधि लऽ गेल छल, मुदा पानिक दाग टूँठ लग रहि गेल ।

आ दान-पत्रक भीजल गन्ध सँ अगिला प्रश्न जन्मल— जे बाप न्याय बेचि प्रतिष्ठा कमेलक, ओकर संतान ओ प्रतिष्ठाक उत्तराधिकारी बनत कि ओकर अपराधक साक्षी? चन्ना गाछीक हँसी थमि गेल छल । आब घरक भीतरक प्रश्नक बारी छल ।

छोट लोकगीत

सुखाउ हे दान-पत्र, सूरजक तर सुखाउ हे,
ककर धन, कतऽ गेल—अक्षर-अक्षर देखाउ हे ।
भीजल दान-पत्र सुखाउ खुलल सूरज तरे,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

ककर धन, ककर लाभ—सभ जनक आँखि पढ़े ।

अध्याय ८०

हरिहरनक संतान

बेटाक एकटा प्रश्न— न्याय बचेलहुँ कि पेशा?— बरामदाक सभ सम्मान-पत्र हिला दै छै।



घरक भीतरक ओ प्रश्न ओही राति अपन देहरी ताकि लेलक।
बूमक दान-पत्र पानिमे भीजि पुरान ठेकाक प्रति बनि गेलाक राति
बटुकनाथ हरिहरन अपन घरक ऊँच बरामदा पर बैसल छल।
बरामदाक खम्भा पर पितरक तस्वीर, भीतर देवाल पर बार
परिषदक सम्मान-पत्र, काँचक आलमारीमे मोट-मोट विधि-पुस्तक,
आ बीचमे ओ स्वयं—एना जेना विधिक घरमे विधि नहि, ओकर
थाकल छाह रहि गेल हो।

ओहि चुप्पीक बीच दरबाजा बिनु आवाजक खुलल। बटुकनाथक संतान तारिणी भीतर आयल। ओ कानून पढैत छली, मुदा अपन पिता जेकाँ कानूनकें पेशाक चतुराई नहि मानैत छली।

बटुकनाथक भौं सिकुडल। गंगेशक नाम सुनिते ओकर भीतरक वक्ता जागि उठए चाहलक। ओ कतेको सभामे कहने छल—नव्य न्याय मिथिलाक अद्भुत देन अछि।

‘गंगेशक प्रसंग विद्वान सभक विषय अछि,’ बटुकनाथ कहलक। ‘इतिहासमे अनेक मत होइत अछि। घरक रातिमे ई सभ...’ तारिणी बीचमे काटि देली, ‘घरक रातिमे नहि, बाबा, कुलक अन्हारमे।

तारिणी स्वयं पूछि देली। ‘अहाँ न्याय बचेलहुँ कि पेशा? जे मजदूर पुलमे डूबल, ओकर परिवारक कागच अहाँ तकनीकी दोष कहि किनारा केलहुँ।

बटुकनाथक मुँह सूखि गेल। ओ झट सँ प्रतिवाद करए चाहलक —‘बिनु स्रोत, बिनु प्रमाण...’ तारिणी मुस्कुरा नहि सकली, मुदा ओकर स्वर कठोर भेल—‘प्रमाण माँगब उचित अछि। मुदा प्रमाणक दरबाजा खोलब सेहो उचित अछि।

एहि वाक्यक संग बटुकनाथक घरक फर्श बदलए लागल। बरामदाक संगमरमर कटल चन्ना गाछीक टूँठ बनि गेल। आलमारीक पुस्तक सभ पात बनि उडा, आ प्रत्येक पात पर ओहि लोकक नाम चमकल जेकर केस ओ बरख-दर-बरख घुमबैत रहल।

ओहि भोर गढ नारिकेलमे चन्ना टूँठक कोंपल पर ओस जमल छल। बच्चा सभ नाम-पहरा शुरू करए जा रहल छल। तारिणी ओहि ठाम पहुँचत कि नहि, केओ नहि जानैत छल।

आ ओम्हर, चन्द्रपाल बच्चा अपन बन्द कमरामे, फोन हटा कऽ, पहिल बेर कागच पर अपन पूरा नाम लिखए बैसल। ‘चन्द्रपाल’ लिखल गेल, ‘बच्चा’ अटकल। फेर कागच पर अक्षर नहि, अधूरा गोल निशान उतरए लागल—सयमे भागक चिह्न जेकाँ।

छोट लोकगीत

पूछ गे बेटी, आँखि मिला कऽ पूछ गे,
बाबूक पुरना बही सँ साँचक पन्ना खोज गे।
बेटी पूछै—न्याय बचेलहुँ? पिता आँखि उठाउ,
पुरान भूल नहि नुकाउ, साँचक उत्तर लाउ।

अध्याय ८१

बत्राक अधूरा नाम

आधा नाम लऽ कऽ जीनिहार पूरा हस्ताक्षरसँ डेराइ छै।



ओ प्रतीक्षारत दरबार कोनो सभागारमे नहि—एक उज्जर कागचक चौहद्दीमे लागल छल। हरिहरनक संतान जे राति अपन बाबूसँ पूछने छल—‘अहाँ न्याय बचेलहुँ कि पेशा?’—ओहि प्रश्नक प्रतिध्वनि गढ़ नारिकेल सँ बहुत दूर धरि गेल। ओ प्रतिध्वनि फोनक जाल, बैंकक खाता, दान-पत्र, यादक चिन्ह-योजना आ विदेशी बैसकी सभ पार कऽ एक एहन कोठरीमे पहुँचल जतय चन्द्रपाल बत्रा अपन सोझाँ राखल उज्जर कागच पर बहुत काल सँ कलम धएने बैसल छल।

कोठरी शहरमे छल, मुदा ओकर चारूकात चन्ना गाछीक छाह पडि रहल छल। खिड़की बन्द, परदा बन्द, वातानुकूलन चलि रहल, फोनक पर्दा पर कतेको गिनती चमकि रहल—मुदा ओहि कागच पर एक शब्दो नहि उतरल। कागचक माथ पर केवल एतबा लिखल छल—‘अपन नाम लिखू।’ ककरो हस्ताक्षर नहि, ककरो मोहर नहि।

चन्ना गाछीक ठूँठसँ बच्चा सभक बहीमे ओहि घडी एक अदृश्य रेखा खिंचल। अनन्या दूर गढ नारिकेलमे बसल-बसल पन्ना फेरली। ओकरा कारण बुझाईत नहि छल, मुदा पन्नाक कोनामे कारी स्याही सँ एक शब्द अपने उतरि आयल—‘सयमे भाग।’ ओ ईराकै देखौली।

चन्द्रपालक कोठरीमे आब देवाल सभ हिलि रहल छल। एक देवाल पर लाउ किन-हंगक छाह उभरल—ठंडा, नापल, लाभक भाषा बजैत। दोसर पर राघव संकेतक मेटाईत संदेश।

ओ राति पहिल बेर चन्द्रपाल कानल। ओकर रोदन दया माँगबाक नहि छल। से रोदन एहन मनुष्यक छल जे बूझि गेल अछि जे ओकर भीतर बाँचल बच्चाक नामक देह नहि भेटि रहल।

अनन्या बहीमे नव पन्ना खोलली। पन्नाक ऊपर लिखली—‘अधूरा नाम।’ पाछाँ बच्चा सभ गोल बैसल छल। ओ सभ पूछलक—‘जे अपराधी अछि, ओकर नाम किएक लिखब?’ बा उत्तर देलीह—‘अपराध क्षमा लेल नहि, प्रमाण लेल लिखल जाइत अछि।’

सत्यव्रत मेहता ओहि बैसारमे उपस्थित छलाह। हुनका चन्द्रपालक कोठरीक समाचार ककरो नहि देने छल। मुदा सुननाइक साधना एना होइत अछि जे दूरक अपराधीक काँप सेहो कान धरि पहुँचि जाए।

भोरक समय ओ कागच अपने-आप मुड़ि गेल। कोनो हाथ नहि, कोनो हवा नहि। मोड़ बनैत गेल आ कागच एक पातक आकार लेलक।

ओ बुझि नहि सकल कि ई सपना अछि कि दण्ड। मुदा गढ नारिकेलमे ओहि क्षण अनन्या बही बन्द करैत कहली—‘अगिला बेर भीतरक गज-ग्राह खेलत।’ बच्चा सभक देहमे एक्के बेर सिहरन दौड़ि गेल। खेल मैदान पर नहि, मोनक पानिमे उतरि रहल छल।

छोट लोकगीत

साफ करू हे, भीतरक पोखरि साफ करू हे,
चारू किनार भिन्न रहौ, पानि एक्के धरू हे।
चारि किनार अलग सही, पानि एकहि प्राण,
भीतरक पोखरि साफ करू, हटत भ्रमक जाल।

अध्याय ८२

अंदरक गज-ग्राह

पोखरिक चारू किनार अलग-अलग, पानि एक्कहि— आ पानिक भीतर गज-ग्राह दुनू।



‘अगिला बेर भीतरक गज-ग्राह खेलत’—अनन्याक ई वाक्य दोसरे साँझ अपन मैदान ताकि लेलक। हरिहरनक संतानक प्रश्न, बच्चाक अधूरा नाम, राघवक बिनु-जाल, लाउ किन-हंगक शीशामे देखायल गोहि—ई सभ अलग-अलग घटना नहि रहल। ओ सभ एकहि पोखरिक चारू किनार छल।

चन्ना गाछीक टूँठ पर ओ राति पानि नहि छल, मुदा सभकें पानिक गन्ध अबैत रहल। जड़िक फाँक सभमे जमल नमी एक-

एक कऽ चमकि उठल। नामक पाथर सभक छाह नमहर भऽ कऽ वृत्त बनौने छल।

अनन्या पूछली, ‘दोषीमे जीव देखब कठिन अछि।’ बूढ़बा भूत उत्तर देलनि, ‘ठीके। मुदा न्याय कठिन होइत अछि, बदला सहज। गंगेश जे प्रमाणक मणि गढ़लनि, ओ केवल दोसरा पर लागू करबाक लेल नहि छल।

बच्चा सभ हुनका दिस देखलक। एहि वाक्यक महत्त्व सभ बुझलक। जे व्यक्ति दोसरा सभक गवाही लिखैत छल, ओ अपन भीतरक ग्राहकें नुकाबय नहि चाहैत छल।

तखन टूँठक बीचमे असल गज-ग्राह दृश्य उभरल। विशाल पानि, कादो, चन्द्रक उजास। गज आधा डूबल, ग्राह ओकर पएर पकड़ने।

ओकर मुँह सँ नाम निकलल। पहिने एक, फेर अनेक, फेर ओ नाम सभ जकरा कोनो सूचीमे ठाम नहि छल। जखन नाम पानिपर पड़ल, बच्चा सभ उत्तर देलक—‘उपस्थित।’ प्रत्येक ‘उपस्थित’ पर ग्राहक एक दाँत ढील पड़ैत।

भोर लगैत टूँठक पानिक दृश्य मेटा गेल। गाम फेर गाम लगाए लागल। मुदा प्रत्येक पात्र अपन भीतर थाकल जागल।

चन्ना गाछीक पाथर-घेरा लग बच्चा सभ अगिला सभा लेल नियम बनौलक—‘हम सभ केवल मृतकक नाम नहि पढ़ब। हम सभ जीवितक भीतर अटकल नाम सेहो खोजब।’ ई नियम सुनि नारिकेल पातक पाठशालाक विचार जन्मल। नामक पहरा आब केवल लिखित हिसाबक रक्षा नहि, बुद्धि, देह, जाति, श्रम, अपन निजी बातक अधिकार आ न्यायक पाठ बनबाक छल।

ओहि बिहान अनन्या बहीक नव पन्ना खोलि शीर्ष लिखली—‘नारिकेल पात पाठशाला।’ टूँठक हरियर बिन्दु कने पसरल। बूढ़बा भूत दूर सँ कबड्डीक साँस छोड़लनि—‘कबड्डी...’ आ उत्तरमे बच्चा सभ कहलक—‘पाठशाला...’ खेल आब पढ़ाइमे उतरि रहल छल।

छोट लोकगीत

बैसू हो नेना, पातक आसन पर बैसू हो,
माटिक कापी, टहनी-कलम सँ आखर लेखू हो।
छाहरि कम, पातक आसन, ज्ञानक आकाश पैघ,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

नेना गोल घेरा बैसि सीखै नामक नेह ।

अध्याय ८३

नारिकेल पात पाठशाला

जतय छाहरि नहि बचल, ओतहु पाठशाला बैसि सकै छै— पातक आसनपर।



खेल जे राति पढाइमे उतरल छल, से भोर होइते माटि आ पातक रूप धरए लागल। भीतरक गज-ग्राहक राति उतरि गेलाक बाद गढ नारिकेलमे बिहान साधारण नहि भेल। पानि अपन पुरान चाल चलैत रहल, सड़क पर धूलि उड़ैत रहल, बजारमे आलू-प्याजक भाव पर झगडा चलैत रहल।

ओहि बिहान अनन्या ठूँठक पाछाँक खाली जगहमे बालु साफ करैत छली। ओकर संग पाँच बच्चा, दू बालिका, एक बूढ़ कुम्हार,

एक विधवा, आ देविका रहली। कियो पूछलक, ‘एतय की बनत?’ अनन्या उत्तर देली—‘पाठशाला।’ सभ चौंकल।

नारिकेल पात पाठशालाक नाम बा देलीह। ओ कहलीह, ‘चन्ना गाछीक टूँठ रहत, मुदा छाँहक लेल पात चाही। नारिकेलक पात दूर-दूर धरि हवा पकड़ैत अछि।

देविका पाठशालाक पहिल देवाल पर कोयलासँ लिखली—‘एतय कोनो दुख बिनु मञ्जूरी लिखल नहि जाएत।’ मीरा दोसर पाँति जोड़ली—‘एतय कोनो देह तमाशा नहि।’ गोप कुमार जे देर सँ पहुँचल छलाह, तेसर पाँति लिखलनि—‘एतय कागच प्रमाण अछि, मुदा मनुष्यक स्वर बिनु अधूरा।’ सत्यव्रत मेहता दूर टाढ़ छलाह। बच्चा सभ हुनका देखलक। अनन्या कहली—‘अहाँ चारिम पाँति लिखू।’ सत्यव्रत बहुत देर सोचलाह, फेर लिखलनि—‘एतय मौन सेहो गवाही अछि, जँ ओ डरक नहि, सुनबाक हो।’

एहि पात सभ पर लेखनक ढंग विचित्र छल। पूरा कथा नहि, केवल संकेत—‘पुलक पाया’, ‘यन्त्रपर चलयवला डेर’, ‘साँस लेल हवाक राति’, ‘मीराक मञ्जूरी’, ‘गंगेशक प्रश्न’, ‘नकली भूतक रोदन’, ‘भीतरक ग्राह’। बच्चा सभ प्रत्येक संकेतक नीचाँ खाली जगह छोड़लक।

ई वाक्य सुनि बूढ़ पण्डित जे किनार पर बैसल छल, खँखारि उठल। ओ कहलक—‘गंगेशक जीवनक सभ कथा प्रमाणित नहि।’ अनन्या तत्क्षण पूछली—‘तखन जातिक गर्वक प्रमाण की? कुलक शुद्धताक प्रमाण की?’

रातिमे पहिल दीप जलल। कोनो घंटी नहि बाजल। अनन्या खाली कटोरा उठौली आ तीन बेर धीरे बजौली।

ठीक ओहि समय दूरसँ ढोलकक बहुत धीमा स्वर आयल। बच्चा सभ उठि सोचलक जे कबड्डी शुरू करब? वा हाथ उठा रोकलीह—‘काल्हि पहिल पाठ अछि।

अध्यायक अन्त एहि प्रतीक्षामे भेल। नारिकेल पात पाठशाला बनि गेल छल, मुदा ओकर पहिल पाठ अबहियो खुलबाक छल। खाली कटोरा बीचमे राखल रहल।

छोट लोकगीत

पुकारू हे नाम, एक-एक कऽ पुकारू हे,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

'उपस्थित'क उत्तर पर दीपक थारी उतारू हे ।

नाम पुकारू एक-एक, सभ कहू—उपस्थित,
माय, मजदूर, नेना, बूढ़—सभक मान सुरक्षित ।

अध्याय ८४

पहिल पाठः उपस्थित

पहिल पाठ अक्षर नहि— 'उपस्थित' कहब होइ छै।



बहीक ओ शीर्ष—‘पहिल पाठः उपस्थित’—भोरक इजोतमे अपने पहिल घंटी बनि गेल। नारिकेल पात पाठशाला खुललाक पहिल दिन कियो वर्णमाला नहि पढ़लक। ने कखग, ने संख्या, ने पहाडा।

ईराक हाथमे स्याहीकलम छल, देविकाक हाथमे बही, मीरा लग लाल डोरी, सौम्या लग छोट कपडाक थैली, जाहिमे खाली कागच, काजर, दू टुकड़ा कोयला, आ कतेको छोट चकमक पाथर छल। आरुणि दूर ठाढ़ रहि देखैत छल। ओकरा लग बुझाइत

छल जे पुलक नाप, पाया, नदीक वेग, ठेकाक शर्त—ई सभ ज्ञानक एक भाग रहल ।

पहिल बच्चा अपन नानीक नाम लऽ कऽ उठल । घरमे हुनका ‘ओ बुद्धिया’ कहल जाइत छल । नानीक कोनो कागच नहि, कोनो जन्मतिथि नहि, कोनो जमीनपर दावा नहि ।

ओ सोनकि आ तेसर बच्चाक बीच बैसि कहली, ‘जकर श्रम पर सभ चलल, ओकर नाम नीचाँ नहि, आधारमे लिखल जाएत ।’ देविका बहीक पन्नामे मंगलू दासक नाम पहिल स्तम्भमे नहि, बीचमे लिखली—ठीक ओतए जतए पृष्ठक भार टिकैत अछि । अनन्या सभसँ कहली, ‘एहि पाठशालामे जाति उपस्थिति रोकि नहि सकैत ।’ बच्चा सभ उत्तर देलक—‘उपस्थित ।’

एहि पाठशालामे उपस्थितिक अर्थ सभ किछु उधारब नहि छल । किछु नाम पूरा कहल जाएत, किछु संकेतमे, किछु घरक मञ्जूरी धरि रोकल, किछु केवल पाथरक तापमे राखल । मीरा नियम लिखली—‘अपन निजी बातक अधिकार काटि कऽ स्मृति नहि बनत ।’ देविका जोड़ली—‘जकरा नाम कहबासँ खतरा, ओकर चुप्पी सेहो उपस्थित ।’ बच्चा सभ एहि वाक्यकेँ तीन बेर दोहराओलक ।

मध्याह्न लगिते एक पुरनका पण्डित आयल । ओ कहलक, ‘एहन पाठशालामे जाति-गोत, कुल-परम्परा, शास्त्र-विरुद्ध बात बच्चा सभकेँ पढाओब ठीक नहि ।’ अनन्या विनम्रता सँ पूछली, ‘शास्त्र नाम बचबैत अछि कि नाम मेटबैत?’ पण्डित चुप । ओ फेर कहलक, ‘बन्दोबस्त चाही ।’ ईरा उत्तर देली, ‘बन्दोबस्त जँ मृतकक नाम खाए, तखन ओकरो गोहि कहल जाएत ।’ पण्डित अन्हार खोजैत छल, मुदा चन्ना गाछी कटि गेल छल ।

दुपहरिया बाद उपस्थिति पाठ नागरिक पाठ बनि गेल । बच्चा सभ कहलक—‘जकर नाम बहीमे अछि, ओकर देह नहि रहितो समाजमे ठाम अछि ।’ आरुणि जोड़लक—‘जकर श्रम पुलमे अछि, ओकर नाम पायामे लिखल जाएत ।’ गोप कुमार कहलाह—‘जकर जानकारी चोरी भेल, ओकर नाम खाताक संख्या नहि, मनुष्यक स्वरमे घुरत ।’ मीरा कहली—‘जकर देहक गरिमा छीनल गेल, ओकर नाम बिनु मञ्जूरी केओ नहि बेचत ।’ सत्यव्रत मेहता पाछाँ सँ सुनैत रहलाह, आ अपन नोटबुकमे केवल एक शब्द लिखलनि—‘उपस्थित ।’

मीरा अनन्यासँ बही माँगली। पन्ना पलटि कऽ खाली छोड़ि देली।
कहली, 'किछु नाम राति माँगैत अछि।

टूँठक हरियर बिन्दु अन्हारमे हलुक चमकि रहल छल।
पाठशालाक पहिल पाठ समाप्त नहि भेल। ओ रातिक सभामे
बदलए लगल।

छोट लोकगीत

जुटूँ गे बहिना, उज्जर पहरक बेला गे,
अपन नाम अपने कहूँ, टूटत सभ झमेला गे।
दिनक श्रम, रातिक बात—स्त्री सभ घेरा बनाबै,
एक-दोसरक कंठ सुनि साहस दीप जलाबै।

अध्याय ८५

स्त्री सभक राति-सभा

दिनक शब्दक असली देह रातिक सभामे खुजै छै, जखन स्त्री सभ बाजए लागै छथि।



खुल्ला छोडल ओ पन्ना राति भरि प्रतीक्षा नहि कएलक—साँझ ढलिते अपन सभा अपने बजा लेलक। नारिकेल पात पाठशालाक पहिल पाठ 'उपस्थित' दिनमे पढ़ाओल गेल छल। मुदा ओहि शब्दक असल देह रातिमे खुलल।

सभ सँ पहिने उज्ज्वलक माय अएलीह। हुनकर हाथमे बेटाक पुरान कमीज छल, जे फोनक पर्दामे डूबल ओहि अन्तिम दिनक

बाद सँ कखनो धुलायल नहि छल। कमीजमे पसेनाक गन्ध आव नहि, मुदा मातृ-स्मृतिक कड़गर नोन बचल छल।

पहिल कथन उज्ज्वलक मायक नहि, हुनकर कमीजक भेल। ओ कमीज टूँठक लग राखि देलीह। कहलीह, 'हमर बेटा फोनक पर्दा सँ हारल, से सभ कहैत अछि।

ईरा अपन बातमे प्रवासी मनक गिट्टि खोलली। 'विदेशमे हम सभ गामक स्त्री सभकेँ चित्रमे खोजैत छी—माछ, पाग, मधुबनी, लोकगीत। मुदा एतय आबि बुझलहुँ जे गामक स्त्री केवल रंग नहि, तर्क अछि।

बा धीरे बजलीह, 'गंगेश तत्त्वचिन्तामणि नामक न्याय-पोथी लिखलनि—बारह हजार ग्रन्थक बराबर कहल जाइत। मुदा जँ समाजक एक स्त्रीक नाम ताहि भीतर नहि पढ़ि सकलहुँ, तँ बारह हजार ग्रन्थक तौल ककरा लेल?' हुनकर ई वाक्य सुनि कटल टूँठक जड़िमे एक करकराहट भेल। बच्चा सभ, जे दूर पहरामे छल, दौड़ि देखए आयल।

एक युवती, जे एहि धरि चुप छली, कलाईमे डोरी बान्हैत बजली, 'हमर प्रेमक नाम नहि लिखू। लिखू—एकटा स्त्री जे डरक बावजूद अपने भीतरक सत्यकेँ झूठ कहलासँ इनकार कएलक।' मीरा ओकरा देखैत कहली, 'नामक अधिकार तोहर। नाम नहि कहब सेहो नामक रक्षा अछि।' देविका पन्ना पर लिखली—'गोपनीय उपस्थित।' एहि नव पद पर सभ स्त्री सहमत भेलीह।

राति आधा बीति गेल। चन्ना टूँठक पाछाँसँ जाइक पवन सन आवाज उठल। कियो सोचलक बूढ़बा भूत आयल।

भोरक पहिल इजोतमे स्त्री सभ एक-एक कऽ उठलीह। टूँठक हरियर बिन्दु ओहि राति कने नमगर भऽ गेल छल कि आँखिक भ्रम छल—कियो निश्चित नहि कहि सकल। फुलकुमारी अपन फाटल एडी देखैत कहलीह, 'काल्हि मजदूरक पएर पढ़ल जाए।' बच्चा सभ उत्तर देलक—'उपस्थित।'।

सूर्योदय सँ पहिने स्त्री सभ चलि गेलीह, मुदा टूँठक चारू कात लाल डोरीक गन्ध, कमीजक नमी, खाली पन्नाक भार, आ फाटल एडीक धूलि बचल रहल। गढ़ नारिकेलक अगिला बिहान जानि चुकल छल—जे पुलक पायामे पएर गइल, ओकर इतिहास केवल पुरुष मजदूरक नहि। ओकरा संग स्त्रीक एडी, बच्चाक भूख, आ घरक अनकहल नाम सेहो धँसल अछि।

छोट लोकगीत

चलू यौ भाइ, धूलिक तिलक लगा चलू यौ,
पएरक छापे-छापे भविष्यक बाट बनाउ यौ ।
मजदूरक पएरक धूलि बाटक नक्शा लिखै,
जतय श्रमक पग पड़ै, विकास ओतहि दिखै ।

अध्याय ८६ मजदूरक पाँव

नाम उपस्थित भेल तँ पुछू— ओकर पाँव कोन माटिपर पड़ल छल।



मुड़ल कथा भोर होइते बाट धऽ लेलक—गामसँ अधबनल पुल धरि। नामक गणराज्यक पहिल पाठ पूरा भेलाक बाद बच्चा सभकेँ लगल जे ‘उपस्थित’ कहि देबामे कथा पूरा नहि होइत। जे नाम उपस्थित भेल, ओकर देह कोना चलल, ओकर पएर कोन माटि पर पड़ल, ओकर श्रम कोन पुलक भीतर गाड़ल गेल—ई सभ सेहो सुनबाक चाही।

पुल दूर सँ देखाइत छल—लोहा, बालू, सिमेंट, सरकारी रंग, उद्घाटनक फीता, आ धूपमे चमकैत पथरीला पाट। मुदा जतेक

नजिक जाएब, ओकर देहमे कतेक थाकनि देखाइ पड़ैत। पाया लग माटि एखनहुँ अजगुत ढंग सँ धँसैत छल, जनु भीतर किछु अटकल हो।

सभ सँ आगाँ एक बूढ़ आयलाह—मुन्ना पासवानक काका। हुनकर पएरमे चप्पल नहि छल। पएरक तरबा फाटल, एड़ी चिरल, अँगूठाक नख टेढ़, मुदा चालमे एक अजगुत स्थिरता।

आरुणि पुलक पाया छलक। ओकरा सिखाओल गेल छल जे भार, गहराइ, मिश्रण, अनुपात, खिंचाव, दबाव मापल जाए। मुदा ओकरा केओ नहि सिखौने छल जे श्रमक अपमान सँ पुलक आत्मा खोखर भऽ जाइत अछि।

ओहि समय दूर सँ चन्द्रपाल बत्राक लोक सभ आयल। हुनका सभ लग छोट पट्टिका छल—‘शहीद श्रमिक स्मृति-देवाल’। पट्टिकाक नाप तय, जगह तय, अक्षर तय।

दुपहरिया धरि पुलक पाया लग पातक एक नमहर पथ बनि गेल। ओ पथ पानि दिस जा रहल छल, फेर चन्ना गाछीक टूँठ दिस मुड़ैत छल। जनु मजदूर सभक पएर पुल बना कऽ नदी पार नहि गेल।

सत्यव्रत मेहता पाछाँ ठाढ़ देखैत रहलाह। हुनका न्यायालयक असंख्य हलफनामा मोन आयल। कतेक गवाही कागज पर सही, मुदा जीवनसँ झूठ।

जखन सभ घर घुरए लागल, तखन पुलक दिशासँ एक मजदूरक चप्पलक आवाज देर धरि सुनाइ दैत रहल। कदाचित जड़िक भीतरक स्मृति। कदाचित ओ मजदूर सभ, जिनकर पगार अटकल, नाम मेटल, देह डूबल, मुदा पएर एखन धरती पर घुरि रहल छल।

अनन्या घर घुरैत-घुरैत कहली, ‘काल्हि पाठशालामे फोनक पर्दा बन्द रहत।’ देविका पूछली, ‘किएक?’ अनन्या उत्तर देली, ‘आइ पएर पढ़लहुँ। काल्हि आँखि आ कान फेर खोलबाक चाही। जे फोनक पर्दा दिन भरि मोन चिबैत अछि, ओकरा एक दिन उपवास कराएब।’ बच्चा सभ ‘कबड्डी’क साँस रोकने हँसल।

छोट लोकगीत

राखू हे परदा, एक दिन आराम पर राखू हे,
आँखिक अँजुरी भरि गाछी-अकास ताकू हे।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

एक दिन परदा विश्राम लए, आँखि गाछी जाए,
माटिक रंग, पातक नस, बादरक चाल निहारै।

अध्याय ८७

स्क्रीनक उपवास

एक दिनक फोनक पर्दाक उपवाससँ कानमे अपनहि साँसक आवाज
घुरि अबै छै।



घोषित उपवासक भोर अपने सँ पहिने गामक कानकें जगौलक। मजदूरक पएक माटि सुखायलो नहि छल कि नारिकेल पात पाटशालाक बच्चा सभ अगिला निश्चय कऽ लेलक—एक दिन गढ़ नारिकेलमे फोनक पर्दाक उपवास होएत। उपवास भोजनक नहि, दृष्टिक।

ई प्रस्ताव सुनिते गाम दू भागमे बाँटि गेल। कियो कहलक—‘फोन बन्द? तखन खबर कोना भेटत?’ कियो कहलक—‘दुकानक लेन-देन?’

अनन्या ठूँठक कात एक छोट माटिक घड़ा राखली। ओकरा नाम देल गेल—‘फोनक पर्दा-घड़ा।’ जे स्वेच्छासँ अपन फोन, पुरान यंत्र, टूटल टैबलेट, खेलबला छोट काँच, जे किछु हो, एक दिन लेल जमा करए चाहैत, से ओहि घड़ाक लग कपड़ाक थैलीमे राखैत। ककरो बाध्य नहि कएल गेल।

पहिने देविका अपन फोन राखली। ओकर चेहरा पर हलुक काँप छल, कारण ओहि यंत्रमे उज्ज्वलक अन्तिम संदेशक छाह अबैत-जाइत रहैत छल। ओ थैली बाँधैत कहली—‘एक दिन ओकरा सेहो विश्राम।’ मीरा अपन यंत्र राखैत कहली—‘जे दृष्टि हमरा कखनो बेचल चाहलक, ओकरा आइ आँखि बन्द।’ सौम्या किछु देर हिचकिचेली।

साँझ होइत-होइत गाममे पुरान गीत घुरल। जे गीत विवाहमे बजैत-बजैत फोनक तेज धुनमे दबि गेल छल, से बुजुर्ग स्त्री सभक गला सँ निकलल। किछु पंक्ति पूरा छल, किछु आधा।

ब्रूमक दलक शोधार्थी सभ चकित छल। हुनका सभकँ ‘यन्त्रपर चलयवला डिटाॅक्स’ शब्द बूझल छल, मुदा गढ़ नारिकेलक उपवास ओहि शब्दक भीतर समाए नहि। एतय लोक स्वास्थ्य-फैशन लेल फोनक पर्दा बन्द नहि केने छल।

रातिक अन्तिम पहरमे, जखन सभ थाकल आ प्रसन्न छल, अनन्या अकास दिस देखली। चन्ना गाछीक छाँह कटि गोलाक कारण एखन अकास पूरा खुलल छल। विनु फोनक पर्दाक आँखिकँ अन्हारमे देर लागल, फेर तारा एक-एक कऽ फूटल—जेना आँखियो अपन उपवास तोड़ि रहल हो।

ईरा ओहि हरियर बिन्दु दिस देर धरि तकैत रहली। ओकर मनमे विदेशमे बसल गढ़ नारिकेलक बच्चा सभ आयल—जे मैथिली आधा बुझैत, गामकँ चित्रमे देखैत, आ जड़िक दुखकँ कथा मानैत छल। ओ रातिए निर्णय कएली जे ओ हुनका सभकँ पत्र लिखत।

घड़ाक कातमे राखल बाक चश्मा, सत्यव्रतक फोन, देविकाक यंत्र, मीराक डोरी, आ बच्चा सभक बही चाँदनीमे एक्के संग चमकि रहल छल। फोनक पर्दाक उपवास समाप्त भेल, मुदा ओकर भूख मेटल नहि। लोक बुझि गेल—एक दिनक मौन पर्याप्त नहि।

छोट लोकगीत

लिखू हे पाती, परदेसियाकँ लिखू हे,
आँगनक हँसी, कोपलक खबरि—सभटा भरू हे।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

परदेसक बच्चाकें लिखू—आँगन एखन हँसै,
कटल टूँठकोपल फुटल, तुलसी पात बसै ।

अध्याय ८८

ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभकेँ

पत्र पहुँचल कि नहि से डाकघर नहि कहत— उत्तर अपने बाट
ताकि लै छै।



ओ पहिल पंक्ति, जे भोरसँ पहिने लिखायल छल, आब अपन पूरा पत्र माँगि रहल छल। फोनक पर्दाक उपवासक दोसर भोरमे गामक आकाश किछु बेसी साफ बुझाइत छल। जे दिन भरि फोन बन्द रहल छल, ओहि दिन लोकक कानमे अपनहि देहक आवाज फेर घुरि आयल छल—साँसक, पगक, चरखी पर चढ़ैत पानिक, चूल्हि पर चढ़ल भातक, आ बच्चा सभक कबड्डीक।

ईरा ओहि बिहान नारिकेल पात पाठशालाक बरामदामे बैसली। सोझाँ कटल चन्ना गाछीक टूँठ, ओकर एक कात हरियर बिन्दु,

दोसरा कात नामक पाथर। ओहि पाथर सभक बीच किछु पाथर एहन छल जकर नामक उच्चारण विदेशमे जन्मल बच्चा सभ नहि कऽ पवैत छल।

पत्रमे ईरा लिखली जे गामक माटि केवल चूल्हि, पोखरि, आम, पान, मछरी आ पानक रसक स्मरण नहि। गाम ओहो ठाम अछि जतय मजदूरक पएर पुलक पाया तले दबल, जतय यन्त्रपर चलयवला ठगीमे युवकक मन डूबल, जतय स्त्रीक अपन निजी बातक अधिकार पर चित्र खींचयवला यन्त्र लपकल, जतय अदालत बरख चिबा गेल, जतय चन्ना गाछीक अन्हारमे नाम सभ प्रतीक्षा करैत रहल। अहाँ सभ जाँ एहि गामक वंशज छी, तँ अहाँक पहिल काज एतयक दुखकें दृश्य बनाब नहि, श्रव्य बनाब—पहिने सुनू।

साँझमे पहिल पत्र समुद्र पार गेल। न दिसल, न उगल, न पाखी भेल। मुदा चन्ना ठूँठक हरियर बिन्दु पर हलुक उजास पड़ल।

दू दिन बाद उत्तर आयल। पहिल उत्तर टोरन्टोक एक बालकक छल, जकर नाम घरमे ‘नील’ कहल जाइत, मुदा दादी ओकरा नीलकंठ कहने रहथि। ओ लिखलक—‘हम गढ़ नारिकेल कखनो नहि आयल छी।

बटुकनाथ हरिहरनक लोक-स्मृति न्यासक लोक एहि पत्र सभक सूचना पाबि उत्साहित भेल। हुनका सभ लगल—विदेशी बालक सभ, प्रवासी परिवार, दान, मंच, सम्मेलन, प्रसारण—ई तँ स्मृतिकें संस्थाक करबाक अवसर अछि। मुदा ईरा पत्रक नीचाँ स्पष्ट लिखने छली—‘ई पत्र कोनो न्यास, संस्था, मंच, पुरस्कार, दान-आह्वान, या सांस्कृतिक तमाशाक कच्चा माल नहि।

एडवर्ड बूमक शोध-दल सेहो एहि उत्तर सभमे रुचि लेलक। हुनका सभक कहब छल—“प्रवासी-स्मृति सञ्जाल।” ईरा उत्तर देली—‘जाल कहब तँ फेर तार, जानकारी, अनुदान आ स्वामित्वक भाषा आओत। हम एकरा साँसक शृंखला कहैत छी।’ अनुवादक अटकि गेल।

देर राति सत्यव्रत उत्तर लिखलाह—‘जन-सुननाइ केवल उपस्थित देह लेल नहि, उपस्थित ऋण लेल सेहो होइत अछि। जाँ गढ़ नारिकेल चाहए, तँ अगिला सुननाइमे दूरक बच्चा सभक पत्र पढ़ल जाए।’ ओ पत्र मोड़ि पठा देलाह।

चन्ना गाछीक टूँठक चारू कात अगिला भोर जखन बच्चा सभ जुटल, अनन्या बही खोलि शीर्ष लिखली—‘सत्यव्रतक जन-सुननाइ।’ ईरा दूर देशक पत्र सभ कातमे राखली। कटल टूँठक हरियर बिन्दु दू पातमे बदलि रहल छल। आ गाम बुझि गेल—आब सुननाइकेँ सीमा नहि रहल।

छोट लोकगीत

दिअ हे आसन, अनसुनाकेँ पहिने दिअ हे,
बीच मे टोकू नहि, कथा पूरा सुनि लिअ हे।
जे सुनल नहि गेल, ओकरा पहिने आसन दिअ,
बीचमे टोको नहि, पूरा कथा कहबाक मान दिअ।

अध्याय ८९

सत्यव्रतक जन-सुनवाई

जन-सुनवाईमे सभसँ पैघ गवाही ओकर होइ छै जे आइ धरि
सुनले नहि गेल ।



बहीक ओ नव शीर्ष लिखाइते सुननाइक दिन अपने सोझाँ आबि
गेल। ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभ धरि पहुँचल कि नहि, से
कोनो डाकघर प्रमाणित नहि कऽ सकल। मुदा ओहि पत्रक उत्तर
गढ़ नारिकेलमे अजगुत तरहँ आयल।

ईरा ओ नक्शा नारिकेल पात पाठशालाक देवाल पर टाँगि देली।
बच्चा सभ पहिने हँसल, कारण शहरक बीचमे दादीक नाम

राखबाक जगह ककरो बुझाइट नहि छल। मुदा हँसी तुरन्त चुप्पीमे बदलि गेल।

तहिये सत्यव्रत मेहताक जन-सुननाइक दिन निश्चित भेल। जन-सुननाइ—ई शब्द गढ़ नारिकेलक लोक पहिने भय सँ सुनैत छल। सरकारी जन-सुननाइमे मंच ऊँच रहैत, कुर्सी पर अधिकारी, माइक पर सभक सामने कहल बात, पाछाँ पुलिस, आगाँ कागजक गट्टर।

अनन्या, देविका, मीरा, ईरा, आरुणि, सौम्या, गोप कुमार आ कतेको स्त्री-पुरुष एक गोलमे बैसल। बीचमे तीनटा वस्तु राखल गेल—पुरान बही, चन्ना गाछीक सूखल पात, आ एक खाली माटिक कटोरा। बैसल लोकक तर घासक नोक जाँघमे गड़ैत छल—छोट-छोट काँट जकाँ, जे कोनो कुर्सी कहियो नहि सिखौने छल।

सत्यव्रत पूछलखिन, ‘एहि उत्तरकै कोन कोटिमे लिखब?’ गोप कुमार कहलाह, ‘प्रवासी स्मृति।’ मीरा कहली, ‘मञ्जूरी सहित लिखल जाए।’ बा कहलीह, ‘बच्चाक दादीक नाम पहिने, श्रेणी बादमे।’ अन्तमे बहीमे लिखल गेल—‘दूर जन्मल बच्चाक प्रश्नः नामकै उच्चारण चाही, वर्तनी मात्र नहि।’

तेसर गवाही मजदूर सभक परिवारक छल। पुलक पाया सँ माटि अनबाक बाद जे नब हिम्मत आयल छल, से एखन शब्द बनल। एक युवक कहलक, ‘हमर बाबू कागच पर अस्थायी मजदूर छल।

मध्याह्नमे राघव ‘संकेत’ सोमानीक एक पुरान संदेशक प्रति गोप कुमार अनलाह। संदेशमे लिखल छल—‘भावनाकै सामग्रीमे बदलू, सामग्रीकै निधिमे, निधिकै नियंत्रणमे।’ लोक पढ़ि कऽ बुझि गेल जे स्मृति पर बाजारक योजना शब्दक भीतरहि नुकायल छल। सत्यव्रत एहि वाक्यक पाछाँ लिखलनि—‘लोक-स्मृतिकै सामग्री कहब, दोसर हत्या।’ अनन्या मुस्कुरायली।

रातिक अन्तिम पहरमे सभ विदा भेल। ठूँठक चारू कात पाथर, पात, कटोरा, बही आ बच्चा सभक लिखल नियम रहि गेल। चन्द्रमा ऊपर छल, मुदा ओकर इजोत एखन आदेश जेकाँ नहि, पठन-दीप जेकाँ लागैत छल।

सत्यव्रत मेहता जेतबा दूर गेलाह, ओतबे हुनका कानमे बच्चा सभक लिखल पंक्ति बजैत रहल—‘नामक पहरा लेल नियम चाही।’ ओ जानैत छलाह जे अगिला दिन एहि नियमक नाम

माँगल जाएत। कियो ओकरा प्रस्ताव कहत, कियो विधान, कियो लोक-लिखित शपथ। मुदा चन्ना गाछीक टूँठ जानैत छल—ई एक छोट साझा नियम-पोथीक पहिल साँस अछि।

छोट लोकगीत

पढ़ू हे पातक नस, धरतीक विधान पढ़ू हे,
बिनु मोहरक ई साझा नियम-पोथी माथ पर धरू हे।
सूखल पातक नस-नसमे नदीक बाट बनल,
प्रकृतिक साझा नियम-पोथी बिना मोहरो मानल।

अध्याय १०

नामक संविधान

साझा नियम-पोथी सूखल पातपर सेहो लिखा सकैए— जँ
लिखनिहार बच्चा होथि।



ओ पहिल साँस भोर होइते अपन देह ताकए लागल—सूखल पात, कापी आ कलमक बीच। जन-सुननाइक दोसर दिन नारिकेल पात पाठशालामे कोनो पाठ नहि पढ़ाओल गेल। बच्चा सभ कापी खोलि बैसल छल, मुदा मास्टरक हाथमे पाठ्यपुस्तक नहि, चन्ना गाछीक टूँठसँ झडल सूखल पात छल।

अनन्या तुरन्त पूछली, ‘की लिखल जाएत?’ मास्टर उत्तर देलखिन, ‘जे नियम अहाँ सभ अपन नाम-पहराक लेल बनाओब।’ बच्चा सभ पहिने हँसल। नियम कहिते हुनका सभकें स्कूलक डाँट,

नगरक सरकारी दफ्तरक नोटिस, अदालतक तारीख, आ चन्द्रपालक फोन साधनक शर्त मोन पड़ल। मुदा मास्टर फेर कहलखिन, 'ई नियम ऊपरसँ नहि आएत।

पाँचम नियम गंगेशक प्रश्न सँ जन्मल। अनन्या लिखली — 'जातिक नाम पर न्यायक हत्या नहि होएब।' ई सुनिते किछु बूढ़क चेहरा कठोर भेल। ककरो लग ई वाक्य बहुत तीख लगल।

तेरहम नियम पर बहुत बहस भेल—'क्षमा कोना?' बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव, लाउ, ब्रूम—एहि सभक नाम हवामे घूमल। किछु बच्चा कहलक—'क्षमा नहि।' किछु कहलक—'दण्ड।' बा कहलीह—'क्षमा घोषित नहि होइत। सुननाइ सँ धीरे-धीरे जन्मैत अछि।' अन्तमे लिखल गेल—'क्षमा मंच पर नहि, नाम सुनबाक श्रममे खोजल जाएत।

चौदहम नियम भविष्य पर छल—'बच्चा पहरुआ, बूढ़ साक्षी, स्त्री विधान-धारक, मजदूर माटिक मालिक।' ई पंक्ति ककरो मुँहसँ पूरा नहि आयल। एक बच्चा 'बच्चा पहरुआ' लिखलक, बा 'बूढ़ साक्षी' जोड़लीह, मीरा 'स्त्री विधान-धारक', आरुणि 'मजदूर माटिक मालिक'। एहि नियममे गढ़ नारिकेलक नब समाजक बीज पड़ल।

जखन नियम सभ लिखि चुकल, तखन प्रश्न उठल—एहि साझा नियम-पोथी पर मोहर के देत? नगरक सरकारी दफ्तरक? सत्यव्रत चुप रहलाह।

दूर कतहु बटुकनाथ हरिहरनक घरमे हुनकर संतान ओहि साझा नियम-पोथीक नकल पढ़ि रहल छल। चन्द्रपालक यंत्रमे 'नाम नहि मेटाएब' पंक्ति बेर-बेर चमकि रहल छल। राघवक विनु-जाल फोन पर 'मौन सेहो उपस्थित' अटक गेल।

गढ़ नारिकेलमे एहि राति कियो धूर्त सभकेँ सभामे नहि बजौलक। नियम बनल, गवाही लिखल गेल, अँगूठा लागल, नाम पढ़ल गेल—मुदा अपराधी सभ अनुपस्थित रहल। आब अगिला प्रश्न उठबाक छल—जखन समाज अपना साझा नियम-पोथी बना लेत, तखन धूर्त सभक अनुपस्थिति दण्ड अछि कि नब षड्यंत्रक शुरुआत?

चन्ना टूँठक जड़ि राति भरि हलुक-हलुक गरम रहल। बच्चा सभ बारी-बारी पहरा दैत रहल। साझा नियम-पोथीक पहिल पन्ना पर दीपक इजोत काँपैत छल, आ अन्तिम खाली पन्ना पर किछु

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

अदृश्य हाथ लिखबाक प्रतीक्षा करैत छल—‘जे अनुपस्थित अछि, ओकरो नाम पूछल जाएत ।’

छोट लोकगीत

भरू हे चौपाल, कुरसी खाली रहौ हे,
जनक जागल घेरा मे काजक धार बहौ हे ।
कुरसी खाली हो तइयो चौपाल भरल रहै,
पदधारी नहि आयल तँ जनक काम नहि बहै ।

अध्याय ११

धूर्त सभक अनुपस्थिति

धूर्तक अनुपस्थिति सेहो उपस्थिति थीक— खाली कुरसी सभसँ जोरसँ बाजै छै।



नामक साझा नियम-पोथीक पन्ना सूखए धरि कटल चन्ना टूँटक चारू कात एक विचित्र शान्ति पसरल रहल। बच्चा सभ जे नियम लिखने छल—नाम नहि मेटाएब, अपन निजी बातक अधिकार नहि बेचाएब, देहक अपमान नहि होएब, स्मृति पर ठेका नहि लगएब—से नियम कागच पर मात्र नहि, लोकक चेहरा पर उतरि रहल छल। जकर आँखि पहिने डर सँ झुकैत छल, से आब पढ़ैत छल।

सभाकेँ आव अगिला प्रश्न घेरलक—जे लोक एहि सभ दुःखक मूलमे रहल, ओकरा सभकेँ बजाओल जाए कि नहि? बटुकनाथ हरिहरन, चन्द्रपाल बत्रा, राघव संकेत सोमानी, लाउ किन-हंग, एडवर्ड ब्रूम—ई नाम सभ जेना कागचक किनार पर काँट जेकाँ अटकल छल। किछु युवक कहलक—‘बजाबी, सभहक सोझाँ उधारि देब।’ किछु स्त्री कहलीह—‘नहि, सभाकेँ फेर ओही सभक मुख देखबाक दण्ड किएक?’ बच्चा सभ चुप रहल।

अनन्या बही खोलि गंगेशक पन्ना तकली। तत्त्वचिन्तामणि नामक न्याय-पोथीक कथा जखन चन्ना टूँठक बीच आयल छल, तखन बच्चा सभ ‘नहि होएब’ शब्द सुनने छल। जे नहि अछि, तकरो प्रमाण होइत अछि—ई बात ओकरा सभक मनमे अटकले छल।

चन्द्रपाल बत्रा अपने फोन पर चन्ना गाछीक दृश्य ताकैत रहल। मोबाइल साधनमे सूचना आबएबाक चाही छल—‘विशेष लाइव गवाही’। मुदा फोनक पर्दा शान्त।

एडवर्ड ब्रूमकेँ ई समाचार अपन परामर्शदातासँ भेटल। ओ हँसल—“स्थानीय भावुक राजनीति।” मुदा जखन रिपोर्टमे लिखल आएल जे सभा बिनु मंच, बिनु निधि, बिनु ब्राण्ड, बिनु विदेशी साझेदारी चलि गेल, तखन ओकर हँसी रुकल। ई ओकर प्रशिक्षणक बाहरक बात छल।

मीरा कहली—‘जखन हम सभ हुनका सभकेँ नहि बजबैत छी, तखन ई कायरता नहि?’ अनन्या उत्तर देली—‘नहि। जखन आवश्यक होएत, नाम लेल जाएत। मुदा आइ हुनका सभक आँखि सँ हम अपन घाव नहि नापब।’

अनन्या पाथर उठा कऽ छाँह पर राखली। दोसर बच्चा दोसर पाथर राखलक। तेसर बच्चा कहलक—‘पाथर पर नाम अछि, छाँह टिकि नहि सकत।’ धीरे-धीरे सभ अपराधी-छाँह पाथरक घेराक बाहर धकेलायल।

दुपहरिया बीतल, साँझ उतरि गेल, मुदा टूँठक पश्चिमी किनार सँ एक नमहर अन्हार टुकड़ा पसरैत रहल। सभ पूछलक—गाछि तँ कटि गेल, एतेक छाँह कतए सँ? कटल जड़िक ऊँचाई एतेक नहि जे एहन नमहर छाह पड़ए।

अनन्या बहीमे अगिला शीर्षक लिखली—‘टूँठक छाँह।’ कारी पृष्ठ बन्द भेल। नामक पाथर सभ अपने-अपने स्थान पर स्थिर

भेल। धूर्त सभ अनुपस्थित रहल, मुदा हुनकर छाँह अगिला दिनक पाठ बनि गेल।

छोट लोकगीत

बैसू हे छाहरि मे, नान्हियो छाहरि मे बैसू हे,
टूँठक कान पैघ छै—अपन कथा परसू हे।
गाछ कटल, टूँठ बचल, छाह नान्हि सही,
ओहि छाहमे कान पैघ, सुनवाई रुकत नहि।

अध्याय १२ ढूँठक छाँह

ढूँठक छाँह छोट, मुदा ओहिमे बैसनिहारक कान पैघ भऽ जाइ छै।



धूर्त सभक अनुपस्थितिक बाद गाममे जे शान्ति उतरि आयल छल, से शान्ति आरामक नहि, सुननाइक छल। सभा समाप्त भेलाक बादो लोक ढूँठक चारू कात सँ तुरन्त उठि नहि गेल। जकरा सभकेँ आबय कहियो रोकल नहि गेल छल, ओ सभ नहि आयल।

चन्ना गाछीक विशाल देह आब नहि रहल, मुदा कटल ढूँठक छाँह अस्वाभाविक रूपेँ नमहर पड़ैत छल। धूप माथ पर छल, तथापि छाँह ओहि दिशामे सरकैत जाइत छल जइ दिशामे कमला-

बलानक पुरान धारा कखनो बहैत छल। आरुणि पहिने सोचलक—
धरती असमतल अछि।

गंगेशक प्रश्न फेर उठल। एक छोट बालक, जे पाठशालामे
न्यायक तर्क-विचारक नाम सुनि चुकल छल, छाँहकँ देखैत
पूछलक—‘छाह प्रमाण अछि कि नहि?’ सभ हँसि देबाक छल,
मुदा अनन्या हँसल नहि। ओ कहली, ‘आँखिसँ देखल ज्ञान छाह
अछि।

बटुकनाथक संतान दूर सँ आयल। ओ सभामे भाग नहि लेने छल,
मुदा आब ठूठक छाँहकँ देखए आयल। ओकर हाथमे बापाक पुरान
कलम छल।

साँझसँ पहिने चन्द्रपाल बत्राक अधूरा नामक कागच कियो आनि
देलेक। कागच पर चारि बेर नाम शुरू भेल छल, चारू बेर ‘सयमे
भाग’ बनि गेल छल। बच्चा सभ कागच पढलक, ओकरा हँसीमे
उडेलक नहि।

ब्रूम अपन परामर्शदाता सभसँ कहल—“स्थानीय मनोविज्ञान,
छाया-अनुष्ठान, सामुदायिक बिम्बावली।” ओकर सचिव लिखैत
रहल। मुदा जखन ओ ‘छाया’ बाजल, तखन ओकर लैपटॉपक
परदा कारी भऽ गेल आ ओकरा अपन दान-पत्रक भीजल स्याही
देखाइ देलक। स्मृतिपर ठेकाक बोली, दान, शोध, पुरखाक धरोहर
आ फोन साधन—सभ अपन-अपन भाषा लऽ कऽ आयल छल।

सत्यव्रत मेहता अपना झोरा सँ पुरान शपथपत्रक खाली कागच
निकाललनि। कहलखिन, ‘कागच राजकाजक छल, आब
लोककाजक हो।’ मीरा कपड़ा काटि पट्टी बनौली। देविका नाम
पढ़ैत गेली।

ठूठक छाँह धीरे-धीरे पानिक दिशामे पसारि गेल। ओहि छाँहमे
धूर्त सभक अनुपस्थिति, बच्चा सभक पहरा, गंगेशक प्रश्न, स्त्री
सभक शपथ, मजदूरक पएर, फोनक पर्दाक उपवास, आ नामक
साझा नियम-पोथी सभ एक साथ ठाढ़ रहल।

आ पानि, जे एखन धरि गन्ध छल, आब घुरि रहल छल।

छोट लोकगीत

गाबू हे चौमासा, बाढ़ियो मे मंगल गाबू हे,
ऊँच मचान, बीजक डिब्बा, नाव सजाबू हे।
बाढ़ि फेर आयल तइयो नाव तैयार राखू,

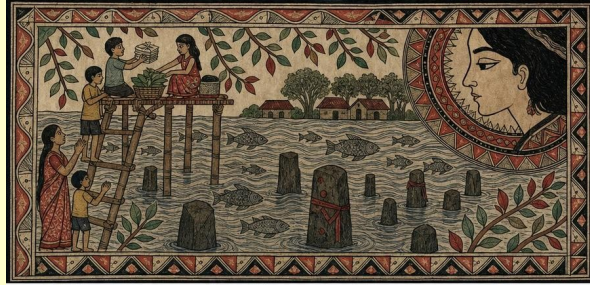
गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

ऊँच मचान, बीजक डिब्बा, संगक हाथ सम्हारू।

अध्याय १३

पुनः बाढ़ि

नदी चुप्पीमे विश्वास नहि करैत— ओ फेर आबि कऽ पुरान
हिजाब खोलि दै छै।



टूँठक छाँह जतेक दूर पसरल, ओतेक दूर धरती शान्त देखाइत
छल। मुदा कमला-बलानक पानि चुप्पीमे कखनो विश्वास नहि
करैत। ओ नदी जे बरखों धरि गामक कछेरामे स्मृति, देह, नाम,
हड्डी, माटि आ चुप्पी सभ उठबैत-डुबबैत रहल छल, ओहि दिन
फेर दूरसँ भारी गन्ध पठओलक—भीजल कादो, टूटल बाँस,
भासैत पात, आ अघाएल आकाशक गन्ध।

पहिने बादर आबि चन्ना गाछीक कटल टूँठ पर झुकल। ओहि टूँठ
पर जे हरियर बिन्दु फूटल छल, से बून्दक पहिल चोट पर काँपि

उठल, मुदा टूटल नहि। बच्चा सभ ओकर चारूकात माटि चढाओलक।

देविका आ निशान्त फोनक पर्दाक उपवासक दिन बनाओल बाल-मण्डलीकेँ फेर जमा कयलक। एहि बेर फोन बन्द नहि, पर नियन्त्रित। जे खबर देबाक, से देब।

एहि तैयारीक बीच पहिल बून्द नहि, पहिल थप्पड़ पड़ल। आकाश सँ पानि एना टूटल जेना ककरो पुरान बाँध खुलि गेल हो। कच्चा घरक छप्पर गरजल, पोखरि भरि उठल, गलीमे पानि पसरल।

तखन बूढ़वा भूत देखाइ पड़लाह। एहि बेर धुँआ नहि, न झिलमिल। बरखा बीच ओ जतेक साफ देखाइ पड़लाह, ओतेक कखनो नहि।

सत्यव्रत मेहता विद्यालय भवनमे अस्थायी सुननाइ-कोन बनौलथि। जे परिवार पानिसँ भागि आयल, ओकर नाम पृच्छल नहि गेल। ओकरा पहिने सुखाओल गेल, गरम पानि देल गेल।

मध्यराति, जखन पानि कान्ह धरि बढबाक भय जगावय लागल, तखन चन्ना टूँठसँ अजीब इजोत उठल। हरियर बिन्दु जे कोंपल बनए चाहैत छल, ओ पानिक भीतरसँ झिलमिलायल। ओ इजोत साँस लैत जेकाँ कखनो मद्धिम, कखनो गाढ़ होइत छल, आ ओकर हरियर आभा पानिक काँपैत सतह पर टूटि-टूटि पसरैत छल।

भोरक ठीक पहिने, बरखा कने थमल। धुँधलकामे लोक देखलक— पानिक सतह पर किछु लम्बा कारी आकार धीरे-धीरे बहैत अछि। पहिने कियो लकड़ी बुझलक, फेर कियो साँस रोकलक।

कबड्डी पानिमे उतरि गेल छल। आ कमला-बलानक धूसर धारिमे, कटल चन्ना गाछीक छाँहक पार, गोहि सभक पहिल पाँखुर फेर चमकल। अगिला सुननाइ पानिक तलसँ उठबाक छल।

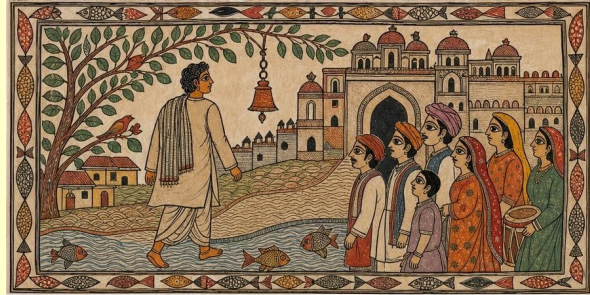
छोट लोकगीत

चिन्हू हे गोहि, दुनू गोहि चिन्हू हे,
पानिक आ छलक—रूप अलग गिनू हे।
पानिक गोहि प्रकृतिक, छलक गोहि अलग,
रूप चिन्हू, नदीकेँ दोष नहि दिअ गलत।

अध्याय ९४

गोहि सभक वापसी

दिनमे पानि मटियाल, रातिमे कारी तेल— गोहि रंग नहि बदलैत,
इजोत बदलै छै।



जे सुननाइ पानिक तलसँ उठबाक छल, तकर पहिल गवाही बाढिक दोसर राति भेटल। ओहि राति पानि अपन असली रंग देखबऽ लागल। दिनमे जे पानि केवल पीयर, मटियाल, दयनीय आ छपछप करैत बुझाइट छल, राति पड़िते से कारी तेल जेकाँ चमकए लागल।

पहिल गोहि केओ नहि देखलक। बस पानिक एक लमछर रेखा चुपचाप कटि गेल। जेना कारी कपड़ापर कियो छुरी बिनु आवाज चला देने हो।

मुदा अनन्या पाछाँ नहि हटली। ओ पाथरक घेरा लग ठाढ़ भऽ कहली—“साँस देखू।” ककरो बुझाइ नहि पड़ल। ओ फेर कहली—“जे खएवा आयल अछि, से जल्दी करैत अछि।

सत्यव्रत मेहता ओहि राति घाट पर पहुँचलाह। पानि हुनकर ठेहुन छूबि रहल छल। लोक हुनका रोकलक—“आगाँ नहि जाउ।” ओ रुकि गेलाह।

बटुकनाथ हरिहरन अपन घरमे मन्त्र पढ़बैत पण्डित लग बैसल छल। पण्डित कहलक—“जलदोष।” हरिहरन सोचलक—ई मामला धार्मिक उपचार सँ सँभलि जाएत। मुदा ओहि क्षण ओकर कानमे चन्ना गाछीक पानिक आवाज आयल—“तिथि नहि, नाम।” ओ कागच उठा कऽ मुकदमेबाजी सोचऽ लागल, मुदा कागच भीजल जेकाँ नरम भऽ गेल।

बा कहलीह—“देखलहुँ? पानि खेलक रेखा खिंचि गेल।” देविका बहीमे लिखली—“गोहि सभक वापसी—देहक भय सँ परे सीमाक पाठ।” मीरा जोड़ि देली—“नामक बिनु सीमा हिंसा। नामक संग सीमा मुक्ति।” ई वाक्य सभ बच्चा दोहरबैत रहल।

ओहि भोर ईराकेँ विदेश सँ सन्देश आयल—कोनो विशाल कम्पनी बाढ़ि-प्रभावित स्मृति-क्षेत्रकेँ “जल-सुरक्षा आ भविष्य-निवास” योजना लेल कीनबाक प्रस्ताव पढौने अछि। प्रस्तावक पाछाँ फेर वैह परिचित छाह—लाउ किन-हंगक धन, ब्रूमक सलाह, चन्द्रपालक स्थानीय जाल। एहि बेर सौदा केवल जमीनक नहि, स्मृतिक बाढ़ि, गोहि सभक कथा, आ बच्चा सभक पहराक छल।

अनन्या पानि सँ भीजल पाथर उठौली। ओकरा पर लिखल अनाम अक्षर एखन साफ छल। ओ ईरा दिस ताकली—“आब ई सभ स्मृति नहि, पानिओ कीनए चाहत।” ईरा उत्तर देली—“तखन अगिला पाठ सौदाक होएत।” टूँठक हरियर बिन्दु पर भोरक पहिल इजोत पड़ल।

एहि तरहँ गोहि सभक वापसी भयक अन्त नहि, अगिला संघर्षक आरम्भ बनल। आब लोभ ओहू सीमाकेँ कीनबाक कागच लऽ कऽ आबएबला छल।

छोट लोकगीत

लिखू हे सीमा, बाजारो मे सीमा लिखू हे,
जे बिकाउ नहि—देह, मञ्जूरी, साँस—रेख खिंचू हे।
अन्तिम सौदामे नाम नहि, जीवन पहिने मान,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

दामक तराजू नापि नहि सकै मनुखक प्राण ।

अध्याय १५

लाउ किन-हंगक अंतिम सौदा

अंतिम सौदामे दाम नहि लिखल जाइ छै— नाम लिखल जाइ छै।



रातिमे लाउ अपन पासपोर्टक पहिल पन्ना खोलि बहुत काल धरि बाल्यकालक नाम देखैत रहल। छोट रहैत ओ एक बेर शरणार्थी शिविरक सूचीमे गलत क्रमांकसँ पुकारल गेल छल। ओ अपमान ओकर भीतर एतेक गहीर बैसल जे बादमे ओ सुरक्षा कें नामहीनता बुझए लागल।

जे कागच सीमा कीनए आवएवला छल, से एखन रस्तेमे छल। एम्हर गोहि सभक वापसीक बाद बाढिक पानि तीन दिन धरि गामक देहरी नापैत रहल। कमला-बलानक धूसर धारि, जे पहिने

खेत आ खपरैल गिनैत छल, आव ठूँठक चारूकात राखल नाम-पाथर सेहो छूएबाक जिद करैत छल।

एहि समय, बहुत दूर, काँचक देवाल सँ घेरल एक ऊँच भवनमे लाउ किन-हंग बैसल छल। ओकर खिड़कीक बाहर समुद्र छल, मुदा ओकर आँखि समुद्र नहि देखैत छल। कमरामे समुद्रक स्वर नहि, केवल यन्त्रक ठण्ढा साँस चलैत छल, आ ओहि ठण्ढामे बाढिक चित्र आओर गरम बुझाईत छल।

सौदा-पत्र गाम पहुँचल तखन बाढिक पानि ठेहुन धरि छल। राघव संकेतक अदृश्य सन्देश पहिने आयल, फेर बटुकनाथ हरिहरनक मोहर, फेर चन्द्रपाल बत्राक परामर्श, फेर ब्रूमक दान-पाँति, आ अन्तमे लाउ किन-हंगक सुथर हस्ताक्षर। पत्रकें प्लास्टिकमे बन्द कऽ नाव सँ आनल गेल, जेना धर्मग्रन्थ हो।

सत्यव्रत मेहता ओतए बैसल छलाह। हुनका लग पत्र पढ़बाक आग्रह भेल। ओ धीरे कागच खोललाह।

गाममे राति गहीर होइत गेल। नाम-पाठ समाप्त भेल तखन अनन्या लाउक पत्र पुनः उठौली। ओकरा पानिमे नहि फेकली, नहि जरओली।

सत्यव्रत मेहता पहिल बेर धीरे मुस्कुरेलाह। ई कानूनक दण्ड नहि छल, मुदा कतेक गाढ़। जे धनसँ सभ वस्तु लऽ सकैत छल, ओकरा धनहीन श्रवणमे बाँधि देब—एहि सँ पैघ दण्ड की?

ओ ठूँठसँ दूर, पानिमे टखना धरि ठाढ़ रहल। कियो स्वागत नहि कयलक। कियो अपमान सेहो नहि।

बाढिक पानि ओहि वाक्य पर कने उठल, फेर शान्त भऽ गेल। गोहि सभक गोलाइ मन्द पड़ल। लाउ किन-हंगक सौदा-पत्र मचान पर भीजल पड़ल रहल, आ बटुकनाथ हरिहरन पहिल बेर बिनु प्रस्ताव, बिनु विधि, बिनु पद, केवल कान लऽ कऽ गढ़ नारिकेलक सम्मुख ठाढ़ भेल।

छोट लोकगीत

लाउ हे संग, क्षमाक संग सुधार लाउ हे,
बोल टा नहि, छीनल हक घुरा कऽ देखाउ हे।
देरसँ आयल क्षमा जँ साँच, संग सुधार लाउ,
केवल बोल नहि, दूटल हक फेर घुरा दियाउ।

अध्याय ९६

बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमा

क्षमा जे देरसँ आबए, से खाली हाथ नहि आबए— अपन विलम्बक हिसाब सडे आनए।



जाहि परीक्षाक प्रतीक्षा छल, ताहि सँ पहिने लाउ किन-हंगक अन्तिम सौदाक बाद गढ नारिकेलमे एक विचित्र शान्ति पसरल। से शान्ति विजयहर्षक नहि छल। ओहिमे बाढिक पानि उतरबाक थकान छल, पाथर पर भीजल नामक गन्ध छल, आ ओहि लोकक साँस छल जे जानि गेल छल जे सौदा मात्र धनसँ नहि, स्मृतिसँ सेहो कएल जाइत अछि।

एहि शान्तिक तेसर दिन बटुकनाथ हरिहरन आयल। पहिने जहिना ओ कोनो सभामे अबैत छल—आगाँ चलैत दू गोटे, पाछाँ कागजक गट्टर, बीचमे ओकर भारी चाल—तहिना नहि। एहि बेर ओ असगरे छल।

ओ टूँठक चारू कात पहुँचि बहुत काल ठाढ़ रहल। बच्चा सभ ओकरा चिन्हलक, मुदा कोनो हल्ला नहि भेल। जे समाज उपहास करए लगैत अछि, ओ अपराधीकें फेर केन्द्र बना दैत अछि।

बटुकनाथ पहिने सत्यव्रत लग गेल। ओकर स्वर पुरान आदतक कारण आदेशक छाह लऽ कऽ निकलल—‘मेहता जी, हमरा किछु कहबाक अछि।’ सत्यव्रत माथ उठौलनि, मुदा उत्तर नहि देलनि। बटुकनाथ फेर कहलक, ‘हम क्षमा माँगए आयल छी।’ एहि बेर सत्यव्रत धीरे कहलनि, ‘हमरा सँ नहि।

बटुकनाथ सुनैत रहल। क्षमा माँगए आएल लोकक स्वर धीरे-धीरे क्षीण होइत गेल। क्षमा शब्द सहज होइत अछि जखन ओ मंच पर कहल जाए।

जखन ‘गंगेश’ नाम आयल, टूँठक हरियर बिन्दु पर चन्द्रमाक हलुक इजोत पडल। अनन्या पढ़ली—‘गंगेश, नव्य न्यायक जनक, जकर जीवनक असुविधाजनक सत्यक सम्मानक नाम पर हत्या कएल गेल।’ बटुकनाथ आँखि मूनि लेलक। ओकरा अपन सभा-भाषण मोन पडल, जाहिमे ओ परम्पराक गौरव पर बजैत छल।

ओ अचानक बाजि उठल, ‘हम अपराधी छी।’ लोक चौंकल नहि। बच्चा सभ सेहो नहि। अनन्या केवल पूछली, ‘ककरा प्रति?’ बटुकनाथ अटकल गेल।

ओहि भोर चन्द्रपाल बन्ना अपन दूर घरमे जागल। ओकर फोन पर राति भरि ककरो सन्देश नहि आयल छल, मुदा खाता-बहीक फोनक पर्दा अपने खुलि गेल छल। प्रत्येक पाँतिमे ‘क्रेडिट’, ‘डेबिट’, ‘सयमे भाग’क ठाम एकहि शब्द चमकि रहल छल—‘माध्यम’।

गढ़ नारिकेलमे ओ समय कियो ई नहि जानैत छल। मुदा बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमा जखन अधूरी छोड़ि देल गेल, तखने कथाक अगिला दरबाजा खुलि गेल—ओहि मनुष्य पर, जे बुझए जा रहल छल जे ओकर पूरा जीवन स्वयं लोभक दोसरक नामपर चलाओल खाता रहल अछि।

छोट लोकगीत

जागू हे भाइ, अपन खाताक मालिक जागू हे,
अनजान धनक बोझ सँ नाम नहि दागू हे।
दोसराक खाता ढोउ नहि, अपन नामक मान,
लेन-देन स्पष्ट राखू, सुरक्षित पहिचान।

अध्याय १७

चन्द्रपालक म्यूल अकाउण्ट

जे दोसराक खाता म्यूल बनौलक, से एक दिन अपनहि जीवनकें
दोसरक नामपर चलाओल खाता बुझि उठल।



चन्द्रपालकें अपन पहिल विद्यालय-दिन मोन पड़ल। उपस्थितिमे
शिक्षक ओकर नाम बिगाड़ि पढ़ने छलाह आ कक्षा हँसल छल।
ओ साँझ धरि रोने छल।

जे दरबाजा खुजल छल, ताहि पार — बटुकनाथ हरिहरन राति
भरि नाम सुनि थाकल छल, मुदा चन्द्रपाल बच्चा ओहि राति
कियो नाम सुनए नहि गेल। ओ अपन पुरान कोठरीमे, जतय
कखनो फोनक पाँच-पाँच परदा खुलैत छल, असगरे बैसल छल।

बन्द कोठरीक बसिआयल हवामे फोनक ठण्ढा प्लास्टिक आ पुरान स्याहीक खट्टा गन्ध मिझरायल छल।

गंगेशक प्रश्न ओहि राति ओकरा बेचैन कऽ रहल छल। तत्त्वचिन्तामणि नामक न्याय-पोथी लिखनिहार गंगेश प्रमाण पूछैत छथि—आँखिसँ देखल ज्ञान की, चिन्ह देखि बुझल बात की, शब्द की, तुलना सँ बुझल बात की। चन्द्रपाल अपन जीवनक प्रमाण खोजलक।

तखन दरबाजा पर दस्तक भेल। केवल दरबाजाक निचला फाँक सँ एकटा भीजल पात भीतर ससरल। पात पर नाम नहि, एक प्रश्न लिखल छल—‘ककर खाता छल?’ ओ उत्तर देबऽ चाहलक—लाउक, राघवक, ब्रूमक, हरिहरनक, सिस्टमक।

चन्द्रपाल पानिमे तैरैत खाता सभकेँ ताकैत रहल। धीरे-धीरे ओकरा देखायल जे प्रत्येक खाता एक छोट गोहि बनि गेल अछि। मुँह खोलि धन नहि, नाम चिबा रहल अछि।

तहिये ओकरा बुझायल—राघवक अगिला सन्देश मेटाइत नहि रहत। जे शब्द अपराधक रक्षा लेल मेटाइत छल, से आब पात बनि चन्ना टूँठ पर चिपकए चाहत। चन्द्रपाल फोन बन्द कएलक।

ओ घरसँ बाहर निकलल। पानि ठेहुन धरि छल। पानि प्रत्येक डेग पर ओकर टखनाकेँ पकड़ि कने-कने पाछाँ धीचैत छल, जेना बाट स्वयं ओकरासँ हिसाब माँगैत हो।

चन्द्रपाल मनमे कहलक—‘हमर नाम पूरा लिखू, मुदा हमर सयमे भाग सेहो लिखू। जकरा मार्फत पाप गुजल, ओकरा केवल पीड़ित नहि, अपराधक बाट कहू।’ ओहि क्षण पानिमे एक हलचल भेल। गोहि देखाइ नहि पडल, मुदा ओकर पूँछक लहरि जेकाँ पानि अलग भेल।

ओ चन्ना गाछीक टूँठ लग पहुँचल तखन राघवक फोन सँ एक अन्तिम चमक उठल। फोनक पर्दा पर कोनो नम्बर नहि, कोनो नाम नहि, केवल तीन शब्द—‘सन्देश नहि मेटत।

छोट लोकगीत

पठाउ हे सन्देश, आशाक सन्देश पठाउ हे,
मेटएबला आखरो मे भोरक बीया लगाउ हे।
अन्तिम संदेश मेटल तइयो पातपर रहि जाए,
हावा पढ़ि कऽ घर-घर आशाक बात पहुँचाए।

अध्याय १८

राघवक अंतिम संदेश

अंतिम संदेश मेटाएल नहि जाइत— ओ पात बनि ठूँठसँ चिपकि जाइत अछि।



राघवक आदत छल—सन्देश पठाउ, मेटाउ, प्रमाण नष्ट करू। मुदा रातिमे ओकरा अपन माएक अन्तिम आवाज मोन पड़ैत, जाहि लिखित हिसाबिगकेँ ओ फोन खाली करैत काल अनजानमे मेटा देने छल। ओहि व्यक्तिगत क्षतिक पीड़ा जानितो ओ दोसराक पुकार मेटबैत रहल।

जे सन्देश पातमे लिखाइत जएबाक छल, तकर आरम्भ ओही राति भेल। चन्द्रपाल बत्रा जखन अपन जीवनकेँ दोसरक नामपर चलाओल खाता बुझि चुकल, तखन राघव “संकेत” सोमानीक

भीतरक जालमे पहिल बेर सूनापनक घण्टी बाजल। चन्द्रपालक सयमे भाग, बटुकनाथक विलम्ब, लाउ किन-हंगक लाभ, ब्रूमक दान—ई सभ कतहु-ने-कतहु राघवक अदृश्य सन्देश सभमे कखनो न कखनो गुजरल छल।

राघव नेत्र मूनि लेलक। ओकर भीतर एक दृश्य खुलल। चन्ना गाछीक टूँठ नहि, अपितु एक विशाल अन्हार कोठरी, जाहिमे हजारो सन्देश पात बनि लटकि रहल अछि।

ओ चन्द्रपालक सन्देश पठाबऽ चाहलक—“तों ठीक कहने रहह, हम सभ खाता छी।” सन्देश नहि गेल। बटुकनाथक लिखलक—“अबेर भेल, मुदा सुन।” नहि गेल। लाउक लिखलक—“लाभक भाषा चन्ना गाछीमे चलैत नहि।” नहि गेल।

राघवक भीतर एक पुरान स्मृति खुलल—बाल्यावस्थामे ओ कागचक पात पर गुप्त लेख लिखैत छल। नेबोक रस, आगिक ताप, नुका कऽ लिखल बात। ओकर पिता कहैत—“रहस्य राखब सीख, तखने संसारमे काज देत।” मुदा चन्ना गाछी कहैत छल—“जे रहस्य मनुष्यक गरिमा बचाबए, ओ संरक्षण।

छोटका बालक पूछलक, “ई कोन नाम?” अनन्या कहली, “ई नाम नहि, स्वीकारक पहिल पात अछि।” दोसर कहलक, “राघवक?” अनन्या उत्तर नहि देली। ओकरा बुझाइत छल—राघवक अपराध छोट नहि, ओकर स्वीकार पूरा नहि। एक पातसँ जंगल नहि बनैत।

भोर धरि पात ओतहि रहल। कोनो जुलूस नहि, कोनो नारा नहि। बा पात देखलीह आ कहलीह, “जकर सन्देश गायब नहि भेल, ओकरा आब नामक अदालतमे ठाढ़ होमए पड़त।” मीरा कहली, “स्वीकार बिनु जिम्मेवारी अधूरा अछि।” देविका जोड़ली, “आत्मा खुलल कहब सहज, जिनकर मोन तोहर गुप्त संकेतसँ चिबायल गेल, हुनका सम्मुख खुलब कठिन।” अनन्या पातक नीचाँ एक पाथर राखली।

एहि उत्तर पर सभ चुप भऽ गेल। राघवक अन्तिम सन्देश टूँठ पर पात बनि रहल, मुदा ओकर छाह सत्यव्रत मेहताक मौन पर पड़ि गेल। जँ राघव अपन गुप्त संकेतक अपराध लिखत, तँ सत्यव्रतक सेहो अपन विलम्ब, अपन नहि-बाजल वाक्य, अपन पदक भीतरक डर लिखए पड़त।

साँझमे पात हलुक हिलल। ओकर हरियर रंग गाढ भेल। अक्षर कने बदलल—“खाता बन्द नहि, आत्मा खुलल”क नीचाँ सूक्ष्म पाँति उभड़ल—“सुनबाक ऋण बाँकी अछि।” अनन्या दीपकें पात आओर लग राखली।

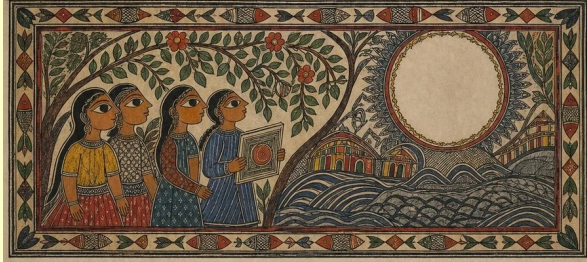
छोट लोकगीत

सुनू हे मौनो, मौनक हाजिरी सुनू हे,
आँखिक भाषा, भीजल पात—संकेत गुनू हे।
कियो नहि बाजै तइयो आँखि कहै—हम छी,
खाली आसन, भीजल पात कहै—हम छी।

अध्याय ११

सत्यव्रत मेहताक गवाही

गवाहीकेँ हवा उड़ाबए चाहलक, पानि गलाबए चाहलक— मुदा
गवाही पात छल, हटल नहि।



गवाही देवासँ ठीक पहिने सत्यव्रत तीन बेर अपन कागच मोड़लनि। हुनका डर छल—साँच बजला पर पद, मित्रता आ पहिलुक निर्णय सभक प्रतिष्ठा टूटत। फेर हुनका अनन्याक बही मोन पड़ल, जाहिमे बच्चा सभ गलती काटि कऽ सही शब्द लिखैत छल।

सुनवाक ओही ऋणक भोर छल। राघवक अन्तिम सन्देश पात बनि चन्ना गाछीक टूँठ पर चिपकल रहि गेल छल। राति भरि

बादिक हवा ओकरा उड़ावए चाहलक, पानि ओकरा गलावए चाहलक, मुदा पात हटल नहि।

बच्चा सभक जन-संहितामे एक पाँति लिखल छल—“जे सुनत, से अपन मौनक नामो लिखत।” ओहि पाँतिकेँ लिखैत काल सभकेँ लागल छल जे ई साधारण नियम अछि। मुदा एखन बुझायल जे ई नियम सभसँ कठिन अछि। अपराधी अपन अपराध नुकबैत अछि।

केवल झोरासँ एकटा उज्जर पन्ना निकाललनि। पन्ना पर कोनो सरकारी शीर्ष, कोनो मोहर, कोनो पदनाम नहि छल। ऊपर ओ लिखलनि—“सत्यव्रत मेहताक गवाही।” फेर किछु काल रुकि गेलाह।

देविका धीरे पूछली, “ई शपथपत्र अछि?” सत्यव्रत माथ उठौलनि—“नहि। शपथपत्रमे लोक सत्य कहबाक शपथ लैत अछि। एहिमे हम मानैत छी जे हम सत्य चुप राखलहुँ।

मुदा गवाही एतबे पर समाप्त नहि भेल। सत्यव्रत अन्तिम भाग लिखैत काल काँपि गेलाह। “हम एहि बातक क्षमा माँगैत छी, मुदा क्षमा माँगनाइ पर्याप्त नहि।

तखन बूढ़बा भूत दिनमे पहिल बेर पूरा आकृतिमे देखाइ पड़लाह। ओ माटिक रंगक छलाह, जकरा पर धूप आ छाँह दुनू पड़ि रहल छल। ओ सत्यव्रत लग अएलाह, पन्ना दिस ताकलनि, फेर कहलनि—“गवाही लिखलहुँ।

राति उतरबाक पहिने सत्यव्रत मेहताक गवाही बहीमे बीचक पन्ना बनि चिपका देल गेल। ऊपर नाम नहि, पद नहि—केवल एक पाँति: “मौन, जे आब सुनबाक दण्डमे बैसल अछि।” बच्चा सभ एक स्वरमे कहलक—“उपस्थित।” टूँठक हरियर बिन्दु उत्तरमे उज्जर होइत बुझायल।

आ दूर बादिक पानिमे, जतय गोहि सभक आँखि कखनो चमकैत छल, ओतय एहि बेर एकटा विशाल छाह उठल—न पूरा गज, न पूरा ग्राह। कथा अगिला साँस लेल मुड़ि गेल, किएक तँ आब नामक पहरुआ सभकेँ हाथ बढ़एबाक बेर आवि रहल छल।

छोट लोकगीत

थामू हो नेना, सत्यक आङुर थामू हो,
गजक बल थाकत, अहाँक हाथ नहि—जानू हो।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

गजक बल थाकि सकै, बच्चाक हाथ नहि,
नान्हि उँगली सत्य पकड़ै, छोड़ै बाट नहि।

अध्याय १००

गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ

गजक बल थाकि जाइ छै, ग्राहक पकड़ि छूटि जाइ छै— बच्चाक हाथ टा नहि थाकैत।



ओहि राति टूँठक चारू कात नामक पाथर सभ घेरा बना कऽ राखल छल। बाढ़िक पानि ओहिमे सँ किछु पाथरक धूलि धो देने छल, मुदा अक्षर नहि मेटायल। अनन्या अपन हथेली सँ एक पाथर पोंछली।

बा कहलीह, ‘आइ गज-ग्राहक कथा फेर कहूँ।’ बच्चा सभ चौंकल। ई कथा ओ सभ सुनने छल—हाथी जलमे उतरैत अछि, ग्राह पकड़ैत अछि, हाथी पुकारैत अछि, आ उद्धार होइत अछि।

मुदा गढ नारिकेलमे कोनो कथा एकहि बेर सुनला पर समाप्त नहि होइत ।

अनन्या पृच्छली, 'गज के? ग्राह के?' बा उत्तर नहि देलीह । ओ केवल पानिक कगार दिस देखलीह ।

चन्द्रपाल बत्राकैं जखन भीतरक जलमे देखल गेल, ओकर गज सयमे भागक डोरीमे बँधल छल । ग्राह ओकर दोसरक नामपर चलाओल खाता नहि, ओकर बेनामी भूख छल । ओ हजार चेहरासँ कमाइत रहल, मुदा अपन चेहरा बिसरि गेल ।

राघव 'संकेत' सोमानीक भीतरक गज आवाजहीन छल । ओकर ग्राह गायब होमएबला सन्देश छल । जे लिखल गेल, से मेटा गेल ।

लाउ किन-हंग दूरदेशक शीशा-भवन सँ देखाइ पड़ल । ओकर भीतरक गज पृथ्वी छोड़ि भागए चाहैत छल । ग्राह ओकर लाभ नहि मात्र, ओकर नामहीन भविष्यक सपना छल ।

कबड्डीक पहिल फेरा अनन्या लेली । ओ रेखा पार कयली, मुदा सम्मुख कोनो मनुष्य नहि, पानिक भीतर सँ उठैत ग्राहक छाह छल । छाहक देहसँ पुरान कागच आ भीजल लोहाक मिझरायल गन्ध अबैत छल ।

भोरक पहिल उजासमे खेल थमल नहि । बच्चा सभ थाकल छल, मुदा रेखा मेटल नहि । पाथर सभ अपन-अपन स्थान पर गरम छल ।

आ गढ नारिकेलक बच्चा सभ, जे गज-ग्राह सँ ई सीखि चुकल छल जे पकड़ि लेब उद्धार नहि, नाम सुनब मुक्ति अछि, अगिला साँस लेल तैयार भेल ।

छोट लोकगीत

दौड़ हो नेना, नामक पारी दौड़ हो,
हँसीक ढाल, जिज्ञासाक तरुआरि जोड़ हो ।
कबड्डी-कबड्डी नेना दौड़ै नामक पारी,
हँसी ओकर ढाल बनल, जिज्ञासा तरवारी ।

अध्याय १०१

अनाम ग्रहक स्वप्न-आमन्त्रण

दूरक आमन्त्रण जँ इतिहास मेटेबाक मूल्य माँगए, तँ ओ यात्रा नहि—विस्मृतिक सौदा अछि।



गज-ग्राहक कथा सुनलाक बाद राति बहुत गहीर भऽ गेल छल। चन्ना गाछीक टूट लग आरुणि बही, फोन आ अधखुला कागजक गट्टर सभक बीच बैसल रहल। फोनक पर्दापर एक विज्ञापन चमकल—“नव-क्षितिज मानव-निवास: दुःख-विहीन नव आरम्भ।” ओ पढ़ैत-पढ़ैत निन्ना गेल।

स्वप्नमे ओकरा एकटा उज्जर ग्रह देखायल। ओतय नदी नहि, श्मशान नहि, गाछक जड़ि नहि। प्रत्येक घरपर नामक बदला संख्या छल।

बा स्वप्नक भीतर नहि अयलीह। हुनकर स्वर मात्र आयल —“जकर नाम नहि, ओकर माथपर हाथ कोना राखबह?” अनन्या तुरन्त पूछली—“ई लोक समान अछि, कि सभकेँ एक्के बेर बेनाम कएल गेल अछि?” ओकर प्रश्न छोट छल, मुदा ग्रहक काँचक गुम्बदमे महीन दरार पड़ल।

मीरा चमकैत दीवारपर लिखल “सांस्कृतिक स्मृति-नमूना” पढ़ली। ओ अपन लाल डोरी मुट्ठीमे कसि कऽ कहली—“हम नमूना नहि छी। हमर कथा हमर मञ्जूरी बिना कतहु नहि जाएत।” सत्यव्रत कानूनक भाषा खोजलनि, मुदा स्वप्नमे धारा-संख्या सभ धुँआ भऽ गेल।

दूर एक काँचक कोठरीमे लाउ किन-हंग साफ खाता देखि प्रसन्न छल। ओकरा लग स्मृतिहीन ग्रह सर्वोत्तम बाजार छल—न मृतकक परिवार, न पुरान करार, न उत्तराधिकार। मुदा जखन ओ हस्ताक्षर करए गेल, ओकर अपन नाम पन्नासँ पोँछि गेल।

आरुणि स्वप्नमे बुझलक—ई कोनो विज्ञान-यात्रा नहि, अपराध-जालक अगिला प्रस्ताव अछि: मनुष्यकेँ सुरक्षित करबाक नामपर ओकर इतिहासकेँ अनुपयोगी बनाउ। ओ उठए चाहलक, मुदा पएरक नीचाँ कबड्डीक एक रेखा चमकल। रेखाक ओहि पार अनाम ग्रह, एहि पार गढ़ नारिकेलक माटि।

अनन्या ओकर हाथ पकड़ि कहली—“रेखा पार करब, मुदा एकटा नाम संग घुर्ब।” ओहि वाक्यसँ स्वप्नक आमन्त्रण परीक्षा बनि गेल। चमकैत ग्रह आव भविष्य नहि, प्रश्न छल।

छोट लोकगीत

दूरक चमक कहए—आउ, सभ घाव बिसराउ,
माटि कहए—नाम बिना कोन ठाम घर बनाउ?

अध्याय १०२

स्वप्नमे ग्रहक बीच कबड्डी

सीमा आकाशक हो वा माटिक—घुरबाक लेल साँस आ नाम दुनू
बचल रहबाक चाही ।



रेखा चमकिते बच्चा सभक छाह स्वप्नक अनाम ग्रहपर उतरि
गेल। देह पृथ्वीपर टूँठ लग बैसल रहल। यात्रा केवल चेतनाक
छल।

खेलक नियम अनन्या बनौलक: जे रेखा पार करत, ओ एकटा
विस्मृत नाम खोजि घुरत। जे नाम बिसरत, ओकर पारी समाप्त।
ओ नियम पढ़ैत काल एक बेर अटकली।

गुम्बदक पहरुआ सभक चेहरा नहि छल। छातीपर क्रमांक छल। ओ सभ पूछलक—“नामसँ दुःख जन्मैत अछि, नाम छोड़ू।” मीरा उत्तर देली—“दुःख नामसँ नहि, नामपर कएल अत्याचारसँ जन्मैत अछि।” ओ अपन छविकेँ दीवारपर चलैत देखली, मुदा एहि बेर मुँह फेरली नहि।

सत्यव्रत सीमा पार करए गेलाह तँ हुनकर मुँहसँ पहिने “अधिकारी”, “साक्षी”, “विधि” निकलल। अन्ततः ओ कहलनि—“हम ओ मनुष्य छी जे देखि कऽ अबेर धरि चुप रहल।” रेखा कने सरकल। कानूनक शब्द तखनहि उपयोगी भेल जखन ओ आत्मस्वीकारक देह पओलक।

आरुणि स्वप्नक माटि पर हाथ रखलक। जानकारी जकाँ साफ, मुदा जीवनविहीन। ओकरा पुलक पाया, मजदूरक गमछा आ फोनक मिटाओल सन्देश मोन पड़ल।

उलटे धीमा होइत गेल। प्रत्येक डेगपर एक प्रश्न, प्रत्येक स्पर्शपर एक नाम। आखिर अनन्या गुम्बदक बीच पहुँचि खाली दीवार छली।

दरारक पारसँ जलक गन्ध आयल। स्वप्नक स्मृतिहीन ग्रहमे पहिल बेर पृथ्वीक पानि प्रवेश कयलक। खेल समाप्त नहि भेल।

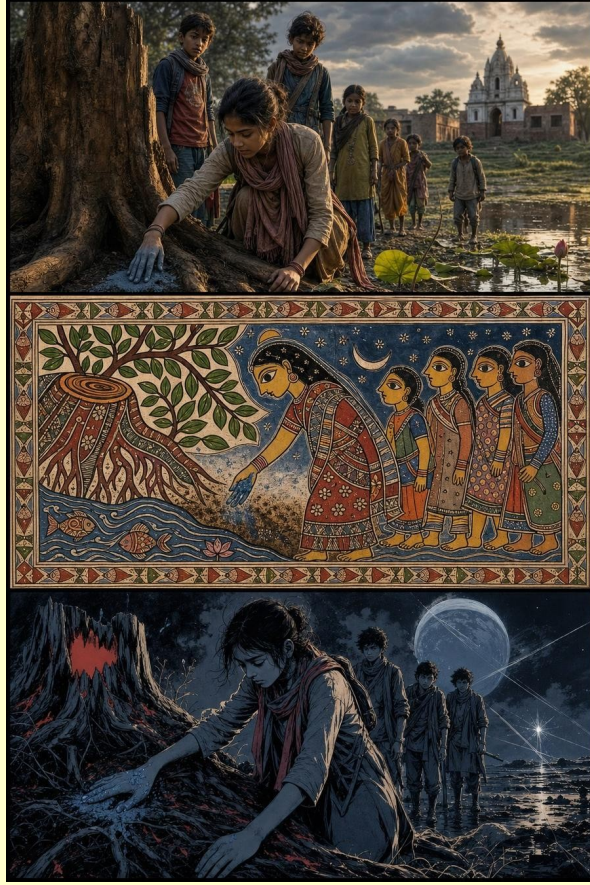
छोट लोकगीत

साँस बान्हू, नाम खोलू, अन्हारक रेखा पार,
जे नाम संग घुरि आए, से जीतल एहि बार।

अध्याय १०३

स्वप्नक अनाम ग्रहपर नाम-पाठ

नाम पढ़ब मृतकैँ गनब नहि—ओकर सम्बन्ध, श्रम आ अधूरा
प्रश्न फेर उपस्थित करब अछि।



दरारक भीतर विशाल सभागार छल। दीवारपर केवल क्रमांक: ३०, ३००, ७९१, ०। पहिल नाम पढ़िते क्रमांकक पाछाँ चेहरा नहि, सम्बन्ध उभरल—ककरो माए देहरीपर दीप लेने, ककरो बच्चा बापसँ नाव खेवनाइ सीखैत, ककरो पत्नी अधूरा मजूरी-पर्चा पकड़ेने।

मीरा ओहि स्त्री सभक नाम पढ़ली जिनकर निजी चित्र धमकी बनाओल गेल छल। प्रत्येक नामक बाद ओ एक वाक्य जोड़ैत

गेली—“हुनकर मञ्जूरी बिना हुनकर कथा नहि।” एहि वाक्यसँ सभागारक चमक कम भेल, मुदा हवा साँस लेबा योग्य बनल।

बटुकनाथ अपन स्वप्न-दरबारमे बैसल छल। ओकर सामने ओकर नाति पूछलक—“बाबा, अहाँ न्याय बचेलहुँ कि पेशा?” ओ उत्तरमे वंश आ शास्त्र कहए चाहलक, मुदा शब्द सभ कागजक गट्टरक कीड़ा बनि झरि पड़ल। ओकरा पहिल बेर अपन लोभसँ बेसी अपन डर देखायल—सम्मान छिनि जाएबाक डर, परिवारक नजरिमे छोट भऽ जाएबाक डर।

चन्द्रपालक चारू कात खाता खुलल छल। प्रत्येक कमिशनक पाछाँ एक आवाज छल—“हमर नाम की छल?” ओ अपन बाल्यकालक ओ दिन मोन कयलक जखन शिक्षक उपस्थितिमे ओकर नाम गलत पढ़ने छलाह आ ओ घर आवि रोने छल। ओही अपमानक स्मृति राखितो ओ हजार लोकक नामकें सयमे भाग बना देने छल।

लाउ किन-हंग सभागारक अन्तिम कात ठाढ़ छल। ओ कहलक—“नाम बाजार रोकैत अछि।” अनन्या उत्तर देली—“हँ, किएक तँ नाम हिसाब माँगैत अछि।” एहि छोट उत्तरसँ ओकर साफ खाता सभपर पानिक दाग पसरि गेल।

आरुणि बहीक खाली पाँति दिस देखलक। ओकरा बुझायल जे यन्त्रपर चलयवला जाँचक अन्तिम लक्ष्य अपराधीक उपकरण नहि, पीड़ितक पूरा नाम अछि। ओ खाली पाँति पर लिखलक—“जेकर नाम एखन नहि भेटल।” दीवारक सभसँ पैघ क्रमांक टूटि गेल।

नाम-पाठक बाद ग्रह नष्ट नहि भेल। ओकर चमक मात्र उतरि गेल, आ भीतर साधारण धूसर माटि देखायल। स्मृति लौटिते आदर्शलोक समाप्त भेल।

छोट लोकगीत

एक नाम बाजू—माटिक गन्ध जागत,
दोसर नाम बाजू—बन्द दरबाजा लागत।

अध्याय १०४

जागरणः गढ नारिकेल पृथ्वी चुनैत अछि

घावसहित पृथ्वी चुनब पराजय नहि—ओहि घावक कारण
बदलबाक जिम्मेवारी स्वीकारब अछि।



आरुणि चौंकि कऽ जागल। भोरक पहिल उजास टूँठक छालपर
छल। फोनक फोनक पर्दा बुझल, बही खुलल।

अनन्याक हथेलीपर नील धूलि नहि, पाठशालाक साधारण
खडियाक रंग लागल छल। ओ कने लजाइत हँसली—“हम सभ
कतहु गेल नहि छलहुँ।” बा कहलीह—“कतेक दूर जाएब लेल
देहक चलब जरूरी नहि। मुदा जागलापर डेग पृथ्वीए पर राख्य
पडैत अछि।”।

मीरा लाल डोरी खोलि फेर बान्हली। स्वप्न ओकर पीड़ा मेटौने नहि छल। केवल ई स्पष्ट कयलक जे पीड़ा बिसरब मुक्ति नहि।

आरुणि विज्ञापनक स्रोत जाँचलक। “नव-क्षितिज” कोनो वास्तविक ग्रह-योजना नहि, अपराध-जालक प्रचार-परीक्षण छल —लोकक भय, पलायनक इच्छा आ स्मृति-विरोधी भाषा मापबाक यन्त्रपर चलयवला अभियान। ब्रूमक नीक-बेजायक शब्द, लाउक पूँजी, चन्द्रपालक पंजीयन आ राघवक सन्देश-डोर ओहिमे जुड़ल छल।

बच्चा सभ निर्णय लिखलक—“हम दुःख नहि मिटाएब। दुःखक कारण बदलाएब। हम पृथ्वी छोड़ि अपराधकें निर्दोष नहि करब।

बटुकनाथ, चन्द्रपाल आ राघवक लेल ई निर्णय क्षमा-पत्र नहि छल। हुनका सभकें नाम घुरेबाक श्रम देल गेल—कागजक गट्टर खोलू, खाता जोड़ू, आवाज सुनू, जिनका अदृश्य कएलहुँ हुनकर सामने ठाढ़ होउ। अपराधक मनोविज्ञान बुझब दण्ड समाप्त करब नहि।

चन्ना टूँठक कोंपलपर ओस चमकल। अनन्या ओकर नीचाँ लिखली —“पृथ्वी चुनैत छी—किएक तँ एतहि उत्तर देबाक अछि।

छोट लोकगीत

काँचक विस्मृतिसँ अपन कादो नीक,
घावक नाम राखब—तखने उगत बीज।

अध्याय १०५ पृथ्वीक पहिल पहरा

स्वप्नसँ जागल यात्रीकेँ धरती पुरान घर नहि, नब जिम्मेवारी
जकाँ भेटैत अछि।



अनन्या पहिने ढूँढक छाल छूली। छालक भीजल खुरदुराही ओकर हथेलीमे एना बैसल जेना कतेको बरखक कथा एकहि स्पर्शमे हाथ पकड़ने हो। ओकरा हाथमे स्वप्नमे देखल नील धूलि एखनहुँ लागले छल—नील-धूसर, गन्धहीन, एकदम साफ, एतेक साफ जे डर लागए।

उज्ज्वलक आत्मा, जे स्वप्नक अनाम ग्रहपर पहिल बेर 'उपस्थित' शब्द लिखि आयल छल, एखन पानिक सतह पर काँपैत इजोत बनि गेल। देविका ओकरा देखली, मुदा पुकारली

नहि। किछु उपस्थिति एना होइत अछि जकरा पुकारलासँ ओ फेर दुखमे बान्हि जाए।

चन्द्रपाल बत्रा, जे स्वयंकेँ दोसरक नामपर चलाओल खाता बुझि चुकल छल, अपन खाली हथेली देखैत रहल। ओकरा लग आब पैसा नहि छल, पर पुरान फोनक स्मृति, कूटबद्ध खाता, झूठ दान, आदरक स्मरण-फोन साधनक छाह—सभक निशान छल। देविका ओकरा कहली, “जतय जतय तोहर माध्यमसँ नाम लूटल गेल, ओतए ओ नाम वापस लिख।” चन्द्रपाल पहिल बेर कहलक, “हमरा लिखब नहि अबैत।” अनन्या उत्तर देली, “तखन सुनू।

राति जेना-जेना गहीर होइत गेल, पानिक सतह पर गोहि सभक आँखि चमकए लागल। मुदा एहि बेर लोक ओहि आँखिसँ भागल नहि। बा कहलीह—“ओ सभ देहक भूखक जीव छल।

ओही आवाजमे उज्ज्वलक इजोत जुड़ल, मीराक अपन निजी बातक अधिकारक शपथ जुड़ल, देविकाक राग जुड़ल, आरुणिक पुलक दोष जुड़ल, गोप कुमारक दस्तावेज जुड़ल, सत्यव्रतक मौन जुड़ल, गंगेशक प्रश्न जुड़ल। कबड्डी आब केवल देहक खेल नहि, प्रमाणक खेल बनि गेल—कतेक काल धरि झूठ साँस रोकि सकैत अछि, आ कतेक काल धरि साँच बिनु टूटने चलि सकैत अछि?

अचानक टूट लग राखल पाथर सभ हलुक आवाज करए लागल। प्रत्येक पाथर, जकरा पर नाम लिखल छल, एक लयमे खनखनायल। तइयो प्रत्येकक स्वर अलग—कियो गहीर, कियो पातर—जेना माटिक भीतर कोनो पुरान सप्तक जागि गेल हो।

आ ओहि अगिला कण्ठक पहिल स्वर, नव कोंपलक छाँहमे, कबड्डीक मैदान पर, एक बच्चा सँ उठल—“हम धरती पर छी।” दोसर बच्चा उत्तर देलक—“उपस्थित।” तेसर कहलक—“पहरा शुरू।” आ चन्ना गाछीक टूँठ, जे आब गाछ नहि रहल, मुदा गाछ बनबाक संकल्प रखैत छल, भोरक हवामे नमहर साँस लेलक।

जनमल हे धरती, नव शिशु जकाँ जनमल हे,

नामक दूध पिआउ, कथा अगिला कण्ठ भरू हे।

छोट लोकगीत

ललना रे, धरतीक सोहर गाबू हे,

नवजातक निन्न जकाँ भोरकेँ जोगाबू हे।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

धरती नवजात शिशु सन भोरक गोदमे हँसल,
ओसक दूध पिअल, सूरुजक अँचरा पसल ।

अध्याय १०६ बीजक गवाही

बीज गवाही दै छै— माटि केकर छल आ हाथ केकर।



लोक कहै छै जे बीज छोट होइ छै। मुदा बीज छोट नै छै— बीज मे पूरा गाछ नुकाएल छै, आ गाछ मे पूरा गाम। जे बीज कै डिब्बा मे बन्द करैए, ओ गाम कै डिब्बा मे बन्द करैए।

कोठीक अन्हार मे जे सूतल छै, से निन्न नै छै— से प्रतीक्षा छै। ओ ऋतुक बाट तकैए, हाथक बाट तकैए, गीतक बाट तकैए। ओकरा क्रमांक दऽ कऽ जगाएब नै होइ छै।

टूँठक पाछाँ सँ बूढ़बा भूत हलुक आवाजमे हँसलाह। हुनकर हँसीमे चन्ना गाछीक हँसीक छाह छल। ओ कहलनि—“जकरा

सभ जाति-बन्दोबस्त नाम पर मनुष्यकेँ बाँटल, ओ सभ बीजक भाषा नहि बुझल।

ई बात सुनि बच्चा सभ बीजक अगल-कात पाथर राखए लागल। पाथर पर नाम लिखल गेल—“माटि”, “जल”, “हाथ”, “ऋतु”, “गीत”, “भूख”, “न्याय।” अनन्या कहली, “बीजक प्रमाण अकेला बीज नहि। ओकर संग जे सभ सम्बन्ध अछि, से सभ प्रमाण।” सत्यव्रत मेहताक आँखि चमकल।

स्थानीय बाबू कहलक, “ई सरकारक योजना अछि। पुरान बीज सभ सुरक्षित बैंकमे राखल जाएत। भविष्य पीढ़ी लाभान्वित होएत।” अनन्या पूछली, “बीज अपन गामसँ बाहर जाएत?” बाबू मुस्कुरेलक—“सुरक्षा लेल अस्थायी रूपसँ।” देविका पूछली, “नाम संग जाएत?” बाबू कागच पलटलक—“क्रमांक संग।” ई सुनिते टूँठक कोंपल काँपि उठल।

लिखलक—“बीज-संग्रह प्रकल्पक आँखिसँ देखल ज्ञान: जीप, कागच, डिब्बा। चिन्ह देखि बुझल बात: सुरक्षा। परख: गीत नहि, माटि नहि, नाम क्रमांकमे बदलबाक चाह।” बच्चा सभ एक स्वरमे कहल—“अधूरा प्रमाण।” गंगेशक प्रश्न फेर न्याय बनि टाढ़ भेल।

अनन्या ओ रेखा देखलक आ काँपि उठलि। “‘नव-क्षितिज’ योजनाकेँ बीजक आँकड़ा चाही,” ओ फुसफुसौली। उज्ज्वलक इजोत टूँठक कगार पर एक क्षण लेल चमकल।

मध्यरातिक बाद बीजक पात्र सभक भीतर सँ अति धीमा स्वर उठल—जेना हजारो छोटका कंठ एकहि साथै कहैत हो—“हमरा क्रमांक नहि, माटि चाही। हमरा तिजोरी नहि, ऋतु चाही। हमरा नामहीन योजना नहि, अपन नामक धरती चाही।” बच्चा सभ निन्नमे सेहो ई स्वर सुनैत रहल।

भोर होयबासँ पहिने अनन्या बहीक नव पन्ना खोलि शीर्षक लिखलक—“बीजक चोरी।” ओकर हाथ काँपैत छल, मुदा अक्षर साफ छल। पहरा आब नामसँ बीज धरि पहुँचि गेल छल, आ गढ़ नारिकेल बुझि गेल जे अगिला लड़ाइ खेतक अदृश्य गर्भमे होएत।

छोट लोकगीत

मिलाउ हे मिलाउ, बीज-माटिकेँ मिलाउ हे,
पानिक नेह, सूरजक ताप—चारू जोड़ि गाउ हे।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

बीज कहै—माटि चाही, माटि कहै—आउ,
पानि कहै—हम नेह देब, सूरुज कहै—फुलाउ।

अध्याय १०७

बीजक चोरी

बीज चोरौनिहार खेत नहि चोरबैत— भविष्य चोरबै छै।



बीज चोरौनिहार खेत नहि चोरबैत— भविष्य चोरबै छै। खेत तँ ओतहि रहि जाइए, माटि ओतहि रहि जाइए। जे उठा कऽ लऽ जाइए, से काल्हिक थारी छिकै।

चोरी दू तरहक होइ छै। एक ओ, जे रातिमे होइए आ भोर मे पकड़ा जाइए। दोसर ओ, जे दिन मे कागच लऽ कऽ अबैए, हाथ जोड़ैए, आ ओकरा चोरी नै— सुरक्षा कहल जाइए।

भोरक पहिल उजास अयबासँ पहिने जे शीर्षक अनन्या बहीमे लिखने छली—“बीजक चोरी”—से शब्द पूरा गाममे हवा जेकाँ

पसरि गेल। नामक चोरी लोक देख चुकल छल, स्मृतिक चोरीक चाल पकड़ि चुकल छल, मुदा बीजक चोरी? ई बात पहिने असम्भव बुझाईत छल।

अधिकारी कहलक, “वैज्ञानिक विधिमे क्रमांक आवश्यक होइत अछि।” तखन गंगेशक प्रश्न फेर चन्ना टूँठक भीतर सँ उठल। अनन्या धीरे कहली, “क्रमांक प्रमाण नहि। बीजक प्रमाण ओकर अंकुर, ओकर गंध, ओकर माटि, ओकर लोकक शब्द, आ ओकर इतिहास अछि।

राघव संकेतक पात पर रातिक गुप्त संकेत फेर चमकल—“बीज सूची सुरक्षित करू।” मुदा एहि बेर सन्देश पूरा नहि बनल। अक्षर सभ बीचमे टुटि पातक नस बनि गेल। ओ पात चन्ना टूँठक हरियर बिन्दुक लग अटक गेल।

अचानक पीतल डिब्बी भीतरसँ आवाज आयल। ई आवाज कानसँ कम, हथेलीसँ बेसी सुनाइ देल। सुरमणी काकी डिब्बी अनन्या कै देली।

साँझ धरि निर्णय भेल—कोनो बीज बाहर नहि जाएत जाबत धरि ओकर पूरा नाम, घर, खेत, ऋतु, कथा, आ गामक लोक स्पष्ट नहि हो। आ जँ कखनो शोध होएत, तखन बीजक संग नामक अधिकार, माटिक अधिकार, आ लोकक भाषा जाएत। बच्चा सभ एहि संहिताक नाम रखलक—“बीजक गवाही।” अनन्या बहीमे लिखलक—“दाना केवल दाना नहि।

मध्यरातिक बाद कमला-बलानक दिशासँ हवा आयल। माटिक पात्र सभक सतह पर महीन दरार पड़ल। सुरमणी काकी चौकली, मुदा बा रोकलीह—“डैराउ नहि।

एहि प्रश्नक उत्तर ककरो लग नहि छल। खेत सभमे कर्ज, रसायन, अधिग्रहण, बाढ़ि, सूखा, आ जातिक बाँट पड़ल छल। माटि स्वयं पूछैत छल—तूँ हमरा बचाएब कतऽ?

छोट लोकगीत

बचाउ हे बीज, काल्हिक थारी बचाउ हे,
दादीक डिब्बा, खेतक विधान—दुनू जोगाउ हे।
बीज चोरल तँ काल्हिक थारी खाली होए,
बीज बचल तँ सात पीढ़ी अन्नक हँसी बोए।

अध्याय १०८ माटिक मुँह

माटिक मुँह तखन खुजै छै जखन ओकरासँ पुछल जाए— हम
कतऽ उगब?



माटिक मुँह तखन खुजै छै जखन ओकरासँ पुछल जाए— हम
कतऽ उगब? ताधरि ओ चुप रहै छै, कारण ओकरासँ सदिखन
माँगल गेलै, पुछल कहियो नै गेलै।

लोक माटिकेँ जोतैए, बेचैए, बाँटैए, बन्धक रखैए— आ बुझैए जे
ई सभ माटिसँ बात करब छिकै। मुदा बात ओ नै छिकै जे हम कहै
छी। बात ओ छिकै जे हम सुनै छी।

अनन्या हरिहर झासँ फेर पूछली, “जँ गंगेशक न्याय प्रमाण पूछैत अछि, तँ अहाँक शुद्धताक प्रमाण की? कि केवल जातिक डर?” हरिहर झा तमतमायल, मुदा बच्चा सभक आँखि डेराइत नहि छल। ई प्रश्न अदालतक नहि, माटिक छल।

ओहि दिन खेत धरि जुलूस निकलल, मुदा ई नकली भूतक जुलूस नहि छल। आगाँ बच्चा सभ, बीचमे माटिक पात्र, पाछाँ स्त्री सभ, आ सभसँ पाछाँ बूढ़, मजदूर, सत्यव्रत, ईरा, मीरा, देविका, गोप। रास्तामे लोक जुड़ैत गेल।

मुदा देविका रोकली—“सफाईक नाम पर परतीक इतिहास नहि हटाउ।” कचरा अलग भेल, मुदा स्मृति नहि। पुरान जूताक एक टुकड़ा धीरमती राखि लेली—“ई हमर बापक कामक निशान।” राखक छोटा भाग माटिमे मिलाओल गेल। गोबर, सूखल पात, बाढ़िक सिल्ट, चन्ना टूँठक धूलि, आ पाँचो दिशाक पानि मिलि एक छोटा क्यारी बनल।

बीज रोपवासँ पहिने अनन्या कहली—“जे दाना एतय जाएत, ओकर नाम बाजू।” सुरमणी काकी दाना उठा कहली—“ई बाढ़ि-सहन धान।” बा कहलीह—“ई भूखक बचत।” धीरमती कहली—“ई अशुद्ध कहायल हाथक उजास।” मीरा कहली—“ई देहक अपमानक उत्तर।” सत्यव्रत धीरे कहलनि—“ई कानूनक बाहर जन्मल न्याय।” बच्चा सभ एक संग कहल—“उपस्थित।” दाना माटिमे गेल।

रातिमे पहरा खेतक बीच लगल। एहि बेर तीन नहि, पाँच घेरा। चर्मकार टोला, मुसहरी, विधवा बाड़ी, बटाई खेत, आ चन्ना टूँठ—पाँचो क्यारी पर अलग-अलग बच्चा टोली।

एहि उत्तरसँ सभकेँ राहत भेटल, मुदा कथा एतय रुकएबला नहि छल। कारण जे भूमि बीजकेँ अपन कहि चुकल छल, ओकरा पर आब अधिकारक प्रश्न उठत। ककरा अधिकार—मालिकक, जोतनिहारक, जातिक, राज्यक, कम्पनीक, कि बीज सुनिहार गामक लोकक?

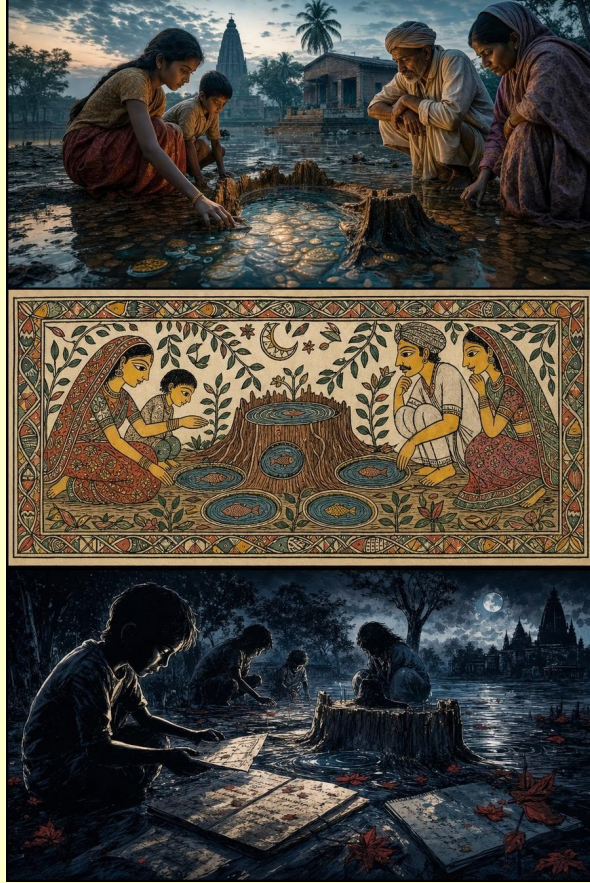
“बीज उगबाक ठाम भेटल,” ओ लिखलक, “मुदा आब मेड़ पर स्वामित्वक गोहि आयल अछि।” धीरमती माटि उठा कऽ मुट्ठीमे कसली। दूर कतहु कागजक गट्टरक पन्ना उनटल, पानिमे गोहिक पूँछ हिलल, आ आकाशमे स्वप्नक अनाम ग्रह एक क्षण लेल फीका पड़ि गेल।

छोट लोकगीत

दिअ हे ठाम, माटिकें ठाम दिअ हे,
कंक्रीटक बीचो एक हरियर खिड़की दिअ हे ।
माटि पूछै—हम कतऽ उगब? कहू—हमरा हृदयमे,
खेत, आँगन, गमला, वन—सभ सम्मानक सदयमे ।

अध्याय १०९ जलक स्मृति

पानिकें बिसरब आसान, पानिक स्मृतिकें बिसरब असम्भव ।



माटि नाम धरै छै, पानि गति धरै छै। माटि पर पएर पड़ै छै तँ चिन्ह बनै छै। पानि पर पएर पड़ै छै तँ चिन्ह नै बनै छै, मुदा पानिकें मोन रहै छै जे के कोन घाट सँ उतरल आ घुसल नै।

तें कागच बदलल जा सकै छै, पानि नै। कागच पर लिखल कें काटि सकै छी। पानि जकरा एक बेर छुलक, ओकर ठंडक ओकरा भीतर रहि जाइ छै।

माटि अपन मुँह खोलि चुकल छल। चारिम पहरामे जे बीज, जे धूलि, जे दबायल पदचिह्न बाजि उठल छल, ओकर बाद लोककें

लागल जे पृथ्वी आब अपन गवाही देबए लागल अछि। मुदा गढ़ नारिकेलमे कोनो गवाही एसगर नहि रहैत।

बच्चा सभ चकित भेल। नामक पहरा आब धरती पर लिखल पाथर भरि नहि रहल। पानि अपन अलग लिखित हिसाब माँगि रहल छल।

बा कहलीह, 'पानि बहुत पुरान गवाह अछि। मनुख अदालत बनएबासँ पहिने पानिक सोझाँ अपराध करैत छल। पानि गाछिक जड़ि जनैत अछि, देहक ताप जनैत अछि, भूखक घुलन जनैत अछि।

गंगेशक प्रश्न पुनः उठल। एक बालक पूछलक, 'जलक स्मृति प्रमाण कोना?' आरुणि मुस्कुरेलाह। पहिने ओ इंजीनियर छलाह, जे पुलक भार, सरिया, सिमेंट, माप आ डिजाइन पर भरोसा करैत छलाह।

पनिडुब्बी फेर कहलीह, 'नव्य न्यायक तर्क जँ देहक अपमान नहि सुनत, तँ अधूरा रहत। जाति जँ पानिक किनार तय करत, तँ न्याय नदी पार नहि करत। गंगेश जँ प्रश्न छथि, तँ जल उत्तर माँगैत अछि।' चर्मकारणी, विवाह, कुल, जन्म, पाँच बरखक असम्भव कथा—ई सभ पानिक सतह पर हलुक-हलुक उठल।

अनन्या बही बन्द करैत कहली, 'पानि बाजि रहल अछि, आ ई सभ ओकरा बोतलमे बन्द करए आयल अछि।' सत्यव्रत मेहता अपन भीजल हाथ देखि रहल छलाह। अक्षर सूखि गेल छल, मुदा हथेली पर जलक ठंडक बचल छल। ओ धीरे बजलाह, 'जतय स्मृति जल बनि बिकए लागय, ओतय पहरा आरो कठोर चाही।'।

रातिमे बच्चा सभ पानिक वृत्तक चारूकात कबड्डीक नब रेखा खिंचलक। माटि मुँह खोलि चुकल, जल स्मृति दऽ चुकल। आब बाजार पानिक मुँह पर ढक्कन लगाएबाक प्रयास करत।

छोट लोकगीत

भरू गे पनिहारिन, मुक्त धारक जल भरू गे,
बोतलक ढक्कन खोलि नदीकेँ घर घुराबू गे।
बोतलमे बन्द नदीक स्मृति ढक्कन ठेलै,
धारक जन्म स्वतन्त्र, पियासक संग खेलै।

अध्याय ११० आगिक साक्षी

आगि बुझि जाइ छै, राख गवाही दै छै।



लोक बुझैए जे जरा देला सँ बात खतम भऽ गेलै। मुदा जरल वस्तुक गन्ध हवामे रहि जाइ छै, आ गन्ध केँ ताला नै लगै छै। जे कागच नुका कऽ जरौलकै, ओकर धुँआ ओकरे आँगन मे घुरि आबैए।

आगि दू रंगक होइ छै। एक ओ जे दलान पर जरै छै— सभक सोझाँ, अन्हार हटबैत। दोसर ओ जे राति मे नुका कऽ जरै छै— डेराएल, लोलुप, अपने छाहसँ भागैत।

जलक स्मृति सुनलाक बाद गढ़ नारिकेलक लोक सभ बुझि रहल छल जे नाम केवल पाथर, कागच, बही, बीज, माटि आ पानिमे नहि रहैत अछि। नाम ओहि राखिमे सेहो रहैत अछि जे आगि बुझलाक बाद बचि जाइत अछि। चन्ना गाछीक कटायल टूट लग पाँचम पहराक राति जे बाढ़िक पानि उतरि गेल छल, ओकर पाछाँ माटिमे कारी-कत्थई लेप रहि गेल।

बच्चा सभ चिचिआयल नहि। अनन्या ओकरा सभकेँ सिखौने छली —पहिने साँस, फेर शब्द। ओ सभ घेरा बनाकऽ एक स्वरमे पुकारलक—“उपस्थित।” एहि शब्दक संगे धुँआ अजीब ढंग सँ सोझे ऊपर नहि गेल।

आरुणि पहिल बाल्टी फेकलनि, मुदा मीरा हुनकर हाथ रोकि देली। ओ कहली—“सभ बुझा देब तँ जे जरल, ओकर साक्षी कोना भेटत?” लोक चौकल। आगि रोकब जरूरी छल, मुदा ओकर राखिक वाणी सेहो बचाबय पड़त।

सौम्या राखिकेँ सूतपर छानली। ओ राखिमे कागचक सूक्ष्म टुकड़ा तकैत रहली। एक टुकड़ा पर ब्रूमक कम्पनीक चिन्हक आधा भाग छल।

अनन्या पूछली—“भूत बाबा, आगि कहैत की अछि?” बूढ़बा भूतक आवाज खड़खड़ायल पात जेकाँ आयल—“आगि कहैत अछि जे जे भीतर सँ खोखल अछि, ओकरा जराबयमे समय नहि लगैत। जे भीतर नाम सँ भरल अछि, ओकर राखियो बजैत अछि।” ई कहि ओ गायब नहि भेलाह। ओ राखिक पाछाँ बैसल रहलाह, जेना हुनकहुँ पहरा देवाक बारी हो।

सत्यव्रत मेहता धीरे कहलनि—“हवा गवाह सभसँ कठिन। ओ ककरो हाथमे नहि ठहरैत, मुदा सभ ठाम पहुँचैत अछि।” अनन्या अगिला पन्ना खोललक। ओ शीर्ष लिखलक—“सातम पहरा: हवाक बयान।”।

एहि तरहेँ आगिक साक्षी समाप्त नहि भेल। ओ राखि बनि माथ पर बसि गेल, पाथरक अक्षरमे चमकि गेल, आ हवाकेँ बजाबय निकलि पड़ल। जे कागच जरा कऽ स्मृति मेटाबय चाहैत छल, से स्मृतिकेँ धुँआ बनाकऽ पूरे गढ़ नारिकेलमे पसारि देलक।

छोट लोकगीत

जागू हे राख, भीतरक बीज जागू हे,
पहिल बून्दक बाट जोहि कोंपल बनि आबू हे।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

आगि बुझल, राख बचल, राखमे बीज नुकायल,
पहिल बून्द पडिते हरियर कोपल मुस्कायल ।

अध्याय १११

वायुक प्रश्न

धुँआ आकाश नहि गेल, गली-गली घूमल— वायुक प्रश्न घर-घर
पुछाइ छै।



माटि, बीज, जल, आगि— ई सभ हाथ मे अबै छै। तें लोक बुझैए
जे हवा केकरो नै छिकै। मुदा जे केकरो नै छिकै, से सभक छिकै—
आ जे सभक छिकै, ओकर लूट सभसँ सहज छिकै।

हवा मे शब्द चलै छै, आ अफवाहो चलै छै। दुनूक पाँख एके रंगक
होइ छै। फरक ई जे शब्दक जड़ि रहै छै, अफवाहक नै— आ जड़ि
बिनु जे उड़ै छै, से केकरो आँगन मे जा कऽ खसैए।

माटि, बीज, जल, आगि—ई सभकेँ लोक हाथसँ छू सकैत छल।
वायुकेँ कोना पकड़त? आरुणि एहि प्रश्न पर चुप भेलाह।

दुपहरिया धरि गाममे परीक्षा शुरू भऽ गेल। एक लोक चाह-दुकान
पर कहलक जे नाम-उत्सवमे लिखल किछु नाम झूठ अछि।
अनन्या ओतय पहुँचली।

साँझक बेर बच्चा सभ टूँठ लग जमा भेल। ओ सभ छोट-छोट
कपड़ाक झंडा बनौने छल—लाल, पीयर, उज्जर, कारी नहि।
प्रत्येक झंडा पर एक शब्दः सत्य, नाम, अपन निजी बातक
अधिकार, श्रम, जल, माटि, बीज, अग्नि, वायु।

एक बालक, जे पहिने चन्द्रपालक फोन साधनमे नकली नाम भरैत
पकड़ायल छल, ओ खेलमे उतरय सँ डेराइत छल। अनन्या
कहली, “साँस रोकब कठिन नहि। झूठ रोकब कठिन अछि।”
बालक आँखि मुनि खेलमे उतरल।

राति गहराएल तखन वायु-पहरा अपन अन्तिम परीक्षा पर
पहुँचल। चन्ना टूँठक कोपल बहुत कने हिलल। हिलबामे कोनो
शब्द नहि छल, मुदा बच्चा सभ सुनलक—“स्वप्नक अनाम ग्रह
पर हवा कोना होएत?” ई प्रश्न सभकेँ अस्थिर कऽ देलक।

ओहि राति चन्ना गाछीक टूँठक चारू कात कियो अगरबत्ती नहि
जरौलक। बच्चा सभ कहल—“हवाकेँ अपना गन्धमे रहय दिअ।”
बहुत देर धरि सभ चुप बैसल। चुप्पी भयक नहि, सुनबाक छल।

” बच्चा सभ पाथरक घेरा कसि देलक। दूर, बहुत दूर, ‘नव-
क्षितिज’क विज्ञापनमे चमकैत गुंबदक भीतर एक सूक्ष्म दरार पड़ल
—शायद पृथ्वीक हवा ओतहु पहुँचि गेल छल।

छोट लोकगीत

बहू हे पवन, सभक देहरी बहू हे,
साँस पर ने शुल्क, ने भेद—इहए गीत कहू हे।
पवन सभक देहरी आवै, शुल्क ककरो नहि,
स्वच्छ साँस पर सभक हक, भेद ककरो नहि।

अध्याय ११२ आकाशक रिक्ति

आकाश जखन खाली भऽ जाए, तखन ओ राहत नहि— सभसँ
पैघ प्रश्न थीक।



आकाश जखन खाली भऽ जाए, तखन ओ राहत नहि— सभसँ
पैघ प्रश्न थीक। छोट आकाश डर दै छै। पूरा आकाश उत्तर मँगै
छै।

पातक फाँक सँ जे आकाश देखाइ छै, से सहज छै— ओ टुकड़ा-
टुकड़ा छै, ओतबे जतेक हमरा सम्हारल जाइए। मुदा जखन गाछ
कटि जाइ छै आ पूरा आकाश एक्के बेर सोझाँ आबि जाइ छै,
तखन छाती पर भार पड़ै छै।

सत्यव्रत मेहता ओहि दिन पहिने सँ बहुत कम बजलाह। हुनकर गवाही लिखल जा चुकल छल, मौनक अपराध सेहो दर्ज भेल छल, मुदा आब आकाशक सोझाँ लिखल शब्द छोट बुझाइ पड़ैत छल। ओ बही खोललनि, फेर बन्द कऽ देलनि।

बच्चा सभ एहि उत्तरसँ सन्तुष्ट नहि भेल। हुनका सभक आदति भऽ गेल छल जे प्रत्येक तत्त्वक गवाही पाथर, पात, जल, राखि, धूलि, स्वर, वा चिन्हमे पकड़ा जाए। एक बालक कहलक, “बादल।” दोसर कहलक, “चिरई।” तेसर कहलक, “साँसक ओ भाग जे देह छोड़ि कऽ ऊपर जाए।” अनन्या बहुत देर चुप रहलि, फेर कहली, “आकाशक चिन्ह रिक्त ठाम अछि—जतय नाम लिखल नहि गेल, मुदा सुनल जा सकैत अछि।”।

तखन बूढ़बा भूत दिनक उजासमे पहिल बेर किछु स्पष्ट देखाइ पड़लाह। हुनकर देह धुँआ नहि, प्रकाशक किनार जेकाँ छल। ओ टूँठ पर नहि, टूँठक छाह आ धूपक बीचमे ठाढ़ छलाह।

लाउ किन-हंग अपन दूर शहरमे शीशाक देवाल सँ बाहर देखैत छल। ओकरा सभ भवन, सभ उपग्रह, सभ संचार-मार्ग अपन नियन्त्रणमे बुझाइत छल। मुदा ओहि राति ओकर कमरासँ ऊपरक आकाश अचानक मिथिलाक आकाशसँ बदलि गेल।

कबड्डी ओहि दिन सन्ध्याकाल फेर खेलल गेल। मुदा रेखा जमीन पर नहि खिंचल गेल। बच्चा सभ टूँठक चारू कात गोल बनि ठाढ़ भेल आ ऊपर देखलक।

ठीक ओहि समय दूर सँ ढोलकक धीमा थाप सुनाइ पड़ल। कोनो जुलूस नहि, कोनो कार्यक्रम नहि। पानि, आगि, हवा, आकाश पार कऽ अबैत थाप।

एहि काँपनमे अध्याय समाप्त नहि भेल। ओ पातालक पहिल आमन्त्रण छल—स्मृति जखन आकाश धरि पहुँचैत अछि, तखन जड़ि भीतर सँ जबाब माँगैत अछि।

छोट लोकगीत

भरू हे आकाश, प्रश्न-उत्तर सँ भरू हे,
बादर बनि प्रश्न उठौ, बून्द बनि उतरू हे।
खाली आकाश प्रश्न करै—नीचाँ के जागल?
धरती उत्तर देत—जनक विवेक नहि भागल।

अध्याय ११३ शब्दक देह

शब्दकै सेहो देह चाही— बिना देहक शब्द हवामे हेरा जाइ छै।



झूठ कै देह तुरन्त भेटि जाइ छै— कागजक गट्टर, मोहर, करार, टेकाक बोली, मंच, दान-पत्र। ओ लिखाइते देह पहिरि लै छै। मुदा साँच जँ काज मे नै उतरल, तँ ओ बिनु देहक घूमैत रहै छै, आ हवा ओकरा उड़ा लऽ जाइ छै।

'न्याय' कहला सँ न्याय नै होइ छै। 'उपस्थित' लिखला सँ कियो उपस्थित नै होइ छै। शब्दक देह पसीना छिकै, प्रतीक्षा छिकै, आ ओ समय छिकै जे दोसराक कथा सुनबा मे लगै छै।

बच्चा सभ पहिने चौंकल। नाम तँ आवाज अछि, लिखल अक्षर अछि, पाथर पर खोंचल निशान अछि। मुदा अनन्या ओहि प्रश्नक भीतरक काँप चिन्हलक।

सत्यव्रत मेहता सेहो ओहि सभामे बैसलाह। ओ हुनकर आदतिक विरुद्ध कोनो व्याख्यान नहि देलनि। कागच दिस तकलाह, फेर बच्चा सभ दिस।

मीरा ‘अपन निजी बातक अधिकार’ शब्दक आगाँ दर्पण राखली। ओ कहली, “अपन निजी बातक अधिकार नुकएबाक नाम नहि, अपन चेहरा पर अपन अधिकारक नाम अछि। जे चित्र खींचयवला यन्त्र बिनु पूछने पीडा लैत अछि, जे फोन साधन मृतकक नाम पर दान लैत अछि, जे समाज प्रेमक नामकें अपराध बनबैत अछि—सभ अपन निजी बातक अधिकारक देह काटैत अछि।

एहि समय पाठशालाक बाहर सँ एक बूढ़ स्वर आयल—“शब्दक प्रमाण?” सभ घूमि कऽ देखलक। मुदा प्रश्न हवामे रहल। गंगेशक प्रश्न फेर उतरि आएल छल।

बच्चा सभ खेल रोकि देलक। करार शब्द चमकैत छल, मुदा ओकर देह नहि देखाइ पड़ैत छल। न पाथर, न कान, न दर्पण, न पात, न बीज।

टूँठक भीतर सँ हलुक आवाज आयल—न हँसी, न रोदन—बस चेतावनी। बूढ़बा भूत छाह सँ बाहर आबि पहिल बेर दिनक बच्चा जेकाँ सरल स्वरमे कहलनि—“करारक देह तकू। जाँ देह नहि भेटल, तँ ओकर पेट भेटत।”।

एहि वाक्य सँ नवम पहराक राति समाप्त नहि भेल। शब्दक देहक पहरा बस शुरू भेल। आ अगिला बिहान गढ नारिकेलकें बुझबाक छल—करार कागच पर नहि, ककरा-ककरा हड्डी, जमीन, जल, बीज आ भविष्य पर लिखल जाइत अछि।

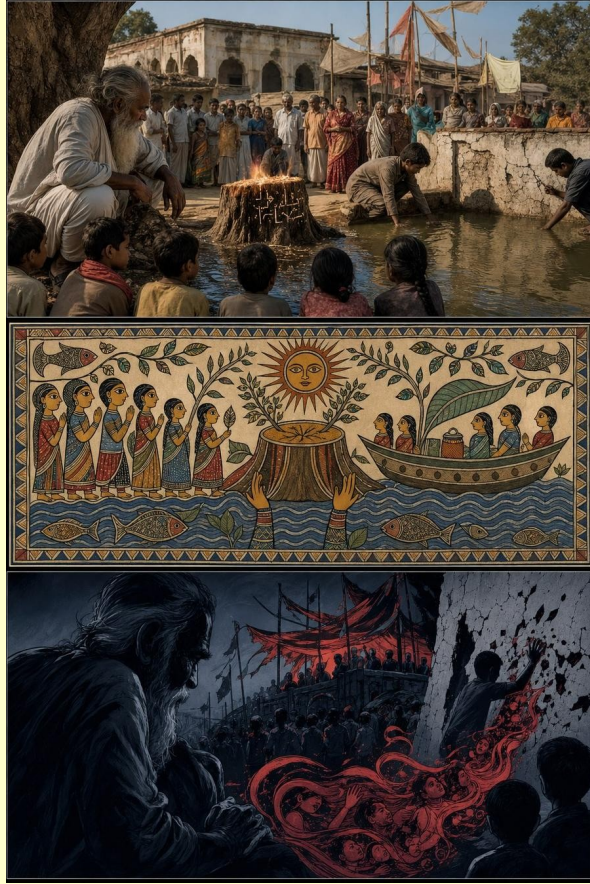
छोट लोकगीत

ललना रे, आखरक सोहर हे,
अर्थक देह पहिरि शब्द जनम लेलक हे।
शब्द जन्मै जखन अर्थक देह ओढ़ि आए,
हथेली, आँखि, श्रम, अनुभव संग अपनाय।

अध्याय ११४

अर्थक आत्मा

शब्दक देह बचि जाए आ अर्थक आत्मा बिका जाए— तँ पहरा अधूरा।



एके शब्द तीन ठाम लिखल जा सकै छै— मृतकक परिवारक मुँह मे, सरकारी झण्डी पर, आ ओहि ग्रहक देवाल पर जकर कोनो नाम नै छै। अक्षर तीनू ठाम एक्के रहतै। मुदा पहिल मे नोर रहै छै, दोसर मे हिसाब, आ तेसर मे खाली रिक्ति।

तें अर्थ अक्षर मे नै रहै छै— अर्थ ओहि वस्तु मे रहै छै जकरा शब्द छुबै छै। जकरा छुबैत हाथ नै काँपै, से पुरखाक धरोहर नै, सजावट छिकै।

गंगेशक नाम सुनिते बूढ़बा भूतक छाह दरबाजा पर देखायल। ओ दिनक उजासमे पूरा नहि उतरि सकैत छलाह, मुदा हुनकर आवाज आँगन भरि पसरल—‘विश्वसनीय लोकक कहल बात कहैत छी तँ शब्द कहनिहारक विश्वसनीयता, सुनिहारक तैयारी, आ अर्थक सम्बन्ध—तीनू देखू। जे “उपस्थित” मृतकक नाम पर उत्तर होइत अछि, से एक अर्थ।

एहि बीच नगरक सरकारी दफ्तरक गाड़ी आयल। अधिकारी सभ टोपी बाँटय लागल—‘उपस्थित बनू, पुरखाक धरोहर बचाउ।’ टोपी पर कटल चन्ना गाछीक चित्र छल, मुदा चित्रमे टूँठ नहि, पूरा हरियर-भरल गाछी बनाओल गेल छल। माटिक घाव झँपायल छल।

ओहि दिन साँझ टूँठक चारू कात अर्थ-परीक्षा भेल। बच्चा सभ अलग-अलग शब्द पाथर पर लिखि बीचमे रखलक—‘विकास’, ‘दान’, ‘न्याय’, ‘सम्मान’, ‘सुरक्षा’, ‘पुरखाक धरोहर’, ‘उपस्थित’। प्रत्येक शब्दक सोझाँ लोक अपन अनुभव कहलक।

अचानक पनिडुब्बीक पोखरि दिससँ एक बच्चा दौड़ैत आयल। ओ हाथमे भीजल पर्चा पकड़ने छल। पर्चा पर सरकारी ‘उपस्थित अभियान’क छाप बहि गेल छल, मुदा बीचक एक शब्द बचल—‘पुनर्व्याख्या’।

देविका पर्चा बच्चा सभसँ पढ़ौली। एक-एक शब्द सुनिते टूँठक छाह नमहर होइत गेल। सूर्य ऊपर छल, तैयो छाह बढ़ैत गेल।

साँझ उतरैत-उतरैत ‘उपस्थित अभियान’क झण्डी सभ हवामे फड़फड़ाय लागल। प्रत्येक झण्डी सँ एकेक अक्षर छूटि कऽ उड़ैत, फेर कटल टूँठ लग आबि पड़ैत। बच्चा सभ ओ अक्षर जमा करैत रहल।

ओहि राति चन्ना गाछीक टूँठक भीतर सँ हँसी नहि, एक गम्भीर ध्वनि उठल। जेना दूर कतहु तत्त्वचिन्तामणि नामक न्याय-पोथीक पृष्ठ उनटि रहल हो। गंगेशक छाह, बूढ़बा भूत, पनिडुब्बी, मीरा, देविका, सत्यव्रत, अनन्या, आरुणि—सभ एकहि बात बुझि गेलाह।

छोट लोकगीत

सम्हारू हे अर्थ, शब्दक आत्मा सम्हारू हे,

चमकैत देहक भीतर दीप निहारू हे।

शब्दक देह चमकि सकै, अर्थ भीतर कानय,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

नेहक नजरि रखिते आत्मा फेर संजोए।

अध्याय ११५

कण्ठक पहरा

कण्ठक पहरा सभसँ कठिन— जे बचल, तकरे सभसँ पहिने बेचल जाइ छै।



आवाज देहक अंश छिकै। ओ छाती सँ उटै छै, गला मे बनै छै, आ मुँहसँ निकलितहि लोक बुझैए जे आब ओ हवाक भेल— केकरो भेल। मुदा हवाक भेला सँ ओ बेनाम नै भऽ जाइ छै।

डिब्बा सुनि सकै छै, मुदा डिब्बाक पेट नै दुखै छै। जे कान देह मे लागल छै, ओ सुनितहि भीतर उतरै छै। जे कान लोहा मे लागल छै, ओ सुनि कऽ खाली जमा करै छै।

डिब्बाक संग आयल लोक सभ अपनाकेँ ‘श्रवण-संरक्षक’ कहैत छल। ओ सभ कहलक—‘नामक पहरा बहुत आवश्यक अछि। मुदा लोक मरि जाएत, बच्चा सभ पैघ भऽ जाएत, कण्ठ बदलि जाएत।

बटुकनाथ हरिहरन दूर ठाढ़ छल। ओ एहि लोककेँ अपन न्यासक प्रस्तावसँ जोड़बाक सोचि रहल छल। कण्ठक अधिकार कानूनमे बदलि जाएत तँ नामक पहरा फेर दस्तखत आ मोहरक बीच कैद भऽ सकैत छल।

तखन एक बालक, जकर दादा पुल-निर्माणमे गुम भेल छल, उठल। ओ अपन दादाक नाम कहय चाहलक, मुदा गला रूँधि गेल। यन्त्रक लोक प्रतीक्षा करैत अधीर भेल।

श्रवण-संरक्षकक मुखक मुस्कान उतरि गेल। ओ कहलक, ‘भविष्यक लेल संग्रह आवश्यक अछि।’ सत्यव्रत मेहता अन्ततः बजलाह—‘भविष्यक नाम पर वर्तमानक अधिकार नहि छीना जा सकैत। सामूहिक पीड़ा पर निजी अथवा संस्थाक स्वामित्व बनब अन्याय अछि।

यन्त्र उठाओल गेल, मुदा ओकरा हटेबासँ पहिने अनन्या कहली, ‘एहि डिब्बाक सेहो नाम लिखू।’ बच्चा सभ पूछलक—‘कोन नाम?’ अनन्या उत्तर देली—‘लोभक कान।’ बहीमे लिखायल—‘लोभक कान आयल, सुनब नहि सीखल, घुरल।’ एहि पर बूढ़बा भूतक हलुक हँसबाक आवाज फेर सुनाइ पड़ल।

दूर, बाढ़िक पानिमे गोहि सभक आँखि चमकल, मुदा एहि बेर ओ सभ पानि काटि आगाँ नहि बढ़ल। जेना ओ सभ सेहो सुनैत छल। आकाशमे स्वप्नक अनाम ग्रह एक छोट टंडा बिन्दु जेकाँ देखाइ पड़ल।

एहि राति अध्याय समाप्त नहि भेल। कण्ठक पहरा राखल गेल, मुदा अगिला खतरा मुँह बान्हि आवि रहल छल—कारण जे आवाज कैद नहि भऽ सकल, ओकरा रोकबाक लेल आब भाषा पर पहरा, छपाइ पर पहरा, पाठ पर पहरा लगाओल जाएत। टूँठक छाँहमे बहीक अगिला पृष्ठ अपने-आप खुजल, आ खाली शीर्षक जेकाँ एक शब्द चमकल—‘लेखनी।’।

छोट लोकगीत

फुलाउ हे बगिया, कण्ठक बगिया फुलाउ हे,
प्रत्येक फूलक अपन गन्ध—नकल नहि लगाउ हे।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

प्रत्येक कण्ठ एक फूल, अलग रंग अलग गन्ध,
नकल नहि, सम्मानसँ बनत सुरक सम्बन्ध ।

अध्याय ११६ मौनक उत्तराधिकार

नामक शत्रु खाली झूठ बजनिहार कण्ठ नहि— कखनो साँचक
चुप्पी सेहो ।



एक मौन सत्ता केँ बचबै छै। दोसर मौन आत्मा केँ झँपै छै। एक
अपराधक संगी छिकै।

खाली कटोरा खाली नै होइ छै। ओहिमे जे नै कहल गेल, से भरल
रहै छै— आ ओकर भार ओहीकेँ बुझाइ छै जे उठाबय जाइए।

पहिल दिन पाठशालामे शिक्षक किछु नहि कहलनि। बच्चा सभ
बैसल रहल, पाँतिबद्ध, हाथमे पात, पाथर, पुरान बही। अनन्या
सामान्यतया पाठ आरम्भ करैत छल।

एक बालक बेचैन भऽ पूछलक, “आइ पाठ नहि होएत?” बा कहलीह, “आइ पहिने ओ शब्द पढ़ू जे बाजल नहि गेल।” बच्चा सभ एक-दोसराक मुँह ताकय लागल। बाजल नहि गेल शब्द केना पढ़ल जाए? तखन सत्यव्रत मेहता धीरे-धीरे उठलाह।

मीरा पर्चा पढ़ि कऽ मुस्कुरेली नहि। ओ आँखि उठाकऽ पूछली, “जकर आवाज अहाँ सभ लएब, ओकरा फेर कियो ओकर मञ्जूरी बिनु मंच पर, परदा पर, यन्त्रमे, दान-सभामे, पर्यटन-रातिमे बजा सकत?” मंडलीक अगुआ कहलक—“हम सभ सांस्कृतिक संरक्षण लेल करैत छी।” मीरा उत्तर देली—“संरक्षण जँ कण्ठकँ ओकर देह सँ अलग कऽ देत, तँ ओ चोरी अछि। आवाज सेहो देहक अंश अछि।”।

गंगेशक प्रश्न फेर उठल। आँखिसँ देखल ज्ञानमे कियो नहि बाजि रहल अछि—तखन प्रमाण की? चिन्ह देखि बुझल बातमे आँखि भीजल अछि—की ई पर्याप्त?

ओहि राति लाउ किन-हंगक स्वप्नमे एक विचित्र घटना भेल। जे सभ कण्ठ-संग्रहक प्रतिध्वनि ओतय पहुँचबाक छल, से नहि पहुँचल। ओतुक्का चमकैत देवाल पर केवल एक खाली वृत्त बनल—कबड्डीक मौन घेरा।

भोरसँ पहिने अनन्या अगिला पन्ना पर लिखली—‘आब आँखिक पहरा।’ कारण जँ कण्ठ बचल, मौन बचल, तखन बजार दृष्टि पर हमला करत। जे बजैत नहि, ओकर चेहरा बेचत। जे मौन रहय चाहत, ओकर नोर देखाओत।

टूँठक भीतर सँ एतबे उत्तर आयल—एकदम हलुक, पातक छाह जेकाँ आवाज—‘देखू, मुदा खाउ नहि। मौनक उत्तराधिकार एतय समाप्त नहि भेल। ओ आँखि धरि पहुँचबाक राह खोलि गेल।

छोट लोकगीत

राखू हे धीरज, चुप्पी मे बीज राखू हे,
समयक ओस पाबि ओकरा कोंपल भेल ताकू हे।
चुप्पी खाली नहि रहै, भीतर बीज पलै,
समयक ओस पाबि एक दिन कोंपल बनि निकलै।

अध्याय ११७

स्मृतिक ऋण

सुनल नामक ऋण होइ छै, आ ऋणक कोनो श्राद्ध नहि— खाली चुकता।



सुनल नामक ऋण होइ छै, आ ऋणक कोनो श्राद्ध नहि— खाली चुकता। जकर नाम कान मे पड़ि गेलै, ओकर हिसाब खुलि गेलै। आब ओ हिसाब फूल-माला सँ नै, काज सँ सधतै।

ई ओ ऋण नै छिकै जे पाइ सँ उतरै छै। महाजनक ऋण मे सूद लगै छै। एहि ऋण मे चाल लगै छै— जे सुनलक, तकरा अपन चलब बदलय पड़ै छै।

बा धीरे बजलीह, “शास्त्रक माथ पर माल्यार्पण करब आसान अछि, शास्त्रक देहक काँट छूब कठिन। जे समाज गंगेशक बुद्धि स्वीकार करैत अछि, मुदा हुनकर जीवनक असुविधाकें काटि फेकैत अछि, से हुनका आधा मारैत अछि।” आरुणि ई सुनि जोड़ि देलनि—“जँ सम्मानक नाम पर असुविधाजनक गंगेशकें साफ मूर्ति बना देल गेल, तँ ई चाकू फूलक मालामे नुकाएल छल। ई हत्याक रक्त बाहरी नहि, स्मृति भीतर बहैत अछि।”

ई नियम सुनिते धूर्त सभक भीतर घबराहट उठल। बटुकनाथ हरिहरन, जे क्षमा माँगि कऽ अपन नाम बचबय चाहैत छल, बुझलक जे एतय नोर पर्याप्त नहि। चन्द्रपाल बत्रा, जे सयमे भागक अधूरा नाममे फँसल छल, बुझलक जे स्मृतिक ऋण दान-पेटीमे नहि उतरैत।

दुपहरिया बाद एक अजनबी बाबू आयल। ओकर हाथमे नव छपल पत्र छल—“स्मृति-ऋण मुक्ति योजना।” भाषा मीठ छल। योजना कहैत छल—जाहि परिवार सभक नाम स्मृति-लिखित हिसाबमे अछि, हुनका सभकें सरकार, निजी दाता, आ पुरखाक धरोहर-योजना मिलि ‘सम्मान-राशि’ देत।

बा पत्र पढ़ि कऽ हँसलीह नहि, कानलीह नहि। ओ पत्र अनन्याकें देलनि। अनन्या ओकरा टूँठक कगार पर राखि पूछली, “ई ऋण मुक्त करय आयल अछि, कि ऋणक मालिक बनय?” बच्चा सभ एक संग कहल—“पहिने प्रमाण।” बाबू कहलक—“पत्रमे मोहर अछि।” अनन्या उत्तर देली—“मोहर आँखिसँ देखल ज्ञान नहि, दावा अछि।

मीरा ओहि रिक्तिकें लाल घेरा सँ घेरि देली। देविका ठगल युवकक नामक लग लिखली—“ककरो भय बेचि लाभ नहि।” सौम्या मजदूरक नामक लग लिखली—“श्रम बिनु यादक चिन्ह अपूर्ण।” ईरा विदेशक बच्चा सभकें पटएबाक लेल नव पत्र आरम्भ केली—“गामक ऋण धन नहि माँगैत, चाल बदलय कहैत अछि।” आरुणि नदीक किनार माप केलनि, मुदा एहि बेर पुलक नाप नहि—जे पानि नाम धोइत अछि, ओकर बहावक नाप। फीता खिंचबाक बेर हाथमे जे कम्पन भेल, से पहिल बेर लोहाक भार सँ नहि, नामक भार सँ छल।

मध्यराति बीतलाक बाद स्मृति-ऋण मुक्ति योजना बला पत्र अचानक नम भऽ गेल। ओकरा पर लिखल मोहर सभ पसरि कऽ धुँआ बनल, मुदा तीन शब्द स्पष्ट रहि गेल—“मुक्ति ककर?”

अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखली—“काल्हि ऋण-मुक्तिक प्रश्न।” सत्यव्रत मेहता दूर बैसल ओ पाँती देखलनि आ अपन कापीमे जोड़लनि—“जकरा ऋण बुझले नहि, ओकर मुक्ति-पत्र छल होइत अछि।”।

एहि तरहँ तेरहम पहरा समाप्त नहि भेल। स्मृतिक ऋण अबैत कालक देहरी पर ठाढ़ रहल। चन्ना टूँठक हरियर बिन्दु राति भरि चमकैत रहल, आ प्रत्येक चमक पूछैत रहल—नाम सुनलहुँ, आब अहाँक कारज की?

छोट लोकगीत

चुकाउ हे ऋण, सुनल नामक ऋण चुकाउ हे,
फूल नहि, सेवाक थारी आगाँ बढ़ाउ हे।
सुनल नामक ऋण रहै, सेवा ओकर ब्याज,
स्मृति केवल फूल नहि, जिम्मेदारी आइ।

अध्याय ११८ देहक अधिकार

नाम बचि गेल, स्वर सुनल गेल— मुदा देहक अधिकार बिनु
सभटा आधा।



देह पर पहिल अधिकार देहधारीक। जे कहय चाहै छै, ओकर शब्द
ओकरे संग चलत। जे नै कहय चाहै छै, ओकर मौन सेहो ओकरे।
समाज बुद्धि केँ आसन पर चढ़ा दै छै आ देह केँ नीचाँ दाबि दै छै।
विचारक मूर्ति बनै छै, देहक कथा गाड़ल जाइ छै। जकर विचार
जातिक पिंजड़ा फोड़ि सकै छल, ओकरे शास्त्रक ऊँच आसन पर
बैसा कऽ चुप करा देल जाइ छै।

स्मृतिक ऋणक बात जखन चन्ना गाछीक टूँठक चारू कात पसरल, तखन बच्चा सभ बुझलक जे ऋण केवल नामक नहि होइत अछि। नाम बचा लेल गेल, स्वर सुनल गेल, मौनक उत्तराधिकार लिखल गेल। जे देह जलसमाधिमे डूबल, जे देह गोहि सभ चिबा गेल, जे देह पुलक पाया तर दबि गेल, जे देह अस्पतालक बिलमे रोकल गेल, जे देह जातिक नाम पर अपमानित भेल, जे देह चित्र खींचयवला यन्त्र आ शोधक भूखमे नमूना बनाओल गेल—ओहि देहक अधिकार कोन पन्ना पर लिखल अछि?

एहि प्रश्नक आरम्भ अनायास भेल। पुरखाक धरोहर-योजनाक लोक एकटा नव सूची लऽ कऽ आयल। सूचीमे लिखल छल —‘संग्रहणीय वस्तु: चन्ना गाछीक जड़ि-माटि, बाढ़िक जल-नमूना, पुरान कपड़ा, अस्थि-सदृश अंश, मृतक परिवारक मौखिक सामग्री, स्त्री-संस्मरण, श्रमिक उपकरण, यन्त्रपर चलयवला उपकरण।’ भाषा नम्र छल, शब्द वैज्ञानिक छल, उद्देश्य सांस्कृतिक कहल गेल।

एडवर्ड ब्रूमक नव प्रतिनिधि बुझावय चाहलक—“ई मात्र संरक्षण लेल अछि।” देविका हँसली नहि। हुनकर आँखि कटोर भऽ गेल। ओ कहली, ‘संरक्षण ओ अछि जे परिवारक अधिकार सुरक्षित करय।

अनन्या ओ वृद्धाक वाक्य पाठशालाक पन्ना पर लिखलक। ओ पन्ना बादमे ‘देह-संहिता’ कहल गेल। पहिल नियम—देह पर पहिल अधिकार देहधारीक।

ओ उठि कऽ बच्चा सभक सोझाँ नहि बजलाह। केवल बहीक खाली पन्ना पर लिखलनि—‘न्याय देहसँ शुरू नहि होअय, तँ न्याय शब्दक खेल रहि जाइत अछि।’ अनन्या पन्ना पढलक आ पाछाँ जोड़ि देलक—‘देहक बिनु नाम अधूरा।’ सत्यव्रत पहिल बेर मुस्कुरेलाह, मुदा ओ मुस्कान लाजक छल, विजयक नहि।

मुदा एहि चमकक पाछाँ खतरा सेहो जन्म लेने छल। जे लोक स्मृति कीनय चाहैत छल, ओ सभ बुझि गेल जे नाम मात्र सँ काज नहि चलत। आब देहक रीति, जातिक अपमान, स्त्रीक अधिकार, मजदूरक पसीना—सभ पर पहरा लगि रहल अछि।

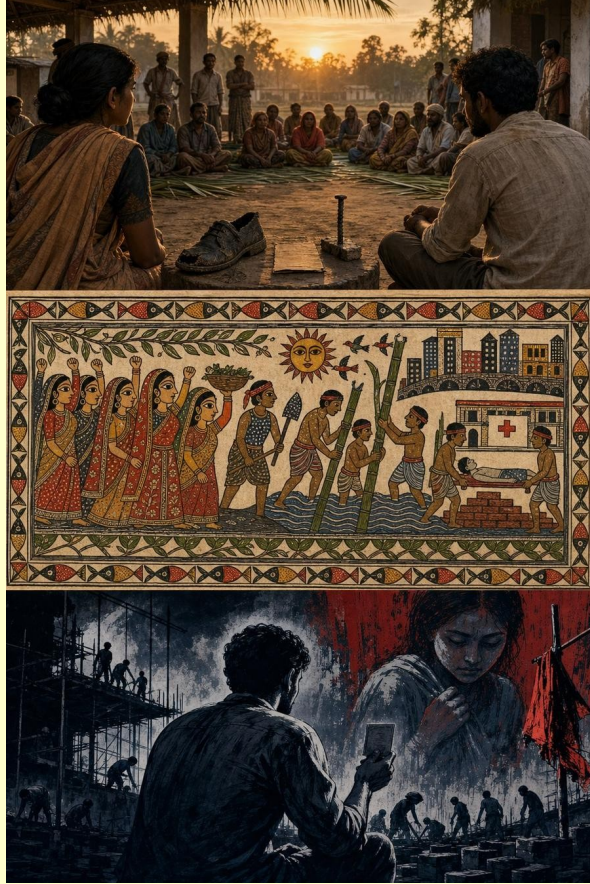
चन्ना गाछीक टूँठ एही प्रश्न पर देर धरि गरम रहल। बच्चा सभ सूतल छल, मुदा देह-संहिताक पन्ना खुजल रहि गेल।

छोट लोकगीत

गनू हे पूरा, देहक हक पूरा गनू हे,
साँस-निन्न-श्रम-मञ्जूरी—चारू धन गुनू हे।
नाम बचल तँ नीक, मुदा देहक मानो चाही,
स्वास्थ्य, सुरक्षा, मञ्जूरी—जीवनक साँची थाती।

अध्याय ११९ श्रमक देह

श्रमक देह पाथरपर लिखल जाइ छै, मुदा पढल पसीनासँ जाइ छै।



जतय मालिक नाम सँ डेराइए, ओतय ओ संख्या लिखै छै। ‘पुरुष सैंतालीस, स्त्री नअ’— ई मनुक्खक गिनती नै छिकै, ई नामक जगह पर राखल परदा छिकै। नाम नुकेला सँ श्रम नै मरै छै।

देह खाली दुखक पात्र नै छिकै। वैह देह कुदाल उठबै छै, पाया ढारै छै, नाव धकेलै छै, आ मरल देह घर धरि पहुँचबै छै। संसारक आधार ओही देह पर टिकल छै।

आरुणि नन्दन कटल ढूँठ लग बैसल छलाह। हुनकर सोझाँ तीनटा वस्तु राखल छल—एकटा पुरान मजदूरक फाटल जूता, एकटा सिमेंटमे अटकल नहि, आ एकटा मजदूरी-पर्ची जाहि पर नामक ठाम केवल संख्या लिखल छल। ओहि पर्चीकेँ देखिते अनन्या पूछली, “संख्या सेहो नाम होइत अछि?” आरुणि उत्तर देलनि, “नहि, संख्या ओहि ठाम राखल जाइत अछि जतय मालिक नामसँ डेराइत अछि।” बच्चा सभ ई वाक्य बहीक ऊपर लिखि देलक—“नाम नुकेलासँ श्रम मरैत नहि, मालिकक भय उघड़ैत अछि।”।

सत्यव्रत मेहता ओहि दिन दूर नहि बैसलाह। ओ ढूँठक ठीक सोझाँ, माटि पर, मजदूर सभक रेखा लग बैसलाह। हुनका लग कलम छल, मुदा ओ तुरन्त लिखय नहि लगलाह।

एहि बीच शहर सँ आयल पुरखाक धरोहर-योजनाक एक अभियन्ता कहलनि जे यादक चिन्ह निर्माणमे स्थानीय मजदूर लगाओल जाएत, रोजगार भेटत। आरुणि शान्त स्वरमे पूछलनि, “नाम सहित अनुबन्ध?” अभियन्ता अटकल। देविका जोड़ली, “मजदूरी समय पर?” ओ चुप।

अनन्या ताबड़तोड़ लिखैत गेलि। बच्चा सभ निर्णय केलक जे पाठशालाक अगिला पाठ “काज शुरू हेबासँ पहिने नाम” होएत। जे मजदूर एहि ठाम काज करत, ओकर नाम, गाम, देहक अवस्था, परिवारक सम्पर्क, मजदूरी, विश्राम, भोजन, पानि, सुरक्षा—सभ खुजल लिखित हिसाबमे रहत।

तहिया चन्द्रपाल बत्राक नाम फेर उठल। ओकर म्यूल एकाउण्टक कथा एखन ताजा छल। भगेलू पासवान कहलक, “हमरा सभक श्रम सेहो म्यूल एकाउण्ट बनल छल।

अन्तिम पहरमे सत्यव्रत मेहता अपन नोटबुक बन्द करैत कहलनि, “न्याय केवल मृतकक नाम नहि पूछत। न्याय जीवितक थाकल देहक विश्राम सेहो पूछत।” एहि पर बच्चा सभ “उपस्थित” नहि कहलक। ओ सभ उठि कऽ मजदूर सभक पएर धोएबाक लेल पानि आनलक।

जखन सभ चलि गेल, ढूँठक छाह नमहर भऽ गेल। पाथर पर लिखल श्रमिक नाम सभक बीच एक खाली पाथर राखल गेल —“जे काज करैत अछि, मुदा देखाइ नहि पडैत।” अनन्या ओकरा छूबैत कहली, “काल्हि एहि अदृश्य श्रमक पाठ होएत।

छोट लोकगीत

पढ़ू हे भाइ, पसेनाक आखर पढ़ू हे,
हथौड़ा-हर-करघाकँ कलम बुझि गनू हे।
पाथरपर नाम नहि पढ़ै केवल नयनक जोर,
पसीनाक अक्षर चमकय भोर-भोर, घोर-घोर।

अध्याय १२० न्यायक देह

न्यायक देह कोपल जकाँ— नर्म, मुदा माटि फोड़ि कऽ उटैवला ।



एतबा दिन न्याय कागच मे रहल, मोहर मे रहल, तारीखक पन्ना मे रहल। मुदा जकर पीठ पर बालु उठल, जकर छाती पर पाया धँसल, तकरा लेल न्यायक देह कतय छल? जे न्याय देह बिनु रहै छै, से बेर-बेर गोहिक भोजन बनि जाइ छै।

मूर्ति आ देह मे फरक छै। मूर्ति पूजा मँगै छै— ओकरा सोझाँ माथ झुकवय पड़ै छै आ आगाँ बढ़ि जाइ छै। देह जिम्मेवारी मँगै छै— ओकरा सोझाँ ठाढ़ रहय पड़ै छै।

श्रमक देहक पाथर सभ टूँठक चारू कात राखल गेलाक राति चन्ना गाछीक कोपल चुप नहि रहल। ओकर पात एखन धरि पात नहि भेल छल—हरियर बिन्दु, नर्म काँप, माटिक भीतरी साँस मात्र। मुदा ओहि राति ओ बिन्दु सँ एकटा सूक्ष्म चमक निकलि पाथर सभ पर पड़ल।

अनन्या बिहानक सभा बजौलक। सभा कहबो ठीक नहि। ई तँ आब गढ़ नारिकेलक नित्य श्वास छल।

ई वाक्य सभसँ पहिने बाकें छुअलक। बा अपन साडीक आँचल सँ आँखि पोछैत कहलीह, “जे न्याय इत्र लगा कऽ अबैत अछि, से बहुधा सड़ल देह झाँपय अबैत अछि। असली न्याय पसीना, राखि, कीचड़, दूध, रक्त, आ नोरक गन्ध बिनु अपूर्ण अछि।” लोक चुप।

चन्द्रपाल दूर सँ खबरि सुनैत रहल। ओकर फोन साधनमे नब सुविधा जोड़बाक योजना बनल—‘अपन प्रियजनक नाम यन्त्रपर चलयवला माटि-मूर्ति पर चढ़ाउ।’ देविका तुरन्त बुझि गेली। ओ बच्चा सभकें कहली—‘न्यायक देह जँ फोनक पर्दामे बेचायल, तँ फेर गोहि आबि जाएत।’ ओहि राति फोनक पर्दाक उपवास फेर घोषित नहि भेल, मुदा लोक अपने फोन उनटा राखि देलक।

न्यायक माटिक देह टूँठक लग राखल छल। गोहि सभ बाढिक पानिमे दूर चमकल, मुदा एहि बेर ओ सभ देहक भूखसँ नहि, जिज्ञासा सँ देखैत बुझायल। पनिडुब्बी पोखरिसँ धुँध जेकाँ उठि कने देर माटिक आकृतिक चारू कात घुमली।

भोरक पहर धरि लोक पहरा दैत रहल। पहराक ई क्रम पृथ्वी-पहरासँ अलग छल। एतय शस्त्र नहि, सुनब छल।

एहि छाहमे अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखली—‘सत्रहम पहरा: छाहक विधान।’ कारण जखन न्यायक देह बनि गेल, तँ आब प्रश्न उठत—जे छाह पडैत अछि, से केवल गाछक होइत अछि कि हुनकहुँ, जिनकर नाम एखनहुँ पूर्ण सुनल नहि गेल?

छोट लोकगीत

सिंचू हे कोपल, न्यायक कोपल सिंचू हे,
पात नरम, जड़ि पाथर-फोड़—दुनू गुण गिनू हे।
न्यायक देह कोपल सन, नर्म ओकर पात,
जड़ि मुदा पाथर फोड़ै, धरै दृढ़ विश्वास।

अध्याय १२१ जातिक पिंजरा

पिंजराक सलाख लोहाक नहि— आदतिक होइ छै, आ आदति
भोरक धूपमे बेसी चमकै छै।



एहि पिंजराक डारि कुल, गोत्र, रसोइ, विवाह, स्पर्श, श्मशान आ भोजनसँ बनल छै। ओकर केबाड़ पर शास्त्रक ताला लागल छै। आ ताला लगबनिहार कहै छै— ई परम्परा छिकै।

मुदा जकरा समाज परम्परा कहै छै, से बेर-बेर जीवित मनुक्खक साँसक चारू कात बनाओल अदृश्य देवाल होइ छै। देवाल केँ परम्परा कहि देला सँ ओ देवाल नै रहि जाइए, से खाली नाम बदलि लै छै।

गंगेश, तत्त्वचिन्तामणि नामक न्याय-पोथीक लेखक, नव्य न्यायक जन्मदाता—गामक पाठशालामे हुनका एतबे कहि पढ़ाओल जाइत छल। मुदा चन्ना ठूँठक अदालतमे ई परिचय अधूरा मानल गेल। ईरा पन्ना खोलि बच्चा सभकेँ कहली—‘जकर बुद्धि पर समाज गर्व करैत अछि, ओकर जीवनक असुविधाजनक सत्य पर समाज मौन किएक रहैत अछि?’ तखन लोकक बीच पुरान कथा उठल—पिताक मृत्युक पाँच बरख बाद जन्मक कथा, चर्मकारणीसँ विवाहक कथा, जातिक देवाल छेदि गेल प्रेम आ ज्ञानक कथा, आ तत्त्वचिन्तामणि नामक न्याय-पोथी जे एक ग्रन्थ नहि, बारह हजार ग्रन्थ बराबर चिन्तनक भार मानल गेल।

बटुकनाथ हरिहरन, जे लोक-स्मृति न्यासक कागच लऽ कऽ फेर घूमि रहल छल, एहि चर्चा सँ असहज भेल। ओकरा न्याय-शास्त्र सँ भय नहि छल। ओकरा न्याय-शास्त्रक देह सँ भय छल।

सत्यव्रत मेहता चुप। गंगेशक स्वर फेर आयल—‘जाति चिन्ह देखि बुझल बात नहि, आरोप अछि। जन्म प्रमाण नहि, बन्दोबस्त द्वारा बनाओल पिंजरा अछि।

बटुकनाथ असहज भऽ उठल—‘नाम लिखबासँ पहिने सावधान रहू।’ अनन्या उत्तर देली—‘नाम हटबनिहार सभ सदिखन सावधानीक बात करैत अछि। हम आरोप नहि, प्रश्न लिखैत छी।’ एहि उत्तर पर चन्ना ठूँठक कौपल काँपल, आ ओकर पात पर धूपक एक बून्द अटकल गेल। से बून्द एना चमकल जेना तत्त्वचिन्तामणि नामक न्याय-पोथीक कोनो सूक्ष्म तर्क माटिक सतह पर लिखाइत हो।

गंगेशक स्वर अन्तिम बेर सुनाइ देलक—‘तत्त्व चिन्तन बिनु करुणा अन्हार अछि। न्याय देह बिनु शव अछि। प्रमाण तखन पूर्ण होइत अछि जखन जीवन ओकरा नकारि नहि सकय।’ एहि वाक्यक बाद ठूँठक फाँकि सँ कारी माटि नहि, उज्जर धूलि निकलल।

अध्यायक अन्तमे बटुकनाथ हरिहरन अपन लोक-स्मृति न्यासक कागच समेटि रहल छल। ओकरा बुझाइत छल जे जँ ई पाठ पसरल, तँ स्मृतिक अधिकारक संग जातिक प्रश्न सेहो जुड़ि जाएत, आ तखन न्यासक कुर्सी पर बैसि स्मृति नियन्त्रित करब कठिन भऽ जाएत। ओ रातिए गुप्त चिट्ठी लिखलक—‘गंगेश प्रसंगकेँ सीमित राखल जाए।

मुदा चिट्ठी भोर धरि पीयर नहि, कारी पड़ि गेल। ओकर अक्षरक बीच एक शब्द अपने-आप उगि आयल—‘स्पर्श’।

छोट लोकगीत

खोलू हे पिंजरा, जातिक पिंजरा खोलू हे,
हाथ सँ हाथ मिला मुक्त अकास घोलू हे।
जातिक पिंजरा टूटि जाए जखन हाथ मिलै,
मानुखक गरम स्पर्शसँ सूखल मोन फुलै।

अध्याय १२२ गंगेशक मुक्ति

मुक्ति ग्रन्थसँ नहि— प्रश्न पुछबाक अधिकार घुरलासँ होइ छै।



समाज विचारक माथ पर ताज धरै छै आ ओहि ताजक नीचाँ ओकर जीवनक असुविधा दाबि दै छै। ग्रन्थ बचि जाइ छै, मनुक्ख हेरा जाइ छै। ई हत्या नै कहबै छै, मुदा नस कटले रहै छै।

प्रमाणक दुआर पर जाँ चौकीदार बैसल छै, तँ सत्य भीतर पहुँचबासँ पहिने मारल जाइ छै। तँ असल प्रश्न ई नै जे प्रमाण छै कि नै— असल प्रश्न ई जे प्रमाणक भाषा पर ककर अधिकार छै।

अनन्या ठूँठक लग बही खोललक। पछिला पन्ना पर लिखल छल —‘जातिक पिंजरा।’ ओकरा नीचाँ खाली स्थान छल। ओ पूछली, ‘एहि पिंजराक चाबी कोन?’ कियो उत्तर नहि देलक।

गोप कुमार तुरन्त कागज दिस हाथ बढौलनि, मुदा सत्यव्रत रोकि देलनि। ‘पहिने सुनू,’ ओ कहलनि, ‘एहि ठाम प्रमाणक अर्थ कागजक गट्टर नहि, लोकस्मृति, प्रश्न, आ नुकाओल भय सेहो अछि।’ गंगेशक प्रश्न एतय शास्त्रीय परीक्षा नहि, सामाजिक परीक्षा बनि गेल छल। समाज जकरा असम्भव कहि चुप करबैत अछि, ओ कखनो-कखनो अपने असत्य नुकाएबाक लेल असम्भवक नाम लैत अछि।

अनन्या माटि पर तीन गोला बनौलक—आँखिसँ देखल ज्ञान, चिन्ह देखि बुझल बात, शब्द। फेर चारिम गोला खिंचलक —‘दबायल जीवन।’ ओ कहली, ‘जँ समाज केवल ओहि प्रमाणकें मानत जे ओकर पिंजरा बचबैत हो, तँ न्याय अधूरा रहत।’ बच्चा सभक एहि चारिम गोला पर बूढ़बा भूतक हँसी सुनाइ पडल। गंगेशक नव्य न्याय बच्चाक हाथमे नव रूप लऽ रहल छल।

गंगेशक विवाहक प्रसंग चन्ना ठूँठक अदालतमे विस्फोट जेकाँ उतरल। बटुकनाथ हरिहरन, जे जातिक पिंजराक अध्यायमे अपने सन्तानक प्रश्नसँ घायल भऽ चुकल छल, ओ दूर सँ सुनैत छल। ओकरा लागल—एहि कथाकें शास्त्रीय विवाद घोषित कऽ देब, तखन बचि जाएब।

लाउ किन-हंगक दूरक जालमे एहि दिनक सूचना पहुँचल। ओकर सलाहकार लिखलक—“जाति-प्रश्न स्मृति-योजनाक लेल जोखिम अछि।” ब्रूमक दान-पत्र सँ जुडल एजेंसी कहलक—‘एहि भागकें लोककथा खण्डमे राखू, आधिकारिक लिखित हिसाबमे नहि।’ चन्द्रपाल बन्ना सोचलक—ई प्रसंग मोबाइल साधनमे डालि देल जाए तँ विवाद बढत, उपयोगकर्ता बढत। मुदा बच्चा सभ पहरा देलक—गंगेश विज्ञापन नहि, प्रश्न छथि।

अध्यायक अन्तिम पहरमे ठूँठक भीतर सँ आवाज आयल—न बूढ़बा भूतक, न बाक, न सत्यव्रतक। आवाज गाढ़, सूक्ष्म, आ तर्कक धारि जेकाँ तेज छल—‘जे प्रश्न सँ डेराइत अछि, से न्यायक अधिकारी नहि।’ ओ आवाज कानमे नहि, दाँतक जडिमे बजैत छल—एहन झनझनाहट जे सुनलाक बादो देर धरि माथक भीतर रहि जाइत अछि। बच्चा सभ बुझि गेल—गंगेशक प्रवेश केवल स्मरण नहि, परीक्षा अछि।

अनन्या अगिला पन्ना खोललक। शीर्ष पर लिखली—‘उन्नैसम पहरा: प्रमाणक दरार।’ कारण एखन प्रश्न रहि गेल छल—जखन प्रमाण स्वयं जाति, सत्ता, धन, आ सम्मानक हाथमे कैद हो, तखन दबायल लोक अपन सत्य केना बचाओत? ओहि प्रश्नक उत्तर अगिला राति चन्ना ठूँठक भीतर सँ नहि, गामक सभसँ नीच कहल गेल घरक आँगन सँ उठबाक छल।

छोट लोकगीत

बारू हे दीप, प्रश्नक दीप बारू हे,
एक उत्तर सँ दोसर बाट निहारू हे।
गंगेशक प्रश्न दीप थीक, कियो बुझा नहि पाबै,
एक उत्तरसँ दोसर बाट सदिखन खुलि आवै।

अध्याय १२३

तत्त्वचिन्तामणिक पात

तत्त्वचिन्तामणि नामक न्याय-पोथीक पात कागजसँ कड़ा— कारण ओहिपर तर्क लिखल छै, भय नहि।



प्रमाणक चारि दुआर छै— आँखिसँ देखल ज्ञान, चिन्ह देखि बुझल बात, शब्द, आ नहि देखाइ पड़ब। पहिल तीनक चर्चा सभ करैए। चारिमक चर्चा कियो नै करैए, कारण ओ पुछै छै जे जे नै भेटल, से कतय गेल आ केकरा सुविधा भेलै।

जे ग्रन्थ मनुक्ख केँ देखय नै सिखवै छै, से बारह हजार नै, आध पात बराबर सेहो नै छिकै। ग्रन्थक भार पन्नाक भार नै छिकै— प्रश्नक अनन्तता छिकै।

गंगेशक मुक्ति भेलाक बाद चन्ना गाछीक टूँठक चारू कात एकटा अनोखा शान्ति उतरि आयल। ई ओ शान्ति नहि छल जे मृतकक मुँह पर कपडा देलाक बाद घरमे पसरि जाइत अछि। ई ओ शान्ति छल जे प्रश्न अपन उत्तर नहि, अपन अगिला प्रश्न तकि लैत अछि।

आरुणि टूँठक सूखल फाँकिमे सँ एकटा पात निकाललनि। पात चन्ना गाछीक पुरान नहि, नब कोपलक छल। मुदा ओकरा पर बारीक रेखा छल—जेना कोनो अदृश्य लिपिकार नहसँ लिखि गेल हो।

तखन तत्त्वचिन्तामणि नामक न्याय-पोथीक पहिल पाठ शुरू भेल। बच्चा सभ माटि पर चारि गोला बनौलक—आँखिसँ देखल ज्ञान, चिन्ह देखि बुझल बात, शब्द, आ नहि देखाइ पड़ब। देविका हँसि पड़ली—‘एतेक कठिन बात खेलमे?’ अनन्या कहली—‘कठिन बात जँ खेलमे नहि उतरय, तखन न्याय फेर कचहरीमे कैद भऽ जाएत।’

पहिल गोला ‘आँखिसँ देखल ज्ञान’ छल। बच्चा सभ टूँठ, पाथर, नाम, बाढिक पानि, कटायल जडि, चन्द्रपालक काँप, बटुकनाथक रोदन, लाउ किन-हंगक शीशामे देखल गोहि—सभकेँ एक-एक कऽ आँखिसँ देखल ज्ञान कहलक। मुदा एक बच्चा उठि पूछलक—‘जाति आँखिसँ देखल ज्ञान अछि?’ सभ चुप।

ई सुनिते टूँठक भीतर सँ हलुक कम्पन उठल। जेना ककरो नहि बाजल गेल नामक अस्थि काँपल हो। बच्चा सभ एक संग माथ झुकौलक।

विद्वान सभ चुपचाप अपन कागच समेटि रहल छल। बच्चा सभ पातक छाह पढ़ि रहल छल। आ दूर, कटायल चन्ना गाछीक पुरान जडि भीतर सँ एक गहीर आवाज उठल—न गंगेशक, न बच्चाक, न बूढ़बा भूतक।

एहि वाक्यक बाद धरती पर बारह हजार जेकाँ सूक्ष्म छाह पसरि गेल।

छोट लोकगीत

लिखाउ गे बहिना, पात पर नाम लिखाउ गे,

आधा रहल पोथीकेँ पूरा बनाउ गे।

पोथीक पात खाली छल, बहिनी नाम लिखाउ,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

मेटायल स्त्रीक जीवनकेँ अक्षर-फूल सजाउ ।

अध्याय १२४

प्रमाणक अग्नि

प्रमाणक अग्निमे दाह कम, उजास बेसी— जे साँच अछि, से
निखरि कऽ बहराइ छै।



समाज कहै छै— हम अहाँ केँ महान मानै छी। मुदा जे बात
मनुक्ख केँ मनुक्ख बनबै छै, ओकरे काटि दै छै। माला ओतबे धरि
माला रहै छै जाबत ओ गरदनि पर कसै नै लगै छै।

देहक हत्या आ स्मृतिक हत्या मे फरक छै। पहिलका मे रक्त बहै
छै आ लोक देखै छै। दोसरका मे खाली एक पाँती कटै छै आ
कियो नै देखैए।

सत्यव्रत मेहता ओहि दिन फेर आयलाह। ओ दूर बैसल रहवाक प्रण लेने छलाह, मुदा बच्चा सभ हुनका आइ बीचमे बैसय कहलक। “अहाँ कानून सुनलहुँ,” अनन्या कहली, “आब प्रमाण सुनू।” सत्यव्रत झिझकलाह।

तखन गंगेशक कथा फेर उठल—पिताक मृत्युक पाँच बरख बाद जन्मक कथन, चर्मकारणीसँ विवाहक लोकस्मृति, तत्त्वचिन्तामणि नामक न्याय-पोथीक विराट लेखन, नव्य न्यायक जन्म। ईरा कहली, “समाज एहि सभमे सँ ग्रन्थ रखलक, जीवन काटि देलक। विचार राखलक, विवाह हटौलक।

बा बीचमे कहलीह, “जखन मनुखक जीवन नुकाओल जाइत अछि आ ओकर नामसँ माला बनाओल जाइत अछि, तखन फूलो फाँसी बनि जाइत अछि।” एहि वाक्य पर ठूँठक भीतर सँ बूढ़बा भूतक हलुक खँखार सुनाइ पड़ल। हुनका एहि तरहक न्याय प्रिय छल— जतय बूढ़ स्त्री ग्रन्थ-सम्पादकक घमण्ड तोड़य।

ईरा कहली, “गंगेश नव्य न्याय देलनि। मुदा हम सभकेँ नव्य स्मृति चाही। जाति जखन प्रमाणकेँ बान्हि दैत अछि, तखन न्याय आन्हर भऽ जाइत अछि।

एक बालक पूछलक, “चर्मकारणी नाम की छलनि?” सभ चुप। एहि अज्ञानक भार सभ पर एक संग खसल। जिनकर विवाहक स्मृति समाजकेँ विचलित करैत अछि, हुनकर नामहि गुम।

राति भेल तखन बच्चा सभ बहीमे लिखलक—“गंगेशक मुक्ति ग्रन्थसँ नहि, पूरा जीवनक स्वीकारसँ होएत।” ई लिखि अनन्या कने ठहरलि। फेर ओ अगिला पन्ना पर शीर्षक लिखली —“चर्मकारणीक नाम।”।

एहि शीर्षककेँ देखि ठूँठक हरियर कोपल थरथरा उठल। कथा आब गंगेशक न्यायसँ ओहि स्त्रीक खोज दिस मुड़ि रहल छल, जिनकर नाम नुका देल गेल, मुदा जिनका बिनु न्यायक अग्नि अधूरी छल।

छोट लोकगीत

घुमाउ गे झिझिया, प्रमाणक दीप घुमाउ गे,
छिद्र-छिद्र सँ झरैत अग्नि सँ भ्रम जराउ गे।
दीपक छिद्रसँ अग्नि झरय, झूठक जाल जरय,
साँचक पन्ना राखि जकाँ नहि—स्वर्ण जकाँ निखरय।

अध्याय १२५ निर्णयक धान

निर्णय जँ धान जकाँ रोपल जाए, तँ ओकर बालि सेहो झुकि कऽ
गवाही दै छै।



न्यायालय निर्णय लिखै छै। माटि निर्णय उगबै छै। लिखल निर्णय
पन्ना मे बन्द रहै छै, उगल निर्णय थारी धरि पहुँचै छै— आ
जाबत ओ थारी धरि नै पहुँचल, ताबत ओ खाली भाषा छिकै।

राखि खाली प्रमाणक नै होइ छै। जे दाबल गेल, जे झुट्टा कहल
गेल, जे कुलक बाहर फेकल गेल, जे सम्मानक नाम पर स्मृति सँ
हटाओल गेल— ओहू सभक राखि ओहीमे मिलल रहै छै।

प्रमाणक अग्नि राति भरि ठूँठक चारूकात धधकैत रहल, मुदा ओकर धधकबामे दाह कम छल, उजास बेसी। भोर भेल तखन राखि ठंढा भऽ चुकल छल। बच्चा सभ पहिने जेकाँ दौड़ि कऽ राखि कुरेदय नहि गेल।

बच्चा सभ खेत दिस निकलल। ठूँठसँ खेत धरि जे बाट छल, ओहि पर पहिने गाछीक छाँह पडैत छल। धूप बिनु छाँहक कठोर होइत अछि, मुदा एही कठोरतामे आइ मार्ग साफ देखाइत छल।

ओहि समय खेतक भीतरी पानिमे एक झिलमिलाहट उठल। पनिडुब्बीक देह कि प्रकाशक खेल, कियो निश्चित नहि कहि सकल। मुदा बूढ़ी चर्मकारिणी कहलीह, “जकरा सभ नेने छलहुँ, ओकरा सभ पानि सँ फेर पूछू।” तखन बच्चा सभ खेतक पानिदार मेड़ लग झुकि नाम पढ़य लागल।

ई शब्द सुनिते हवा बदलि गेल। चर्मकारिणी आब घटना नहि, प्रमाणक अधांगि छलीह। जँ गंगेशक न्याय जीवनमे सत्य छल, तँ ओ सत्य हुनकर संग उभड़ल स्त्रीक देह, अपमान, साहस आ सामाजिक निष्कासनसँ अलग नहि होइत।

जे हर सामान्यतया मालिकक जाति आ मजदूरक जाति बँटवैत छल, ओहि दिन बच्चा सभ पालि-पलटा कऽ पकड़लक। चर्मकारिणी बूढ़ी पहिल धारि चलौली, आरुणि दोसर, मीरा तेसर, सत्यव्रत चारिम, आ अनन्या पाँचम। हरक फार जखन माटिमे धँसैत छल, तखन ओहि सँ जे आवाज उठैत छल से कटबाक नहि, फाटबाक छल—आ ओहि फाटल माटिसँ जे भाप उठैत छल, ओहिमे बरखक बन्द रहल जाइक गन्ध छल।

राति भेल तखन खेतक पानिमे आकाश उतरि आयल। तारा सभ बीआ जेकाँ चमकल। बच्चा सभ बहीमे अध्यायक अन्त लिखय चाहलक, मुदा अनन्या रोकली।

ओहि राति चन्ना गाछीक ठूँठ दूरसँ अन्हार नहि, धूसर दीप जेकाँ देखाइत रहल। खेतमे राखि, बीआ आ पानि एक संग सूतल। कोनो सभक सामने कहल बात नहि, कोनो निर्णय-पत्र नहि।

छोट लोकगीत

रोपू गे रोपनिहारि, न्यायक धान रोपू गे,
कीचड़ मे पएर, आकाश मे आस—दुनू जोपू गे।
कीचड़मे पएर धँसाउ, न्यायक धान रोपू,

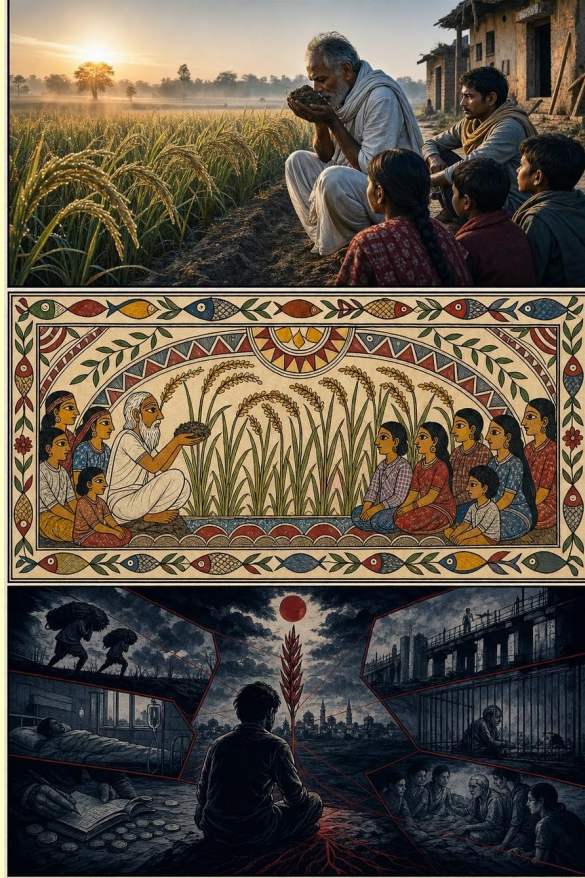
गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

एक पाँति साहसक, दोसर नेहक जोषू।

अध्याय १२६

अन्नक न्याय

अन्नक न्याय थारीमे नहि, मेड़पर तय होइ छै।



भुखायल पेटक सोझाँ सभ शास्त्र अधूरा छै, सभ साझा नियम-पोथी अधूरा छै, सभ प्रमाण अधूरा छै। जे न्याय भात नै बनल, से खाली वाक्य छिकै।

दया आ हिस्सा मे फरक छै। दया ऊपरसँ फेकल भात छिकै— ओहि मे देनिहार ऊपर रहै छै। हिस्सा संग बैसि खाएल भात छिकै— ओहि मे दुनू एक्के पाँति मे रहै छै।

बा भोरहि खेतमे आवि बैसलीह। ओ माटि उठा कऽ सुँघलीह आ कहलीह—“जे न्याय भात नहि बनल, से केवल वाक्य अछि। जे

न्याय भूखक मुँह धरि नहि पहुँचल, से गाछी बिनु जड़िक छाँह अछि।” ई बात सुनि आरुणि दीर्घ साँस लेलनि।

एहि दिन नारिकेल पात पाठशालाक पाठ खेतमे लागल। पाथरक नाम-घेरा सँ बच्चा सभ धानक बिरबा धरि आयल। अनन्या बही खोललक, मुदा लिखबासँ पहिने ओ एक दाना हाथमे रखली।

ई नामावली दान-पुण्यक सूची नहि छल। अनन्या साफ कहली —“जे भूखल अछि, ओकरा दया नहि, हिस्सा चाही।” बा जोड़ि देलीह—“दया ऊपर सँ फेकल भात अछि। हिस्सा संग बैसि खाएल भात।” एहि वाक्य पर खेतक हवा थमि गेल जेकाँ लागल।

लाउ किन-हंगक ओर सँ विदेशी बीआक प्रस्ताव आयल। कहल गेल—ई बीआ बाढ़ि सहत, सुखाड सहत, बेसी उपज देत, बजारमे दाम पाबत। आरुणि पूछलनि—“बीआक स्मृति कोन?” प्रस्ताव लऽ कऽ आयल परामर्शदाता मुस्करायल—“बीआ विज्ञान अछि, स्मृति नहि।” ईरा उत्तर देली—“जकरा स्मृति नहि, ओकर स्वामित्व ककर?” ओहि क्षण माटि पर राखल विदेशी बीआक थैली सँ हलुक धातुक गन्ध उठल।

राति होइत-होइत कोठी-बखारीक पहिल दाना जमा भेल। उज्ज्वलक माय मुट्ठी भरि धान देली। मजदूरक बेटा दू मुट्ठी।

मध्यरातिमे ओहि खाली थारी सँ ध्वनि उठल। पहिने सभकँ लागल कोनो दाना खसि पड़ल। फेर ध्वनि स्पष्ट भेल—न शब्द, न रोदन, न धातुक टनकार।

अनन्या अगिला पन्ना खोललक। शीर्ष पर लिखली—“भूखक नाम।” पन्ना खुजिते पवन उठल। धानक बालि सभ एक संग झुकल।

छोट लोकगीत

काटू हे बालि, भोरक बालि काटू हे,
पहिल मुट्ठी भूखल हाथक थारी मे साटू हे।
हँसुआ चमकल भोरमे, बालि नम्र झुकै,
पहिल मुट्ठी अन्न लऽ कऽ घरक चूल्हि धुकै।

अध्याय १२७

भूखक नाम

खाली थाली भरल कोठारसँ भारी— ओहिमे भूखक नाम बाजै छै।



मुरदाक नाम लिखनाइ कठिन छै। जीवैत भूखक नाम लिखनाइ ओहूसँ कठिन। मुरदा विरोध नै करैए।

भूख कहब अपमान नै छिकै। मुदा समाज एतबा सिखा दै छै जे भूखल लोक पहिने अपन भूख नुकबैए, फेर अपन नाम, आ अन्त मे अपन हिस्सा।

सत्यव्रत मेहता थारीक सोझाँ बैसल छलाह। ओहि लोकक हाथ कतेको शपथपत्र लिखि चुकल छल, कतेको आपत्ति, कतेको प्रतिवेदन, कतेको कानूनी तर्क। मुदा भूखक पहिल नाम लिखबाक

समय हुनकर आँगुर एना काँपल जेना कलम नहि, सुइ पकड़ने होथि।

एहि नियमक बाद पहिल स्त्री आगाँ आयली। ओ कोनो विधवा सूचीमे नहि छली, कोनो राहत शिविरमे नहि गेल छली, कोनो मंच पर भाषण नहि देलनि। ओ मात्र कहली—“हमर घरमे तीन दिन भातक गन्ध नहि उठल छल।

तेसर नाम एक छोट बालक देलक। ओ कहलक—“हमरा स्कूलमे मध्याह्न भात भेटैत छल, मुदा छुट्टीक दिन पेटमे खाली मैदान बजैत छल।” ओकरा सँ कियो नहि पूछलक जे घरक आमदनी कतेक, पिता की करैत, सूचीमे नाम अछि कि नहि। गंगेशक प्रश्न सभकेँ मोन छल—आँखिसँ देखल ज्ञान पेटक आवाज अछि।

एहि नाम पर टूँठक हरियर बिन्दु कने काँपल। जेना चन्ना गाछीकेँ जातिक पुरान काँट फेर चुभल। गंगेश उपाध्यायक स्मृति ओहि क्षण खेतक पवनमे उतरि आयल।

साँझ होइत-होइत पहिल सामूहिक रसोइ जरल। पहिल धुँआ सोझे ऊपर नहि गेल—ओ जमीन सँ कने ऊपर रहि आँगन भरि पसरल, आ ओहिमे जरैत लकड़ीक संग-संग बहुत दिनसँ ठंढा पड़ल चूल्हक माटिक ओ भीजल गन्ध सेहो छल जे पहिल बेर आगि लगला पर उठैत अछि। चूल्हि पाथरक नाम-धेरा सँ दूर राखल गेल, जाहिसँ स्मृति पूजामे नहि, उपयोगमे बदलय।

टूँठक छाँह ओहि राति थारी पर पड़ल, मुदा छाँह अन्हार नहि लागल। ओ धूपक उनटा रूप जेकाँ शीतल छल। भूखक नामावली भरि चुकल नहि छल, कोठी-बखारी स्थायी नहि छल, नियम सभ नवजात छल।

मध्यराति समीप, खाली थारीक दाना हलुक-हलुक हिलल। कियो हाथ नहि लगौने छल। दाना घूमि कऽ उत्तर दिशामे ठहरि गेल—ओहि दिशामे जतय सूखल इनार छल, आ जतय बरखों सँ पानि कड़ुआ मानल जाइत छल।

छोट लोकगीत

आनू हो आनू, एक-एक मुट्ठी आनू हो,
बीचक खाली थारीकेँ संगे भरल जानू हो।
खाली थारी बीचमे राखू, सभ एक मुट्ठी आनू,
जट आनय धान, जटिन नून, संगमे भोजन पानू।

अध्याय १२८

प्यासक नाम

प्यासकें सेहो नाम चाही— बिना नामक प्यास केवल आँकड़ा।



भूख पेट केँ धरै छै, प्यास कण्ठ केँ। भूख शोर करैए, प्यास चुप रहै छै— आ चुप्पीक कारणेँ ओ बेसी दिन धरि सहल जाइ छै।

भूख पर समाज दया देखाबय सीखि गेलै। मुदा पानि पर समाज दया नै, अधिकार लगबै छै— ककर कूप, ककर घाट, ककर घैल, ककर हाथ, ककर जाति।

गंगेशक प्रश्न फेर घुलल। अनन्या बही खोलि लिखली—“प्रमाणः प्यास।” ईरा पूछली, “प्यासक प्रमाण की?” छोट बालक अपन खाली लोटा उठौलक। ओ आँखिसँ देखल ज्ञान छल।

मीरा एहि कथा पर बहुत देर चुप रहलि। फेर कहली, “देहक अधिकार बिनु पानिक अधिकार नहि। जकरा छूबाक मनाही, ओकरा पीबाक मनाही सहज बनि जाइत अछि।” सौम्या जोड़ली, “जकरा पीबाक मनाही, ओकर आवाज सेहो सुखैत अछि।” देविका एकदम धीमे कहली, “फोनक पर्दाक ठगी बादमे आयल।

गंगेशक नव्य न्यायक चर्चा फेर उठल। गोप कुमार कहलनि, “जँ आँखिसँ देखल ज्ञानमे एक मनुख प्यासल अछि, चिन्ह देखि बुझल बातमे ओकर अपमानक कारण जाति अछि, शब्दमे वृद्धा गवाही दऽ रहल छथि, तखन निर्णय की?” एक बच्चा उत्तर देलक, “निर्णय: पानि सभक।” दोसर जोड़लक, “आ स्मृति: जे पानि रोकलक, ओकरो नाम लिखल जाए।” बा कहलीह, “दण्ड केवल दोषीक नाम नहि। इनार खोलबो दण्ड अछि।”।

दस डोल बाद पानि कने साफ भेल। बीस डोल बाद तलहटीक थरथराहट सुनाइ पड़ल। तीस डोल बाद इनारक भीतरसँ एक ठंढा वायु उठल।

राति भेल तखन इनारक कगार पर पहिल सामूहिक जल-पाठ भेल। कोनो मन्त्र नहि, कोनो जाति-क्रम नहि। प्रत्येक मनुख डोल सँ एक चुल्लू पानि हाथमे लेत, अपन नाम कहैत, आ कहैत —“हम प्यास साझा करैत छी।” मीरा अपन हाथक पानि धरती पर खसबैत कहली—“जिनका पीबय नहि देल गेल।” देविका कहली—“जिनकर प्यासक बहानासँ ठगी भेल।” ईरा कहली —“जिनका ग्रह बदलि पानि बेचबाक सपना देखाओल गेल।” सत्यव्रत कहलनि—“जिनका कानून देर सँ सुनलक।”।

आकाशमे जमा अन्हार आब बरखाक नहि, प्रश्नक मेघ बनि रहल छल।

छोट लोकगीत

उतरू हे मेघ, लोटा भरि उतरू हे,
सूखल कण्ठ, पियासल खेत—दुनू तर करू हे।
सावन मेघ घेरि अएल, लोटा आकाश धैर,
बून्द-बून्द आशा भरि कऽ सूखल कण्ठ तैरै।

अध्याय १२९

नूनक शपथ

नूनक शपथ सभसँ पुरान— मायक दूधसँ मजूरक पसीना धरि
एक्कहि स्वाद ।



नूनक शपथ सभसँ पुरान— मायक दूधसँ मजूरक पसीना धरि
एक्कहि स्वाद । जे जीह पर चढ़ि गेलै, ओकरा कोनो पोथी सँ सिद्ध
करबाक जरूरति नै रहै छै ।

मिथिला मे समुद्र नै छै, तैयो नून हरेक देह मे छै— मायक दूध
मे, मजदूरक घाम मे, स्त्रीक नोर मे, आ मुरदाक देहक अन्तिम
गीलापन मे । ओ एक्के स्वाद छिकै ।

ईरा हँसि कऽ पूछली, “नूनक शपथ? शपथ तँ गीता पर, जल पर, माटि पर, आगि पर होइत अछि।” अनन्या कहली, “जकर पसीना बिनु ई सभ शब्द टिकैत नहि, ओकर शपथ किएक नहि?” ओहि प्रश्नमे बालपन छल, मुदा गंगेशक न्यायक काठी सेहो छल। प्रमाण जँ आँखिसँ देखल ज्ञान चाही, तँ पसीना आँखिसँ देखल ज्ञान अछि।

मीरा नूनक कटोरी सभकेँ क्रममे नहि राखली। ओ कहली, “नूनक जाति नहि पूछल जाएत। जे नून चर्मकारिणीक हाथमे, ब्राह्मणक थारीमे, मजदूरक पसीनामे, विधवाक नोरमे, बच्चाक खेलक बादक ठोर पर, आ मृतकक देहक अन्तिम गीलापनमे एकहि स्वाद बनैत अछि, ओकरा पाँतिमे किएक राखब?” बटुकनाथ हरिहरनक दू लोक दूर टाढ़ ई दृश्य देखैत छल।

व्यापारी मुस्करायल, मुदा मुस्कान टिकि नहि सकल। कारण ओकर पाछाँ-पाछाँ राघवक एक गुप्त सन्देश आयल छल — “भावनात्मक सामग्रीकेँ उत्पादमे बदलू, कथाकेँ स्वादमे बदलू, स्मृतिकेँ उपभोगमे बदलू।” ई सन्देश देविका पकड़ि लेली। ओ जोर सँ नहि पढ़ली।

चन्ना टूँठक भीतर सँ हलुक किरकिराहट उठल। जेना जड़ि दाँत पीसि रहल हो। बच्चा सभ काँपल नहि।

बूढ़बा भूत टूँठक पाछाँ सँ देखैत रहलाह। ओहि राति ओ पहिल बेर एक पूर्ण वाक्य कहलनि— “जकरा नूनक स्वाद बुझि गेल, ओकरा पृथ्वी छोड़यमे देर लागत।” ई वाक्य सुनि पनिडुब्बी पानिमे हलुक गोल घेरा बनौली। गोहि सभ दूर बाढिक पाछाँ स्थिर पड़ल रहल।

भोरसँ पहिने अनन्या बही बन्द केली। शीर्षकक नीचाँ अन्तिम पाँती लिखल गेल— “नून शपथ नहि माँगैत। नून शपथक स्वाद बनैत अछि।” ओहि पाँती लिखितहि टूँठक हरियर कोंपल पर ओसक बून्द जमल, आ बून्द सुखलाक बाद पातक किनारी पर हलुक उज्जर रेखा बचल—जेना पृथ्वी अपने एक चुटकी नून राखि गेल हो।

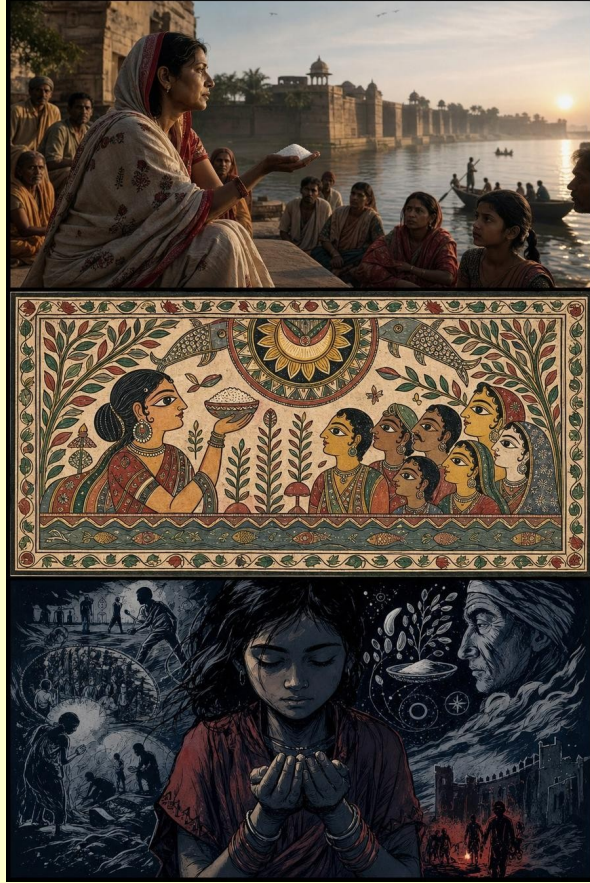
मुदा ई पहरा अन्त नहि छल। जखन नूनक शपथ लोकक मुँहमे पहुँचल, तखन अगिला हमला स्मृतिक गन्ध पर होएवाक छल। कारण जे स्वाद बचि गेल, ओकरा पछाति बजार गन्ध बनाबय चाहैत अछि।

छोट लोकगीत

खाउ हे किरिया, एक चुटकी नूनक हे,
जकर संग अन्न बाँटल, धोखा नहि हुनक हे ।
एक चुटकी नून धरू, साँचक किरिया खाउ,
जे थारीक स्वाद बढ़ाबै, ओकर मान बचाउ ।

अध्याय १३० स्वादक न्याय

स्वाद बदलल बुझाए तँ बुझू— न्याय जीहपर उतरि गेल।



देह खाली भूख आ प्यास सँ नै बनै छै। देह ई सेहो मन राखै छै जे ओकरा कोन स्वाद भेटल, कोन स्वाद छीनल गेल, आ कोन स्वाद ओकरा झूठ बुझा देल गेल।

जे मर्यादा भूख सँ जाति पुछै छै, से मर्यादा नै छिकै— से देहक अपमान छिकै। थारी पर बैसला के बाद ई पुछनाइ जे ककर हाथक, ई भोजनक प्रश्न नै, न्यायक प्रश्न बनि जाइ छै।

नारिकेल पात पाठशालाक आँगनमे ओहि दिन सामूहिक भोजन बनबाक निर्णय भेल। कोनो दान-पत्र नहि, कोनो समारोह नहि,

कोनो मंच नहि। प्रत्येक घरसँ किछु आनबाक कहल गेल—कोनो घरसँ चूड़ा, कोनो घरसँ दही, कोनो घरसँ साग, कोनो घरसँ भात, कोनो घरसँ लहसुन, कोनो घरसँ नून, कोनो घरसँ मात्र एक मुट्ठी चाउर।

देविका चूल्हि लग बैसि साग चुनैत छली। सागक डाँट तोड़ितहि जे हलुक 'चट' होइत छल, ओकर काँप हाथ धरि पहुँचि जाइत छल। मीरा स्त्री सभक संग भात धोइत छली।

पहिल कौर लेबासँ पहिने बा कहलीह—“नाम।” सभ चुप। फेर एक-एक कऽ नाम कहल गेल—मजदूर, यन्त्रपर चलयवला ठगीमे डूबल युवक, अस्पतालक बिलमे रोकल देह, जलसमाधिक स्त्री, जातिक कारणेँ तिरस्कृत प्रेम, चर्मकारणी, गंगेश, अनाम। प्रत्येक नामक बाद एक कौर।

मीरा देखली जे स्त्री सभक स्वाद अलग छल। कतेक स्त्री कहैत छली—“हम तँ पहिने सभकेँ परोसैत छी, अन्तमे जे बचत से खाइत छी।” देविका बहीमे लिखली—“स्वादक न्याय बिनु परोसबाक न्याय अधूरा।” ओहि दिन नियम बनल—भोजनमे जे रान्हत, ओ पहिने चाखत। जे परोसत, ओ पाँतिमे बैसत।

गंगेशक स्मृति ओहि भोजनमे एक विचित्र ढंगेँ आवि बसल। तत्त्वचिन्तामणि नामक न्याय-पोथीक पात जेकाँ किछु सूक्ष्म रेखा भातक दाना पर चमकल। एक बालक पूछलक—“आँखिसँ देखल ज्ञान स्वाद छी?” दोसर कहलक—“हँ, मुदा स्वादक प्रमाण केवल जीह नहि।

ओहि क्षण कटल चन्ना टूँटसँ हलुक धुँआ उठल। आगि नहि छल, राखि नहि छल, मुदा गन्ध छल—भीजल पात, पुरान नून, श्रमक पसीना, नदीक कछेर, आ दूर कतहु सँ अबैत चूल्हिक सुगन्ध। ओ गन्ध एक ठाम टिकैत नहि छल।

स्वादक न्याय एतय पूरा भेल, मुदा भोजनक बाद जे गन्ध बचल, से कहि रहल छल जे स्मृति एखन मुँहसँ नाक, थारीसँ घर, आ घरसँ इतिहास धरि जाएबाक बाट पकड़ि रहल अछि।

छोट लोकगीत

आयल हे स्वाद, घरक स्वाद घुरि आयल हे,
माय-हाथक भात-गन्ध अँगना मुस्कायल हे।
माय केर हाथक भातक स्वाद फेर घर आयल,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

धुँआ, नून, सरिसों तेल आँगनमे मुस्कायल ।

अध्याय १३१

साझा थारी

साझा थारीक नून सभ जीहपर एक्कहि रङ लागै छै।



भूख-प्यासक कथा अलग-अलग सुनब आसान छै। एक्कहि थारी मे बैसि खाएब कठिन। जातिक पिंजरा कतबो टूटल कहल जाय, ओकर तार भोजनक बेर मे फेर चमकय लगै छै।

कबड्डी मे छू कऽ घुरय पड़ै छै। थारी मे छू कऽ रहय पड़ै छै। ओहीठाम खेल आ जीवन मे फरक शुरू होइ छै।

साझा भोजनक तैयारी शुरू भेल। देविका आ मीरा घर-घर गेली। केओ चूड़ा देलक, केओ दही, केओ गुड़, केओ भात, केओ साग, केओ तरकारी, केओ केवल माटिक चूल्हिक आगि।

मुदा तैयारी जेना बढल, डर सेहो उघार होय लागल। किछु लोक कानमे कहैत छल—‘सभक संग खाएब? घरमे बूढ सभ मानत?’ किछु लोक तर्क देलक—‘स्मृति ठीक अछि, न्याय ठीक अछि, मुदा खान-पानक मर्यादा अलग बात अछि।’ एहि ‘अलग बात’ शब्द पर गंगेशक प्रश्न फेर उतरि आयल।

टूँठक कगार पर ओहि दिन गंगेश उपाध्यायक नामक पात राखल गेल। पात पर लिखल छल—‘प्रमाण’। तकरा कातमे दोसर पात—‘चिन्ह देखि बुझल बात’।

भोजनक बीच बच्चा सभ कबड्डी शुरू नहि केलक। ओ सभ साँस रोकि नहि, धीरे-धीरे साँस जोड़ि रहल छल। एक बच्चा फुसफुसायल—‘कबड्डीमे छू कऽ घुरय पड़ैत अछि।

साँझ होइत-होइत बहीक पन्ना भरि गेल। शीर्ष पर अनन्या लिखली—‘सत्ताइसहम पहरा: साझा थारी।’ नीचाँ एक पाँती जोड़ली—‘जतय जाति थारी रोकैत अछि, ओतय न्याय अधूरा खाइत अछि।’ ई पाँती पढ़ि मीरा कहली—‘ई अगिला पाठशालाक पहिल वाक्य बनत।’ देविका जोड़ली—‘आ अगिला संघर्षक पहिल कागज।’।

रातिमे जखन सभ चलि गेल, टूँठक चारू कात दहीक हलुक गन्ध, सागक हरियर छाप, गुड़क मिठास, आ नूनक शपथ रहि गेल। आकाशमे तारा साफ छल। स्वप्नक अनाम ग्रह दूर एहन ठंढा बिन्दु जकाँ चमकि रहल छल जकरा देखितहि आँखि अपने कात हटि जाइत छल, जेना ओकरा आश्चर्य हो—पृथ्वी पर लोक एतेक कठिन संघर्ष केवल संग खाएबाक लेल करैत अछि?

आ ओहि राति गढ नारिकेलमे पहिल बेर ई बात खुलि कऽ बुझाई पड़ल—मुक्ति केवल नाम सुनबाक नहि, एकहि धरती पर एकहि स्वाद ग्रहण करबाक सामर्थ्य सेहो अछि।

छोट लोकगीत

खेलू गे बहिना, सामा-चकेवा खेलू गे,
एक थारीक चान सभ आँगन मे फेरू गे।
एक थारीमे चान उतरि सभकेँ देखै एक,
सामा कहै—बराबर बाँटू अन्न, स्नेह आ नेह।

अध्याय १३२ रसोइक गणराज्य

जतय थारी साझा, ओतय डर आधा।



जतय थारी साझा, ओतय डर आधा। मुदा थारी साझा भऽ गेला
सँ रसोइ साझा नै भऽ जाइ छै— आ जे रसोइ मे जाति बान्हल
रहतै, ओकर थारीक साझापन खाली उत्सव रहि जेतै।

घरक भीतरक आगि बाहरक अदालत सँ कम क्रूर नै छै। जे देह
खेत जोतै छै, ओकरे हाथक बनाओल अन्न कतेको घर मे अशुद्ध
कहल जाइ छै। जे स्त्री दिन भरि सभक पेट भरै छै, ओकर भूख
सभसँ अन्त मे पुछल जाइ छै।

मुदा न्याय जँ थारी धरि पहुँचय, तँ ओकर अगिला ठाम रसोइ होइत अछि। ई बात मीरा सभसँ पहिने कहली। ओ कहली—‘जे रसोइमे जाति बान्हल रहत, ओकर थारीक साझापन केवल उत्सव रहि जाएत।’ एहि वाक्य पर चन्ना टूँठक पात-रहित छाह कने काँपल।

सौम्या कहली—‘स्मृति जँ खाइत नहि, तँ बाँचत नहि।’ देविका जोड़ली—‘आ स्मृति जँ केवल देवघरमे चढ़त, रसोइमे नहि उतरत, तँ समाजक देह फेर झूठ बाजत।’ बा हँसलीह—‘बेटी, न्यायक असली परीक्षा भोजमे नहि, झूठा बासन धोबाक बेर होइत अछि।’ बच्चा सभ ई बात सुनि ठिठकि गेल। नामक साझा नियम-पोथीमे एखन धरि बासनक कोनो अनुच्छेद नहि छल।

ई वाक्य जखन हवामे ठहरल, तखन गंगेशक नाम स्वतः उठल। जातिक प्रश्न एखन रसोइक आगि लग आयल छल। अनन्या पृच्छली—‘जँ गंगेश तत्त्वक चिन्ता करैत छथि, तखन अन्नक तत्त्व की?’

मीरा नियम बनौली—‘ककरो हाथक काज नीच नहि कहल जाएत। जे एहन कहत, ओकरा अपन नामक पहरा फेरसँ पढ़य पड़त।’ देविका कहली—‘देहक अधिकार केवल हिंसासँ रक्षा नहि। श्रमक सम्मान सेहो।’ सौम्या जोड़ली—‘रसोइमे चित्र खींचयवला यन्त्र नहि।

दुपहर धरि रसोइक गणराज्य बनि गेल। पाँच चूल्हि, सात कड़ाही, तीन जातिक पानि, चारि बस्तीक अन्न, दू विधवाक नून, एक मुसहर बालकक लकड़ी, चर्मकारणी युवतीक साग, ब्राह्मण बूढ़क घी, मजदूरक भात, मीरा आनल तेल, देविकाक मसूर, ईराक विदेशसँ आयल सूखल फल, आ बाक हाथक अचार। ई सभ मिलि जे सुगन्ध बनौलक, ओकरा ककरो कुलनाम नहि देल जा सकल।

रातिमे पाथरक नाम सभ पर चूल्हिक बुझल राखिक धूसर उजास छल। बूढ़बा भूत टूँठक पाछाँ सँ निकलि एक सूखल पात उठा लेलनि। ओहि पात पर किछु नहि बचल छल, मात्र नूनक सूक्ष्म रेखा।

अनन्या अगिला पन्ना खोललक। शीर्षक एखन खाली रहल। मुदा सभकेँ बुझाइत छल—रसोइक गणराज्य केवल पेट भरबाक अध्याय नहि, समाजक देह फेरसँ गढ़बाक आरम्भ अछि।

छोट लोकगीत

सजाउ हे चौका, गणराज्यक चौका सजाउ हे,
काज बराबर, मान बराबर—सभकेँ बुझाउ हे ।
तीन गोट चूल्हि, आगि एक, धुँआ एके रंग,
रसोइक गणराज्यमे सभक बराबर संग ।

अध्याय १३३

विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट

बुलाहटक उत्तर ढोलसँ नहि— तैयारीसँ देल जाइ छै।



सारांश गोहि जकाँ होइ छै— देह चिबा कऽ अस्थि छोड़ि दै छै।
नाटक केँ देह चाही, अस्थि टा नै। तें एक सय बत्तीस अध्याय केँ
छोट कऽ देब नै, ओकरा साँस देब छै।

एहि कथा मे नायक ओ नै जे संवाद नमहर बाजय, ने खलनायक
ओ जे अन्हार मे हँसय। असल पात्र साँस छिकै। जकर साँस
टूटल, ओकर नाम तकल गेल।

अनन्या पत्र हाथमे लऽ कऽ टूँठ लग बैसलि। ओ कहली, 'नाटक होएत, मुदा अभिनय ओएह करत जे साँस रोकि सकय।' लोक बुझलक नहि। बच्चा सभ बुझि गेल।

आरुणि पूछलनि, 'एक सय बत्तीस अध्यायकैँ मंच पर केना आनब?' बा उत्तर देलीह, 'अध्याय नहि, अंक कहू। जे बीतल, से किताबमे अध्याय छल। रंगमंच पर ओ सभ अंक बनत।' तखन पुरनका एक सय बत्तीस अध्यायकैँ एक-एक कऽ नव नाम देबाक आरम्भ भेल।

देविका कागच पसारि बैसली। मीरा अलग पन्ना पर 'दृष्टिक अधिकार' लिखैत रहली। सत्यव्रत मेहता दूर बैसल सुनैत रहलाह।

एहि उत्तरसँ नाटकक क्रम निश्चित भेल। ई अध्याय एहि आमन्त्रण आ निर्णयक अध्याय रहल। अगिला अंग नाट्य-पाठक होएत—जतय पुरनका अंक सभक देह लिखल जाएत।

मुदा कथा अपन नाट्यरूपमे जाएत तँ ओकरा पर पहरा आरो कड़ा होएबाक छल। मीरा कहली, 'जकर दुःख अछि, ओकर मञ्जूरी बिनु ओकर दृश्य नहि।' देविका जोड़ली, 'जकर नाम नहि भेटल, ओकरा पहिल आसन।' ईरा लिखली, 'विदेशी दर्शक पहिने सुनत, बुझबाक दावा बादमे।' गोप कुमार कहलनि, 'जानकारीक प्रतिलिपि मंच पर नहि, लोकक स्वीकृत गवाही मंच पर।'।

तखन पानिक कगार सँ हलुक आवाज आयल—'मंच पर अन्हार नहि, पानि राखू।' सभ बुझि गेल जे नाटक शुरू होयसँ पहिने मंचकैँ धोबाक अछि। अनन्या पहिल पाँती लिखली—'रंगमंचक बीचमे पानि भरल अछि। जे प्रवेश करत, से अपन प्रतिबिम्बक नाम पहिने कहत।'।

एहि पाँतीसँ अध्याय समाप्त नहि भेल। ई नाट्य-पाठक केबाड़ खोलि देलक। अगिला अंगमे पुरनका एक सय बत्तीस अंकक स्क्रिप्ट लिखल जाएत, तकर अगिला अंकमे मंचन होएत, आ तकर बाद गढ़ नारिकेल फेर अपन कथा चलाओत—कारण कबड्डी बन्न नहि होइत।

छोट लोकगीत

बजाउ हे ढोल, मंचक पहिल ढोल बजाउ हे,
दबल कथाकैँ नाचक पग पर आवय दिअ हे।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

ढोलक पहिल चोट पड़ल—आउ, अपन नाम कहू,
मंच नहि दूरक महल, गामक बीच रहू।

अध्याय १३४

कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ

नाट्य-पाठ सिखबासँ पहिने कबड्डी खेलनिहार अपन साँस गनए सिखै छै।



कथा खेलल नै जाइ छै। कथा केँ साँस देल जाइ छै। जे कथा केँ छोट कऽ मंच पर चढ़ा दै छै, ओ कथा नै, ओकर अस्थि देखबै छै।

जे मरि चुकल छथि, तिनका 'भूत' बना कऽ डेराओल नै जाय—
तिनका 'उपस्थित' कहल जाय। आ जे धूर्त छै, तकरा
खलनायकक बाहरी रङ नै, भीतरक खालीपन देल जाय।

अनन्या कहली, “हम सभ पूरी कथा नहि खेलि सकब। कथा बहुत पैघ अछि।” उज्ज्वलक आत्मा, जे साँझक धुँआमे ओहि दिन कने स्पष्ट देखाइत छल, हँसि कऽ कहलक, “कथा खेलल नहि जाइत। कथाकेँ साँस देल जाइत अछि।” ईरा अपन पत्रक कातमे खाली पन्ना खोलली।

ओहि राति निर्णय भेल जे नाटकक नाम होएत—“पहरा”। उपशीर्षक—“कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ”। एहि नाटकमे नायक कोनो एक व्यक्ति नहि, अपितु साँस होएत।

नाट्य-पाठक पहिल पन्ना पर पात्र-सूची लिखल गेल। पात्र: साँस, ढूँठ, पानि, गोहि, बच्चा सभ, बूढ़बा भूत, चन्ना गाछीक हँसी, सत्यव्रतक मौन, गंगेशक प्रश्न, चन्द्रपालक सयमे भाग, राघवक गायब सन्देश, लाउ किन-हंगक अनाम चेहरा, बटुकनाथक पात-वकील, मीरा, देविका, ईरा, अनन्या, उज्ज्वलक आत्मा, मजदूरक पएर, स्त्री सभक राति, रसोइक धुँआ, आ कबड्डी। कोनो पात्रक आगाँ जाति नहि लिखल गेल।

छठम दृश्य—“स्वप्नक अनाम ग्रह।” मंच अन्हार नहि, अत्यधिक उजासमे डूबत। सभ वस्तु क्रमांक बनत—घर एक, देह दू, श्रम तीन, साँस लेल हवा चारि। लाउ किन-हंगक अनाम चेहरा कहत—“एतय जाति नहि, गाम नहि, नदी नहि, दुख नहि।” अनन्या उत्तर देती—“नाम नहि, तँ जीवन नहि।” तखन बच्चा सभ कबड्डीक रेखा आकाशमे खिंचत।

नाटकक अन्तिम पाँती पर सभसँ बेसी बहस भेल। एक बच्चा चाहैत छल—“कथा समाप्त।” दोसर कहैत छल—“उपस्थित।” तेसर कहलक—“कबड्डी।” बा सुनि रहल छली। अन्तमे ओ कहलीह, “जकरा साँस बाँकी, ओकर कथा बाँकी।” ई पाँती सभकेँ मान्य भेल।

ईरा पन्ना सभ समेटि कपड़ाक थैलीमे राखली। पन्ना समेटैत काल कागचक जे खरखराहट उठल, से मैदानक ओहि चुप्पीमे बहुत जोरगर बुझायल—जेना कियो बहुत लग बैसि कऽ बहुत आस्ते किछु कहि रहल हो। अनन्या बहीमे लिखली—“आइ कथा नाट्य-पाठ बनल।

विदेह नाट्य उत्सवक अगिला अंकक बिहान एखन दूर छल, मुदा गढ़ नारिकेलक मैदानमे मंच पहिनहि बनि चुकल छल—माटि, पानि, नून, पाथर, नाम, कोंपल, आ साँस सँ। जे स्क्रिप्ट कहाइत

छल, से असलमे जीवित लोकक सामूहिक प्रतिज्ञा छल। आव
प्रश्न ई नहि रहल जे नाटक सफल होएत कि नहि।

छोट लोकगीत

गनू हे साँस, मुदा जीवन नहि गनू हे,
प्रत्येक धड़कनक गरिमा-नियम बुनू हे।
एक साँस नामक, दू साँस गवाही,
तेसर साँस संगक, चारिम जन-भलाई।

अध्याय १३५

विदेह नाट्य उत्सवक मंचन

स्मृति जखन मंचपर चढ़ै छै, कैलेण्डर हारि जाइ छै।



स्मृति जखन मंचपर चढ़ै छै, कैलेण्डर हारि जाइ छै। तिथि कागच खा सकै छै, मुदा नाम जँ कण्ठ मे उतरि गेलै, तँ ओकरा कोनो साल-गिनती नै मेटाबय पबै छै।

जतय नामक कथा खेलाइ छै, ओतय मंच आ दर्शकक बीच ऊँच-नीच नै रहै छै। ऊँचाइ बनितहि देखनिहार आ भोगनिहार अलग भऽ जाइ छै— आ ओहीठाम कथा तमाशा बनि जाइ छै।

दोसर दृश्यमे गोहि आयल। ओकरा लेल कोनो मुखौटा नहि बनाओल गेल। एक खेलनिहार पेटक बल माटि पर ससरल, मुदा ओकर देह नहि, ओकर छाह गोहि बनल।

पाँचम दृश्यमे बटुकनाथ हरिहरन आयल। ओकर भूमिका खेलनिहार सभमे सभसँ चपल बालक केलक। ओ मोट पोथी लऽ कऽ मैदानमे घुसल, कहैत—“न्यास, नियम, समिति, संरचना, वैधानिकता।” प्रत्येक शब्द पर ओकर पएर माटिमे धँसैत गेल।

आठम दृश्यमे लाउ किन-हंग आ ब्रूमक प्रवेश छल। ओ सभ अंग्रेजी सूटमे नहि, अपितु चमकीला उज्जर कपडा पहिरने खेलनिहार सभक बीच आयल—नामहीन, बहुत साफ, बहुत निर्जीव। ओ सभ कहलक—“पृथ्वी असुरक्षित अछि।

दसम दृश्यमे सत्यव्रत मेहताक मौन आयल। हुनकर भूमिका कियो नहि निभेलक। मैदानक बीच एक खाली कुर्सी राखल गेल, आ ओकरा सोझाँ बही।

रातिक अन्तमे चन्ना टूँठक नव कौपल पर एक हलुक इजोत पड़ल। पात बहुत छोट छल, मुदा ओकर छाह मैदानक गोलाइ धरि पसरल। कियो कहलक—“गाछी नाटक देखलक।” बा उत्तर देलीह—“गाछी नहि, जड़ि देखलक।

सभक गमनक बाद मैदान खाली रहल, मुदा कबड्डीक रेखा मेटल नहि। भोरक ओस ओहि रेखा पर मोती जेकाँ जमल। ओसक प्रत्येक बून्दमे एक-एक छोट मंच देखाइत छल।

आ एहि प्रकारेँ नाटक अपन मंचन पूरा कऽ फेर उपन्यासमे घुरि आयल—थाकल नहि, बेसी साँसदार। बन्द नहि, बेसी खुजल।

छोट लोकगीत

गाबू हे भगता, स्मृतिक भगैत गाबू हे,
मृदंगक ताल पर अधूरी कथा सुनाबू हे।
मृदंग बाजल, दीप जरल, स्मृति मंचपर आयल,
जकर कथा अधूरी छल, आदरसँ सुनायल।

अध्याय १३६

तालीक बादक सन्नाटा

असली अभिनयक दाम ताली नहि— तालीक बादक सन्नाटा
थीक ।



जखन लोकक पीडा पर ताली बजै छै, तखन सुननिहार केँ दोबारा
सावधान होबय पड़ै छै। पीडा प्रशंसा लेल नै, न्याय लेल बजैए।

जे कथा जलसमाधि सँ आयल छै, ओकर लेखकत्व नदी जकाँ होइ
छै। नदीक किनार कतेको गामक होइ छै। ताहिसँ नदी बँटाइ नै
छै, बहै छै।

सत्यव्रत मेहता पाछाँक पाँतिमे बैसल छलाह। मंच पर हुनकर भूमिका एक पातर, चश्मा लगौने बालक निभौने छल। बालकक संवाद कम छल।

बालक पूछलक—‘की हम गलत सुनलहुँ?’ सत्यव्रत कहलनि—‘नहि। मुदा जखन लोकक पीडा पर ताली बजैत अछि, तखन सुनिहारकें दोबारा सावधान होएबाक चाही। पीडा प्रशंसा लेल नहि, न्याय लेल बजैत अछि।’ बालक ई वाक्य अपन कापीमे लिखि लेलक।

एहि बीच चन्द्रपाल बत्रा सभागारक बाहर ठाढ़ छल। ओकरा भीतर बैसबाक हिम्मत नहि भेल। ओ टिकट-खिड़कीक शीशामे अपन चेहरा देखैत रहल।

बटुकनाथ हरिहरन मंचन देखय नहि आयल छल, मुदा ओकर प्रतिनिधि आयल छल। प्रतिनिधि नोट करैत रहल जे नाटकक अधिकार कोना लेल जाए, स्क्रिप्ट कोना प्रकाशित हो, न्यासक नामें अगिला प्रस्तुति कोना नियन्त्रित हो। मुदा जखन दर्शक सभ मंच पर चढ़ि अपन नाम जोड़य लागल, प्रतिनिधिक नोटबुक असफल भऽ गेल।

ईरा नाट्य-लेखक सभक संग बैसल छली। कियो कहलक—‘ई स्क्रिप्ट छापल जाए।’ दोसर कहलक—‘प्रत्येक मंचनमे स्थानीय नाम जोड़बाक खुजल ठाम राखल जाए।’ तेसर, जे शहरक नामी रंगकर्मी छल, कहलक—‘तखन लेखकत्व छिड़िया जाएत।’ ईरा हँसली नहि। शान्त स्वरमे कहली—‘जे कथा जलसमाधि सँ आयल अछि, ओकर लेखकत्व नदीक जेकाँ होएत।’

भोर धरि मंचक धूलि पर एक नव पाँती देखाइ पड़ल—‘जतय नाटक समाप्त, ओतय गाम शुरू।’ एहि पाँतीकें कियो लिखैत नहि देखलक। ओ अक्षर धूलिमे एतेक हलुक बनल छल जे नीचाँ झुकि, आँखि टेढ़ कऽ देखला पर टा पूरा पढ़ल जाइत छल। सोझ ठाढ़ भेला पर ओ फेर धूलिये बुझाय लगैत छल।

एहि तरहें विदेह नाट्य उत्सवक मंचन ताली पर समाप्त नहि भेल। ओ मंच सँ उतरि गामक गली, नदीक घाट, रसोइक चूल्हि, विद्यालयक फर्श, आ अदालतक बरामदा दिस चलि गेल। पुरनका एक सय बत्तीस अंक आब कथा नहि, बीआ भेल।

छोट लोकगीत

लागू हे काज मे, ताली बजा कऽ लागू हे,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

मंचक जोश विद्यालय-खेत धरि पहुँचाउ हे ।
ताली बजल तँ हाथ नहि थाकू, काजमे लागू,
मंचक उत्साह बाट, विद्यालय, घर धरि भागू ।

अध्याय १३७

दर्शकक गवाही

दर्शक जखन गवाह बनि जाए, तखन परदा खसितो नाटक नहि
रुकैत।



दर्शक जखन गवाह बनि जाए, तखन परदा खसितो नाटक नहि
रुकैत। परदा खाली मंच झाँपै छै। ओ ओहि कथा केँ नै झाँपि सकै
छै, जे देखनिहारक भीतर उतरि चुकल छै।

भूमिका मे मनुक्ख दोसर बनि जाइ छै। नाम मे ओ अपना सँ
भागि नै सकै छै। तें असल प्रश्न ई नै जे मंच पर के की बनल—
असल प्रश्न ई जे कुरसी पर बैसल के छल।

अनन्या मंचक कोन पर बैसली। हुनकर सोझाँ बही छल, मुदा आइ ओ खोलली नहि। ईरा पूछली, 'नाम लिखब?' अनन्या कहली, 'आइ पहिने देखब जे दर्शक स्वयं लिखय चाहैत अछि कि नहि।' ई बात साधारण बुझाईत छल, मुदा स्मृतिक पहारामे ई पैघ बदलाव छल।

एना एक-एक कऽ दर्शक उठय लागल। कियो कहलक जे ओ जातिक नाम पर बिआह रोकलक। कियो कहलक जे गंगेशक कथा सुनि कऽ सेहो अपन घरमे चर्मकार कन्याकेँ दलान पर बैसय नहि देलक।

बटुकनाथ हरिहरन सेहो सभामे छल। ओकरा निमन्त्रण नहि पठाओल गेल छल, मुदा ओ आयल छल—देखबाक लेल जे नाटक ओकरा कोना चित्रित करैत अछि। आरम्भमे ओ दर्शक-दीर्घाक पाछाँ बैसल छल, कानूनी मुस्कान लगौने।

ईरा एहि सभक बीच एक बात नोट केली। दर्शकक गवाहीमे अपराध आ पीडा एक दोसरासँ अलग नहि रहैत। जे अपराधी कहैत, ओकर भीतर कखनो पीड़ित बच्चा बाजि उठैत।

मुदा एहि निर्णय पर खतरा सेहो छल। चन्द्रपालक लोकक कान टाढ़ भेल। 'दर्शक-गवाही'क आँकड़ा बिकि सकैत छल।

भोर दिस जखन लोक बाहर निकलल, तखन उत्सवक फाटक पर नब सूचना चिपकल भेटल। ओ सरकारी नहि छल, बच्चा सभक हाथें लिखल छल—'अगिला अंकमे दर्शकक गवाही नाट्य-पाठमे जोड़ल जाएत। जे नाम बाजल गेल, ओकर मञ्जूरी बिनु ओकर प्रदर्शन नहि होएत।

एहि छोट सूचना पर पहिल बेर लोक ताली नहि बजौलक। सभ अपन-अपन हाथ देखलक—एहि हाथसँ ताली बजैत अछि, हस्ताक्षर सेहो होइत अछि, अपराध सेहो, गवाही सेहो। आ ओहि क्षण अध्याय अपन दुआर अगिला कथा दिस खोलि देलक, जतय नाटकक लिखित पाठमे दर्शकक गवाही प्रवेश करबाक छल, आ कथा मंचसँ उठि जन-लेखन बनबाक छल।

छोट लोकगीत

बनू हे गवाह, दर्शक सँ गवाह बनू हे,
देखल आँखि, बजाओल हाथ—दुनू सँ ऋण गनू हे।
जे आँखि देखलक, ओ आँखि आब नाम लिखत,

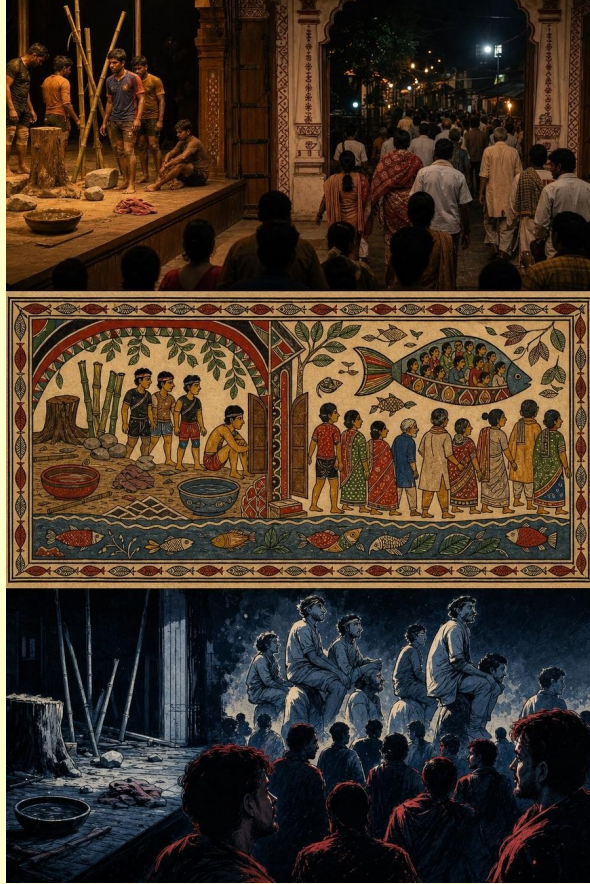
गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

जे हाथ ताली देलक, से हाथ संग टिकत ।

अध्याय १३८

मंचसँ बाहरक जुलूस

जुलूस जे मंचसँ बाहर निकलल, तकरा कोनो सभागार फेर भीतर नहि घुरा सकल ।



अदालत जँ नाटक बनि जाइ छै तँ न्याय मरै छै। नाटक जँ अदालत बनि जाइ छै तँ स्मृति बजै छै। दुनू मे फरक ई जे पहिलका मे सत्य केँ अभिनय कहल जाइ छै, आ दोसरका मे अभिनय केँ सत्यक सेवक।

भीड़ केँ नियन्त्रित कयल जा सकै छै, गवाही केँ नै। भीड़ मंचक सोझाँ रहै छै। गवाही मंच सँ बाहर निकलि लोकक घर मे बसि जाइ छै।

तालीक बादक सन्नाटा दर्शकक गवाहीमे बदलल, आ गवाहीक बाद सभागारक दुआर छोटा पड़ि गेल। मंच पर राखल बाँस, माटि, पाथर, नकली ढूँठ, जलक कटोरा, आ कबड्डी खेलनिहार सभक पसीना एखनहुँ ओहि ठाम छल, मुदा कथा ओतय नहि रहल। कथा जेकाँ पनिडुब्बी पानि तर सँ निकलि अपन प्रतिबिम्ब छोड़ैत अछि, तहिना नाटक सभागारसँ निकलि प्रत्येक दर्शकक कान्ह पर बैसि गेल।

तेसर गवाही नाट्य-मण्डपक पछिला दरबाजा लग भेल, जतय कलाकार सभ कपड़ा बदलैत छल। जकरा सभकें मंच पर गोहि, भूत, पनिडुब्बी, डाइन, मजदूर, न्यायाधीश, दलाल, आ बच्चा बनबाक भूमिका देल गेल छल, से सभ भूमिकासँ बाहर आबि अपन असली नाम बाजय लागल। मुदा अद्भुत ई भेल जे कतेक असली नाम भूमिकासँ अलग नहि पड़ैत छल।

अनन्या आ बच्चा सभ सीढ़ीक नीचाँ बैसल बही खोलने छल। दर्शकक गवाहीक लेल अलग पृष्ठ बनल। दोसर—ककरा लेल उपस्थित?

देविका देखली जे किछु लोक नाटकक अंश काटि-काटि लघु-दृश्य बनाबय चाहैत अछि। ओ रोकली नहि, मुदा एक नियम लिखि देली—‘दुखक टुकड़ा बेचू नहि। पूरा सन्दर्भ सुनू।’ चन्द्रपालक पुरान आदरक स्मरण-फोन साधन फेर सक्रिय होएबाक कोशिश करैत छल।

एहि खेलमे कोनो विजेता नहि घोषित भेल। कबड्डी खेलनिहार सभ जखन थाकि गेल, अनन्या मध्य-रेखाक माटि उठौली आ बहीक पृष्ठ बीचमे राखि देली। ओ माटि पन्ना पर पड़ितहि पसरल नहि—ओ ओहिना गोल ढेरी बनल रहल, आ पन्ना बन्द करैत काल ओकर एक पातर रेखा दुनू पृष्ठ पर छपि गेल।

तहिये पाछाँ सँ एक डाकिया आयल। ओ साधारण लिफाफा लऽ कऽ आयल छल, मुदा लिफाफाक किनार पर दूरदेशी टिकट चिपकल छल। पत्र विदेशसँ आयल छल—ओहि बच्चा सभक जे ईराक पत्र पढ़ि गढ नारिकेलकें केवल मूल-गाम नहि, जिम्मेवारी मानय लागल छल।

अनन्या पत्र पढ़ि चुप भऽ गेली। मंचसँ बाहरक जुलूस आब समुन्दर पार निकलबाक संकेत दैत छल। कबड्डीक रेखा जे चन्ना गाछीसँ उठि सभागार धरि आयल, से आब पन्ना, पत्र, परदेशी कण्ठ, आ शायद फेर आकाश धरि जाएत।

छोट लोकगीत

चलू हे जुलूस, गीत बनल जुलूस चलू हे,
क्रोध नहि, आशाक फूल हाथ मे धरू हे।
मंचसँ कथा उतरि चलल धूरि भरल बाट,
ढोल, पात, कण्ठ संग बनल जनक बारात।

अध्याय १३९ बाटक रंगमंच

बाटपर उतरल कथाक ने मंच होइ छै ने टिकट— खाली सुनैवला
कान चाही।



मंच पर इजोत ऊपर सँ पड़ै छै। बाट पर इजोत ओतबे रहै छै,
जतबा दिन दै छै— आ ओहि बराबरीक इजोत मे कियो पैघ,
कियो छोट नै लगै छै।

जे नाम पढ़ैए, से भडकाबय नै जाइए। मुदा नामक स्वर जँ रोकल
जेतै, तँ ओ आगि बनि सकै छै— आ ई बात सत्ता सभसँ नीक
जानै छै।

विदेह नाट्य उत्सवक सभागारसँ जुलूस बाहर निकलि चुकल छल, मुदा जुलूसक पएर सभागारक सीढ़ी पर रुकल नहि। तालीक बादक सन्नाटा, दर्शकक गवाही, आ मंचसँ बाहरक पैदल यात्रा—ई तीनू मिलि आब एहन स्वर बनि गेल छल जकरा कोनो पर्दा फेर भीतर नहि समेटि सकैत छल। जे कथा पहिने चन्ना गाछीक अन्हारमे सुनल गेल, फेर टूँठक चारू कात लिखल गेल, फेर नाट्य-मंच पर साँस बनल, से आब बाट पर उतरि गेल।

दोसर दिन बस-अड्डा पर दृश्य भेल। पुरनका एक सय बत्तीस पहराक संक्षिप्त पात बच्चा सभ बाँटलक। प्रत्येक पात पर एक अध्यायक सार-साँस लिखल छल—जलसमाधि, गोहि, अदालत, यन्त्रपर चलयवला ठगी, गंगेशक प्रश्न, अन्नक न्याय, जातिक पिंजरा, रसोइक गणराज्य।

ओहि दिन सत्यव्रत मेहता बरामदाक दूर कगार पर ठाढ़ छलाह। लोक हुनका चिन्हैत छल, मुदा आब कोनो परिचयक सभक सामने कहल बात नहि होइत छल। ओ देखलनि जे कानूनक भवनक भीतर न्याय अनेक बेर हेरा जाइत अछि, मुदा भवनक बाहर, बरामदाक धूलिमे, एक बच्चाक प्रश्न ओकरा फेर जन्म दऽ सकैत अछि।

बटुकनाथ हरिहरनक कान धरि खबरि पहुँचल जे नाटक सभागार सँ निकलि सड़क पर आबि गेल अछि। ओ अपन पुरान ढंगमे मुस्कुरायल। कहलक—‘सड़क पर नाटक?’

चन्द्रपाल बन्ना एहि नव बाट-अभिनयकें धनक अवसर बुझलक। ओ सोचलक—जँ नाटक सड़क पर खेलाइत अछि, तँ ओहिमे दान, विज्ञापन, प्रसारण, यन्त्रपर चलयवला टिकट सभ जोड़ि सकैत अछि। मुदा जखन ओकर लोक हाटमे चित्र खींचयवला यन्त्र लगाबय गेल, स्त्री सभ ओकरा रोकलक।

राघव ‘संकेत’ सोमानी अपन नव गुप्त संकेतमे एहि घटनाकें ‘चल-नाटक’ कहि दर्ज केलक। मुदा सन्देश पठबितहि ओहि शब्दक दू भाग भऽ गेल—‘चल’ आ ‘नाटक’। पहिल भाग भागैत रहल, दोसर ठाढ़ रहल।

लाउ किन-हंग दूर देशक शीशा-घरमे रिपोर्ट पढ़ि रहल छल। ओकरा ‘ग्रामीण परफॉर्मेटिव विरोध’ लिखल अंग्रेजी वाक्य देल गेल, मुदा ओ पढ़ैत-पढ़ैत शब्द बिसरि गेल। ओकरा केवल चन्ना गाछीक टूँठ, स्वप्नक अनाम ग्रहक रिक्ति, आ गोहिक आँखि देखाइ पड़ल।

छोट लोकगीत

गाबू हे गाथा, सलहेसक गाथा गाबू हे,
बाटे-बाट रंगमंच, सभकेँ नचाबू हे।
ने टिकट, ने पर्दा चाही, बाटे रंगमंच बनय,
हलवाहा, नेना, दाइ सभ कलाकार बनय।

अध्याय १४०

चल चौपाल

खेलमे हार-जीत नहि घोषित हो तँ बुझू— खेल आब स्मृतिक
पहरा बनि गेल।



बाट कोनो मंच नै होइ छै। बाट पर परदा नै टाँगल जाइ छै,
पँजरा नै बान्हल जाइ छै, टिकट नै कटै छै। तइयो बाट सभसँ
पुरान रंगमंच छै।

खेलमे एक सीमा-रेखा होइ छै। ओहि पार जेबाक अछि, आ साँस
टूटबासँ पहिने घुरबाक अछि। मुदा ई कोन सीमा छै?

बूढ़बा भूतक ओ स्वर—‘पढ़ल नहि, खेलल जाए’—एखनहुँ टूँठक
कगार पर टँगल छल, जखन बाटक धूलिमे अगिला दिनक

पाएरक छाप पड़य लागल। एहि बीच कबड्डी खेलनिहार सभ एक नव नियम बनौलक। जे ठाम अभिनय होए, ओतय अन्तमे खेल अवश्य होए।

बच्चा सभ एहि बाटक रंगमंच केँ ‘चल चौपाल’ नाम देलक। ओकरा लेल मंच नहि, केवल तीन वस्तु चाही—एक खुलल ठाम, एक सुनएबला कान, आ एक एहन नाम जे एखन धरि पूरा नहि सुनल गेल। जे नगर ई तीनू वस्तु नहि देत, ओ नगर बस भवनक समूह रहत।

साँझक समय जुलूस फेर टूँठ लग घुरल। सभ थाकल छल, मुदा ओ थकान खेतक काजक बादक थकान जेकाँ सरल छल। अनन्या बहीमे लिखली—‘आइ कथा बाट सीखि आयल।’ ओकर ठीक नीचाँ एक छोट लड़का, जे आइ पहिल बेर अभिनय देखलक, लिखलक—‘नाटक ओ नहि जे मंच पर हो।

बा एहि वाक्य पर हँसलीह। कहलीह—‘तँ आब जीवनक बारी अछि।’ बच्चा सभ बुझलक नहि। बा समझौलीह—‘एखन धरि अहाँ सभ कथा अभिनय केलहुँ।

अनन्या ओ कागच टूँठक कगार पर राखली, ठीक ओही ठाम जतय पहिने पीयर सूचना-पत्र राखल गेल छल। टूँठक भीतर सँ हलुक गरम हवा उठल। कागचक कोना ऊपर उठि गेल, जेना ओ स्वयं अपना पाठक प्रतीक्षा करैत हो।

बूढ़बा भूत पाछाँ सँ स्वर देलनि—‘पढ़ल नहि, खेलल जाए।’।

एहि वाक्य पर रातिक हवा रुकि गेल। बच्चा सभ एक-दोसर दिस ताकलक। अगिला दिन बाटक रंगमंच नहि, कागचक कबड्डी खेलल जाएत—जतय कानूनक पाँतिसँ साँस चोराकऽ नाम वापस आनबाक छल।

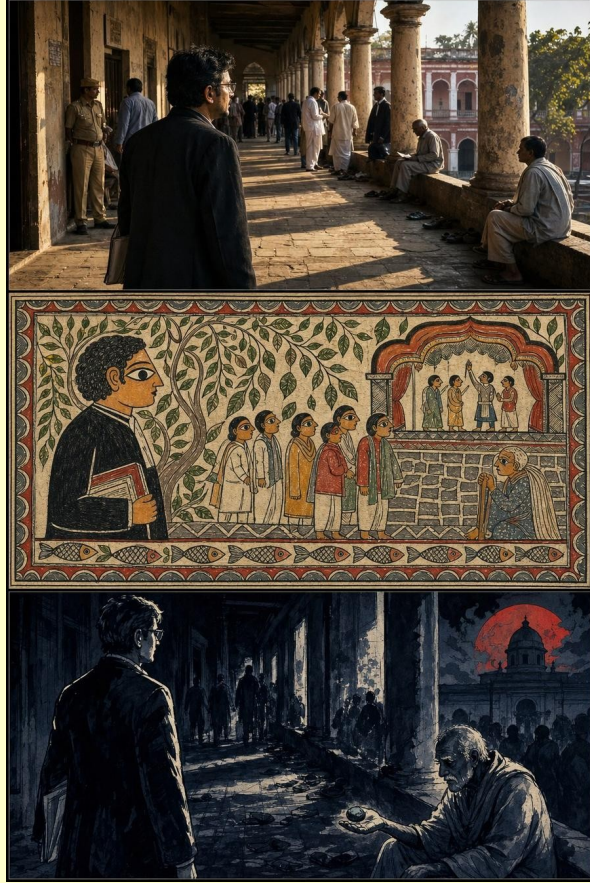
छोट लोकगीत

खेलू हे खेलू, कागचक खेल साफ खेलू हे,
प्रत्येक नाम पूरा लिखू, मोहर सँ नहि डेरू हे।
कागच बीच रेखा खिंचल, नाम पारीमे जाए,
मोहर जँ पकड़य दौड़ै, साँच सीमा छू आए।

अध्याय १४१

बरामदाक फैसला

बरामदाक पाथर दिन भरि जूता सहै छै, आ राति ओ फैसला
सुनबै छै।



बरामदा कोनो ठाम नै छै। बरामदा एक अवस्था छै—भीतर आ बाहरक बीचक अवस्था। जे भीतर नै जा सकल आ बाहर नै घुरि सकल, ओकरा लेल बरामदा बनल छै।

तारीख समयक टुकड़ा नै छै। तारीख देहक टुकड़ा छै। जकरा तेइस बरख तारीख भेटल, ओकर तेइस बरखक देह ओहि पर्ची सभमे बाँटल छै।

सत्यव्रत मेहता बरामदाक एक कोनमे ठाढ़ छलाह। हुनका ओहि अभिनयमे अपन पुरान मौनक परछाईं देखाइ पड़ल। नाटकमे एक पात्र छल जे सुनैत अछि, मुदा समय पर नहि लिखैत।

अनन्या तुरन्त बही खोलली। ओ लिपिकक नाम नहि पूछली, पहिने ओकर डरक नाम पूछली। लिपिक देर धरि चुप रहल, फेर कहलक—‘नोकरी बचाबयक डर।’ बच्चा सभ लिखलक—‘नोकरी बचाबयक डर एहो मौनक एक रूप।’ ई सुनि बरामदाक भीड़मे कतेको लोकक चेहरा बदलि गेल।

तेहि घड़ी बटुकनाथ हरिहरनक एक पुरान शिष्य, जे एखन अधिवक्ता छल, अपन कोट उतारि पाथर पर राखि देलक। ओ कहलक—‘हम सभ कानूनक भाषा सीखलहुँ, मुदा न्याय सुनबाक भाषा नहि सीखलहुँ।’ कोट पाथर पर पड़िते कारी कपड़ा जेकाँ नहि, थाकल कागच जेकाँ पसरि गेल। ओकर जेब सँ तारीखक पर्ची सभ खसि पड़ल।

चन्ना गाछीक टूँठ ओहि राति अदालत सँ दूर रहितो बरामदामे उपस्थित बुझाइत छल। कियो कहलक जे टूँठक छाह एतय धरि आयल अछि। कियो कहलक जे बरामदाक पाथर भीतरसँ जड़ि उगाबय लागल।

सत्यव्रत मेहता अन्तमे आगाँ आएलाह। हुनका सँ ककरो भाषण चाही नहि छल। ओ बस अपन जेब सँ एक पुरान पन्ना निकाललनि।

आ सचमुच, अगिला दिन सबेर अदालतक लिखित हिसाब-घरक भीतर पुरान कागजक गट्टर सभ अपने-आप फड़फड़ायल। धूलि उठल, पर पाख नहि भेल। धूलि अक्षर बनय लागल।

एहि तरहँ अध्याय बरामदामे समाप्त नहि भेल। मंचसँ बाहर निकलल अभिनय आब कागजक गट्टरक अन्हार दिस बढ़ल।

छोट लोकगीत

बिछाउ हे आसन, बरामदे पर बिछाउ हे,

जूता-सहल पाथरकँ जनपथ बनाउ हे।

बरामदाक पाथर कहै—पग-पग बात लिखल,

धूलि झाड़ि जन बैसत तँ न्याय-दुआर खुलल।

अध्याय १४२

रेकर्ड-घरक अन्हार

लिखित हिसाब-घरक अन्हारमे कागजक गट्टर नहि— रोकल-
राखल समय सङै छै।



अलमारी एक छोट अन्हार-घर छै जकरा भीतर लोकक बरख बन्द
कऽ राखल जाइ छै। बाहर सूरज उगै छै, डूबै छै, फसल कटै छै,
नेना जुआन होइ छै, जुआन बूढ भऽ जाइ छै। भीतर एको दिन नै
बीतै छै।

ताला पुरान होइ सकै छै। मुदा ताला भारी किएक होइ छै?
भिखारी लाल कहै छै—ताला पुरान नै, भीतरक साँस भारी छै।

सत्यव्रत मेहता दूरसँ देखैत रहलाह। ओ जनैत छलाह जे लिखित हिसाब-घर न्यायालयक पेट अछि। जे कागज भीतर गेल, से पचि कऽ फैसला बनत वा सडि कऽ विस्मृति—ई कियो बाहर सँ नहि देखैत।

तेसर अलमारीक पाछाँ एक पातर कागजक गट्टर अटकल भेटल। डोरीमे लाल सूतक छोट गिट्टी छल। बच्चा सभ एक-दोसराक आँखिमे ताकलक।

ई सुनि सत्यव्रत मेहता भीतर आबि गेलाह। हुनकर पएर धूलिमे पड़ल, मुदा ओ धूलि हटौलनि नहि। ओ कहलनि—‘लिखित हिसाबक धूलि जँ देह पर नहि लागय, तँ न्यायाधीश अपना साफ बुझैत रहैत अछि।’ हुनकर ई स्वीकार सुनि लिपिक सभक चेहरा बदलल।

मीरा हुनका कुर्सी देबाक चाहली, मुदा वृद्धा पाथर पर बैसले रहलीह। ‘हम बरखों धरि पाथर पर बैसल छी, कुर्सी आब हमरा साँच नहि लगैत।’ हुनकर ई वाक्य लिखित हिसाब-घरक भीतर ठनकल। कुर्सी, मोहर, ताला, अलमारी—सभ सभ्यताक चिन्ह छल।

देविका प्रस्ताव रखली—‘प्रत्येक गुम कागजक गट्टरक सूची बनत। जकर कागजक गट्टर भेटत नहि, ओकर गवाही अलग बहीमे लिखल जाएत। कागजक गट्टर नहि भेटल तँ मनुष्य समाप्त नहि मानल जाएत।’ ई बात अदालतक प्रचलित बन्दोबस्तसँ बाहर छल, मुदा न्यायक भीतर।

साँझ ढलल तखन लिखित हिसाब-घरक अन्हार पहिल बेर अन्हार जेकाँ नहि, गहिर कोठरी जेकाँ बुझायल जकरा भीतर दीप राखल जा सकैत अछि। चन्ना गाछीक टूँठक दिशा सँ हवा आयल। कियो कहलक—‘लाल सूत हिलल।’ कियो कहलक—‘बूढ़बा भूत हँसलाह।’ मुदा बहीमे केवल ई लिखल गेल—‘आइ लिखित हिसाब-घरमे अन्हारक नाम पूछल गेल।’

राति होइत-होइत दरबाजा फेर बन्द भेल, मुदा एहि बेर ताला भीतरक साँसकें बन्द नहि कऽ सकल। बाहर बरामदामे पाथर पर तारीख सभ छल, भीतर अलमारीमे जागल कागजक गट्टर सभ। दुनूक बीच बच्चा सभक बही राखल गेल—न पाथर, न कागज।

छोट लोकगीत

खोलू हे ताला, भोरक हाथे खोलू हे,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

बरखों सँ दबल पन्नाकेँ हवामे घोलू हे ।
अलमारीक बन्द साँस भोरक हवा पबैत,
पन्ना-पन्ना फड़फड़ा कऽ अपन कथा सुनबैत ।

अध्याय १४३

रद्दी बोराक गवाही

रद्दी कहल कागजपर कदाचित् ककरो जिनगीक आखिरी आस
लिखल हो— तँ फाड़ब सभसँ पैघ अपराध।



रद्दी कहनाइ आसान छै। बोरामे फेकल कागचकें कियो नाम नै दै
छै। ओ 'पुरान माल' कहबै छै, 'निष्प्रयोज्य' कहबै छै, 'नष्ट
करबाक योग्य' कहबै छै।

किएक तँ जकरा अक्षर नै भेटल, ओकरा लग बस देहक ई एकटा
चिन्ह बचल रहै छै। ओ चिन्ह कोनो कलमसँ नै बनै छै। ओ चिन्ह
ओहि मनुखक भीतरक रेखा छै जकरा कियो नकल नै कऽ सकै छै।

एक पन्ना पर केवल एतेक लिखल छल—‘हमरा सुनू।’ नीचाँ अँगूठाक निशान। मुदा वाक्य बचल छल। अनन्या ओ पन्ना हाथमे लऽ बहुत देर धरि चुप रहली।

बच्चा सभ निर्णय केलक जे प्रत्येक पन्नाक प्रतिलिपि बनत। मुदा मीरा फेर सावधान केली—‘प्रतिलिपि बनत, पर तमाशा नहि बनत। जकर नाम सार्वजनिक करबासँ ओकर परिवार पर चोट पहुँचत, ओकर नाम झाँपल जाएत।

भिखारी लाल पूछलक—‘ई बोरा राखल जाएत?’ देविका कहली—‘हँ, मुदा संग्रहालय जेकाँ नहि। ई चेतावनी जेकाँ राखल जाएत।’ सत्यव्रत मेहता जोड़लनि—‘जे दिन कार्यालय अपन रद्दी देखबाक साहस करैत अछि, ओहि दिन न्याय अपन पहिल चेहरा फेर पवैत अछि।’

ओहि राति चन्ना गाछीक टूँट दिस सँ हवा आयल। बरामदाक पाथर पर राखल कागच सभ हिलल, मुदा उड़ल नहि। जेना कोनो अदृश्य हाथ ओकरा थामि रहल हो।

लिखित हिसाब-घरक दरबाजा फेर बन्द भेल, मुदा एहि बेर भीतर कागच दबल नहि, क्रमबद्ध राखल गेल। पेटी खाली नहि भेल, कारण सभ किछु एक दिनमे नहि खुलि सकैत। मुदा पेटीक मुँह पर नव कागच चिपकायल गेल—“मानव गवाही।”

बाहर बरामदामे बूढ़ मुक्किल पाथर पर बैसल छल। ओकर हाथमे अपन पुरान आवेदनक प्रतिलिपि छल। ओ ओकरा पढ़ि नहि सकैत छल, कारण आँखि धुँधला गेल छल।

बरामदा, लिखित हिसाब-घर, चन्ना गाछी आ रातिक हवा एक संग ई वाक्य सुनलक। कागजक गट्टरक भीतरक मनुष्य बाहर आवि रहल छल। ई बाहर आबनाइ फैसला नहि छल, मुदा फैसला धरि पहुँचबाक पहिल साँस अवश्य छल।

छोट लोकगीत

खोलू गे बोरा, रद्दीक बोरा खोलू गे,
फाटल पन्नामे नुकाएल बीया जोहू गे।
रद्दी बोरा खोलू बहिन, पन्ना बीज समान,
ककरो घरक नक्शा ओहि, ककरो बाबाक नाम।

अध्याय १४४

नामक यात्रा

नाम कागजक गट्टरसँ निकलि गेल तँ ओकरा 'निरस्त'क कोनो
मुहर फेर बन्द नहि कऽ सकल।



अलमारीमे नामक नकल रहै छै। असली नाम देहरी पर रहै छै—
ओहि ठाम जतऽ साँझमे दीप बरै छै आ कियो प्रतीक्षामे बैसल रहै
छै। जे नाम देहरी धरि नै घुलल, ओ नाम आधा छै, चाहे कागज
पर पूरा लिखल हो।

बाटमे नदी छै, टूटल पुल छै, आधा पक्का सड़क छै, आ ओहिसँ
बेसी—लोकक बिसरनाइ छै। गाम बिसरि जाइ छै जे केओ छल
जे मेड़ पर दिन भरि बैसल रहै छल। मुदा माटि नै बिसरै छै।

अनन्या सभसँ पहिने पहुँचली। ओकर संग आरुणि, देविका, मीरा, आ दू-तीन बच्चा सभ छल। ओ सभ हाथमे नव कापी नहि, काल्हिक धूलि लागल बही नेने छल।

चारि बच्चा, देविका, युवक अधिवक्ता, आ भिखारी लाल जसोदा देवीक गाम दिस निकलल। अनन्या आ मीरा अदालतमे सूची सम्हारि रहली। सत्यव्रत मेहता बरामदामे रुकलाह, कारण हुनका बुझाईत छल जे यात्रा केवल बाहर नहि, भीतर सेहो चलि रहल अछि।

गामक बाट साधारण नहि छल। सड़क आधा पक्का, आधा गड्ढा। जे पुल ढहल छल, तकर छाह एखनहुँ लोकक बोलीमे बचल छल।

जसोदाक खेत आब दोसराक कब्जामे छल। मेड़ पर ईटक छोट गोदाम बनल छल। युवक अधिवक्ता झुँझलायल, मुदा देविका ओकरा रोकली—‘क्रोध लिखू, पर निर्णय एखन नहि सुनाउ।’ बच्चा सभ खेतक किनार माटि उठौलक नहि, चित्र नहि लेलक।

चन्ना गाछीक टूँठक खबर सेहो आयल। कियो कहलक जे टूँठक दरारमे राति भरि ओस भरल रहल, जेना ओ नाम सभक यात्रा सुनि रहल हो। बूढ़बा भूत देखेलाह नहि, मुदा छत पर बैसल चिरई लाल सूत छोड़ि गेल।

भोर होइत-होइत पहिल सूची तीन प्रतिलिपिमे लिखि कऽ राखल गेल—एक लिखित हिसाब-घरमे, एक बरामदाक पाथर लग, आ एक चन्ना गाछी धरि लऽ जाएबाक लेल। सूरज निकलल तँ पन्ना पर ओसक बून्द चमकि उठल। कियो कहलक—‘स्याही भीजि जाएत।’ मीरा उत्तर देली—‘नहि, ई ओस नहि, नामक स्नान अछि।’

एहि तरहेँ अध्यायमे कागजक गट्टरक भीतरक मनुष्य घर दिस चलल। अदालती बरामदा आब बाट बनल, लिखित हिसाब-घर स्रोत बनल, आ चन्ना गाछी प्रतीक्षा करैत सुननिहार।

छोट लोकगीत

चलू हे नाम, घरक बाटे चलू हे,
देहरी पर माएक दीप—ओतहि धरि बढ़ हे।
अलमारी छोड़ि नाम चलल घरक पथ पकड़ि,
बरामदा, सीढ़ी, धूरि पार कएल दृढ़ि।

अध्याय १४५

डरक पहिल दरार

डर एक्कहि बेरमे नहि टूटै छै— पहिने दरार पड़ै छै, आ दरारसँ
इजोत पैसै छै।



पहिल दरार कतऽ पड़ै छै? पीड़ितक चीत्कारसँ नहि। पीड़ितक चीत्कार तँ बरखों धरि सुनल जाइत रहल छै, तइयो घैला अटल रहल छै।

जे कागच बरखों धरि नाम दबेने रहल, से जखन बजाए लगैत छै, तखन डर एक जगह नहि रहैत। ओ हँसी बनि कतहु जाइत छै, क्रोध बनि कतहु, धर्मक नारा बनि कतहु, नियमक हवाला बनि कतहु। मुदा जतऽ-जतऽ ओ जाइत छै, ततऽ-ततऽ ओ अपन असली रूप कमजोर करैत जाइत छै।

मुदा गामक दोसर छोर पर ई बात आगि जेकाँ पहुँचि गेल। चन्द्रपालक घरमे नोकर सबेरक चाह राखैत छल, तखन एक अधिवक्ता-दूत साँस फुलबैत भीतर आयल। ओकरा कहवाक ढंगमे भय ओतबे छल जतेक खबरमे।

साँझसँ पहिने चन्द्रपालक दूत चन्ना गाछी पहुँचल। ओ सभ्य स्वरमे कहलक—‘एहन सूची सार्वजनिक करब उचित नहि। प्रतिष्ठित परिवारक नाम बिनु प्रमाण जोड़ल जाएत तँ गाममे अशान्ति होएत।’ मीरा सोझाँ आयली।

बूढ़बा भूत राति चन्ना गाछी लग देखेलाह नहि, मुदा ठूँठक जड़ि लग माटि अलि फुलल जेकाँ लगल। कारी भूतक छाह पश्चिम दिस गेल, उज्जर प्रेतक उजास पूरब। लोक कहैत रहल जे ई संकेत अछि।

अदालतमे ओही राति अधिकारीक कोठरीमे बैसकी भेल। चन्द्रपालक लोक, राघवक सलाहकार, बटुकनाथक उत्तराधिकारीक प्रतिनिधि, आ किछु वकील एक संग बैसल। ओ सभ तय करय चाहैत छल जे सूचीकेँ अवैध कहब, बच्चा सभकेँ उकसाओल कहल जाए, लिपिकेँ निलम्बनक डर देखाओल जाए, आ लिखित हिसाब-धर पर ताला बदलि देल जाए।

अनन्या रातिक अन्तमे सूची समेटैत कहली—‘काल्हिसँ घर-घर जएबाक अछि। जे नामक परिजन भेटत, हुनका पहिने सुनाओल जाएत। कोनो कथा बिनु मञ्जूरी नहि लिखब।’ देविका कहली—‘आ जे अपराधी सभ डर पसारि रहल अछि?’ मीरा उत्तर देली—‘डरक नाम सेहो लिखब।’

चन्ना गाछी पर हवा चलल। सूखल ठूँठक छाल सँ धूलि झरल, मुदा धूलिक भीतर एक महीन हरियर बिन्दु देखायल। कियो निश्चित नहि कहि सकल जे ओ सचमुच अंकुर छल वा रातिक छलना।

एहि तरहँ अध्यायमे डरक पहिल दरार पड़ल। नामक यात्रा अपराधीक घर धरि खबर बनि पहुँचल, कर्मचारीक मौन बयान बनि उठल, आ गामक कान अफवाहक बदला प्रश्न सुनय लागल।

छोट लोकगीत

धरू हे दीप, दरारे मे दीप धरू हे,
डरक घैलाक छिद्र सँ अँजोर झरू हे।
डरक घैला पर नान्हि दरार, ओतहि दीप धरू,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

छिद्र-छिद्रसँ उजास झरै, भीतर साहस भरू।

अध्याय १४६

मुहरक दाग

मुहरक दाग कागजपर नहि— लगौनिहारक हाथपर सभसँ गाढ़ रहै छै।



मोहर एक गोल आकृति छै जकरा भीतर कोनो अक्षर लिखल रहैत छै। मुदा जखन ओ मनुष्यक अरजी पर पडैत छै, तखन ओ आकृति नहि रहैत—ओ ओकर देहक निशान बनि जाइत छै। जकरा सत्यापित कहल गेल, ओकर जीवन बदलि जाइत छै।

हाथ दोषी छै कि मोहर? जे हाथ ओकरा उठबैत छै, से हाथ भूख सँ चलैत छै, डरसँ चलैत छै, कखनो आदेशसँ। मुदा जे हाथ चलल, ओकर छाप सदिखन ओहि हाथक रहत, चाहे कारण किछु होअय।

भोरक उजास खिड़कीक टूटा सलाखीसँ भीतर पड़ैत छल, आ ओहि पातर धारमे धूलिक कण नाचैत उठैत-खसैत रहल, जेना हजारों नाम एक संग साँस लऽ रहल हो। उजास सोझे मोहर पर पड़ल तँ लाल स्याही कारी बुझाइ देलक। मीरा कहली—‘रंग बदलेलाक कारण उजास नहि, अपराध अछि।’ एहि वाक्य पर बूढ़बा भूतक हलुक हँसी सुनाइ पड़ल कि नहि, कियो निश्चित नहि कहि सकल।

तखन देविका एक नव प्रस्ताव रखली। ‘जतेक मोहरक दाग भेटत, ततेक सूची बनत। मोहरक नाम, तारीख, ककर अरजी पर, आ बादमे ककर लाभ भेल—ई सभ जोड़ल जाएत।’ भीड़मे हलचल भेल।

अनन्या ओ कागचक नकल बनावय लगली। मूल कागचकँ ओ प्लास्टिकमे नहि, लाल कपड़ामे लपेटली। ‘एहि पर हाथ सभक छाप अछि,’ ओ कहली, ‘आ छाप पर समयक धूल।’

बाहर बरामदामे लोकक संख्या बढ़ैत गेल। कियो सुनलक जे लिखित हिसाब-घरमे बटुकनाथक नामक संकेत भेटल। कियो कहलक जे चन्द्रपालक घरमे आइ सबेरसँ दरबाजा बन्द अछि।

चन्ना गाछी दिससँ एक बच्चा दौड़ैत आयल। ओकर हाथमे छोट पाथर छल, पाथर पर लाल धब्बा। ‘टूँट लग भेटल,’ ओ कहलक।

दुपहर धरि मोहरक सूची बीस पन्ना भरि गेल। प्रत्येक पन्ना पर कियो न कियो मनुष्य घुरैत छल। सुरमणी, रामेश्वर, फुलकुमारी, महेन्द्र, बसन्ती, ललन, अजमेरी, दुलारी—नाम सभ धूलिसँ बाहर आबय लागल।

अन्तमे सत्यव्रत मेहता कहलनि—‘आइ अदालतमे कोनो फैसला नहि लिखल गेल, मुदा मोहरक विरुद्ध पहिल बयान दर्ज भेल।’ ओहि क्षण लिखित हिसाब-घरक खिड़कीसँ हवा आबि कऽ लाल स्याहीक सूखल डिब्बा उनटा देलक। स्याही सूखि चुकल छल, तँ बहल नहि। केवल चूर्ण बनि पसरि गेल।

छोट लोकगीत

उतारू हे मोहर, सेवाक हाथमे उतारू हे,
लाल रंगकँ दाग नहि, विश्वास-टीका बुझू हे।
लाल मोहर हथेलीपर सेवा बनि उतरू,

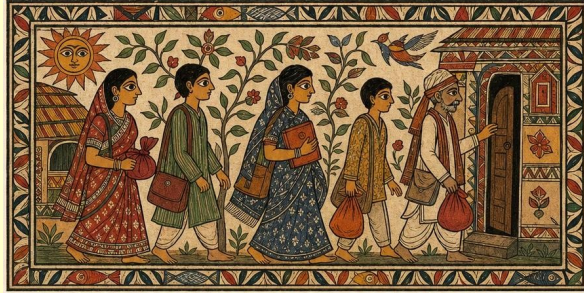
गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

जनक हकक कागचपर साँचक फूल छिड़िआउ ।

अध्याय १४७

घर-घरक दस्तक

दस्तक जे मञ्जूरीसँ देल जाए, से आदेशसँ पैघ दरबाजा खोलै छै।



दस्तक जे मञ्जूरीसँ देल जाए, से आदेशसँ पैघ दरबाजा खोलै छै।
आदेश धक्का दैत छै, दस्तक पूछैत छै। धक्कासँ खुलल दरबाजा
फेर बन्द भऽ जाइ छै।

घर केवल भीत आ छत नहि छै। घर ओ ठाम छै जतऽ मनुष्य
अपन कमजोरी बिना डरे देखा सकैत छै। जे बाहर कठोर होइ छै,
ओ भीतर टूटल होइ सकैत छै।

लिखित हिसाब-घरक दीया जरइते मोहरक दाग सभ लोकक
आँखि सोझाँ आबि गेल छल। आब बेर छल ओहि दागक पाछाँ

बैसल मनुष्य धरि पहुँचबाक—घर-घरक दस्तकक। लिखित हिसाब-घरक दीया राति भरि जरैत रहल।

पहिल टोलीमे अनन्या, आरुणि, देविका, बूढ़ मुवक्किलक पोता, आ भिखारी लाल गेल। भिखारी लाल चपरासी छल, मुदा आइ ओकर हाथमे झाड़ू नहि, एक छोट कपडाक थैली छल जकरा भीतर नकल लेल खाली पन्ना, कलम, आ ओहि लोकक नाम लिखबाक कापी राखल छल जे अपन बात स्वयं कहय चाहत। ओकर चालमे संकोच छल, कारण बरखों धरि जे दुआर पर ओ तारीखक पर्ची लऽ गेल छल, आइ ओहि दुआर पर पश्चात्तापक छाह संग जा रहल छल।

पहिल घर सुरमणी देवीक छल। घरक देहरी पर दरार पड़ल छल, आ दरारमे बथुआक साग उगि गेल छल। ओसारक खपडा पर काई जमल छल, आ भीतरसँ चूल्हाक धुआँक हलुक गन्धि आबि रहल छल—जेना घर आव भी साँस लैत हो, केवल थाकल।

साँझ लग एक अनपेक्षित घटना भेल। अदालतक पुरान तस्वीरकाँपीवाला मुरारी, जे बरखोंसँ कागजक गट्टरक नकल बनाकऽ पैसा कमबैत छल, लिखित हिसाब-घरक बाहर आयल। ओकर हाथमे एक गठरी छल।

ठूठक जड़ि लग जे हरियर बिन्दु काल्हि देखायल छल, आइ ओ अलि स्पष्ट भेल। आरुणि फेर लिखलक—‘सभक सामने कहल बात नहि।’ अनन्या मुस्कुरेली। बच्चा सभ आव प्रतीक पर उतावल नहि छल।

जखन सत्य चलय लगैत अछि, झूठ ओकर पोशाक पहिरि लेत अछि।’ चन्ना गाछीक छाह लम्बा भेल। दूर कतहु गोहि जलमे सरकल, पर एहि बेर ओकर चाल सुनायल।

एहि तरहँ अध्यायमे घर-घरक दस्तक शुरू भेल। पीड़ितक कथा आदेशसँ नहि, मज्जुरीसँ लिखायल। बन्द दुआरक मौनक मान राखल गेल।

छोट लोकगीत

दियौ हे दस्तक, धीमे-धीमे दियौ हे,
भीतरक 'आउ' सुनि कऽ तखने पग धरू हे।
धीमे दस्तक दियौ पहिने, भीतरक स्वर सुनू,
'आउ' कहत तखन नेहसँ दुआर पार चुनू।

अध्याय १४८

मिलावटक पहिचान

साँच कागजसँ मिला कऽ देखू— मिलावट अपने मुँह खोलि दै छै।



जाँचक अर्थ अविश्वास नहि छै। जाँचक अर्थ छै—जे साँच अछि, ओकर रक्षा करब। जे झूठ अछि, ओकरा साँचक भीड़मे नहि घुसए देब।

माटिक गन्ध झूठ नहि बजैत। जे मनुष्य अपन खेत गमौने होइ छै, ओकरा माटिक गन्ध देहमे बसल रहैत छै। जे झूठ बजैत छै, ओकरा लग तथ्य होइ छै, मुदा गन्ध नहि होइ छै।

मोहरक विरुद्ध पहिल बयान लिखित हिसाब-घरमे दर्ज भऽ चुकल छल। आव बेर छल ओहि सूचीक जाँचक जकरा घर-घर दस्तक

दऽ कऽ जोडल गेल छल। भोर होइतहि चन्ना गाछीक टूँठ लगक माटि पर रातिक ओस चमकि रहल छल।

भीखन साहकै भीडमे अपमानित नहि कएल गेल। मीरा ओकर कथन अलग पन्ना पर लिखली—‘झूठा बयान देबाक प्रयत्न। कारण—गरीबी, लोभ, दबाव।

दुपहरमे राघवक चाल दोसर रूपमे आयल। तीनटा युवक एक संग पहुँचल। हुनका सभक कागच अलग-अलग, मुदा लिखाइ एकहि हाथक।

तखन एक छोट बालक भीडसँ आगाँ आयल। ओहि युवक सभमे सँ एक ओकर ममेहरक पड़ोसी छल। बालक कहलक—‘ई कात्हि राति राघवक ओसार पर छल।’ लोकमे फुसफुसाहट पसरल।

टूँठ लग दीया जरल तखन बूढ़बा भूतक आभास फेर देखायल। केओ कहलक जे उज्जर धुआँ ऊपर उठल। केओ कहलक जे कारी छाह जड़ि लग बैसल।

भोरक पहिने-पहिने टूँठक जड़ि लगक हरियर बिन्दु पर लाल धागाक परछाई पड़ल। केओ ओकरा शुभ कहत, केओ संयोग। मुदा नामक पहरुआ सभ ओकरा सभक सामने कहल बात नहि बनौलनि।

एहि तरहेँ अध्यायमे मिलावट चिन्हारिबाक पहरा पूरा भेल। झूठा भोला मण्डल भीखन साह बनि सोझाँ आयल, जगमायक रसीद हरिमोहनक गुम किनार बनि उठल, राघवक तीन युवकक कथा ढहि गेल, मुरारीक अपराधमे छिपल खरोँच दर्ज भेल, आ पहरुआ सभ सीखलक—सत्यक रक्षा लेल विश्वासक संग जाँच, करुणाक संग कठोरता, आ स्मृतिक संग मर्यादा अनिवार्य अछि।

छोट लोकगीत

मिलाउ हे पन्ना, असल-नकल मिलाउ हे,
मिलानक दीप तर झूठक रंग उधाड़ू हे।
साँचक प्रति कातमे राखू, झूठक रंग खुलत,
मिलावटक खरोँच देखिते असल अक्षर फुलत।

अध्याय १४९

जालक नक्शा

जाल जतबा पैघ, गाँठ ततबे छोट ठाम— आ पहरूआ गाँठे टा ताकै छै।



जाल कोनो एक हाथक नहि होइ छै। एक हाथ धागा दैत छै, दोसर हाथ गाँठ लगबैत छै, तेसर हाथ फेकैत छै। जँ केवल फेकनिहार हाथ पकड़ल जाए, तँ जाल फेर बनि जाइ छै।

धुआँ, खरोंच, चाबी, मोहर—ई सभ अलग-अलग चिह्न बुझना जाइ छै। मुदा जखन ई सभ एक नक्शा पर मिलाओल जाइ छै, तखन ओ चिह्न नहि, बाट बनि जाइ छै। ओ बाट एक दरवाजासँ दोसर दरवाजा धरि जाइत अछि—आ दुनू दरवाजाक पाछाँ मनुष्य ठाढ़ रहैत अछि।

चार लोक गेल—मीरा, सत्यव्रत, भिखारी लाल, आ कैलाश प्रसाद। बच्चा सभ बाहर प्रतीक्षा करैत रहल। प्रतीक्षा एहि कथामे सदैव दण्ड रहल छल।

लिखित हिसाब-घरक अन्हारमे लकड़ीक पट्टा सचमुच ढीला भेटल। ओकरा उठेलाक बाद धूलिक भीतर तीन पातर कागजक गट्टर, दूटा रसीद-बहीक पन्ना, आ एक अधूरा सूचीपत्र भेटल। सूचीपत्रक ऊपर बटुकनाथ हरिहरनक आश्रमक पुरान मोहर छल।

‘बाहर कतऽ?’ देविका पूछली। कैलाश प्रसाद बहुत देर चुप। फेर कहलक—‘कखनो राघवक घर, कखनो बटुकनाथक आश्रम, कखनो चन्द्रपालक दफ्तर।

ओहि क्षण माटि पर बनल नक्शामे नव गोला जोड़ल गेल—‘आश्रम’। ओकरासँ रेखा राघवक ओसार दिस गेल, फेर अदालत दिस, फेर चन्द्रपालक दफ्तर दिस। नक्शा आब साधारण चोरीक नहि रहल।

ई वाक्य सुनि चन्ना गाछीक टूँठ लग हवा भारी भऽ गेल। बूढ़बा भूतक कथा जे पहिने लोक-हँसी लगैत छल, आब नक्शामे देह पाबि रहल छल। गोहि जलमे नहि, कागजक गट्टरमे, मोहरमे, दरबाजाक कुण्डीमे, आश्रमक धूपमे, दफ्तरक चाहमे, आ डरक फुसफुसाहटमे चलैत रहल।

भोर लग टूँठक जड़ि दिस फेर हरियर बिन्दु देखायल। आरुणि ओकरा देखलक, मुदा सभक सामने कहल बात नहि केलक। ओ केवल लिखलक—‘जड़ि एखन धरि जिन्दा अछि।’ अनन्या उत्तरमे जोड़ली—‘जड़ि जिन्दा रहत तँ नक्शा मिटत नहि।’

एहि तरहेँ अध्यायमे झूठ कागजक पाछाँ बैसल हाथक प्रारम्भिक चिन्हारि भेल। राघवक ओसार, मुरारीक दोकान, अदालतक लिखित हिसाब-घर, चन्द्रपालक दफ्तर आ बटुकनाथक आश्रम एक नक्शामे जुड़ि गेल। पहरुआ सभ सीखलक—जाल तोड़बाक पहिल काज जालकेँ देखब अछि।

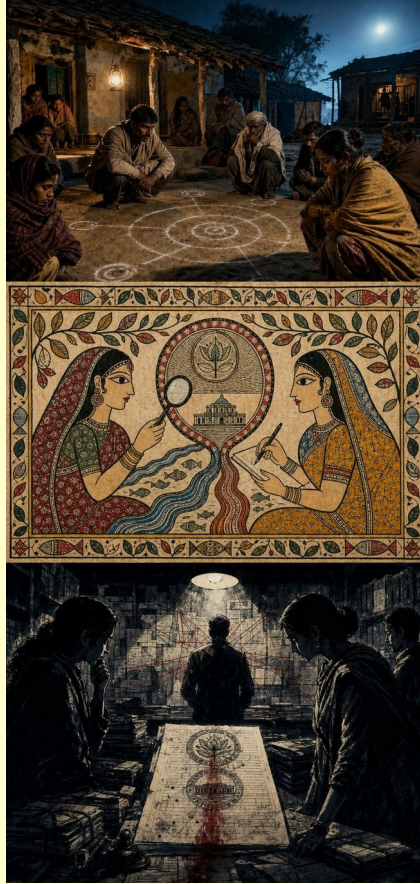
छोट लोकगीत

खोलू हे गिट्ट, नान्हि-नान्हि गिट्ट खोलू हे,
जाल कतबो पैघ, धीरजक नखसँ छोरू हे।
जाल बहुत पैघ हो तइयो गिट्टऽ नान्हि ठाम,
धैर्यक नखसँ खोलि सकय माछमारक काम।

अध्याय १५०

मुहरक छाया

खर मेटा जाइ छै, हत्था रहि जाइ छै— आ खाली हत्थामे सभसँ
बेसी भार।



काठ बजैत नहि, तइयो काठ बहुत किछु राखि लैत छै। ककर
हथेली पकड़ने छल, ककर पसीना छल छल, ककर जल्दी ओकरा
मेज पर पटकल छल—सभटा काठक दानामे बसल रहैत अछि।

खर मेटायल तँ अक्षर गेल, मुदा दबावक निशान नहि गेल। जे
अपराध अक्षर हटाकऽ बाँचय चाहैत अछि, ओकरा भूलि जाइत
अछि जे हाथक दबाव अक्षरसँ बेसी गहीर बैसैत अछि।

जालक नक्शा बनि गेलाक बाद राति भरि टूँठ लग कियो ठीकसँ सुतल नहि। माटि पर खिंचल गोला सभक रेखा भोरक ओस सँ हल्की भीजि गेल छल, मुदा मिटायल नहि छल। राघवक ओसार, मुरारीक दोकान, अदालतक लिखित हिसाब-घर, चन्द्रपालक दफ्तर आ बटुकनाथक आश्रम—पाँचो नाम माटि पर नहि, लोकक मनमे गडि गेल छल।

माटिक रेखा पर एक चिटिक चिड़ै आबि बैसल, चोंचसँ धूलि कोंचलक, फेर उडि गेल—जेना ओहो नक्शाक भार जाँचि रहल हो। सभसँ अधिक आँखि ओहि सूचीपत्र पर टिकि रहल। ओकर माथ पर आश्रमक पुरान मोहर छल, नीचे अदालतक लिखित हिसाब संख्या।

कैलाश प्रसाद अपन स्मृतिमे उतरय लागल। ओ कहलक जे पुरान मोहर गायब भेलाक समय बटुकनाथ हरिहरनक आश्रममे एक बड़का धार्मिक आयोजन भेल छल। अदालतक किछु बाबू, वकील, जमीन-बिचौलिया, आ चन्द्रपालक लोक ओहि आयोजनमे गेल छल।

चार लोक छेदीक दोकान दिस चलल—मीरा, अनन्या, भिखारी लाल, आ मुरारी। सत्यव्रत पाछाँ रहि गेलाह, कारण हुनका बरामदाक बयान सभ क्रममे राखब छल। आरुणि टूँठ लग बच्चा सभ संग नक्शाक प्रति बनबैत रहल।

टूँठक छाह लम्बा भऽ कऽ नक्शाक सभ गोला ढाँपि लेलक। किछु लोकक मनमे भय आयल—छाह फेर सभ ढाकि देत? आरुणि माटि पर दीप राखलक।

एहि पर बूढ़बा भूतक झिलमिलाहट जेना टूँठक ऊपर देखाइ पड़ल। कियो कहलक, ओ हँसल। कियो कहलक, ओ रोएल।

एहि तरहँ अध्यायमे आश्रम आ अदालतक बीचक मोहर-पथ खुलल। छेदी कबाड़ी, दान-पुस्तिका, भानु लालक बही, रमेश मुहरिया, सुरमणी देवीक गवाही, आ हरिचरणक संदेश—सभ मिलि कऽ प्रमाणक नबका वृत्त बनौलनि। पहरुआ सभ आब केवल कागच नहि पढ़ैत छल।

छोट लोकगीत

सुनू हे हत्था, काठक हत्थाकेँ सुनू हे,
मौन वस्तुक गवाही आदर सँ गुनू हे।
रबर मेटा गेल तइयो काठक हत्था बोले,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण
ककर हथेली पकड़ने छल, स्मृतिक गाँठि खोलै।

अध्याय १५१

मुहर चलौनिहार हाथ

मुहर अपने नहि चलैत— ओकरा चलौनिहार हाथक नाम होइ छै।



‘ऊपर सँ आदेश’—ई वाक्य बरखों धरि सभसँ सुरक्षित छाता रहल। एहि छाता तर कतेको हाथ भीजल नहि, मुदा कतेको नाम भीजि गेल। जतऽ धरि छाता रहत, ओतऽ धरि हाथ सुरक्षित रहत।

चपरासीक हाथ, लिपिकक हाथ, दलालक हाथ—सभ अपन-अपन काजकें छोट बुझैत रहल। मुदा छोट-छोट हाथ मिलिकऽ जँ एक पैघ नुकसान करय, तँ छोटपन दोषक बहाना नहि बनि सकैत।

बाहर हवा तेज भेल, आ ठूँठक सूखल पातक कातर धूरिमे बजरि गेल—एक हलुक, अनवरत सरसराहट, जेना कोनो पुरान बात दोहराओल जा रहल हो। अनन्या हत्थाक गोलाई नापलक। आरुणि ओकर तल पर चिपकल पुरान स्याहीक कारी कण अलग कएलक।

रमेश मुहरिया अपन बाप भानु लालक बहीक एक दोसर पन्ना देखेलक। ओ पन्ना पर तिथि सभक संग गुप्त संकेत लिखल छल —‘अ’, ‘च’, ‘र’, ‘आ’। पहिने कियो अर्थ नहि बुझल।

मीरा तुरन्त नियम बनौली—‘चिन्ह देखि बुझल बात अछि। प्रमाण बनबाक लेल मिलान चाही।’ बच्चा सभ चार दलमे बाँटि गेल। एक दल अदालतक तिथिसँ मिलान करत, दोसर चन्द्रपालक दफ्तरक आवागमनसँ, तेसर राघवक ओसारक रातिक बैसकीसँ, चौथ आश्रमक दान-पुस्तिकासँ।

कागच जाँचैत-जाँचैत बच्चा सभक अँगुरीक पोर लाल भऽ गेल छल, मुदा कियो थाकल नहि कहलक। एहि बीच ओ अनाम छाताधारी लोक दूर सड़क पर देखायल। ओहि कानक कटाक निशान स्पष्ट छल।

‘ककर आदेश?’ सत्यव्रत मेहता पूछलनि। रामलखन पहिने चन्द्रपालक नाम दिस ताकलक, फेर राघवक, फेर आश्रमक। अन्तमे कहलक—‘नाम एक नहि छल।’

बूढ़बा भूतक झिलमिलाहट ठूँठक माथ पर फेर देखाइ पड़ल। बच्चा सभ आव ओकरा तमाशा नहि मानैत छल। हुनका लगैत छल, जे नाम इतिहासमे अटकल अछि, से कखनो-कखनो हवा, पात, गंध, छाह बनि पूछैत अछि—‘लिखलहुँ?’ अनन्या बही बन्द करैत उत्तरमे धीरे कहली—‘आइ हाथ लिखलहुँ।’

एहि तरहँ अध्यायमे मोहर चलौनिहार हाथक पहिल चिन्हारि भेल। भानु लालक बहीक गुप्त संकेत, रामलखन सहायकें खोज, हरिचरणक बेचैनी, आश्रमक बचाव, जगमाया आ सुरमणीक जीवित गवाही—सभ मिलि कऽ देखेलक जे मोहर केवल काठ आ रबर नहि, सत्ता, डर आ सुविधा सँ चलैत छल।

छोट लोकगीत

दिअ हे नाम, हाथ-हाथकें नाम दिअ हे,
‘ऊपरक’ धुँआ छोड़ि जिम्मा अपने लिअ हे।
मोहर अपने नहि चलै, हाथ ओकरा चलबै,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

हाथक पाछाँ मन रहै, मन दिशा बतबै ।

अध्याय १५२ आदेशक स्रोत

आदेश एक मुँहसँ नहि जनमैत— बैठकसँ जनमैत अछि, आ
बैठकक कोनो हस्ताक्षर नहि।



आदेश एक मुँहसँ नहि जनमैत— बैसकीसँ जनमैत अछि, आ
बैसकीक कोनो हस्ताक्षर नहि। जतऽ हस्ताक्षर नहि, ओतऽ
जिम्मेदारीओ नहि बुझना जाइत अछि। मुदा जिम्मेदारी
हस्ताक्षरक मोहताज नहि होइत।

‘सेवा’, ‘प्रक्रिया’, ‘सम्बन्ध’, ‘समझौता’—ई शब्द जतेक कोमल
सुनाइ पड़ैत अछि, ओतबे कठोर कार्य ओकर पाछाँ छिपा सकैत
अछि। भाषाक जाँच केनाइ, अपराधीक जाँच केनाइसँ कम जरूरी
नहि।

अनन्या रामलखनक काल्हिक बयान फेर पढ़लक। ओहि बयानमे 'सेवा', 'प्रक्रिया', 'बन्दोबस्त', 'सम्बन्ध', 'समझौता' आ 'ऊपर' शब्द बारंबार आवि रहल छल। आरुणि एक कागच पर ई सभ शब्द अलग-अलग लिखलक।

एहि उत्तरसँ सभक भीतर सिहरन दौड़ि गेल। निर्णय पहिने, कागच बादमे—एहि सूत्रसँ कतेको जीवन उलटि गेल छल। सत्यव्रत मेहता कहलथि—'जँ फैसला कागचसँ पहिने होइत छल, तखन अदालत केवल मंच बनि गेल।' मीरा जोड़ली—'आ मंच पर जकर संवाद लिखल रहैत अछि, ओकर लेखक खोजब बाकी अछि।'।

रामलखनक मुँहसँ धीरे-धीरे एक नव नाम निकलल—'महावीर पाठक।' कियो ई नाम पहिने खुलि कऽ नहि लेने छल। लोक कहैत रहल जे ओ बटुकनाथ हरिहरनक समयक शास्त्र-पाठी, बादमे आश्रमक हिसाबक सलाहकार, आ अन्ततः चन्द्रपालक जमीन-कागचक मौन लेखक बनि गेल। ओकर पद कखनो घोषित नहि भेल, मुदा ओकर पर्ची सभ कई दफ्तर घूमैत छल।

'बैसकी-स्मृति'क पन्ना सभ तारीखविहीन छल। प्रत्येक प्रविष्टिमे नामक बदला संकेत—'दक्षिणक किसान', 'नदीक पारक विधवा', 'पुरान मुकदमा', 'गाछीक टुकड़ा', 'मंदिर-बाड़ी लगक जमीन।' देविका काँपि उठली, कारण 'गाछीक टुकड़ा' शब्द चन्ना गाछी दिस संकेत करैत छल। गोहि, जल, टूँट, अदालत—सभ मानू एहि बहीक पन्नामे पहिनेहि लिखल रहल।

चन्ना गाछीक टूँट लग चार बहीक नाम पढ़ल गेल। 'बैसकी-स्मृति' सुनिते बूढ़बा भूतक झिलमिलाहट छज्जा पर देखाइ पड़ल। आव भूत लोकक पछुआ भय नहि, पिछला नामक माँग जेकाँ उपस्थित होइत छल।

सुरमणी देवी खाली लोटामे एहि बेर एक बून्द पानि नहि, बहीक प्रतिलिपिक छाह देखलीह। जगमाया मोहनक पत्र ओकर लग राखि देलीह। रामलखन दूर बैसल अपना हाथ देखैत रहल।

एहि तरहँ अध्यायमे आदेशक स्रोतक पहिल रूप खुलल। आदेश एक लोकक मुँहसँ नहि, बैसकी, संकेत, पर्ची, बही, आ लोकहितक वाक्यसँ चलैत छल। महावीर पाठकक 'बैसकी-स्मृति', भिखारी लालक लाल पर्ची, रामलखनक स्मरण, हरिचरणक स्थगित उत्तर, आ चन्ना गाछीक रिक्त नाम-स्थान—सभ मिलि देखेलक जे अपराधक असली आवाज प्रायः मधुर शब्दमे छुपल रहैत अछि।

छोट लोकगीत

पूछू हे पूछू, 'ऊपर के?'—पूछू हे,
धुँआक माथ ताकि जिम्मेदार खोजू हे।
'ऊपर सँ कहल' सुनिते पूछू—ऊपर के?
आकाश, पद कि मनुख—उत्तर देत से।

अध्याय १५३ संकेतक पाछाँ नाम

संकेतक पाछाँ नाम रहै छै, आ नामक पाछाँ फेर संकेत— पहरूआ बीचहिमे ठाढ़ रहए।



खाली खूँटी स्वयं एक गवाही छै। जतय कियो नहि छल, ओतय कियो छल—ई विरोधाभास केवल शब्दक खेल नहि, अनुपस्थितिक भाषा छै। जे अनुपस्थित अछि, ओकरो नाम माँगल जा सकैत अछि।

दक्षिणक किसान, नदीक पारक विधवा—ई सभ पहिचान नहि, धुंधलापन छल। धुंधलापनक भीतर जखन एक-एक अक्षर साफ होइत अछि, तखन धुंधलापन स्वयं गवाह बनि जाइत अछि।

सबेरे चन्ना गाछीक ढूँठ लग खाली स्थान सभ फेर खोलल गेल। भोरक हवामे अखनहुँ राति भरिक ओसक ठण्ढक बचल छल, आ बच्चा सभक अँगुरी खूँटी गाड़ैत काँपि रहल छल। काल्ह राति बहीक प्रतिलिपिमे जतए नामक स्थान पर संकेत छल, ओहि सभ ठाम अनन्या छोट-छोट खूँटी गाड़ि देलक।

भिखारी लाल लिखित हिसाब-घर सँ पुरान सूची लयल। सूची पर कीड़ा खाएल किनारा, पर बीचक अंक बचल। ओ बतौलसि जे अदालतमे कतेको कागजक गट्टरक बाहरी पन्ना बदल गेल छल, मुदा नकल-बहीमे पुरान क्रमांक रहि जाइत।

पुरान मुकदमाक संकेत खोजैत-खोजैत भानु लालक गुप्त संकेत-बही फेर खुलल। ‘अ’ ‘च’ ‘र’ ‘आ’क बीच एक नया अक्षर भेटल — ‘ब’। पहिने कियो ध्याने नहि देने छल, कारण ओ लाल धब्बाक भीतर दबि गेल छल।

महावीर चुप भऽ गेलाह। हुनका शायद पहिल बेर बुझाइत छल जे श्रद्धाक आसन सभसँ सुरक्षित अपराध-स्थान बनि सकैत अछि। मीरा पूछली—‘ब’ अक्षरक अर्थ अहाँक बहीमे कतओ अछि?’ महावीर मना करबाक कोशिश कएलनि, पर रामलखन बीचमे कहलक—‘बैसकी-स्मृतिमे एक ठाम “बाबा” लिखल अछि।’ महावीर ओकरा रोकि नहि सकलाह।

एहि उत्तर पर हवा एकदम स्थिर भऽ गेल। बूढ़बा भूत छत पर नहि, एहि बेर ढूँठक खोखरिमे झिलमिलायल। कारी भूतक छाह जड़ि लग गाढ़ भेल, उज्जर प्रेतक रेखा ओकर ऊपर पसरल।

राति घेरिते मीरा सूची कपड़ामे लपेटि अनन्याक हाथ देली। ‘एहिमे नाम नहि, जिम्मेदारी अछि।’ अनन्या कपड़ा माथ लग नहि, छाती लग राखलक। कारण ओ बुझि गेल छल जे नाम पूजा लेल नहि, संरक्षण लेल अछि।

अध्यायमे संकेतक पाछाँ पहिल नाम सभ उभरल, मुदा सभ नाम पूर्ण नहि भेल। देवन पासवान स्मरणमे, फूलकली देवी पोटली आ स्वेच्छा-वाक्यमे, पुरान मुकदमा भानु लालक ‘ब’ गुप्त संकेतमे, आ चन्ना गाछी ‘बाबाक वचन’मे अटकल रहल। बटुकनाथक परछाईं एखनहुँ परछाईं छल, मुदा आब ओकर दिशा भेटि गेल।

छोट लोकगीत

टाँगू हे संकेत, खाली खूँटी पर टाँगू हे,
अनुपस्थितक मौनो सँ बाट माँगू हे।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

खाली खूँटी देखिते बुझू किछु छल एतय,
धागा, गन्ध, खरोंच सभ बाट देखाबै ततय ।

अध्याय १५४

बाबाक वचन

बाबाक वचन जाधरि श्रद्धा, ताधरि अछूत।



बाबाक वचन जाधरि श्रद्धा, ताधरि अछूत। जहिना जाँचयोग्य भेल, वचन कागच भऽ गेल। जे शब्द कहियो प्रश्नक बाहर छल, से आइ बहीक भीतर आबि गेल—ई परिवर्तन छोट नहि छल।

रसोईक कान अदालतक कानसँ बेसी सुनैत अछि, कारण रसोई कै कियो खतरा नहि मानैत। जे बात देबालसँ छिपाओल जाइत अछि, से धुँआरि सुनि लैत अछि—आ धुँआरि सेहो एक दिन बाजि सकैत अछि।

भोरक पहिल उजासमे चन्ना गाछीक टूँठ लग काल्हिक सूची फेर पसारल गेल। हवामे अखनहुँ राति भरिक ठण्डक बसल छल, आ बच्चा सभक स्वर ओहि ठण्डकमे हलुक काँपि रहल छल। कपड़ामे लपेटल कागच खोलिते ओहि पर राखल ओसक बून्द सभ अक्षरक कातमे मोती जेकाँ अटकल छल।

दूजा पन्ना पर ‘बाबा’ शब्द नहि छल, मुदा ‘ऊपरक मञ्जूरी’ लिखल छल। मीरा तुरन्त नोट करौली—‘बाबा, ऊपर, लोकहित, सेवा—एकहि वृत्तक शब्द।’ आरुणि वृत्त खिंचलक। हरिचरण, जे दूर ठाढ़ छल, व्यंग्य करैत कहलक—‘शब्दक वृत्तसँ अपराध सिद्ध होएत?’ अनन्या शान्त स्वरमे उत्तर देलक—‘अपराध सिद्ध करब अदालतक काम।’

सत्यव्रत मेहता शारदासँ पूछलनि—‘अहाँ बटुकनाथ हरिहरन केँ “बाबा” कहैत छलियनि?’ शारदा बिनु देर कहलीह—‘सभ कहैत छल। मुदा बाबा कहला सँ केओ निर्दोष नहि होइत।’ ई सीधा वाक्य सभ पर गड़गड़ाहट जेकाँ गिरल। पहिल बेर ककरो मुँहसँ बटुकनाथ आ बाबा एकहि साँसमे स्पष्ट जुड़ल।

शारदा झा दोसर स्मरण देलीह—‘एक बेर बाबा कहलनि—जे नाम बहुत रोए, ओकरा सेवा दऽ शान्त करू।’ देविका पूछलक—‘सेवा मतलब?’ शारदा कहली—‘कखनो पाँच सेर चावल, कखनो दवा, कखनो पूजा। मुदा कागच वापस नहि।’ आरुणि तुरन्त लिखलक—‘सेवा: प्रतिकार नहि, शमन।’ सत्यव्रत जोड़लनि—‘क्षतिपूर्तिक नकली छाह।’

दुपहर बाद बच्चा सभ ‘वचन-मानचित्र’ बनौलक। मानचित्र बनबैत-बनबैत सभक हाथ माटिसँ काड़ा भऽ गेल छल, मुदा कियो हाथ धोबय नहि गेल—जेना माटिक स्पर्श सेहो एक प्रकारक साक्षी हो। बीचमे लिखल—‘बाबा/बटुकनाथ: स्मरणानुसार उच्च आसन।’ चारू दिशामे शाखा—भानु लालक पर्ची, शारदा झाक रसोई-स्मरण, महावीरक बैसकी-स्मृति, फूलकली देवीक दान-पत्र, देवन पासवानक अनुपस्थिति-स्मरण, चन्ना गाछीक टुकड़ा।

राति उतरिते टूँठक हरियर बिन्दु फेर देखायल कि नहि, कियो निश्चित नहि कहि सकल। मुदा पर्ची, बही, पोटली, आसन आ सूची कपड़ामे अलग-अलग लपेटि सुरक्षित राखल गेल। अनन्या कपड़ा बाँधैत कहलक—‘आइ बाबाक वचन सुनल गेल, मुदा एखन ओकर जवाब बाकी अछि।’ आरुणि जोड़लक—‘जवाब कागचसँ नहि, प्रभावित लोकक नामसँ शुरू होएत।’

एहि तरहँ अध्यायमे 'बाबाक वचन' पहिल बेर अस्पष्ट श्रद्धा सँ उतरि जाँचयोग्य भाषा बनल। शारदा झाक रसोई-स्मरण, भानु लालक पर्ची, महावीरक बैसकी-स्मृति, देवन पासवान आ फूलकली देवीक दबल समय, आ चन्ना गाछीक गवाही मिलि कऽ देखेलक जे बटुकनाथक शक्ति हस्ताक्षरमे नहि, लोकक डर आ विश्वासमे बसल छल।

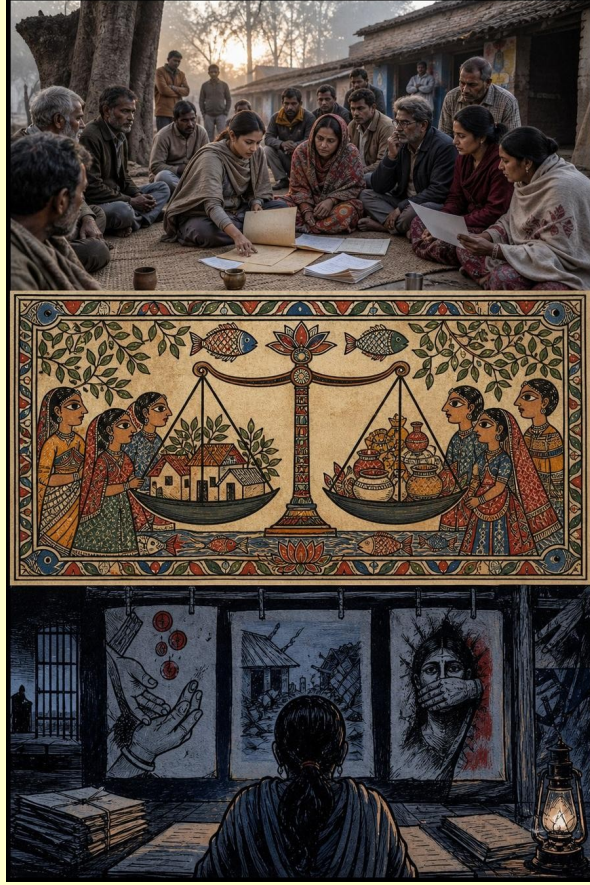
छोट लोकगीत

बैसू हे कने, बाबाक आसन लग बैसू हे,
ओसक मोती-भरल काठक वचन सुनू हे।
बाबाक आसन नमी सँ भरल, ओसक मोती झलकै,
अनलिखल वचन खेतक मेड़पर चुपचाप पलकै।

अध्याय १५५

सेवाक खाता

सेवाक खाता आ मौनक खाता जँ एक्कहि हाथमे हो, तँ दुनू
हिसाब माँगै छै।



सेवाक खाता आ मौनक खाता जँ एक्कहि हाथमे हो, तँ दुनू
हिसाब माँगै छै। जे हाथ अन्न दैत छै, ओही हाथ जँ चुप्पीओ
माँगय लागय, तँ अन्न आब भोजन नहि रहैत, सौदा बनि जाइत
छै।

दान उज्जर होइत छै, तइयो ओकर छाहमे कारी शर्त छिपल रहि
सकैत छै। जे शर्त शब्दमे नहि कहल जाइत, से सभसँ भारी होइत
छै, कारण ओकरा कागच पर नहि, मन पर लिखल जाइत छै।

अनन्या सभसँ पहिने काल्हिक सूची खोलली। ओकर ऊपरमे ओ लिखलक—‘वचनक बाद परिणाम।’ मीरा एहि शीर्षक केँ देखलथि आ संतोषक साँस लेली। केवल बटुकनाथक नाम भेटब पर्याप्त नहि छल।

सत्यव्रत मेहता बहीक पन्ना उलटैत रहला। हुनका एक पंक्ति रोकि देलक—‘नाम नहि लिखब। परिवार समझल गेल।’ ओ पंक्ति लाल स्याहीमे किनार पर छल।

मीरा बच्चा सभकेँ सिखौलथि जे प्रत्येक गवाहीक सोझाँ ‘स्मरण’, ‘बही’, ‘तिथि-मिलान’, ‘स्वार्थ-संबंध’ अलग-अलग लिखू। ओ कहलथि—‘जकरा दान भेटल, ओकर गवाही कमजोर नहि। मुदा ओकर बँधन बुझल जरूरी।’ एहि पर अनन्या पन्नाक माथ पर लिखली—‘दया आ दबाव बीच भेद।’ ई शीर्षक ओहि दिनक असली पाठ बनि गेल।

साँझक छाह बढ़ल तँ चन्ना गाछीक टूँठक कारी दरारमे काल्हिक हरियर बिन्दु किछु लंबा देखायल। शारदा झा कहलीह—‘देखू, काठ बोलि रहल अछि।’ मीरा लिखली—‘दृश्य पुनः। अर्थ लोकानुभव।’ सत्यव्रत मुस्कुरौलनि—‘कखनोकाल प्रतीक लोककेँ सच धरि लय जाए, बस ओकरा सचक स्थान पर नहि राखू।’ बच्चा सभ आव एहि भेदक अभ्यास सीखि गेल छल।

ओ बस माटिक डल्ला उठाकऽ बहीक कातमे राखि देलक। ‘नानीक जमीनक बदला मौन-भोज?’ ओकर आवाज अत्यन्त धीमा छल, मुदा ओहि धीमापनमे एतेक धार छल जे हरिचरणो चुप भऽ गेल। आरुणि लिखलक—‘मौन-भोज: फूलकली प्रकरणक समीप तिथि।

एहि पढ़नाइ पर कियो ताली नहि बजेलक। तालीक अर्थ उत्सव होइत। एतए उत्सव नहि, उघाइल घाव छल।

अध्याय एहिसँ समाप्त भेल जे सेवा आ मौनक खाता अलग नहि रहल। बटुकनाथक बाबाक वचन आव समाजक रोजमर्रा दया, ऋण आ शर्मक भीतर पसरल जाल बनि उभरल।

छोट लोकगीत

परसू हे थारी, साँचो संग परसू हे,
जेकर नाम पर अन्न, तकर कथो कहू हे।
थारीमे चावल उज्जर, संगमे साँच परोसू,
दानक हरेक दानासँ जनक सम्मान जोरसू।

अध्याय १५६

दानक ऋण

दानक उज्जर कपड़ामे सभसँ बेसी ऋण लपेटल रहै छै।



आधा उठल हाथ केवल डरक नहि, बहुधा उपकारक स्मृतिक सेहो चिह्न होइत छै। जकरा एक दिन सहायता भेटल, ओकरा जीवन भरि प्रश्न पूछबाक अधिकार छीनल जा सकैत छै—ई सभसँ नीक ढंगक बन्धन छै।

गरीबक श्रमकें जँ धनीक कृपा बुझाओल जाए, तँ इतिहास उनटा लिखाइत छै। घड़ा देनिहार ऋणी बनि जाइत छै, आ घड़ा लेनिहार उपकारी। ई उनटापन जतय होइत छै, ओतय न्यायक सभसँ पहिल काज ओकरा सीधा करब छै।

एहि छोट 'हँ'मे कतेको बरखक धूलि छल। मीरा बच्चा सभकेँ रोकली—'एहि गवाही केँ न पूरा क्षमा बनाउ, न पूरा दोष। लिखू—स्वीकार सहित संलग्नता।' अनन्या नयका शब्द बनौली—'बंधायल अपराध।' सत्यव्रत धीरेसँ मुस्कुरौलनि।

सत्यव्रत मेहता हरिचरणक आँखिमे देखैत कहलनि—'जे भूखमे खाएल, आ जे भूखक उपयोग करि कागच दबेलक—दूनु एकहि तराजूमे नहि तोलल जाएत।' हरिचरण हँसल—'तराजू अहाँक?' मीरा बीचमे कहली—'तराजू नहि, विवरण। फैसला बादमे होएत, पर भेद एखन लिखल जाएत।' बच्चा सभ लिखलक—'भूखक लाभार्थी आ भूखक व्यापारी अलग।'।

अनन्या एहि भाषा सभक कातमे लिखली—'नीक-बेजायक दबावक वाक्य।' आरुणि आगाँ जोड़लक—'बार-बार दोहरल वाक्य स्वयं दस्तावेज बनैत अछि।' सत्यव्रत कहलनि—'सही। जखन अनेक घरमे एकहि ढंगक वाक्य सुनल जाए, तखन ओ केवल व्यक्तिगत सलाह नहि, प्रणालीक संकेत होइत अछि।' बच्चा सभ 'प्रणाली' शब्दक अर्थ पूछलक। मीरा कहली—'जे बिनु एक आदेशक सेहो सभकेँ एक दिशा धकेलए, से प्रणाली।'।

ओही घड़ी भानु लाल, जे पर्ची बचा कऽ लय आएल छल, धीरेसँ कहल—'हमरा लग आओर एक बात अछि।' सभ ओकरा दिस घुमल। ओ कहलक—'दानक खाता सँ अलग एक छोट कापी छल—ककरा कतेक "समझाओल" गेल। हम पूरा नहि देखलहुँ, मुदा नाम सुनने छी।' मीरा तुरन्त रोकली—'नाम बिनु देखल प्रमाण नहि।

भानु लाल कहलक—'कापीक नाम छल—"मञ्जूरी"। ओकरा बाबाक खास कोठरीमे राखल जाइत छल।' ई सुनिते महावीरक चेहरा फक्क पड़ि गेल। ओ धीरेसँ कहल—'हमरा घरक ऊपरका कोठरीमे एक लोहेक संदूक अछि।

एहि सभक सामने कहल बात पर हवा भारी भऽ गेल। कियो विजय अनुभव नहि केलक। किएक तँ सत्यक ई रूप असुविधाजनक छल—ओ दोषी आ पीड़ित केँ अलग-अलग कोठरीमे रखि आराम नहि दैत।

अध्याय एहिसँ समाप्त भेल जे आधा हाथ सभ पूर्ण गवाही बनल, आ दानक उज्जर कपड़ा भीतरक गाढ़ कारी धागा देखाबय लागल। ओ संदूक खाली हो, भरल हो, वा झूठसँ जकड़ल—

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

ओहिमे बटुकनाथक परत आओर भीतर धरि खुलबाक संकेत
छिपल अछि।

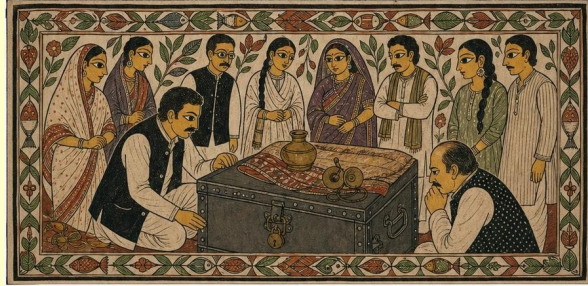
छोट लोकगीत

ओढ़ हे उज्जर, भीतरो उज्जर ओढ़ हे,
धागा-धागा साफ, गिरहो साफ जोड़ हे।
उज्जर कपड़ा ओढ़ि कऽ भीतर उज्जर रहू,
धागा-धागा साफ राखू, छलक गाँठि नहि सहू।

अध्याय १५७

लोहेक संदूक

लोहेक संदूक घरक अन्हारमे व्यापार छल, गामक इजोतमे गवाही भऽ गेल।



कुंजी पूजा-घरमे रहय—ई बात सुनबामे पवित्र लगैत छै। मुदा जे कुंजी पवित्रताक ओहार तर राखल जाइत छै, ओ प्रायः सभसँ अपवित्र गुप्ती केँ ढाकैत छै।

मञ्जूरी आ समझौता अलग-अलग शब्द छै। समझौतामे दुनू जाहि विषयपर विचारक आवाज होइत छै। मञ्जूरीमे कखनो एक्के जाहि विषयपर विचारक आवाज, दोसराक केवल अंगूठा।

महावीरक संग सत्यव्रत मेहता, मीरा, सुरमणी देवी, भिखारी लाल, अनन्या, आरुणि, देविका आ दू स्त्री-साक्षी गेली। नियम पहिने पढल गेल—संदूक एकल हाथ सँ नहि खुलत, प्रत्येक वस्तुक सूची बनत, निज बात पर परदा रहत, अपराधक कागच पर प्रतिलिपि बनत, आ ककरो नाम बिनु सुनवाई सार्वजनिक नहि होएत।

आरुणि तुरन्त कहलक—‘भोजनक संग वचन किएक?’ कोनो उत्तर नहि भेटल। महावीर पन्ना उलटैत रहलाह। एक ठाम कैलाश मंडलक पिताक नाम लग लिखल छल—‘दवा ग्रहण, पुरान सीमा पर मौन।’ कैलाश बाहर बैसल छल।

मञ्जूरी-कापीक पहिल पृष्ठ पर नियम लिखल छल—‘दान, सेवा वा संकट-सहायताक उपरान्त प्राप्त आश्वासन।’ सत्यव्रत ई पंक्ति पढ़ि आँखि बन्द कएलनि। कोठरीमे एक क्षण लेल केवल हुनकर साँसक आवाज सुनाइ पड़ल। ओ धीरेसँ कहलनि—‘संकट-सहायताक बाद आश्वासन, अर्थात् संकट स्वयं दस्तावेज बनाओल गेल।’ मीरा लिखली—‘संकट सँ मञ्जूरी निकालबाक पद्धति।’

अनन्या ओहि वाक्य केँ अलग लिखली—‘समझेनाइ आ मञ्जूरी बनबेनाइ बीचक अपराध।’ सत्यव्रत कहलनि—‘एहि भेद पर पूरा सुनवाई होएत।’ कारण रामलखनक स्वीकारबला स्वरमे दोष छल, पर ओकर भीतर स्वयं उपयोग होयबाक पीड़ो छल। कथा फेर ओहि जटिल ठाम पहुँचि गेल जतए आसान दंड आ आसान क्षमा दुनू झूठ लगैत अछि।

प्रतिलिपि बनबाक समय बच्चा सभक भूमिका अद्भुत रहल। अनन्या नाम पढ़ैत, आरुणि स्तम्भ बनबैत, देविका चिह्न अंकित करैत, कमला बाहर संबंधित परिवारक प्रतीक्षा-सूची लिखैत। प्रत्येक पन्ना पर तीन साक्षीक सोझाँ क्रमांक देल गेल।

लोहेक संदूक चन्ना गाछीक टूँठ लग खुलल मुँह राखल गेल, ताकि लोक देखए जे गुप्त पेट खाली भऽ सकैत अछि। मुदा मञ्जूरी-कापी लाल कपड़ामे बाँधि अलग राखल गेल। ओकर पहरादारी बच्चा सभ नहि, ओहि लोक सभ करैत रहल जे कखनो आधा हाथ उठौने छल।

अध्याय एहि ठाम समाप्त भेल जे लोहेक संदूक घरक अन्हारसँ निकलि गामक सामूहिक दृष्टिमे आवि गेल। भोजन, दवा, अनाज,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

शरण, दक्षिणा, श्रम—सभकें मञ्जूरी बनावयवाली पद्धतिक पहिल
ठोस देह भेटल।

छोट लोकगीत

खोलू हे संदूक, धीरे-धीरे खोलू हे,
लोहाक पेटक साँसकें सूरुज सँ जोड़ू हे।
लोहेक पेट खोलू धीरे, भीतर इतिहास,
कागच, कपड़ा, बीज, चाबी—सभमे लोकक श्वास।

अध्याय १५८

सहमति-कापीक मिलान

मञ्जूरी-कापीक मिलानसँ पहिल बेर बुझाएल — हस्ताक्षरो
अपहरण भऽ सकैए।



बीमारीक राति, भूखक दिन, बरखाक रातिमे लेल गेल अंगूठा—ई सभ स्वेच्छा नहि, अवसरक शोषण छै। स्वेच्छा ओतय रहैत छै जतय चयनक स्वतंत्रता रहैत छै। जतय चयन नहि, ओतय मञ्जूरीयो नहि।

चुप्पीकेँ वचन बुझि लेब सभसँ सरल अपराध छै, कारण चुप्पी अपन सफाई नहि दऽ सकैत। जे चुप रहल, ओकर चुप्पीक कारण जाँचब न्यायक पहिल कर्तव्य छै।

राति भरि लाल कपड़ामे बँधल मञ्जूरी-कापी चन्ना गाछीक टूँठ लग राखल रहल। ओकर ऊपर तीन पहरा छल—एक पहरा आधा हाथ उठौनिहार लोकक, एक पहरा बच्चा सभक, आ तेसर पहरा ओहि मौनक जे आब टूटि कऽ फेर सँ झूठमे नहि घुरय चाहैत छल। हवा चलैत रहल, कपड़ा हलुक काँपैत रहल, मुदा कापी स्थिर रहल, जेना ओ अपन भीतरक नाम सभ केँ रातिक अन्हारसँ बाहर भोर धरि सुरक्षित लय जाए चाहैत हो।

ई वाक्य सुनि सत्यव्रत देर धरि चुप रहलाह। फेर लिखलनि—‘नाम पढ़नाइ पर्याप्त नहि, चाल पढ़नाइ आवश्यक।’ मीरा कहली—‘एहि कारण बच्चा सभ केँ केवल अक्षर नहि, पद्धति पढ़ाओल जाएत।’ चन्ना गाछीक टूँठ पर बैसल चिरई एक बेर फड़फड़ायल, जेना ई शिक्षा ओहो सुनि रहल हो।

आरुणि पूछलक—‘तूँ ककर आदेश पर जाइत छलह?’ रामलखन पहिने चुप रहल। फेर कहलक—‘कखनो हरिचरण, कखनो मुनीम, कखनो आश्रमक चिट्ठी। मुदा ऊपरक नाम कहियो साफ नहि।

सत्यव्रत तुरन्त आदेश-जेकाँ नहि, विनती-जेकाँ कहलनि—‘एहि पन्ना पर विशेष चिह्न लगाओ। मृत्यु-तिथि, अनुपस्थिति, आ झूठा गवाह अलग सूचीमे।’ ई पहिल बेर छल जखन कापी केवल दबाव नहि, सीधा जालसाजीक देहरी पर पहुँचि गेल। मीरा जोड़ली—‘जे जीवित पर दबाव डालल गेल, ओ एक अपराध।

बूढ़बा भूतक चर्चा फेर उठल। कियो कहलक जे मृतकक नाम सुनिते टूँठक छालमे सफेद रेखा चमकल। कियो कहलक जे पोखर दिससँ पानिक गंध आयल।

एहि प्रश्न पर चन्द्रपालक नाम हवामे बिनु उच्चारणक घुमि गेल। कियो ओकरा कहल नहि, मुदा सभ ओकर छाह अनुभव केलक। लाउक मुनीम, हरिचरणक संदेश, रामलखनक समझेनाइ, बटुकनाथक चिह्न—सभ रेखा धीरे-धीरे एक अँधार मध्यबिन्दु दिस मुड़ि रहल छल।

अध्याय एहि ठाम समाप्त भेल जे मञ्जूरी-कापीक मिलानसँ पीड़ित परिवार सभ अपन-अपन वाक्य फेर सँ पा लेलक। दवा मौन नहि, अनाज वचन नहि, शरण सीमा-त्याग नहि, कीर्तन गवाही नहि। झूठक कापीमे लिखल शब्द सभक सोझाँ जीवनक असली भाषा ठाढ़ भऽ गेल।

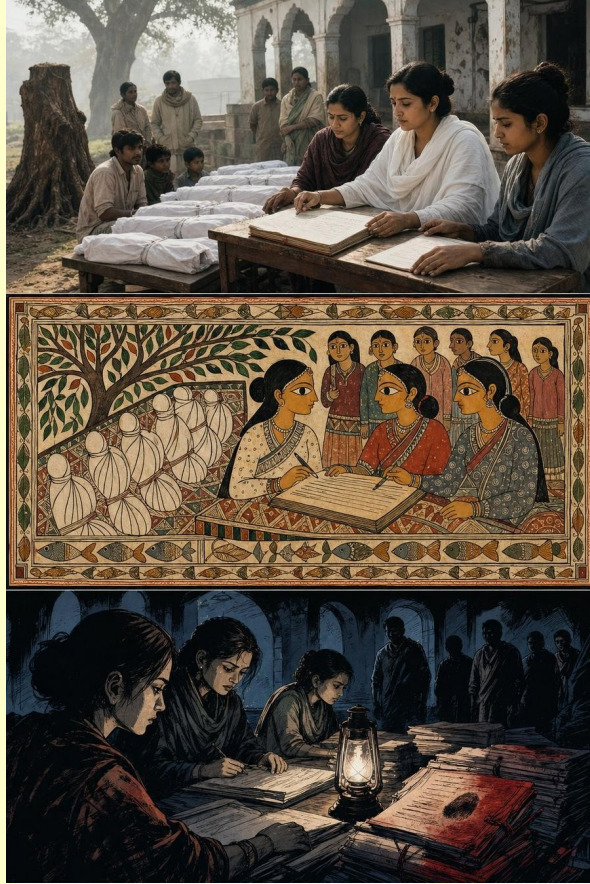
छोट लोकगीत

सम्हारू हे रेखा, हस्ताक्षरक रेखा सम्हारू हे,
पढ़ि-बुझि कऽ टा हथेली आगाँ पसारू हे।
अपन हस्ताक्षर अपन स्वर, कियो नहि चोरै,
रेखा-रेखामे जीवनक मञ्जूरी अपना ठौरै।

अध्याय १५९

मृतकक सहमति

मृतकक मञ्जूरी दुनियाक सभसँ सस्ता कागज— आ सभसँ महग अपराध ।



तिथि झूठ नहि बजैत, चाहे कागज किछु कहय। मृत्यु-तिथि आ मञ्जूरी-तिथिक बीचक खाई जतय भेटैत छै, ओतय अपराधक शरीर सभसँ साफ देखाइ पड़ैत छै।

अंगूठाक गोलाई एक देहक अन्तिम चिह्न होइत छै। जँ ओ चिह्न देहक मृत्युक बाद कागज पर चढ़ि जाए, तँ ओ चोरी केवल जमीनक नहि, स्मृतिक सेहो होइत छै।

अगिला भोर चन्ना गाछीक टूँठ लग हवा सामान्य दिनसँ बेसी सावधान छल। पात एको नहि हिलल, जेना गाछी स्वयं साँस रोकि आइक सुनवाई सुनय चाहैत हो। काल्हि मञ्जूरी-कापीक मिलानमे जे नाम मृतक, अनुपस्थित आ शरणार्थी रूपमे चिन्हित भेल छल, से सभ आइ अलग कपड़ामे बाँधि राखल गेल।

बच्चा सभ पहिने चुप्पी धारण केलक। अनन्या बही खोलि ऊपर लिखली—‘जे बोलि नहि सकैत, तकर तिथि बोलत।’ आरुणि ओहि पंक्तिक नीचाँ जोड़लक—‘जे उपस्थित नहि छल, तकर अनुपस्थिति सेहो गवाही अछि।’ देविका तेसर पंक्ति लिखली—‘मृतकक अंगूठा नहि चलैत। जे चलल, से ककरो जीवित हाथ छल।’ एहि तीन पंक्तिसँ आइक सुनवाईक मर्यादा बनि गेल।

अनन्या काटल पन्नाक डंठल देखली। ओ कहलक—‘जे काटल गेल, से भीतरी बात अछि।’ सत्यव्रत पन्नाक किनार छुलैत रहलाह। कटाव ताजा नहि, मुदा बहुत पुरान सेहो नहि छल।

भीड़मे सनसनी पसरि गेल। महावीर पाठक थैली उठाकऽ देखलनि। छाप असली चिह्नसँ बहुत मिलैत छल, पर अर्धचन्द्रक दाहिना कोना अल्प टेढ़ छल।

साँझ धरि मृतक-मञ्जूरी सूचीमे नौ पन्ना आएल। तीन पर नकल-चिह्न, दू पर असंभव तिथि, दू पर अनुपस्थित देह, एक पर झूठा गवाह, आ एक पर कटलकागचक छाह। मीरा एहि सारांशक बाद कहली—‘आब प्रश्न केवल बटुकनाथक चिह्नक नहि, चिह्नक चोरीक अछि।

कीन-पत्र, मुनीमक बही, लाउक साझेदारी, आ चन्द्रपालक व्यापारक पुरान हिसाब मिलाओल जाएत। जँ मृतकक मञ्जूरी सँ बनल बाट गोदाम धरि पहुँचैत अछि, तँ छाह मालिकक चेहरा देखए पड़त।

अध्याय एहि ठाम समाप्त भेल जे मृतकक नाम फेर सँ मृतक रहल, झूठक कागचमे जीवित कठपुतली नहि। अधिकार-चिह्नक उज्जर आवरण फाटि भीतर नकल-मोहरक लाल दाग देखाइ पड़ल। मञ्जूरी-कापीक पन्ना सभ आब केवल पीड़ाक सूची नहि रहल।

छोट लोकगीत

लगाउ हे छाप, बुझि कऽ अंगूठा लगाउ हे,
गोल निशान मे सूरजक मान जगाउ हे।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

अंगूठाक गोल निशान खेतक सूरुज समान,
श्रमिकक पूरा मञ्जूरी, ओकर पूर्ण पहिचान ।

अध्याय १६०

गोदामक छाया

गोदाम जखन खुजै छै, तखन व्यापार नहि— छाया-न्यायक पेट देखाइ छै।



बूढ़ सभ कहै छै, जे कोठरी मे कागच बेसी दिन बन्द रहै छै, ओहि कोठरीक हवा कागचे-सन गन्धाय लगै छै। धानक बोरा मे धान रहै छै, मुदा ओकर पाछाँ जे पेटी नुकाओल रहै छै, तइ मे धान नै रहै छै—तइ मे ककरो अँगूठा रहै छै। अँगूठा जकर देह नै रहलै, ओकर मञ्जूरी के गढ़लकै?

ताला केँ लोक भरोसाक चिन्ह बुझै छै। मुदा साधारण ताला ओहि ठाम लगै छै जतय ताला नै, डर पहरा दै छै। जकर पहरा डर करै छै, ओकरा मोटगर लोहाक कोन काज?

पुरखाक मौन मञ्जूरी नहि—ई पाँति राति भरि गाममे गूँजैत रहल, आ अगिला सबेर लाल-सफेद धागासँ बँधल बटुकनाथक बक्सा चन्ना गाछीक टूँठ लग राखल रहल। राति भरि हवा ओहि बक्साक चारू कात पहरा दैत रहल छल, जेना भीतर कागच नहि, मुँह बन्द कएल लोक सभ साँस लऽ रहल हो। मीरा पहिने बक्सा केँ प्रणाम नहि, सावधानी देलथि।

सत्यव्रत मेहता, सुरमणी देवी, महावीर पाठक, मीरा, अनन्या, आरुणि, देविका, भिखारी लाल, रामलखन सहाय आ परमानन्द गोदाम दिस चलल। बूढ़ मुक्किल सेहो संग चलबाक जिद्द कएलक, मुदा मीरा हुनका बाहरक साक्षी बनौलनि। ‘जतय भीतरक डर बढ़त, बाहरक आँखि हमरा बचाओत,’ ओ कहलीह।

मीरा ओकरा रोकलथि—‘तोहर बयान लिखल जाएत। चाबी खोल, मुदा पहिने कह—ककर आदेश?’ धीरू धीमे स्वरमे कहलक—‘लाउ मालिक कहने छलाह। लाउ कहैत छलाह, चन्द्रपाल बाबूक माल अछि, पर देखभाल हमर।’ ई पहिल वाक्य रहल जे गोदामक फाटक पर चन्द्रपालक छाह केँ आवाज देलक।

मीरा छाप केँ कपड़ामे लपेटबाक लेल कहलीह, मुदा ओहिसँ पहिने देविका कागच पर ओकर स्पष्ट छाह उतारली। तीन छापक तुलना बनल—असली, नकल, मृतक-पन्ना। आरुणि तीनू रेखा पर सूक्ष्म बिन्दु चिन्हित केलक।

ओहि क्षण चन्ना गाछीक टूँठक छाल पर बरखा बिनु नमी चमकल। लोक कहलक—गाछी कानि रहल अछि। कियो कहलक—गोहि पानिमे पूछार हिलबय लागल।

राति होइत-होइत चन्द्रपालक नाम पहिल बेर गाममे डरक जगह प्रश्न बनि उच्चरित भेल। ‘चन्द्रपाल कतऽ अछि?’ कियो कहल। ‘ककरा पाछाँ नुकाएल अछि?’ दोसर जोड़लक।

अध्याय एहि ठाम समाप्त भेल जे गोदाम आब व्यापारक घर नहि, छाह-न्यायक खुजल पेट बनि गेल। मृतकक मञ्जूरी, नकल मोहर, कर्ज-बही, अभ्यास हस्ताक्षर आ मौखिक निर्देश—सभ मिलि कऽ एहन राह बना देलक जे चन्द्रपालक दरबाजा दिस जाइत छल।

छोट लोकगीत

खोलू हे गोदाम, सूरजक आगाँ खोलू हे,
बोरा-बोरा हिसाबकेँ जन-आँखिसँ तौलू हे।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

गोदामक दुआर खुलल, सूरुज भीतर आयल,
कागच, बोरा, मोहर सभ साफ-साफ देखायल ।

अध्याय १६१

फोनक कैद

फोन जकरा कैद केलक, तकरा कोनो जमानत नहि— जाधरि
आवाजक मालिक नहि पकड़ाए।



बूढ़ सभ कहै छै जे डर तीन प्रकारक होइ छै—जे देह पर अबै छै,
जे घर पर अबै छै, आ जे नाम पर अबै छै। पहिल दुनू सँ लोक
भागि सकै छै। तेसर सँ लोक भागै नै छै, ओ चुप भऽ जाइए।

‘ककरो नहि कहू’—ई चारि शब्द कोनो ताला सँ मजगूत छै।
किएक तँ ताला तँ बाहर सँ लगै छै, ई भीतर सँ लगै छै। जे लोक
अकेला अछि, तकरा डरेबा लेल पिस्तौल नै चाही।

‘ककरो नहि कहूँ क बदला ‘सभकेँ कहूँ’—ई पाँति गोदाम खुजलाक बादक साँझमे गूँजल छल, आ गोदामक छाह खुजलाक बाद गाममे दू दिन धरि चन्द्रपालक नाम हवामे तैरैत रहल। कियो ओकरा सोझे नहि देखलक, मुदा प्रत्येक मोड़ पर ओकर नहि होएब उपस्थित छल। जेना कोनो लोक घर छोड़ि भागि गेल हो, आ ओकर चप्पल दरबाजा पर रहि गेल हो।

अनन्या तुरन्त लिखली—‘फोनक नजरबन्दी’। आरुणि जोड़लक—‘जे कैद देह नहि धेरैत, मुदा मन केँ धेरि लैत, ओकर ताला भय अछि।’ ई पाँति सुनि चन्ना गाछीक टूँठ लग ठाढ़ लोक सभकेँ बुझाई पड़ल जे गोदामक ताला लोहाक छल, मुदा ई ताला आवाजक अछि।

देविका धीरेसँ कहली—‘रद्दी बोराक गवाही आव फोनक फान्द बनि गेल।’ सत्यव्रत मेहता दूरसँ आवि रहल छलाह। ई बात सुनि हुनकर पएर रुकि गेल। जे सामग्री काल्हि लोक-सूचीमे आयल छल, ओकर समाचार ककरा-ककरा धरि पहुँचल?

भिखारी लाल लिखित हिसाब-घरक प्रवेश-पुस्तक लऽ आयल। पछिला मासमे कतेको नाम लिखल छल जे कागजक गट्टर देखबाक मञ्जूरी लैत छल। एक नाम—मधुकर प्रसाद—तीन बेर।

एहि वाक्य पर चन्ना गाछीक टूँठ लग बैसल एक नेना पूछलक—‘आवाजक मोहर?’ आरुणि बुझेलक—‘जे स्वर सुनिते हम मानि लैत छी जे ई सरकार, अदालत, पुलिस वा बैंक अछि—से आवाजक मोहर। अपराधी ओहि मोहरक नकल करैत अछि।’ बच्चा सभ ई बात लिखि लेलक। शिक्षा आव पाठशालासँ बाहर, अपराधक व्याकरण पढ़ि रहल छल।

ओही राति गोहि नदीक कगार पर बहुत काल धरि निश्चल रहल। कियो कहलक—ओ सुनि रहल अछि। कियो कहलक—ओ हँसि रहल अछि।

अध्याय एहि प्रश्न पर समाप्त भेल—जे अपराध कागज, मोहर आ गोदामसँ निकलि आवाज, संख्या आ फोनमे बसि गेल अछि, ओकरा पकड़बाक लेल कतेक कान, कतेक बही आ कतेक साहस चाही? चन्द्रपालक छाह आव केवल देवाल पर नहि। ओ प्रत्येक ओहि आवाजमे नुका सकैत अछि जे मनुष्य केँ अकेला कऽ कहैत अछि—‘ककरो नहि कहूँ।’

छोट लोकगीत

बोलू हे बोलू, संगमे सभ छी—बोलू हे,
‘ककरो नहि कहू’क ताला स्वरसँ खोलू हे।
‘ककरो नहि कहू’क ताला स्वर मिलिते टूटय,
एक कण्ठसँ दोसर कण्ठ धरि साहस-पानि छूटय।

अध्याय १६२

आवाजक मोहर

आवाजपर सेहो मोहर लागै छै— आ ओ मोहर तोड़बाक पहिल
उपाय आवाजेक पहिचान ।



बूढ़ सभ कहै छै जे भरोसा गामक सभ सँ पुरान पूँजी छिए। जकर
लग खेत नै, बरद नै, बही नै—तकरो लग भरोसा रहै छै। आ चोर
ओहि पूँजी दिस सभ सँ पछाति हाथ बढबै छै, किएक तँ ओ जनै
छै—जे दिन भरोसा चोरा लेल जायत, ओहि दिन गाम अपने-
आप लुटा जायत ।

नकलक अपन शास्त्र होइ छै। ओ पहिने बाहरी रूप नकलै छै—
मोहरक गोलाइ, कागचक रंग। फेर ओ भीतरी लय नकलै छै—
अधिकारीक धीरज, बैंकक सूखल शब्द, अदालतक ठण्ढा स्वर ।

सत्यव्रत मेहता लिखित हिसाब-घरक प्रवेश-पुस्तक फेर देखैत रहलाह। मधुकरक तीन प्रवेश, तीन नामक आड़ि, तीन दरबाजा। एक बेर लाउक सिफारिश, एक बेर हरिचरणक कागच, आ एक बेर चन्द्रपाल बाबूक प्रतिनिधि।

मीरा तुरन्त कहलीह—‘देखल बात लिखू, चिन्ह देखि बुझल बात अलग राखू।’ सकुनी कहलक—‘हम देखलहुँ, बस से लिखू।’ अनन्या लिखली—‘सकुनीक देखल: हरिचरणक लोक, मधुकरक कोठरी, कागचक थैली।’ आरुणि नीचाँ लिखलक—‘निष्कर्ष नहि।’ एहि अनुशासनसँ गामक गवाही अफवाह बनबासँ बचैत रहल।

हरिचरणक आँखि क्षण भरि लेल मधुकरक थैली पर अटक गेल। अनन्या ई देखली, मुदा तुरन्त लिखली नहि। बादमे ओ मीरा केँ कहली—‘किछु देखलहुँ, पर शायद भ्रम।’ मीरा उत्तर देलथि—‘जकरा पर भरोसा नहि, ओकरा बहीमे मत लिखू।’

चन्ना गाछीक टूँठ लग रातिक पाठ शुरू भेल। एहि बेर बूढ़ लोक स्वयं फोनक धमकीक वाक्य पढ़लनि, आ बच्चा सभ ओकर चाल बतौलक। ‘जल्दी करू’—समय-दबाव।

अनन्या पन्नासँ पन्ना मिलबैत रहली। आरुणि आवाजक वाक्य उतारैत रहल। देविका अभिनयक चालक नाम देली।

गोहि नदीक कगार पर आब नहि देखाइ पड़ल। किछु लोक कहलक—ओ पानि भीतर चलि गेल। किछु कहलक—ओ फोनक काँचमे घुसल अछि।

अध्याय एहि निर्णय पर समाप्त भेल जे आवाजक मोहर तोड़बाक पहिल उपाय आवाजक साझेदारी अछि। मधुकर गायब अछि, हरिचरण बेचैन अछि, चन्द्रपालक ‘सी. बाबू’ छाहमे अछि। मुदा आब गाम केवल सुनय वाला नहि रहल।

छोट लोकगीत

बाजू हे मृदंग, बन्द स्वरकेँ जगाबू हे,
दस फोनक एक्के साँसकेँ लोकगीत बनाबू हे।
मृदंगक पहिल चोट पर बन्द स्वर खुजि जाय,
दस फोनक एके साँस लोकगीत बनि जाय।

अध्याय १६३

हटायल कागजक निशान

कागज हटा देल जाइ छै, निशान नहि— हटौनिहारक हड़बड़ी
अपने निशान थीक।



धूरि कै लोक गन्दगी बुझै छै। मुदा लिखित हिसाब-घर मे धूरि
सभ सँ पुरनका मुंशी छिऐ। ओ बरख भरि चुपचाप बैसल रहै छै
आ जकर-जकर हाथ ओहि ठाम पड़ै छै, तकर-तकर नाप राखि लै
छै।

खाली जगह सेहो पढल जाइ छै। डोरीक वलय ओहिना पडल रहै
छै, गोंदक सूखल टुकड़ा ओहिना लागल रहै छै, आ बीच मे
केवल हवा। ओहि हवा कै नापि लिअ तँ हटायल कागजक देह
बनि जाइए—अनुपस्थित, मुदा नपने योग्य।

मीरा, अनन्या, आरुणि, देविका आ सुरमणी देवी सेहो पहुँचलथि। भीड़ केँ दूर राखल गेल। मीरा कहलथि—‘आइ लिखित हिसाब-घरक भीतर जँ एको धूरि हटत, तकर लेखा राखल जाएत।

आरुणि फुसफुसा कऽ कहलक—‘खाली जगह सेहो पढ़बाक चाही।’ सत्यव्रत ओकरा सुनलनि आ कहलनि—‘कतेको बेर जे नहि अछि, से सभसँ बेसी बाजैत अछि।’ बच्चा सभ ओहि खाली जगहक नाप लेलक—लम्बाइ, चौड़ाइ, डोरीक रंग, गोंदक सूखल टुकड़ा। हटायल कागचक पहिल प्रतिमा बनल—अनुपस्थित, मुदा उपस्थित।

परमानन्दक आँखिसँ नोर झरल। ओ कहलक—‘हम दरबाजा खोललहुँ। हमरा कहल गेल जे ऊपरसँ आदेश अछि।

अनन्या ओहि छाप केँ सोझ कागच पर उतारली। देविका कहली—‘ई तँ नाटकक उनटा संवाद जेकाँ अछि। जे मुख्य पन्ना हटल, ओकर प्रतिछाह बाँचल।’ मीरा मुस्की नहि देलीह, मुदा हुनकर आँखिमे एक कड़ा सन्तोष झलकल—‘चोरी पूर्ण नहि भेल।

राति जखन सभ चुप भेल, अनन्या कार्बन-छाप फेर देखली। उनटा अक्षरक बीच एक छोट संख्या छल—‘१७/सी’। आरुणि कहलक—‘सत्रह नम्बर अलमारी आ सी बाबू?

गोहि नदीक कगार पर फेर देखाइ पड़ल। एहि बेर ओकर पीठ आधा जलमे, आधा कादोमे छल। जोन्हियामे ओकर चमड़ा पर कागचक फाटल रेखा जेकाँ धार बनल छल।

अध्याय एहि बोध पर समाप्त भेल जे हटायल कागचक निशान मेटाओल नहि जा सकैत अछि। मधुकर गायब, हरिचरण अनुपस्थित, परमानन्द आधा टूटल, नागेश्वर जीवित, आ ‘१७/सी’ नव दरबाजा बनि ठाढ़ अछि। आब कथा फोनक आवाजसँ कागचक मृत्यु धरि पहुँचि गेल अछि।

छोट लोकगीत

सहेजू हे कार्बन, कारी रेखा सहेजू हे,
हटल पन्नाक छापोमे भोरक बाट देखू हे।
पन्ना हटि सकैत अछि, छाप कतऽ हटत,
कार्बनक कारी रेखा भोरक बाट कहत।

अध्याय १६४

चन्द्रपालक छायाक पेट

छोट संख्या पैघ ताला खोलै छै— जँ पढ़निहार रातिभरि जागल हो।



बूढ़ सभ कहै छै जे जाल केँ ओकर मुँह सँ नै, ओकर पेट सँ चिन्हल जाइ छै। मुँह तँ प्रत्येक ठाम अलग-अलग होइ छै— कतहु फोनक स्वर, कतहु रसीदक मोहर, कतहु दफ्तरक नामपट्ट। मुदा जतय सभटा धागा जा कऽ एक ठाम मिलै छै, ओहीठाम ओकर पेट रहै छै।

सभ सँ खतरनाक शब्द हिंसाक शब्द नै छिए। सभ सँ खतरनाक शब्द 'सेवा' छिए, 'सहायता' छिए, 'परामर्श' छिए, 'सुविधा'

छिऐ। किएक तँ हिंसाक शब्द सुनि लोक दरबज्जा बन्द करै छै, आ सेवाक शब्द सुनि लोक अपने दरबाजा खोलि दै छै।

हटायल कागचक निशान जे राति भरि पढ़ल गेल छल, ओकर अन्तिम अक्षर—‘१७/सी’—लिखल छोट संख्या राति भरि अनन्याक बहीमे जरैत रहल। ई संख्या अक्षर नहि, कुञ्जी जेकाँ लागैत छल। सत्रह नम्बर अलमारीक खाली डोरी, कार्बनक उनटा छाप, नागेश्वर झाक जीवित बयान आ चन्द्रपालक दफ्तरक नाम—सभ एकहि धागामे बन्हाइत जा रहल छल।

‘सी खण्ड’ शब्द सुनिते सत्यव्रत मेहता अनन्या दिस देखलनि। अनन्या तुरन्त लिखली—‘फोन करनिहार केँ आन्तरिक खण्ड-ज्ञान छल।’ आरुणि कातमे लिखलक—‘अथवा ओकरा ककरो भीतरक लोक निर्देश दैत छल।’ मीरा दुनू वाक्यक बीच खाली ठाम छोड़बाक कहलथि—‘कतेको बेर सत्य बीचक खाली ठाममे बैसल रहैत अछि।’

रसीद देखिते देविका कहली—‘परामर्श केन्द्र? ई तँ सलाहक नाममे कागचक पेट नापयक ठाम भेल।’ सत्यव्रत मेहता मोहरक किनार निहारलनि। ‘चन्द्रपाल’ साफ, मुदा ‘परामर्श’क अक्षर आधा घिसल।

दफ्तरक नौकर पहिने कहलक—‘चन्द्रपाल बाबू बाहर छथि।’ मीरा कहलथि—‘हम बाबू नहि, कक्ष देखब।’ नौकर हिचकिचायल। सत्यव्रत लिखित निवेदन देखेलनि। भीतर जे छोट कमरा खोलल गेल, ओकर दरबाजाक ऊपर धुंधला अक्षरमे ‘सी’ लिखल छल।

आरुणि लिखलक—‘नाम कटबाक डर, पेंशन रुकबाक डर, मृत लिखि देबाक डर—तीन डोर।’ देविका जोड़ली—‘डोरि पकड़निहार: सी-कक्ष।’ अनन्या तेसर पाँति लिखली—‘सी-कक्ष केवल कमरा नहि, जालक पेट।’ ई पाँति पढ़िते मीरा कहलथि—‘एहि अध्यायक नाम यैह होइत अछि।’

चन्ना गाछीक टूँठक छाह ओहि दिन असाधारण नमहर भऽ गेल। कियो कहलक—ओ छाह सी-कक्ष धरि गेल। कियो कहलक—ओ छाह चन्द्रपालक नामपट्ट पर चढ़ि गेल।

राति नदीक कगार पर गोहि देखाइ नहि पड़ल, मुदा जलमे गोल-गोल भँवर उठैत रहल। बूढ़ मुक्किल कहलक—‘पेट भीतर

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

अच्छि। ' सुरमणी देवी उत्तर देलीह—'आब हम पेटक नाप लऽ
रहल छी।

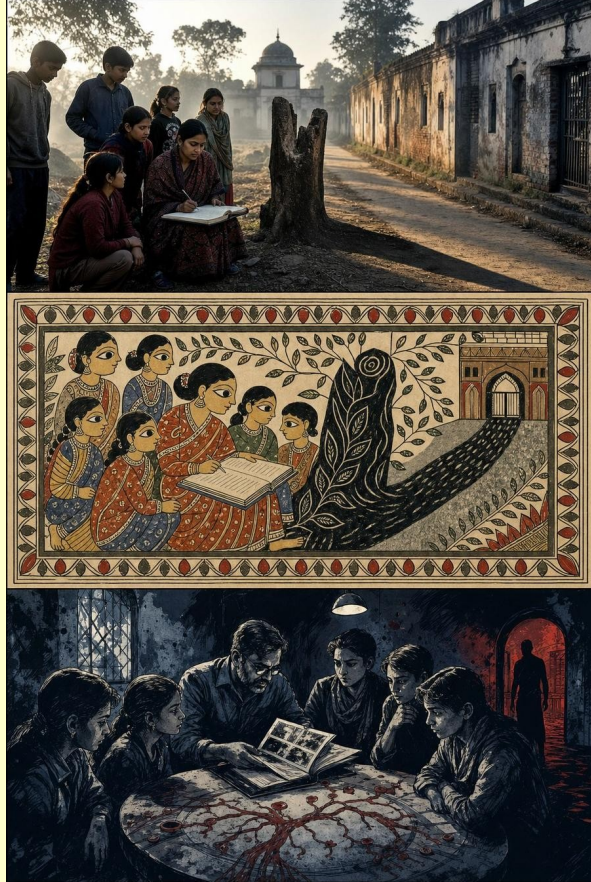
छोट लोकगीत

पकड़ू हे कुंजी, सत्रह-सीक कुंजी पकड़ू हे,
नान्हि अंकक हाथ धरि पैघ ताला झकझोरू हे।
नान्हि अंक सत्रह-सी, हथेलीमे कुंजी,
पैघ ताला काँपि उठल, जागल बुद्धि-सूँझी।

अध्याय १६५

छायाक देह

छाया पकड़ा गेल तँ प्रश्न ठाढ़— देह कतय?



छाह पकड़ा गेल तँ प्रश्न ठाढ़— देह कतय? आ देह सदिखन कोनो कोठी-बखारीमे भेटै छै। किएक तँ छाह केँ खेनाइ-पीनाइ नै चाही, मुदा देह केँ ठाम चाही, ताला चाही, आ राति-राति भरि ढोबय बला हाथ चाही।

बूढ़ सभ कहै छै जे अपराध केँ दू ठाम चाही—एकटा जतय ओ लिखल जाइ छै, आ एकटा जतय ओ राखल जाइ छै। लिखबाक ठाम दफ्तर होइ छै, राखबाक ठाम गोदाम। तँ जे लोक केवल दफ्तर तकै छै, ओ आधा अपराध देखै छै।

पेटक नाप लेल जा चुकल छल, आ आब प्रश्न बाँचल छल —‘छाह जखन पकड़ा जाय, तँ देह कतय अछि?’ ई प्रश्न राति भरि चन्ना गाछीक टूँठ पर झूलैत रहल। भोरमे जखन कुहेस हटय लागल, तखन बच्चा सभ देखलक जे टूँठक नमहर छाह सोझे दफ्तरक पुरान पिछुआरी गली दिस पड़ल अछि। सूरज एखन पूरा ऊपर नहि चढ़ल छल, मुदा छाह अपन बाट चुनि चुकल छल।

‘सी गोदाम?’ देविका कहली। परमानन्द फुसफुसायल—‘दफ्तरक सी-कक्ष आ बाहरक सी गोदाम अलग-अलग नाम छल, मुदा पेटी सभ एकहि लोकक मार्फत चलैत छल।’ ‘के लोक?’ अनन्या पूछली। परमानन्द बहुत काल धरि चुप रहल।

मुदा आशाक संग खतरो आयल। जँ असली पेटी सुरक्षित अछि, तँ अपराधी ओकरा मेटएबाक कोशिश अवश्य करत। मीरा बच्चा सभकेँ अलग कऽ कहलथि—‘आइसँ बहीक प्रति तीन ठाम राखल जाएत।

साँझमे चन्ना गाछी लग धरनी महतोक पुरान कामक ब्योरा पढ़ल गेल। कियो कहलक ओ कबाड़ी, कियो कहलक ढुलाइवाला, कियो कहलक चन्द्रपालक विश्वासपात्र। पर बूढ़ मल्लाह कहलक—‘ओ नदी पारक राति सभमे पेटी ढोइत छल।’ नदीक नाम आयल तँ सभ चुप भऽ गेल।

ओहि राति कोनो जाँच दल नहि निकलल। ‘अन्हार अपराधीक संगी होइत अछि। हम उजासमे जाएब।’ बच्चा सभक अधीरता कम नहि भेल, मुदा ओ सभ बुझलक जे साहस आ उतावलपन अलग बात अछि।

नदीक कगार पर ओहि राति गोहि बहुत काल स्थिर रहल। ओकर मुँह पानि दिस नहि, तेतरि घाट दिस छल। बूढ़ मुक्किल कहलक—‘ओ बाट देखबैत अछि।’ सत्यव्रत मेहता रोकलनि—‘हम गोहिक इशारा नहि लिखब।

अध्याय एहि ठाम ठहरैत अछि। चन्द्रपालक छाह देह खोजबाक रस्ता देलक। सी-कक्षसँ सी-१७ पेटी, मधुकरक रसीदसँ सी गोदाम, धरनी महतोक तेतरि घाट, आ कागचक रेशासँ नदीक अन्हार जुड़ि गेल।

छोट लोकगीत

खोलू हे रस्सी, तेतरि घाटक रस्सी खोलू हे,
प्रश्नक चप्पू, साँचक चप्पू—दुनू संग बोरू हे।

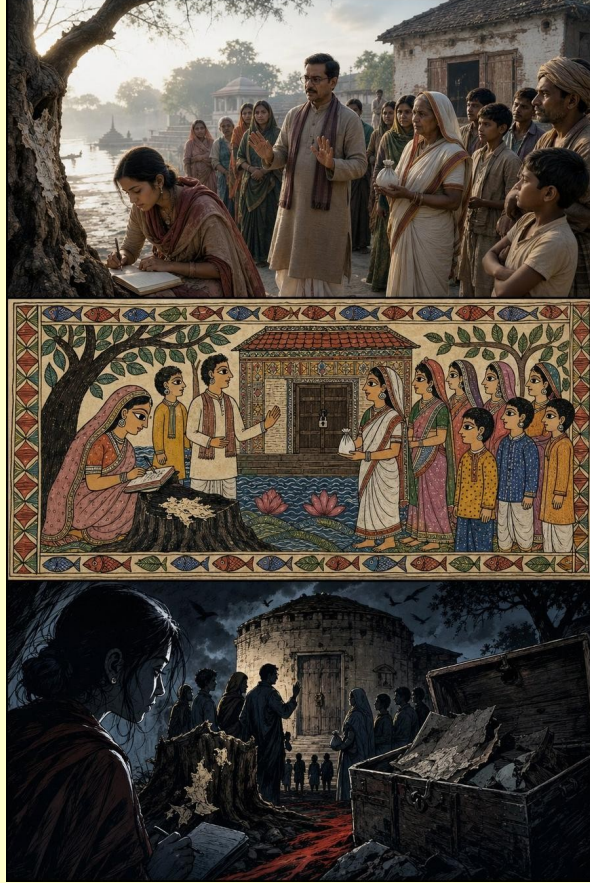
गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

तेतरि घाटपर भोर भेल, रस्सी खोलू नाव,
छाहक पाछाँ देह मिलत, धैर्यक राखू भाव ।

अध्याय १६६

इमली घाटक कोठार

कोठारमे रद्दी नहि— रोकल गेल डर सडैत रहै छै।



कोठी-बखारीमे रद्दी नहि— रोकल गेल डर सडैत रहै छै। धान जँ बरख भरि बन्द रहय तँ ओ केवल पुरान होइ छै। मुदा डर जँ बरख भरि बन्द रहय तँ ओ फूलि कऽ पेटी भरि जाइए, आ ओकर गन्ध ताला केँ चीरि कऽ बाहर आबि जाइए।

बूढ़ सभ कहै छै जे गामक कोठी-बखारी अन्नक लेल बनल छल, ने कागचक लेल। जे कोठार मे धान नै अछि आ ताला भारी अछि, ओहि कोठार सँ डेराइत रहू—किएक तँ ओतय जे राखल छै, से खाइ नै जाइ छै, ओ खा जाइ छै।

उजासमे घाट पर जएबाक निर्णय भऽ चुकल छल, आ भोरक उजास पूरा पसरल नहि छल, मुदा तेतरि घाट दिस जाय लेल गामक पाँत बनि गेल। राति भरि जे प्रश्न सभक भीतर काँटा जेकाँ अटकल रहल—पुरान कोठी-बखारीमे रद्दी अछि, मूल प्रति अछि, कि छाहक असली देह—से आइ धूपक सोझाँ राखल जाएत। चन्ना गाछीक टूँठ पर ओ महीन कागचक रेशा अखनहुँ अटकल छल।

बूढ़ मल्लाह आगाँ आयल। ओ गवाही देलक जे कोठी-बखारी पुरान मालिकक समयसँ खाली कहल जाइत छल, मुदा पछिला मास रातिमे दू बेर लालटेन देखल गेल। ‘नाव नहि लगल?’ मीरा पूछलथि।

ताला पंचायतक साक्षी, मल्लाह, भिखारी लाल, सत्यव्रत आ दू वृद्ध स्त्रीक उपस्थितिमे खोलल गेल। ताला खुजिते कोठी-बखारीक भीतरक गन्ध बाहर आयल—गील कागच, पुरान बोरा, दीमक, तेल, सस्ता सुगन्ध, आ बन्द हवा। कियो तुरन्त भीतर घुसय चाहलक, मुदा मीरा हाथ उठा रोकलथि।

मीरा कहलथि—‘केओ जयकार नहि करब। प्रमाण भेटल अछि, विजय नहि।’ ई सुनि भीड़ चुप भऽ गेल। अनन्या पेटीक चारू कातक दृश्य लिखली—पेटी जंग लागल, पर ताजा कपडाक पट्टीसँ बान्हल।

मेजक दराजमे एक छोट यन्त्र भेटल—आवाज रिकार्ड करबाक पुरान साधन। ओकर संग कागच पर वाक्य लिखल छल—‘अहाँक आधार दुरुपयोगमे भेटल’, ‘अहाँक खाता जाँचमे अछि’, ‘ककरो नहि कहू’, ‘कक्षमे जुडल रहू’। देविका पढ़िते काँपि उठली—‘ई तँ फोनक कैदक संवाद अछि।’ सत्यव्रत मेहता कहलनि—‘अभ्यास केवल हस्ताक्षरक नहि, आवाजक सेहो होइत छल।’

ओहि राति नदीक जल विचित्र ढंगसँ शान्त छल। गोहि देखाइ नहि पडल। बूढ़ मुक्किल कहलक—‘ओ पेट भरि सुति रहल अछि।’ सुरमणी देवी उत्तर देलीह—‘नहि, पेट फाटि रहल अछि।

अध्याय एहि ठाम समाप्त होइत अछि। तेतरि घाटक कोठी-बखारी रद्दी नहि, भय, कागच, आवाज आ मृत्युक तैयारीक गोदाम सिद्ध भेल। सी-१७ पेटी, पाँच लाल बही, आवाजक अभ्यास, बूढ़ लोकक परिस्थिति-सूची, आ ‘अगिला खेप: नदी पार’—ई सभ कथा केँ फेर धारक अन्हार दिस धकेलि रहल अछि।

छोट लोकगीत

खोलू हे बखारी, डर झाड़ि कऽ खोलू हे,
सइल चुप्पी बाहर, धानक गन्ध घोलू हे।
बखारी खोलू, डर नहि—धानक गन्ध भरू,
सइल चुप्पी बाहर फेकू, नव बीआ घर धरू।

अध्याय १६७

नदी पारक आवाज

आवाज नदी पार बनै छै, मुदा डूबै एहि पारक लोक छै।



आवाज नदी पार बनै छै, मुदा डूबै एहि पारक लोक छै। धार दुनू गाम केँ अलग करै छै, तँ लोक बुझै छै जे पार बला दूर छै। मुदा घण्टी केँ कोनो धार नै रोकै छै।

बूढ़ सभ कहै छै जे माय बेटाक स्वर आँखि मूनियो चिन्हि लै छै। मुदा स्वर नकलल जा सकै छै—लय, ठहराव, सुर, सभ। जे नकलल नै जा सकै छै, से साँस छिऐ।

नाव पर मीरा, सत्यव्रत, अनन्या, आरुणि, देविका, भिखारी लाल, सुरमणी देवी आ दू साक्षी बैसल। भीड़ घाट पर रहि गेल। लोकक

इच्छा छल संग चलबाक, मुदा मीरा कहलथि—‘सत्यक नाव पर भीड़ नहि, भरोसा चाही।’ चन्ना गाछीक ठूँठ दूरसँ ओझराइत गेल, मुदा ओकर छाह जल पर बहुत काल तैरैत रहल।

धार बीचमे पहुँचि नाव हलुक काँपल। ओही क्षण आरुणिक फोनमे अनचिन्ह नम्बरसँ फोन आयल। फोनक पर्दा पर नाम नहि छल, मुदा घण्टी एहन तेज लागल जेना नदीक भीतरसँ उठि रहल हो।

फोनक ओहि पारसँ आवाज आयल—‘अहाँक नाम जाँचमे अछि। एखने लाइन पर रहू।’ आवाज पुरुषक छल, मुदा ओकर लय अभ्यासक। ओ कानूनक शब्दक नकली वस्त्र पहिरने छल।

आरुणि पूछलक—‘कोन विभाग?’ उत्तर आयल—‘ऊपरक कार्यालय। बेसी प्रश्न करब तँ गिरफ्तारी।’ सत्यव्रत मेहता कागच पर जल्दी लिखलनि—‘प्रश्न पर धमकी: पद्धति।’ अनन्या समय टिपली। देविका फोनक वाक्यक्रम लिखय लगली।

आरुणि कहलक—‘हम नावमे छी।’ ओहि पारसँ तुरन्त उत्तर आयल—‘झूठ नहि बाजू। लोकेशन देखाइत अछि।’ भिखारी लाल नदीक जल दिस देखलक आ मुस्कुरा देलक—‘लोकेशन देखैत अछि, धार नहि।’ सत्यव्रत लिखलनि—‘तकनीकी भयक झूठ: सर्वज्ञता।’ अपराधी सर्वज्ञ बनि कऽ मनुष्यक विवेक चोरबैत अछि।

ओहि राति बूढ़बा भूत ठूँठ लग देखाइ देलनि, मुदा एहि बेर हुनकर मुँह नहि, कान चमकि रहल छल। कारी भूत दूर जलमे पाछाँ हटैत बुझायल। गोहि देखाइ नहि पड़ल, मुदा नदीक बीच फेन उठल।

अध्याय एहि ठाम समाप्त होइत अछि। तेतरि घाटक ‘नव ध्वनि सूची’ नदी पारक जनसेवा केन्द्र धरि पहुँचि गेल। आवाजक नकली कैद, बूढ़ लोकक परिस्थिति-सूची, परिवारक लयक चोरी, आ संस्थाक नकली धमकी—सभ एक जालमे आबि गेल।

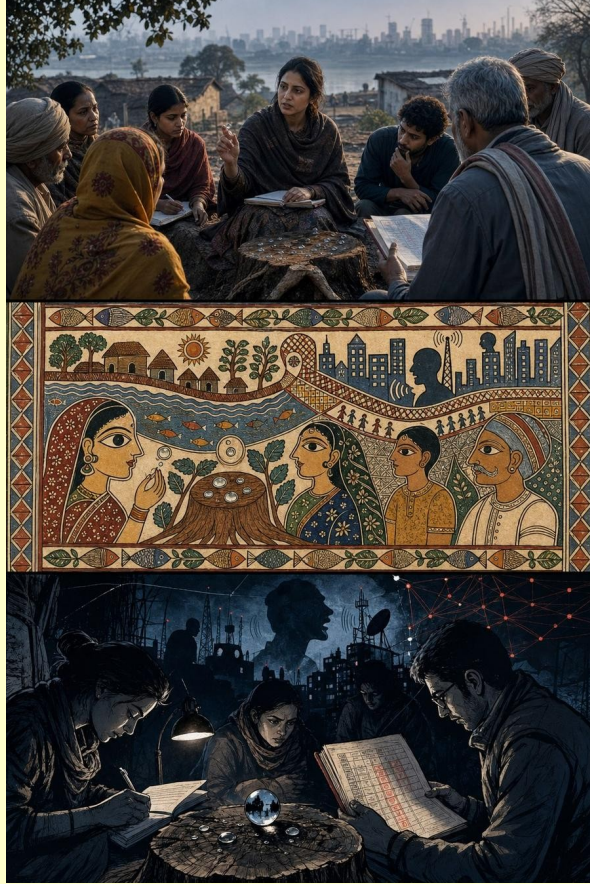
छोट लोकगीत

चिन्हू गे माय, असल तान चिन्हू गे,
लाखो नकलक बीच बौआक सुर गनू गे।
माय, तोहर कान चिन्हय बौआक असल तान,
नकल चाहे लाख करय, नेह बताबय प्राण।

अध्याय १६८

शहरक गला

शहरक गला पकड़ाइ छै, कंठ नहि— कंठ सदखन आरो ऊपर रहै छै।



बूढ़ सभ कहै छै जे कोनो गामक नाम अपने पएरे शहर नै जाइ छै। नाम कै कियो लऽ जाइ छै—कखनो फारम, कखनो रसीद, कखनो मुफ्तक स्कैन, कखनो ओ लोक जे मिटगर बाजि कऽ कहै छै जे 'सिस्टम साफ कऽ देब'। आ जहिया नाम एक बेर बाहर चलि गेलै, ओ फेर घुरि कऽ नै अबै छै।

शोर सभ सँ नीक परदा छिए। गाम मे एकटा फुसफुसाहटो सुनि लेल जाइ छै, आ शहर मे कियो चिकरै तँ ओकरो कियो नै सुनै

छै। तँ जकरा नुकाय के छै, से गाम मे नै, हॉर्न आ लाउडस्पीकरक बीच अपन कोठरी लै छै—भीड़ ओकर दरबाजा छिऐ।

ओहि दिन शहर जएबाक निश्चय भेल। शहर दूर नहि छल, मुदा गामक लोकक मोनमे शहर सदिखन एकटा अन्हार कोठरी जेकाँ रहल—जतय नाम कागजक गट्टर बनैत अछि, आवाज व्यापार बनैत अछि, आ लोक संख्या बनि जाइत अछि। मीरा केवल छोटा टोलीक लेल तैयार भेलीह—सत्यव्रत मेहता, अनन्या, आरुणि, देविका, नरेश, भिखारी लाल आ बूढ़ मुक्किल।

शहरक बस अड्डा पर उतरिते आवाजक बाढ़ि भेटल—हाक, हॉर्न, दोकान, फोनक धुन, लाउडस्पीकर, गारि, मोलभाव। ओ कहलक—‘एतय प्रत्येक आवाज ककरो आवाज केँ खा रहल अछि।’ सत्यव्रत मेहता उत्तर देलनि—‘एहि शोरमे नकली गला नुकाएब आसान अछि।’ अनन्या टिपली—‘शहर: शोरक परदा।’।

तकर बाद छोटा संघर्ष भेल। युवक कम्प्यूटर बन्द करय चाहलक। आरुणि फोनसँ फोनक पर्दाक तस्वीर नहि खींचलक।

भीतरक कम्प्यूटर पर खुजल एक पाँति पुलिसक सोझाँ देखाइ देलक—‘चन्द्र २: पुरान कागजक गट्टर सक्रिय।’ चन्द्रपालक पूरा नाम नहि छल, पर छाह फेर चमकल। फोनक पर्दाक नील उजास ओहि अन्हार कोठरीमे सभक मुँह पर पड़ल आ सभ एक क्षणक लेल एके रंगक भऽ गेल। आरुणि फुसफुसायल—‘छाह शहरक गलामे घुसल अछि।’ सत्यव्रत मेहता सावधान केलनि—‘चन्द्र २ चन्द्रपाल भऽ सकैत अछि, नहियो भऽ सकैत अछि।

जप्ती-प्रक्रिया शुरू भेल। नरेशक बयान लिखायल। बूढ़ मुक्किलक आवाज-चिन्हारि अलग दर्ज भेल।

ओहि राति नदीक कगार पर गोहि फेर देखाइ देलक। एहि बेर ओकर मुँह शहर दिस छल, पूछार गामक कादोमे। बीचक देह जलमे डूबल।

अध्याय एहि बोध पर समाप्त होइत अछि—शहरक गला पकड़ा गेल, मुदा ओकर असली कण्ठ एखन पूरा उजागर नहि। गामक नाम शहर धरि जनसेवा, बही, पेंशन, बैंक आ मुकदमाक रस्ता पहुँचल। शहर ओहि नाम केँ आवाजक डरमे बदललक।

छोटा लोकगीत

बाजू हे घण्टी, शहरमे गामक घण्टी बाजू हे,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

कच्चा दुआरक स्वरसँ पक्का भवन जगाउ हे ।

गामक नाम शहर पहुँचि घण्टी जकाँ बाजय,
पेंशन, बैंक, मुकदमा सभ साँचक बाट साजय ।

अध्याय १६९

चन्द्र दूक दरबज्जा

दरबज्जापर चपरासी पकड़ाइ छै।



बूढ़ सभ कहै छै जे नाम मे अंक जोड़ब सभ सँ पुरनका चालि छिए। चन्द्र एक, चन्द्र दू—अंक लगिते नाम आधा अपन आ आधा पराया भऽ जाइ छै। जँ पकड़ा गेलहुँ तँ कहि देब 'ई तँ गुप्त संकेत छल'।

आ सभ सँ पैघ चोरी पाइक नै, भरोसाक होइ छै। जकर नाम सुनि लोक दरबज्जा खोलै छल—काका, पण्डितजी, बाबू—ओहि नाम केँ उठा कऽ फोन मे लगा देब, ई ओहि गामक सभ सँ पुरनका पूँजी केँ लूटब छिए। भरोसा जे एक बेर लुटा गेलै, से बरखों धरि नै घुरै छै।

आरुणि पूछलक—‘ई चन्द्र २ चन्द्रपालक दोसर नाम भऽ सकैत अछि?’ मीरा उत्तर देलथि—‘भऽ सकैत अछि, मुदा जल्दी निष्कर्ष अपराधीक मदति करैत अछि। पहिने देखब—कागचमे चन्द्र कतय-कतय आयल, आवाजमे कतय आयल, बहीमे कतय आयल, आ डरमे कतय आयल।’

अनन्या एक कोनमे राखल पुरान लिखित हिसाब-कागजक गट्टर देखली। ओकर कवर पर लिखल छल—‘वृद्ध सहायता, जमीन विवाद, परदेशी पुत्र।’ ई तीन श्रेणी काल्हि पढल परिस्थिति-सूचीसँ हुबहु मिलैत छल। ओ धीरेसँ देविका केँ बजौली।

ओहि समय पछिला कोठरीसँ हलुक खसखसाहट सुनाइ देलक। आरुणि आ देविका भीतर गेलाह। ओतय एक पुरान स्कैनर, आवाज रिकार्ड करबाक यन्त्र, आ देवाल पर सटल पन्ना भेटल—‘अदालत अधिकारी स्वर’, ‘बैंक साँच जाँच स्वर’, ‘पुलिस चेतावनी स्वर’, ‘पुत्र संकट स्वर’।

एक पन्ना विशेष छल। शीर्षक—‘पुरान विश्वासक नाम प्रयोग’। नीचाँ लिखल—‘बटुक बाबू, पण्डितजी, चन्द्रपाल काका, अदालत बाबू।’ देविका ई पाँति देखिते स्तब्ध रहि गेलीह।

मीरा चन्द्रमोहनसँ पूछलथि—‘चन्द्रपाल काका के?’ चन्द्रमोहन पहिने हँसल—‘गामक पुरान लोक।’ फेर कहलक—‘सभ ओकरा जनैत छल।’ फेर चुप। सत्यव्रत कहलनि—‘जे लोकक नाम पर लोक दरबाजा खोलैत छल, ओकर नाम पर फोनमे डर बेचायल।’

राति गाढ भेल तखन नदी दिससँ गोहिक हलुक छपाक सुनाइ देलक। एहि बेर जलमे ओकर पूरा देह नहि, केवल आँखि चमकल। कारी भूत ओहि आँखि पर अन्हारक परत चढ़बय चाहैत छल, उज्जर प्रेत चन्ना गाछीक छाहसँ ओ परत हटबैत।

चन्द्र सेवा कार्यालयसँ पुरान भरोसा-सूची, भावनात्मक संकेत, संस्था-स्वर, आ चन्द्र १क छाह भेटल। यन्त्रपर चलयवला डरक बजार आब सोझे पुरान अदालत, जमीन-विवाद, पेंशन, परदेशी पुत्र आ चन्द्रपालक नाम धरि पहुँचि गेल।

छोट लोकगीत

धोउ गे बहिना, चानक दाग धोउ गे,
नकली चमक फेकि असल किरण जोहू गे।
चन्द्र दू हो वा दस हो, असल चान एक,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

काजरक दाग धोइ देत जनक जागल नेह ।

अध्याय १७०

चन्द्र एकक खोल

खोल उतारि लिअ तँ चन्द्र एक आ चन्द्र दू एक्कहि अन्हारक दू
फाँक ।



बूढ़ सभ कहै छै जे केओ केओ नाम अपन देह सँ पैघ भऽ जाइ
छै। ओहन नाम जीबियो कऽ ओतवे काज नै करै छै जतवे मरला
पर करै छै। किएक तँ जीवित लोक सँ प्रश्न कएल जा सकै छै, आ
नाम सँ नै।

पितृ-स्वर सभ सँ पुरनका ताला छिए। ‘बाबू’, ‘काका’,
‘पण्डितजी’, ‘अदालत’—ई शब्द सुनितहि गामक माथ अपने-
आप झुकि जाइ छै। ई झुकनाइ नीक बात रहै, जखन ओहि स्वरक
पाछाँ जिम्मेवारी रहै।

अन्हारक भीतर जे पहिल चन्द्र नुकाएल छल, तकर नाम सुनिते चन्द्र सेवा कार्यालयक भीड छँटल नहि, उनटे आर गाढ भऽ गेल। लोक सभ बुझि गेल जे जे लोक पकड़ायल अछि, ओ दरबाजाक चपरासी मात्र अछि। भीतरक कोठरी एखन बन्न अछि।

सत्यव्रत मेहता कहलनि—‘चन्द्र १ शायद लोकक नाम नहि, पुरान अधिकारक मुखौटा अछि।’ आरुणि तुरन्त प्रतिवाद केलक—‘तखन चन्द्रपालक नाम किएक?’ सत्यव्रत उत्तर देलनि—‘किएक तँ जे समाज पितृ-स्वर पर आँखि मूनि विश्वास करैत अछि, ओहि समाजमे चन्द्रपाल जेकाँ नाम चाबी बनि जाइत अछि। चाबी असली हो अथवा नकल, दरबाजा खुजि जाइत अछि।’

मीरा कहलथि—‘लिखनाइ जँ डर बेचय लागय, तँ ओ केवल लिखनाइ नहि रहैत अछि।’ मोहनलाल झा कान्ह उचकौलक—‘हमरा ककरो फोन करैत नहि देखब। हम स्क्रिप्ट बनवैत छी। ग्राहक अपन काम करैत अछि।’ सत्यव्रत टेबुल पर राखल पन्ना उठा लेलनि।

‘पुरान गाछी’ सुनिते सभक भीतर चन्ना गाछीक ढूँढ खडक उठल। मीरा बुझलीह—यन्त्रपर चलयवला अपराधक डोरि फेर गामक माटि, चन्ना गाछी, अदालतक बरामदा आ लिखित हिसाब-धर धरि घुरि रहल अछि। चन्द्र १क खोल खुजल, मुदा खोलक भीतर एक आर सुरंग निकलल।

सुरमणी देवी चन्ना गाछी लग कहलीह—‘जे मन्त्र बुझल भऽ जाय, ओकर डर आधा मरि जाइत अछि।’ बच्चा सभ एहि वाक्य केँ लाल सूतसँ बाँधि ढूँढ पर टाँगलक। एहि बेर ढूँढ पर नाम नहि, चेतावनी टाँगल गेल—‘फोन पर डर भेटय तँ अकेला नहि सहू। नामक पहरुआ केँ बजाउ।’

नदी दिससँ गोहि उठल। ओकर आँखिमे फोनक पर्दाक हरियर चमक छल, मुदा देह पर पुरान कादो। ओ एक बेर चन्द्रमाक प्रतिबिम्ब काटि गेल।

एहि ठाम यन्त्रपर चलयवला डरक पहिल पैघ वृत्त बन्द होइत अछि। चन्द्र २ कार्यालय छल, चन्द्र १ आवाजक मुखौटा। मोहनलाल झाक कमरा, पुरान भाषणक नमूना, पिता-अधिकारीक पेन-ड्राइव, आ मधुकर बाबूक छाह देखेलक जे अपराध केवल फोन पर नहि, समाजक अन्ध-विश्वास पर चलैत अछि।

छोट लोकगीत

उगू हे चान, असल चान उगू हे,
कागचक नकली चान भोरक संग मेटू हे।
कागचक नकली चान उतरि जाय राति,
आँगनक असल चन्द्रमा देत नब सौगाति।

अध्याय १७१

चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत

अदृश्य अदालतक कोनो मुहर नहि— ओतय भय उतारल जाइ
छै, शपथ नहि।



बूढ़ सभ कहै छै जे कोनो गाम मे दू अदालत होइ छै—एक जकर
देवाल छै, आ एक जकर केवल कान छै। पहिल मे तारीख पड़ै छै।
दोसर मे बात पड़ै छै।

आ डर केँ नापबाक एक्के तरीका छै—ओकरा बाजि देब। जाधरि
डर भीतर रहै छै, ओ अपन नाप अपने बढ़वैत रहै छै। मुदा जखन
ओ दस कान लग बाजल जाइ छै, तखन पहिल बेर ओकर सीमा
देखाइ पड़ै छै।

अनन्या ठूँठक जडि लग लाल सूतक घेरा बनौली। ओकर भीतर कोनो कुर्सी नहि, कोनो ऊँच आसन नहि। केवल तीन पाथर राखल गेल—पहिल पाथर 'नाम'क, दोसर 'डर'क, तेसर 'गवाही'क।

सत्यव्रत मेहता दूर बैसल रहलाह। ओ कागच नहि बाँटलनि, मोहर नहि लगौलनि। काल्हि धरि अदालतक भाषा हुनका भीतर भारी छल।

ई सुनि आरुणि सभ युवक दिस देखलक। 'यन्त्रपर चलयवला अरेस्ट केवल अपराधीक चाल नहि, परिवारक दूरीक दरारो अछि,' ओ कहलक। कतेको युवक अपन फोन नीचाँ कऽ लेलक।

मीरा सभकेँ संकेत देलथि जे कोनो चित्र खींचयवला यन्त्र नहि, कोनो फुसफुसाहट नहि। ओहि स्त्रीक नामक जगह बच्चा सभ लिखलक—'देहरी पर दबाव।' देविका धीरे कहलथि—'कतेको स्त्रीक अपराधक लिखित हिसाबमे नाम नहि, केवल अंगूठा रहैत अछि। असलमे ओ अंगूठा दबावक छाप होइत अछि।'।

अनन्या तीन रंगक धागा बाँटली। कारी—डर अथवा चिन्ह देखि बुझल बात। जकर जे गवाही छल, ओ ताहि रंगक गिटुऽ ठूँठ पर बाँधलक।

दूर जलमे गोहि स्थिर छल। ओकरा आव भूख लागल छल कि डर, ई बुझल नहि गेल। चन्ना गाछीक ठूँठ पर गवाहीक धागा देखैत ओकर आँखि मद्धिम पडल।

एहि अदृश्य अदालतक पहिल दिन समाप्त होइत अछि। लोक सभ अपन-अपन भयक गिटुऽ बाँधि गेल, मुदा मधुकर बाबूक छाह आव स्पष्ट दिशामे बढ़ि रहल छल।

छोट लोकगीत

उतारू हे गठरी, भयक गठरी उतारू हे,
गाछी तरक घेरामे साहस पहिरू हे।
गाछी तरे आसन बिछल, भयक गठरी खोलू,
एक-एक गाँठि उतारि सभ अपन साँच बाजू।

अध्याय १७२ गाँठक पढ़नाइ

भय बाहर निकलि गेलापर ओकर गाँठ पढ़बाक बारी अबै छै— आ
गाँठ सदिखन तीन रंगक।



बूढ़ सभ कहै छै जे गिट्टुऽ खोलवाक एक्के नियम छै—झटका नै।
धागा जँ झटका सँ खींचल गेलै, गाँठ आर कसि जाइ छै। आ जँ
लोकक भय पर झटका मारल गेलै, ओ फेर भीतर चलि जाइए, आ
दोसर बेर ओ बाहर नै अबै छै।

लाल, पीयर आ कारी—ई केवल रंग नै, तीन अलग-अलग दूरी
छिऐ। लाल माने हमर आँखि आ घटनाक बीच कोनो दूरी नै।
पीयर माने बीच मे केओ आर ठाढ़ अछि—कहनिहार।

पीयर गिट्टऽ सभ बेसी छल। कियो कहने छल जे मधुकर बाबू सर्वे करय आयल छलाह। कियो कहने छल जे हुनका संग चन्द्रपालक लोक छल।

लोक सभ पहिने झुँझला उठल। हुनका लगल जे प्रश्नसँ गवाही कमजोर होएत। मुदा सत्यव्रत बुझौलनि—‘प्रश्न अविश्वास नहि। देविका नेनाक माथ पर हाथ राखि कहलथि—‘ई कारी सेहो, लाल सेहो। कारी—किएक तँ डर अछि। लाल—किएक तँ तोहर देह आइ एतय देखाइ रहल अछि।’ मीरा जोड़लीह—‘अदृश्य अदालत केवल ठगीक नहि।

मीरा तुरन्त पंजी केँ हाथ नहि लगौलथि। ओ कहलथि—‘पहिने एहि पन्नाक प्रतिलिपि बनत, मूल सुरक्षित रहत, आ रामकेवल जीक कथन अलग लिखल जाएत। लाल सूत्रक अर्थ ई नहि जे निष्कर्ष समाप्त।

अनन्या लाल धागाक एक नब गिट्टऽ टूँठ पर बाँधली। ई गिट्टऽ पहिनका सभसँ भारी छल। हवामे झूलिते ओकर छाह कारी आ पीयर धागा पर पड़ल।

सत्यव्रत मेहता राति अपन नोटमे लिखलनि—‘गवाही जखन रंग पबैत अछि, तखन भीड़ लिखित हिसाब बनैत अछि। लाल सत्यक आरम्भ, पीयर स्मृतिक बाट, कारी भयक खदान। एहि तीनूक बिनु न्याय अधूरा।

ई खेरहा एहि गिट्टऽ-पढ़नाइ पर समाप्त होइत अछि। अदृश्य अदालत आब भावनासँ पद्धति दिस बढ़ल। मधुकर मिश्रक पहिल लिखित सूत्र भेटि गेल, मुदा ओ सूत्र संगहि एक नब खतरा सेहो जन्मौलक—जकर नाम पन्ना पर आबि गेल, ओ पन्ना गुम करबाक प्रयत्न अवश्य करत।

छोट लोकगीत

बान्हू हे धागा, तीन रंगक धागा बान्हू हे,
लाल-पीयर-हरियरकेँ एक मूलमे सान्हू हे।
लाल धागा साहसक, पीयर स्मृतिक फूल,
हरियर आशा बाँधि देत तीनूकेँ एक मूल।

अध्याय १७३

पंजीक पहरा

पंजी पन्द्रह बरख चुप रहल, मुदा हस्ताक्षर एक्को दिन नहि सुतल।



बूढ़ सभ कहै छै जे सभ सँ खतरनाक सूची ओ नै जकरा पर ‘दण्ड’ लिखल रहै छै। सभ सँ खतरनाक सूची ओ जकरा पर ‘सहायता’ लिखल रहै छै। किएक तँ दण्डक सूची लोक लुकबै छै आ सहायताक सूची लोक अपने हाथ सँ बनबै छै—अपन विधवा, अपन बूढ़, अपन परदेशी बेटा, अपन लटकल मुकदमा, सभ अपने लिखा दै छै।

‘विशेष ध्यान’—एहि दू शब्द केँ ध्यान सँ सुनू। दफ्तर मे एकर माने होइ छै जे एहि घर पर बेसी ध्यान दिअ। मुदा जखन ई शब्द

दफ्तर सँ बाहर निकलि बजार मे पहुँचै छै, तखन एकर माने भऽ जाइ छै—एहि घर पर बेसी सोझ हाथ लागत।

पंजीक रक्षाक बारी आवि गेल छल—आ भोर होइतहि चन्ना गाछीक टूट लग सभसँ पहिने अनन्या पहुँचली। राति भरि ओ पंजीक छाहसँ लडैत रहल छली। पन्द्रह बरख पुरान पन्ना पर मधुकर मिश्रक हस्ताक्षर मात्र नाम नहि छल।

देविका फोनसँ तस्वीर लेबाक मञ्जूरी मँगलथि, मुदा रामकेवल हिचकिचेलाह। हुनका डर छलनि जे तस्वीर कियो बिगाड़ि नहि देत, कि कागचक नाम बाहर गेल तँ हुनकर पोता पर दबाव नहि पड़त। आरुणि तुरन्त कहलक—‘एकर तीन प्रतिलिपि बनत।

रामकेवल मूल पंजी अपन घर लऽ जाएबाक आग्रह करैत रहलाह, मुदा सभ मानल जे मूल आइ राति अकेला नहि रहत। अन्तमे निर्णय भेल—मूल पंजी मीरा आ रामकेवलक संग देविकाक घरक भीतरी कोठरीमे। पहिल प्रतिलिपि सत्यव्रत मेहताक सीलबन्द लिफाफामे।

साँझ पड़िते पहरा बँटल। फुलेसर आ दूटा नेना देविकाक आँगन लग रहत, मुदा मीरा हुनका सभकेँ भीतर नहि, बाहरक खेलक नाम पर राखलीह ताकि भयक बोझ बालक पर नहि पड़य। भिखारी लाल रातिक पहिल पहर मेहताक घर लग।

भिखारी लाल दूरसँ दौडल। आरुणि आ अनन्या नीलमणिक घरसँ लालटेन लऽ कऽ निकलल। छाह भागि गेल, मुदा पछिला देवाल लग एक कागच छोड़ि गेल—बिनु नामक पर्ची।

मीरा पर्ची केँ पंजीक संग नहि राखलीह। ओ अलग लिफाफामे सील करौलथि। ‘धमकी प्रमाणक शत्रु नहि, प्रमाणक छाह अछि,’ ओ कहलथि।

भोर होइत-होइत पंजी बचि गेल। मूल पन्ना सुरक्षित, प्रतिलिपि सुरक्षित, पर्ची सुरक्षित, पहरुआ सभ थाकल मुदा सोझ। भोरक पहिल इजोत जखन कोठरीक झरोखासँ पन्ना पर खसल, तखन पन्द्रह बरख पुरान अक्षर सभ एहन चमकल जेना ओ आइ राति लिखल गेल हो।

छोट लोकगीत

जागू हे बीया, पन्द्रह बरखक बीया जागू हे,
फागुनक पुरबा पावि छिलका त्यागू हे।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

पन्द्रह बरख माटि तरे बीज चुपचाप रहल,
ऋतु-ऋतु ओस पिबैत भीतर जीवन पलल ।

अध्याय १७४

अदृश्य अदालतक चौखट

अदालतक चौखट पाथरक नहि— घेरा-भरिक साहसक होइ छै।



बूढ़ सभ कहै छै जे लोक ओहि ठाम अपने-आप जूता खोलि दै छै जतय ओकर बात सुनल जाइ छै। मन्दिर मे लोक जूता किएक खोलै छै? किएक तँ ओतय ओ मानै छै जे केओ सुनै छै।

आ 'अनुपस्थित' केँ बुझू। कागच पर लिखल जाइ छै 'वादी अनुपस्थित', आ ओहि दिन वादी भोरे-भोर, बिनु कलेवा, तीन कोस पाएरे चलि कऽ बरामदा मे ठाढ़ रहै छै। तखन अनुपस्थित के भेल?

बूढ़वा भूत ठूँठक चिरा लग झिलमिलेलाह। ई झिलमिलाहट डरक नहि, स्वीकृतिक छल। कारी भूत दू पग पाछाँ हटि गेलाह, उज्जर प्रेत अपन आँगुरसँ हवा पर किछु लिखलनि।

देविका एहि गवाहीक पाछाँ ‘आवाजक नकली मोहर’ लिखली। चन्द्रपालक पुरान कागजी छल आ यन्त्रपर चलयवला ठगक नकली आवाज एक-दोसरासँ अलग नहि लगल। दुनू मनुष्यक डर पढ़ैत छल।

नोटबुक पाथर पर पड़िते भीड़मे हलचल भेल। ई पहिल दस्तावेज छल जे अपराधक भीतरसँ बाहर आबि रहल छल। कियो ओकरा छीनय नहि बढ़ल।

सत्यव्रत मेहता पहिल बेर ओकरा उत्तर देलखिन—‘कानूनी मूल्य बादमे देखब। एखन मनुष्यता मूल्य गनैत अछि।’ ई उत्तर छोट छल, मुदा ओहि छोट उत्तरमे बरखोंक थकान आ नब दृढ़ता छल। लोक किछु कहय चाहलक, पर भीड़मे कियो ओकरा गारि नहि देलक, कियो धक्का नहि देलक।

मीरा ओहि लोकसँ पूछलनि—‘अहाँक नाम?’ लोक चुप। देविका कहलथि—‘देखू, जे लोक दोसराक गवाहीक मूल्य पूछैत अछि, ओ अपन नाम कहबाक साहस नहि करैत।’ भीड़मे धीमा स्वर उठल, मुदा मीरा हाथ उठा कऽ सभकेँ रोकलनि। ओ लिखलनि—‘अनाम आपत्ति—मोहरक भरोसा, मनुष्यक अविश्वास।’ लोकक मुँह उतरि गेल।

राति उतरैत-उतरैत ठूँठक भीतरसँ नमीक गन्ध उठल। कियो कहलक जे जड़ि फेर जीवित भऽ रहल अछि। कियो कहलक जे ई केवल रातिक ओस अछि।

आ ओहि राति, जे नोटबुक लिपिक रामबल्लभ पाथर पर राखि गेल छल, तकर पहिल पन्ना हवासँ खुजल। पन्ना पर लिखल नाम सभमे एक नाम एहन छल जकरा सुनिते सभ पुरान अपराधक साँस अटकय वाली छल—बटुकनाथ हरिहरनक वास्तविक मोहरबाहक। अदृश्य अदालत आब केवल पीड़ितक कथा नहि सुनत।

छोट लोकगीत

जराउ हे दीप, नामक पाथर पर जराउ हे,
कठोर शिलाकेँ नरम जोतिसँ मनाउ हे।
पाथर कठोर सही, दीपक जोति नरम,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

नरम उजासे पढ़ि सकय बरखोंक दबल करम ।

अध्याय १७५

मुहरबाहकक नाम

ओस पड़ितो पाथरक अक्षर नहि धुँधलाएल— नामकें नमी नहि,
बिसरब मेटबै छै।



रामबल्लभक नोटबुकसँ उठल दीनबंधुक नाम अकेला लोकक नाम नै छै। ओकर संग थैली, लाल मोम, पीतलक मोहर आ खाली कागचक सरसराहट चलि आबै छै। मोहरबाहक कहब सुनबामे छोट काज बुझाई छै, मुदा विश्वासक दरबाजा ओही हाथसँ खुलै-बन्द होइ छै।

पिताक नाम सुनिते पुत्रक भीतर लाज जागै छै, मुदा लाज जँ सत्यकें ढाकि दए तँ अन्हार वंश बनि जाइए। शशिभूषणक असल

परीक्षा ई नै छै जे ओ बाबूकें निर्दोष सिद्ध करए। परीक्षा ई छै जे ओ बाबूक बचल वस्तु सभकें जाँचक सोझाँ राखए।

“अन्तिम सूची” अन्तक पन्ना नै, अगिला अन्हारक दरबाजा छै। सूचीमे नाम पढ़ल जाइए, माला चढ़ाइ जाइए, सेवा कहल जाइए। मुदा ओहि उजासक पाछाँ ककर जमीन, ककर श्रम, ककर देह आ ककर मौन बन्धक पड़ल, से खोजब बाकी रहै छै।

रामबल्लभक नोटबुकमे राति खुलल ओ नाम भोर धरि सभक मोनमे अटक रहल। भोरक उजास चन्ना गाछीक टूँठ पर पड़ल तँ नामक पाथरक हलुक चमक गायब नहि भेल। राति भरि ओस पड़ल छल, मुदा पाथर पर लिखल अक्षर धुँधला नहि भेल।

अनन्या नाम पढ़िते ठिठकि गेली। ‘दीनबंधु झा?’ ओ नाम गामक बूढ़ लोकक स्मृतिमे छल, मुदा एखन धरि कियो ओकरा अपराधक बीच नहि रखने छल। लोक कहैत छल—दीनबंधु बस कागच पहुँचबैत, मोहर लगबैत, रसीद काटैत।

अनन्या नामक बहीमे नव पन्ना खोलली। ऊपर लिखली—‘मोहरबाहकक भूमिका।’ नीचाँ तीन पाँति छोड़ली—‘देखल’, ‘सुनेल’, ‘जाँचल’। ओ सभकें कहली जे कियो जेना-तेना कथा नहि जोड़त।

शशिभूषण डायरी खोललक। पन्ना सभमे तारीख छल, नाम छल, आ किछु संकेत—‘लाल’, ‘कारी’, ‘तीन प्रति’, ‘राति’, ‘बी. ह.’, ‘च. पा.’। अनन्या तुरन्त रोकली—‘संकेतकें तुरन्त नाम नहि बनाउ।’ मुदा भीड़मे चन्द्रपालक नाम फुसफुसायल।

चन्ना गाछीक टूँठ पर ओहि राति उज्जर प्रेत दीर्घ समय धरि स्थिर रहल। कारी भूत ओकर चारूकात घुमैत रहल, जेना कहि रहल हो—मोहरक खेल आब शुरू भेल। दूर नदीमे गोहि एक बेर पानि तोड़ि ऊपर आयल, फेर तुरन्त डूबि गेल।

आ भोरसँ पहिने दीनबंधुक डायरीक एक पन्ना हवा सँ खुलल। ओहि पन्ना पर केवल दू शब्द साफ छल—‘अन्तिम सूची’। ओकरा नीचाँ तारीख ओही सप्ताहक छल जखन बटुकनाथ हरिहरनक सेवा-समारोहमे गामक सभ गरीब परिवारक नाम मंच पर पढ़ल गेल छल।

छोट लोकगीत

भरू हे साँस, सूचीक पाँतिमे भरू हे,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

आँकड़ाक पाछाँ बाबाक दिन-रैन धरू हे ।
सूची केवल पाँति नहि, बाबाक पूरा दिन,
हथौड़ा, पसेना, हँसी, घरक आशाक चिह्न ।

अध्याय १७६

सेवा-समारोहक अन्हार

अन्तिम सूची सभसँ छोट पन्नापर लिखल जाइ छै, आ सभसँ पैघ छाया पसारै छै।



अन्तिम सूची सभसँ छोट पन्नापर लिखल जाइ छै, आ सभसँ पैघ छाया पसारै छै। छोट पन्नामे नाम समा जाइए, मुदा नामक पाछाँक देह, खेत, पसेना, नेनीक भूख आ बूढ़ माय-बाबूक आस नहि समाइ छै। सूची बनौनिहारकें ई सुविधा रहै छै जे लोककें एक पाँतिमे घटा दए, फेर ओही पाँतिक कातमे “लाभ”, “विशेष” वा “रोकू” लिखि ओकर जीवनक दिशा बदलि दए।

मंचक इजोत सदिखन अन्हारक शत्रु नहि होइ छै। बेसीकाल अन्हार ओही इजोतक कपड़ा पहिरि अबै छै। माला, भजन, दीप, सभक सामने कहल बात—सभ लोकक आँखि ऊपर रखै छै, जाहिसँ मेजक नीचाँ बदलैत पन्ना ककरो नहि देखाइ।

स्त्री-पाँति अलग कएल जाइए, कारण ठगनिहार बुझै छै जे लाज, जल्दी आ सहायता-कामना एक संग राखल जाए तँ प्रश्न घटि जाइ छै। “नाम पुकारल जाए तँ हाथ उठाउ, तस्वीर खिंचाउ, अँगूठा लगाउ”—एतेक छोट आदेशमे देह, जमीन आ मञ्जूरीक अर्थ बदलि सकै छै। जकरा पढ़बाक समय नहि देल गेल, ओकर अँगूठा स्वेच्छा नै कहल जा सकै छै।

‘पृष्ठ बदलल जाइत छल?’ आरुणि तुरन्त पूछलक। रामबल्लभ चौकि गेलाह। हुनकर मुँहसँ निकलल वाक्य आब प्रमाणक दरबाजा बनि गेल छल।

चन्द्रपालक नाम सुनिते भीड़मे फुसफुसाहट उठल। मीरा कठोर भऽ कहली—‘नाम सुनल गेल, आरोप एखन नहि। जे देखल गेल, ओहिपर टिकू।’ बच्चा सभ बहीमे लिखलक—‘सेवा-समारोहसँ पहिने अस्थायी मेज।

मीरा एहि गवाहीकेँ विशेष पन्नामे लिखली। ‘स्त्री-पाँति अलग। कागच नहि देल।’ ओ बच्चा सभकेँ बुझौली—‘जतय स्त्रीक हस्ताक्षर बिनु पढ़ने लेल जाए, ओतय दान नहि, कब्जाक बाट खुलैत अछि।’ एहि वाक्यपर अनन्याक आँखि चमकल।

सत्यव्रत मेहता नमहर साँस लेलनि। ‘बी. ह. के अछि, एखन निर्णायक नहि,’ ओ कहलनि, ‘मुदा मूल बदलबाक निर्देश अपराधक ढाँचा देखबैत अछि।’ आरुणि जोड़लक—‘अर्थात् लोकक सोझाँ जे कागच पढ़ल गेल, बादमे ओकर मूल बदलल गेल हो सकैत अछि।’ अनन्या लिखलक—‘सार्वजनिक वाचन आ निजी लिखित हिसाब।’ ई नव शीर्षक भविष्यक जाँचक केन्द्र बनि गेल।

रातिक अन्तिम पहरमे सत्यव्रत मेहता चन्ना गाछीक टूँटसँ सटल पुरान जड़ि छूएलनि। हुनका लगल, जड़िक भीतरसँ कागचक खडखडाहट आवि रहल अछि। ओ आँखि बन्द कऽ सुनलनि।

अदृश्य अदालत ओहि राति कोनो फैसला नहि देलक। मुदा सेवा-समारोहक चादर, दीनबंधुक पर्ची, स्त्री-पाँतिक गवाही आ ‘मूल बदलू’क शब्द सभ मिलि कऽ एतेक भारी भऽ गेल जे टूँटक छाह

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

धरतीपर दबि गेल। भोरसँ पहिने हवा एक बेर डायरीक पन्ना पलटलक।

छोट लोकगीत

धरू हे दीप, कारी चादर पर धरू हे,
अन्हारक आसनकें इजोतसँ भरू हे।
कारी चादर बिछल सही, ओहिपर दीप धरू,
नाम पढ़ू आदरसँ, मंचकें साँचसँ भरू।

अध्याय १७७

घर-घरक कागज

अदालत जहिया घर-घर चलए लागए, तहिया बुझू— न्यायकें
पएर भेटि गेल।



देहरी सत्यक पहिल मर्यादा छै। भीतरक पेटी खोलब सरल छै,
मुदा बिना मञ्जूरी खोलल पेटीमे भेटल प्रमाणो अन्यायसँ दागल
रहै छै। जे लोक बरखों धरि कागचक नामपर ठगल गेल, ओकर
अपन निजी बातक अधिकार फेर लूटि सत्य खोजल नहि जा सकै
छै।

नाम, नाम कतेक रूप धारण करै छै। मंचपर एक, पदकपर दोसर,
पंजीमे तेसर, बन्धक-पत्रमे चारिम—आ बीचमे एके मनुष्य चार

टुकड़ामे बँटि जाइए। नामक अक्षर बिगड़ै तँ केवल उच्चारण नहि, जमीनक बाटो बिगड़ै छै।

पछिला राति “अन्तिम सूची”क पन्ना जे घर-घर चलबाक आदेश बनि खुलल छल, भोर होइतहि ओ आदेश पएर बनि गेल। भोरक पहिल उजास चन्ना गाछीक टूँटपर पड़ल, तखन अदृश्य अदालतक घेरा पहिल बेर स्थिर नहि रहल। ओहि दिन अदालत गाछीक जड़िपर नहि बैसबाक छल।

अनन्या बच्चा सभकेँ तीन टोलीमे बाँटली। पहिल टोली नाम पढ़त, दोसर घरक कागच देखत, तेसर सुनल गवाही लिखत। नियम साफ छल—ककरो संदूक, पेटी, आलमारी, थैली वा बक्सा बिनु मञ्जूरी नहि खोलल जाएत।

सत्यव्रत मेहता रागिनी देवीक वाक्य सुनि स्तब्ध भऽ गेलाह। ई साधारण स्त्री न्यायशास्त्रक गहिर बात कहि देलीह—दोष आ डरक अलग-अलग लेखा। ओ कहलनि—‘हम एहि पन्नाकेँ तुरन्त सीलबन्द करब।

पोस्टरक नीचाँ छोट अक्षरमे छपल छल—‘सम्पूर्ण लिखित हिसाब आयोजन समितिक पास सुरक्षित रहत।’ आरुणि एहि पाँतिपर अँगुरी राखलक। ‘एहि बहाने घरक कागच हुनका लग गेल।’ ललित धीरेसँ स्वीकार कएलक—‘हम सभ घर-घर जा कऽ कहैत रही—कागच समिति लग सुरक्षित रहत। गरीब लोकक कागच घरमे नष्ट भऽ जाइत।’ मीरा पूछली—‘के कहल?’ ललित पहिने चुप रहल, फेर धीरे कहलक—‘चन्द्रपाल।’

चन्द्रपालक नाम फेर आयल। एहि बेर नामक संग प्रक्रिया छल—घर-घर संग्रह, प्रतिलिपि नहि देनाइ, समितिक सुरक्षित लिखित हिसाब। सत्यव्रत मेहता कहलनि—‘अपराध व्यक्ति मात्र नहि, पद्धति बनि रहल अछि।’ बच्चा सभ ई वाक्य अलग लिखलक।

अदृश्य अदालत ओहि दिनो फैसला नहि देलक, मुदा मार्ग बता देलक। घर-घरक कागच सभ फेर मालिकक हाथमे वापस कएल गेल। केवल छवि, विवरण आ मञ्जूरी-युक्त प्रति राखल गेल।

अन्तिम पहरमे रागिनी देवीक पन्ना, ललितक पोस्टरक पाँति, चमरूक चार नाम आ शान्तिक ‘सहायता कहल, मञ्जूरी लिखल’—ई चार वस्तु चादरक ऊपर राखल गेल। कारी भूत ओहि घेरापर झुकल, उज्जर प्रेत इजोत देलक, आ दूर नदीमे गोहि बिनु

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

आवाज पानि काटि गेल। ओहि मौनमे अनन्या बहीक नव पन्ना
खोललक।

छोट लोकगीत

लगाउ हे छातीसँ, कागच छातीसँ लगाउ हे,
मुदा असगर नहि—देहरी-देहरी जन जुटाउ हे।
कागच छातीसँ लगाउ, मुदा असगर नहि चलू,
देहरी-देहरी लोक जुटाउ, साँचक माला गुँथू।

अध्याय १७८ ऊपरक कोठरी

ऊपरक कोठरीक फुसफुसाहट सूखल पातक आगि थीक— एक चिनगीमे गाम भरि।



सीढ़ी न्यायकें ऊपर नहि, भीतर लऽ जाइए। प्रत्येक पायदानपर पएरक भारसँ अधिक बरखोंक चुप्पी टिकायल रहै छै। चूना झरै, मकड़जाल काँपै, साँस तेज होइ।

धूलि, धूलि दोष नहि, बिसरनक पातर चादर छै। मुदा जखन कियो जानि-बुझि धूलि जमए दै छै, खिड़की बन्द राखै छै, सूची बाहर रखै छै, तखन धूलि प्रमाणक पहरुआ बनि जाइए। ओकर गन्धमे नमी, तेल, लोहा आ पुरान स्याही मिलल रहै छै।

मीरा बच्चा सभकेँ आगाँहि सावधान कऽ देली—‘कोठरी खोलब, मुदा कोठरी लूटब नहि। जे भेटत, ओकर सूची बनत। जे मालिक चिन्हाएत, ओकरा सूचना देल जाएत।

अदालतक पुरान सीढ़ीपर जखन टोली चढ़ल, पाथरक प्रत्येक सीढ़ी साँस लैत बुझाईत छल। देवालपर चूना झरि रहल छल। एक कोनमे मकड़जाल एतेक घन छल जेना कोनो पुरान वकीलक तर्क हावामे अटक कऽ जाल बनि गेल हो।

दरबाजाक बाहर तीन पुरान मोहरक निशान छल—एक न्यायालयक, एक तहसीलक, आ तेसर ककरो निजी सेवा-समितिक। निजी मोहर सरकारी मोहरक कातमे देखिते मीरा ठमकि गेली। ‘एहि दरबाजापर सेवा-समिति किएक?’ कियो उत्तर नहि देलक।

रामबल्लभ लिपिक कुर्सी पकड़ि बैसि गेल। ओकर चेहरा उजड़ि गेल छल। ‘ई कागज लिखित हिसाब-घरमे किएक नहि?’ सत्यव्रत मेहता पूछलनि।

उज्जर प्रेत रैकक ऊपरक धूलिपर हाथ फेरलक। धूलिमे एक छाप उभरल—‘ऊपर भेजू’। ई शब्द शायद ककरो पुरान नोटक दबावसँ धूलिमे बचल छल।

राति फेर चन्ना गाछी लग घेरा बनल। बीचमे कोठरीक धूलि भरल एक छोटका कपडा राखल गेल—प्रमाण नहि, स्मरण। धूलिसँग सीलनक हलुक गन्धो घेरामे पसरल रहल।

अन्तमे सत्यव्रत मेहता कहलनि—‘ऊपरक कोठरी खुलल, मुदा आब ऊपरक रास्ता खोलबाक अछि—तहसील, बैंक, बही, शहरक दफ्तर।’ बच्चा सभ बहीक अगिला पन्ना खोललक। शीर्षक लिखल गेल—‘मोहरक रास्ता’।

छोट लोकगीत

चढ़ हे सीढ़ी, ऊपरक कोठरी चढ़ हे,
एक झाड़ू, एक खिड़कीसँ भोर गढ़ हे।
ऊपरक कोठरी धूलि भरल, सुरुज बाट जोहै,
एक झाड़ू, एक खिड़कीसँ अन्हार बाहर होए।

अध्याय १७९

मुहरक पगचिन्ह

मुहरक पगचिन्ह स्याहीसँ नहि सूखैत— ओ रस्ता देखबैत रहै छै।



पग, पग केवल पएरक चिन्ह नै, एक ठामसँ दोसर ठाम धरि गेल भरोसाक हिसाब छै। गामक मंचपर चादर चढ़ल, तहसीलक बहीमे अधिकार उतरि गेल, शहरक लिखित हिसाबमे तस्वीर अटकल गेल, बैंकक खाता धनकें तीन बाटमे बाँटि देलक। प्रत्येक डेग अलग देखला पर छोट बुझाई छै।

मोहर अबोध बच्चा जकाँ छै—जेम्हर हाथ लऽ जाए, ओम्हर चलि जाइए। दोष रखमे नै, ओहि उँगरीमे छै जे पढ़ने बिना दबै छै, भरोसा बेचि कऽ दबै छै, वा डरक कारण चुप रहै छै। सरकारी

छाप आ सेवाक छाप जखन एके दरबाजापर कात-कात पड़ै, तखन लोकक आँखि भ्रमित होइ छै।

ऊपरक कोठरी फेर पंच-साक्षीमे सीलबन्द भेल, मुदा ओकर भीतरसँ निकलल मोहरक बाट बन्द नहि भेल। राति चन्ना गाछीक नीचाँ जाहि पन्नापर 'मोहरक रास्ता' लिखल गेल छल, ओकर स्याही भोर धरि सूखल नहि। लगैत छल जे शब्दक भीतरसँ एखनो धुँआ उठि रहल अछि।

सबेर बच्चा सभ पहिने मोहरक छाप केँ कागचपर अलग-अलग उतारलक। सेवा-निकेतनक नील गोल निशान, नकली तहसील-जेकाँ अर्द्धचन्द्राकार निशान, आ तेसर खाली खर, जाहि पर नाम बदलल जा सकैत छल। अनन्या तीनू छापक कातमे लिखली — 'घोषित सेवा', 'नकली अधिकार', 'बदलैत नाम'।

बही-कक्षमे बैसल लिपिक पहिने टोली देखिते असहज भेल। 'एतेक लोक किएक?' ओ पूछलक। सत्यव्रत मेहता शान्त स्वरमे कहलनि— 'केवल पाँच साक्षी भीतर।

'तीन खाता?' सत्यव्रत पूछलनि। बैंकक मुद्रित विवरणमे नाम खुलल—एक सेवा-निकेतन, एक निर्माण-सामग्री आपूर्तिकर्ता, आ एक 'हरिहर कल्याण ट्रस्ट'। बटुकनाथक नाम सीधा नहि छल, मुदा छाह घना छल।

चन्ना गाछी लग राति फेर सभा भेल, मुदा एहि बेर गवाही पढ़ल नहि गेल। मोहरक पगचिन्ह पाथरपर बनाओल गेल। प्रत्येक मोड़पर एक छोट दीप राखल गेल।

ओहि राति नदीमे गोहि फेर देखाएल। ई बेर ओ किनार लग आबि पानिपर थूथुन राखि रहल छल। ओकर आँखि चमकि रहल छल, मुदा ओ शिकार नहि करैत छल।

ऊपरक कोठरीक मोहर आब केवल पगचिन्ह नहि रहल। ओ रास्ता बनि गेल छल। जे रास्ता अपराधी सभ चुप्पीसँ बनौने छल, ओहि रास्तापर आब नामक पहरुआ बच्चा सभ दीप धऽ कऽ चलत।

छोट लोकगीत

पढ़ू हे पगचिन्ह, स्याहीक पगचिन्ह पढ़ू हे,

ककर हाथ, कोन बाट—धीरजसँ गढ़ू हे।

स्याहीक पग चलि रहल, ओकर बाट पढ़ू,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

ककर हाथसँ कतय गेल, धीरजसँ नक्शा गढ़ू।

अध्याय १८०

शहरक खाता

खाता शहरमे खुजै छै, मुदा ओकर जड़ि गामक ककरो आडनमे
गड़ल रहै छै।



जखन लेल गेल वस्तु वैह लोकक नामपर दान बनि घुरै छै, तखन उपकारक चादर दरअसल लाज ढाकबाक कपड़ा बनै छै। शान्तिक पुरान चादर एहि छलकें मोन राखै छै—ओ नरम छै, मुदा ओकर तहमे खेतक माटि, समारोहक ताली आ दबाओल प्रश्न सभ अटकल छै।

खाताक रेखा पगचिन्ह जकाँ आगाँ बढ़ै छै: भूमि सँ ऋण, ऋण सँ भुगतान, भुगतान सँ ट्रस्ट, ट्रस्ट सँ समारोह। प्रत्येक तीरक पाछाँ एकटा हाथ छै, प्रत्येक संक्षेपक पाछाँ एकटा नाम। न्यायक काज

चिन्ह देखि बुझल बातसँ नाम भरब नहि, प्रमाणसँ ओकर देह चिन्हब छै।

पछिला राति मुहरक पगचिन्ह जतय समाप्त भेल छल, भोरक पहिल इजोत ओतयसँ शहरक खाता दिस अगिला रेखा खिंचलक। मोहरक पगचिन्ह राति भरि चन्ना गाछीक पाथरपर झिलमिल करैत रहल। दीपक बाती बुतायलो पर रेखा नहि बुतायल।

एक पन्नापर 'विशेष सरकारी व्यवस्थाक सहयोग' शीर्षक सँ खर्च लिखल छल। कातमे रकम छल, मुदा प्राप्तकर्ता नामक जगह केवल तीन अक्षर—'रा.चं.ल.'। अनन्या पूछलक—'ई गुप्त संकेत अछि?' गोवर्धन कहलक—'लेखा-संक्षेप।' सत्यव्रत मेहता कहलनि—'संक्षेप ओहि ठाम खतरनाक होइत अछि जतय पूरा नाम जवाबदेह बनि सकैत अछि।' आरुणि कातमे लिखलक—'रा—राघव?

कार्यालयसँ निकलिते ध्रुवेशक फोन धमकीक पहिल रूप सोझाँ आयल। अनन्याक फोनपर अज्ञात नम्बर सँ संदेश आयल—'कागच छोड़, नहि तँ चेहरा सार्वजनिक होएत।' संदेशक संग कात्हि बैंकक बाहर खिंचल तस्वीर छल। बच्चा सभ एक क्षण लेल चुप भऽ गेल।

सत्यव्रत मेहता तुरन्त शहरक साइबर शाखा जाएवाक प्रस्ताव रखलनि, मुदा मीरा कहलथि—'पहिने प्रतिलिपि सुरक्षित। मूल फोन जँ जब्त भेल तँ काज अटकत।' एहि पर अनन्या, आरुणि आ देविका अलग-अलग कागचमे संदेशक शब्द उतारलक। फोनक पर्दाक छवि लेल गेल।

मीरा पूरा श्रृंखला समझेलाथि—तस्वीर, फोन, बैंकक बाहर निगरानी, ट्रस्टक खाता। अधिकारी आब ध्यानसँ सुनय लागल। ओ कहलक—'नम्बर अस्थायी होएत।

अन्तमे शान्ति अपन समारोहक चादर पाथरपर राखि कहलीह—'एहि चादरसँ हमरा लाज ढाँकल गेल छल, आ खेत ढाकल गेल छल। आइ ई चादर प्रमाणक मेज हो।' चादरपर ट्रस्टक खाता-रेखा, लेखाकारक लिफाफा, धमकी संदेशक प्रति आ साइबर रसीद राखल गेल। दीपक उजासमे चादरक रंग बदलि गेल—ओ अब दानक प्रतीक नहि, विरोधक आसन छल।

रातिक अन्तिम प्रहरमे नदीक पानि बहुते शांत छल। गोहि बहुत देर बाद पानिक ऊपर आयल, आँखि खोललक, फेर धीरेसँ डुबि

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

गेल। आरुणि लिखलक—‘जखन दाँतक नाम राखल जाए, दाँत पाछाँ हटैत अछि।

छोट लोकगीत

बिछाउ हे चादर, शान्तिक चादर बिछाउ हे,
चुप्पी नहि—ओहिपर जनसभाक दीप जराउ हे।
जे चादरसँ माए नेना ढाँकै, ओहिपर सत्य धरू,
शान्ति मतलब चुप्पी नहि—साहससँ घर भरू।

अध्याय १८१

सिमक छाया

सिमक छाया देह बिनु घूमै छै— नम्बर बदलै छै, नीयत नहि ।



नम्बर बदलि जाइए, सिम बदलि जाइए, दुकान बदलि जाइए । मुदा जँ नीयत वैह छै तँ छाया अपन चाल नहि बदलै छै । ओकर पएर टावरक पहिल संकेतमे, लाल पेंसिलक बिन्दुमे, बन्द लिफाफामे आ ओहि अँगूठामे रहै छै जे लाभक आसमे लगाओल गेल छल ।

मरल लोकक नामपर जीवित धमकी चलै, तँ ई केवल कागचक बेईमानी नहि छै । ई स्मृतिक देह चोरब छै । जे नाम घरक लोक दीप जरा कऽ उच्चरै छै, वैह नाम बाजारमे सिम बनि डर भेजै— एहि सँ पैघ अपमान की होइ?

अनन्या नक्शापर बस-ठाढी घेरि देलक। आरुणि ओकर कातमे लिखलक—‘झूठा नाम बदलैत अछि, पहिल संकेत नहि।’ देविका कहलीह—‘जकरा सिमक छाह चाही, ओ पहिने उजासमे आवैत अछि।’ बच्चा सभ एहि वाक्यपर हँसल नहि। हुनका सभ बुझाईत छल जे डरक भाषा आव फोनक काँचपर लिखल जाइत अछि, मुदा ओकर जन्मस्थान एखनहुँ माटियेपर रहैत अछि।

सभसँ छोट दुकानपर नील बोर्ड छल—‘माधव संचार सेवा’। भीतर प्लास्टिकक कुर्सी, टेबलपर टूटा फोनक पर्दा, चार्जरक तार, पानक डिब्बा, आ एक पुरान बही। माधव नामक युवक आँखि मिलाबयसँ बचि रहल छल।

आरुणि तुरन्त अलग पन्ना खोललक—‘बाहरसँ आयल कागच।’ सत्यव्रत मेहता पूछलनि—‘बाहर मतलब?’ माधव कहलक—‘हरिहर सेवा केंद्रसँ। ध्रुवेश बाबूक लोक कहैत छल—गामक वृद्धा लोक केँ लाभ भेटत। जे सिम बँटल, तकरामे किछु लोककेँ फोन भेटल, किछु सिम बादमे वापस ले लेल गेल।’ मीरा गंभीर भऽ गेलीह—‘जकर नामपर सिम, ओकर हाथमे फोन नहि।

मीरा हाथ उठाकऽ सभकेँ शांत केलथि। ‘भीड़ सत्यकेँ तोड़ि देत,’ ओ कहलीह। ‘एक-एक नाम, एक-एक अँगूठा, एक-एक बात।’ अनन्या आ देविका दू पंक्ति बनबेलक।

राति मीरा, सत्यव्रत, अनन्या, आरुणि आ देविका मिलि अगिला चाल लिखलथि—हरिहर सेवा केंद्रक पंजी माँगब, सेवा-शिविरक तस्वीर मिलाबब, लाभुक सूची केँ सिम-सूची सँ काटब-छाँटब, आ जे नम्बर धमकीमे आयल ओकर सक्रियताक समय साइबर शाखामे जमा करब। ई केवल गामक लड़ाइ नहि रहल। ई नामक शरीर वापस लयबाक लड़ाइ बनि गेल।

बताउ हे सिम, अपन असल मालिक बताउ हे,।

जकर नाम चोरल, ओकर शान्त निन्न घुराउ हे।

छोट लोकगीत

चिन्हू हे चिन्हू, नम्बरक पार चिन्हू हे,

सिम बदलौ हजार, नेहक स्वर गिनू हे।

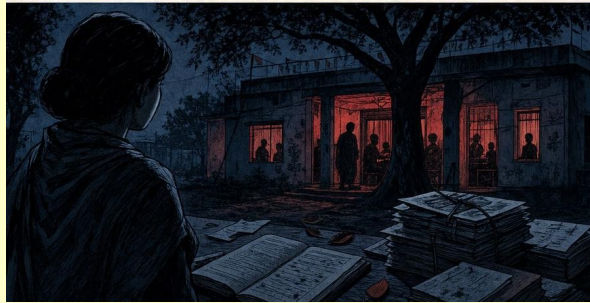
नम्बर बदलै, सिम बदलै, लोकक नेह नहि,

स्वरकेँ स्वर चिन्है, साँचक राह कहैत।

अध्याय १८२

हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा

सेवा-केंद्रक दरबाजा दिनमे सेवा बाँटै छै, राति हिसाब।



सेवा कहल जाइए तँ लोक अपन कागच भरोसासँ सौंपै छै। ओहि भरोसाक बदला जँ नाम, अँगूठा, तस्वीर आ सिम बाजारक माल बनि जाए, तँ अपराध केवल प्रपत्रमे नहि, देहरीक मर्यादामे होइ छै।

चाबी नरहरी काकाक हाथमे छै, मुदा असल चाबी जनक बोली छै। जे लोक बरखों धरि “ऊपरसँ आदेश” सुनैत रहल, सएह लोक आइ पूछै छै—ऊपर के?

सिमक छाया पकड़ाएलाक बादो ओकर देह एखन धरि दूर छल। राति भरि चन्ना गाछीक जड़ि लग राखल कागच सभपर ओस पड़ैत रहल। राति भरि चन्ना गाछीक जड़ि लग राखल कागच सभपर ओस पड़ैत रहल।

सेवा केंद्र लग पहुँचलापर पहिल दृश्य विचित्र छल। दरबाजा आधा खुलल, भीतर झाड़ू लागल, मेजपर गमला राखल, आ देवालपर बटुकनाथ हरिहरनक मुस्कराइत चित्र। चित्रक नीचाँ अक्षर—‘सेवा ही साधना।’ देविका धीरेसँ कहलीह—‘जतय सेवा शब्द बहुत उज्जर लिखल हो, ओतय छायो देखबाक चाही।’ आधा खुलल दरबाजासँ भीजल झाड़ूक गन्ध, पुरान मोहरक स्याही आ बन्द कमराक सीलन एक संग बाहर आबैत छल।

भीतर एक वृद्ध चौकीदार बैसल छल—नरहरी काका। ओकर आँखि धुँधला, मुदा आवाज साफ। ओ कहलसि—‘बाबू लोक, केंद्र आइ बन्द अछि।’ मीरा पूछलथि—‘कियैक?’ नरहरी उत्तर देलक—‘ऊपरसँ आदेश।’ सत्यव्रत मुस्कुरेलनि नहि।

देविका तुरन्त लिखलक—‘रातिक कागजक गट्टर-आवागमन।’ सत्यव्रत मेहता पूछलनि—‘बही अछि?’ नरहरी देवालक कोनमे लटकल जंग लागल चाबी दिस इशारा केलक। ‘ऊपरक अलमारीमे।’ एहि ‘ऊपर’ शब्दसँ सभकेँ अदालतक ऊपरक कोठरी मोन आबि गेल। अपराधक भाषामे ‘ऊपर’ सदखन भौतिक स्थान नहि, जिम्मेदारीसँ बचबाक दिशा होइत अछि।

अलमारी खुलल तँ भीतर कपडामे बान्हल दू पंजी भेटल—‘लाभुक उपस्थिति’ आ ‘अंकीय सहायता’। पहिल पंजीमे गामक गरीब परिवारक नाम, अँगूठा, आ लाभक गुप्त संकेत। दोसरमे फोन नम्बर, सिम-क्रम, बैंक-संदेश, आ कतेको ठाम ‘फोन वापस’ लिखल।

सत्यव्रत मेहता अन्तिम रेखा खिंचलनि—सेवा केंद्र → सिम पंजी → फोन-वापसी → ट्रस्ट खाता → धमकी संदेश → ध्रुवेशक सहायक। मीरा ओहि रेखाक नीचे लिखलीह—‘पुष्टि बाकी, मुदा बाट स्पष्ट।’ अनन्या अगिला पन्ना खोलि शीर्षक लिखलक—‘फोनक भीतरक चेहरा।’ आरुणि जोड़लक—‘जखन उपकरण जबाब देत, तखन छाह बोलत।’।

हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा खुलि गेल छल, मुदा दरबाजाक भीतर जे चेहरा सभ तस्वीरमे कैद छल, ओ एखन अन्हारमे रहल। भोर होएबाक पहिनहि चन्ना गाछीक जड़ि लग ओसक बून्द चमकल—

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

जेना गाछी कहि रहल हो, 'दरबाजा खुलल, आब भीतरक चेहरा पढ़ू।

छोट लोकगीत

खोलू हे दरबाजा, सेवाक दरबाजा भोरे खोलू हे,
जनक बोलीक चाबी सँ जंग-लागल ताला तोड़ू हे।
राति भरि बन्द रहल जे सेवा-दरबाजा भारी,
भोरक चाबी बनि अएल जनक बोलि पियारी।

अध्याय १८३

फोनक भीतरक चेहरा

फोनक भीतर चेहरा नुकायल रहै छै, मुदा साँसक चाल नहि नुकाइ छै।



दादीक चेहरा तमाशा नहि छै। झुरीमे घरक बरख, कंठमे कुलक गीत आ नाममे पोता-पोतीक भरोसा बसै छै। ओहि नामसँ नकली स्वर बनौनाइ केवल तकनीकक अपराध नहि—सम्बन्धक देहरी तोड़नाइ छै।

प्रमाण देखबाक सेहो मर्यादा होइ छै। पीड़ितक मञ्जूरी बिना चेहरा पसारब न्याय नहि, फेर एक बेरक अपमान होइ छै। तँ मीरा कहै छै—देखू, जोड़ू, लिखू।

हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा खुललाक बाद जे यन्त्रपर चलयवला छाया भेटल छल, ओकर अगिला साँस पेन-ड्राइवक भीतर बन्द छल। चन्ना गाछीक जड़ि लग राति भरि राखल पेन-ड्राइवक सील सबेरे तक जस-के-तस रहल। ओसक बून्द सीलक कागचपर मोती जेकाँ जमल छल, मुदा बच्चा सभ ओकरा छूबाक साहस नहि कएलक।

सूरज निकललाक बाद साइबर शाखाक अधिकारी पुनः आयल। ओकर नाम विनीत झा छल, मुदा अनन्या ओकरा पहिल प्रश्न नामसँ नहि, पद्धतिसँ केलक—‘अहाँ ई यन्त्र खोलब, तँ भीतरक बात बदलि नहि जाएत?’ विनीत झा क्षण भरि चकित भेल, फेर गंभीर भऽ गेल। ‘पहिने प्रति बनत, मूल सुरक्षित रहत, समय लिखल जाएत, गवाहक हस्ताक्षर होएत।

चन्ना गाछीक तले अस्थायी मेज लगाओल गेल। मेजपर सफेद कपडा, ओकर ऊपर सील, चित्र खींचयवला यन्त्र, खाली लिफाफा, प्रतिलिपि-पत्र, आ सत्यव्रत मेहताक पुरान चश्मा। भीड़कें दूर राखल गेल।

मीरा विडियो तुरन्त रोकेलथि। ‘जे लोक एहिमे अछि, ओकर मञ्जूरी बिनु सार्वजनिक नहि करब,’ ओ कहलीह। ‘हम देखब प्रमाण लेल, न कि अपमान लेल।’ एहिपर गाँवक एक युवक, जे एखन धरि फोन निकालि लिखित हिसाब करय चाहैत छल, धीरेसँ फोन जेबमे राखि देलक।

अनन्याक बही काँपि गेल। ई पहिल बेर छल जखन अपराधक चेहरा पूर्ण नहि, पर हाथ सोझाँ आयल। ओ लिखलक—‘कखनो-कखनो चेहरा झूठ बाजैत अछि, हाथ सच छोड़ि जाइत अछि।’ आरुणि जोड़लक—‘हस्ताक्षर, अँगूठा, हाथ—अपराध सदैव हाथसँ गुजरैत अछि।’ चन्ना गाछीक पात सभ अकारण हिलल, जेना ओहि वाक्यक पुष्टि करैत हो।

कारी भूत आइ गाछीक पश्चिम दिस बैसल रहल। उज्जर प्रेत पेन-ड्राइवक विवरण-पत्रपर झुकि रहल। बूढ़बा भूत धीमा स्वरमे कहलसि—‘पहिने नाम मिटाओल जाइत छल।

ई एहि ठाम समाप्त भेल जे फोनक भीतरक चेहरा पूरा नहि खुलल, मुदा ओकर हाथ, हँसी, पंखा, समय, आ पीड़ितक आवाज एकहि रेखापर आबि गेल। अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखलक—‘आवाजक नकाब।’ चन्ना गाछीक जड़ि लग ओस फेर चमकल।

छोट लोकगीत

घेरू गे पोती, दादीकेँ घेरि कऽ बैसू गे,
झुरी-झुरीमे लिखल मिथिला बाँचू गे।
दादीक चेहरा झुरीमे मिथिलाक नक्शा,
नाम हुनकर दीप जकाँ, प्रेम हुनकर रक्षा।

अध्याय १८४

आवाजक नकाब

आवाजक नकाब कपड़ाक नहि— अभ्यासक होइ छै, आ
अभ्यासक शैली पकड़ा जाइ छै।



गाछीक पात कहैत छै—कान जल्दबाजी करय तँ झूठो साँच जेना
लागए। मुदा प्रश्न धीरे-धीरे रखल जाए तँ प्रतिध्वनि अपन मूल
खोजि लइए। कोन शब्दपर साँस अटकल, कोन हँसीक पाछाँ
धातुक खनक उठल, कोन पंखाक खट-खट पुरान कमरा मोन
पाड़लक—ई सभ छोट चिन्ह मिलि कऽ आवाजक नकाबक सिलाइ
खोलैत जाइए।

चोरायल नाम जकाँ चोरायल स्वर सेहो लोकक अस्तित्वपर हाथ देइ छै। माय अपन नेनीक करोट निन्नमे बुझि लइए। बूढ़ लोक अपन बेटाक आवाज भीड़मे चिन्हि लइए।

विनीत झा पहिनेहि चेतावनी देलक—‘आवाजक मिलान अदालतमे अन्तिम प्रमाण नहि, पर बाट देखाबयवला दीप अवश्य बनि सकैत अछि। कान भावुक होइत अछि, मशीन सेहो गलती कऽ सकैत अछि। तँ आवाजकँ असगर नहि, समय, स्थान, फोन, चित्र, आ गवाहीक संग पढ़ब।’ मीरा तुरन्त एहि वाक्यक नीचाँ लिखलीह—‘कानक न्याय भीड़ नहि करत।

मीरा केर चेहरा कठोर भऽ गेल। ‘जकर आवाज चुरायल गेल, ओकर मञ्जूरी छल?’ ओ पूछलीह। कियो उत्तर नहि देलक।

एहि छोट सूचना सँ पूरा नक्शा बदलि गेल। यदि पंखा सेवा केंद्रसँ शहर गेल, तखन शहरिया बाबूक कमरा सेवा केंद्रक आवाज लऽ गेल। अपराध केवल कागज नहि, ध्वनि सेहो ढोइत छल।

कारी भूत आइ गाछीक भीतर नहि, बहुत नजदीक आबि बैसल। उज्जर प्रेत आवाजक सूचीपर झुकल। बूढ़बा भूत कहलक—‘पुरान कालमे डाइन लोकक आवाज बदलि नेनाकँ बहकबैत छल।

राति पड़िते विशम्भर अन्ततः आगाँ आयल। ‘हम फोन उठबैत छलहुँ, पर बोलैत ओ शहरिया बाबू। ध्रुवेश बाबू कहैत छल—बस नम्बर जोड़ू, पाछाँ रहू।

विशम्भरक स्वीकार पूर्ण नहि छल, मुदा दरार खुलि गेल। ओ अपन कारी धागाबला हाथ आगाँ कएलक। ‘ई जखम ओहि रातिक अछि, जखन फोनक डब्बा छीनैत एक बूढ़ हाथ काटि देलक।’ दीपकक आँखि फेर भरि आएल—‘दादी?’ विशम्भर चुप।

से ई एना भेल जे आवाजक नकाब पूरा नहि उतरलक, मुदा नकाबक धागा हाथमे आबि गेल। शहरिया बाबू ‘मास्टर’ नामसँ सोझाँ आयल, ध्रुवेशक सहायकक भूमिका अभ्यास, फोन-जोड़, आ स्वर-चोरीमे खुलल, आ पंखाक चरमराहट शहर धरि बाट देखबए लगल। अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखलक—‘मास्टरक कमरा।’ आरुणि जोड़लक—‘जतय आवाज बनल, ओतय चेहरा बचल होएत।’ चन्ना गाछीक ऊपर राति उतरि गेल, मुदा एहि बेर अन्हार बोलि रहल छल।

छोट लोकगीत

सुनू हे धीरे, आवाजक भीतर सुनू हे,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

हजार काँच-स्वर बीच असल प्राण गुनू हे ।
काँचक भीतर आवाज बहुत, असल एके प्राण,
नेहक बोलि हृदय चिन्है, छलक टूटै तान ।

अध्याय १८५

मास्टरक कमरा

मास्टरक कमरा खुजि गेल, मास्टर धुँआ भऽ गेल— मुदा धुँओकें
रस्ता चाही।



चरमर पंखा, लोक बुझै छै ई पुरान मशीनक दोष छै। मुदा जखन ओही चरमराहट धमकीक फोनमे, सेवा-केंद्रक स्मृतिमे आ शहरक कोठरीमे एके तालसँ बजै छै, तँ आवाज पगचिन्ह बनि जाइए। साँच एना नै दौड़ै छै।

नाम, माधवेश कि मधवेश, एक मात्रा काटि लोक अपन देह नुकाबय चाहै छै। मुदा नम्बर, भाड़ा-बही, रसीद, पटरीक समय आ कागचपर पड़ल हाथक चाल एक-दोसराकें चिन्हि लैत छै। अपराध नाम छोट करै छै, मुदा अपन छाह छोट नै कऽ पवै छै।

आवाजक नकाबसँ हाथमे आयल चरमराहटक धागा शहरक पटरी दिस तानल रहल। राति भरि चन्ना गाछीक ऊपर पंखाक चरमराहट अटकल रहल। गाछीमे कोनो पंखा नहि छल, तइयो पात सभ घुर-घुर-खट जेकाँ हिलैत रहल।

मीरा तुरन्त नियम रखली—‘कमरा देखय जाएब, मुदा भीड़ नहि। कोनो वस्तु छूबी नहि। अधिकारप्राप्त लोकक संग विधिपूर्वक प्रवेश करब।

देबालक कोनमे टँगल तिथिपत्र आधा फाटल छल। पन्ना हटाओल गेल तँ नीचे पेंसिलसँ बनल रेखा देखाइ देलक—हरिहर सेवा केंद्र → तस्वीरस्टेट ऊपरक कमरा → शहरक खाता → ट्रस्ट → ‘डी’ → ‘एम’। अनन्या लिखब चाहली, पर सत्यव्रत रोकलनि—‘अक्षर दर्ज करू, अर्थ नहि।’ आरुणि अलग पन्ना पर लिखलक—‘डी/एम—पुष्टि बाकी।’ बच्चा सभ एखन चिन्ह देखि बुझल बातकँ गवाहीक कुर्सी पर नहि बैसावय सीखि गेल छल।

अचानक मेजक दराज भीतर एक छोट लाल सूत भेटल। अनन्या ओकरा देखिते चन्ना गाछीक चिरइक चोंच मोन कएलक। लाल सूत कागच बाँधबाक छल कि गाछीक संकेत, ई बुझब कठिन।

चन्ना गाछी पहुँचला पर कमरा सँ लाओल छवि, सूची, पंखा-रसीद, सिमक खोल, ध्वनि-सूची आ भाड़ा-बहीक प्रतिलिपि पाथर पर क्रमसँ राखल गेल। आइ केओ ताली नहि बजेलक। कारी भूतक छाह पंखाक तस्वीर पर झुकल, उज्जर प्रेत लाल सूतक थैलीक नजिक ठहरल।

बिशम्बर दूर ठाढ़ सभ सुनैत रहल। जखन ‘मधवेश’ नाम पढ़ल गेल, ओ फुसफुसा कऽ कहलक—‘मास्टर कहैत छल—नाम छोट राखू, बचि जाएब।’ अनन्या ई वाक्य लिखली। आरुणि जोड़लक—‘नाम छोट करबाक चाल, अपराध छोट नहि करैत।’ एहि वाक्य पर गाछीक पात हलुक हिलल।

फेर मास्टरक कमरा खुलल, पर मास्टर स्वयं पकड़ायल नहि। कमरा सिखेलक—आवाजक चोरीमे देहक नक्शा, सम्बन्धक ज्ञान, पंखाक ध्वनि, स्टेशनक समय, नकली पृष्ठभूमि, आ ट्रस्टक धन एके जालमे बन्धल छल। अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखली—‘मधवेशक असली नाम’।

छोट लोकगीत

खोलू हे खिड़की, चरमर कमराक खोलू हे,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

स्टेशनक सीटी संग भोरक सुर घोलू हे ।
चरमर पंखा घूमि रहल, खिड़की खोजै भोर,
स्टेशनक सीटी कहै—खुलत अन्हारक छोर ।

अध्याय १८६

मधवेशक असली नाम

असली नाम सभसँ पातर कागजपर लिखल रहै छै— जकरा सभ
रही बुझै छै।



मधुकर, माधवेश, मधवेश, मास्टर, आखर कटल, मात्रा बदलल,
खोल नव भेल। मुदा आवाजक चाल आ हाथक आदत वैह रहल।
नाम बदलि लोक गाम, गरीबी आ मायक मोनसँ भाग्य चाहै छै,
मुदा पुरान पुकार पातक फाँकसँ छनैत हवा जकाँ पाछाँ-पाछाँ
अबैत रहै छै।

कला, नकल, ताली, भय, बच्चाक रोअन, बूढक गला, नेताक
भाषण निकालब पहिने खेल रहै छै। जखन लोभ ओकरा कीन लै
छै, तँ वैह कला लोकक घरमे डर पठाबय लगै छै। मायक

देवालपर लिखल “आवाज बेचब नहि” केवल सीख नै, अपन बेटाक भविष्यकेँ पहिने देखल चेतावनी बनि जाइए।

मास्टरक कमरामे भेटल नाम-पट्टीक आधा आखर रातिभर चन्ना गाछीक पाथरपर काँपैत रहल। चन्ना गाछीक जड़ि लग राति भरि रेलक सीटी अटकल रहल। मास्टरक कमरा खुलि गेल छल, मुदा मास्टरक देह धुँआ जेकाँ हाथसँ फिसलि गेल।

ई सुनिते नामक तीन रूप मिलल—मधवेश, माधवेश, मधुकर। सत्यव्रत मेहता अपन पुरान चश्मा उतारि कपड़ासँ पोंछलनि। ‘जतय उपनाम आ कागजी नाम अलग हो, ओतय विद्यालयक बही, मतदान सूची, वा परीक्षा-पत्र बाट खोलि सकैत अछि।’ विनीत झा सहमत भेलाह।

प्रधानाध्यापक एक और बही आनलनि—छात्रवृत्ति-प्रपत्र। ओहिमे मधुकरक बैंक खाता कखनोकाल सेवा केंद्रक खाता सँ जोड़ल गेल छल। कारण लिखल—‘अभिभावक-सहायता’।

टोली गाम घुरि चन्ना गाछी पहुँचल। पाथरपर विद्यालयक नामावलीक प्रमाणित प्रति, नाटक-दिवसक तस्वीर, छात्रवृत्ति-प्रपत्रक अंश, कातकी स्त्रीक बयान, आ भाड़ा-बहीक ‘मधवेश’ एक संग राखल गेल। अनन्या क्रम पढली—मधुकर माधव मिश्र → माधवेश → मधवेश → मास्टर।

राति पड़ला पर चन्ना गाछीक पात पर अनोखा भनभनाहट उठल। मधुकर नाम मधुमक्खीसँ जुड़ल, आ गाछीमे सचमुच कनि बेर लेल अदृश्य मधुमक्खी सभ घूमय लागल। बूढ़बा भूतक स्वर आयल—‘मधुसँ जहर बनल, तँ छत्ता खोजू।

सत्यव्रत मेहता अन्तिम टिप्पणी लिखलनि—‘अभियुक्तक संभावित असली नाम: मधुकर माधव मिश्र। प्रयुक्त नाम: माधवेश, मधवेश, मास्टर। सम्बन्ध: हरिहर सेवा केंद्र, ध्रुवेश-सम्बद्ध सेवा-जाल, स्टेशन-कमरा।

मधवेशक असली नाम पहिल बेर क्रम सहित सोझाँ आयल—मधुकर माधव मिश्र। मुदा नाम भेटलासँ अपराध समाप्त नहि भेल। अपितु अपराधक बाल्यकाल, कला, लाज, महत्वाकांक्षा, ध्रुवेशक हाथ, महेश्वरक छाह, आ शहरक खाता एक-दोसरासँ जुड़ि उठल।

छोट लोकगीत

भन-भन हे मधुकर, फूलक बाट भन-भन हे,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

जहरक घेर बिसरि मधुरसक गुन-गुन हे ।
भन-भन करै मधुकर, फूलक बाट बताउ,
जहरक घेर छोड़ि आव मधुरस घर लाउ ।

अध्याय १८७

छत्ताक भीतरक रानी

छत्ताक भीतरक रानी अपने कहियो फूलपर नहि जाइ—
भनभनाहटे ओकर पता कहै छै।



रानी एक नै छै—कखनो वृद्धाक नाम, कखनो परदेश गेल नेनीक नाम, कखनो कागचपर मात्र जीवित समिति। खोल बदलै छै, मधु एके बाट चलै छै। जे समाज स्त्रीकेँ दुर्बल बुझै छै, ओही भ्रमक भीतर अपराधी मजबूत कोठी बनबै छै।

नाम साफ करब न्यायसँ अलग काज नै छै। अपराधी पकड़ाइत देरी भऽ सकै छै, मुदा निर्दोषक माथक कालिख तुरन्त धोबय पड़ै छै। सुनल बातकेँ सुनल, देखल बातकेँ देखल, सम्भावनाकेँ

सम्भावना लिखब—एहि संयमसँ जाँच प्रतिशोध नै बनै छै आ गरीबक कथा फेर बाजारमे नै बिकै छै।

मधुकरक असली नाम भेटलाक बादो अध्याय १८६क अन्तिम प्रश्न रातिभरि चन्ना गाछीक पातमे अटकल रहल—मधु ककरा घरमे जमा अछि? चन्ना गाछीक ऊपर रातिभरि जे भनभनाहट अटकल छल, भोर होइत-होइत ओ आवाज मधुमक्खीसँ कम, सिक्काक खनकसँ बेसी मिलैत लगल। मधुकर माधव मिश्रक नाम कात्हि सोझाँ आयल छल, मुदा बूढ़बा भूतक बात सभक भीतर काँटाजकाँ धँसल रहल—‘मधुमक्खी पकड़ायल, मुदा मधु ककरा घरमे जमा अछि?’ अनन्या पाथरकात बैसि पंजी खोलली आ नव शीर्षक लिखली—‘छत्ताक भीतरक रानी’।

पहिल रानी-खाता खोलल गेल—नाम: रानी देवी। तस्वीरमे धोती ओढ़ने एक वृद्ध स्त्री, आँखिमे बुझल प्रश्न। भीड़ हलचल करय लागल—‘एहि वृद्धापर एतेक पैसा?’ मीरा कठोर भऽ गेली—‘नाम पढ़ल गेल, अपराध नहि।

रानी देवीक पोता, जे एखन तेरह बरखक छल, बीचमे बाजल—‘सेवा केन्द्रमे ओ लोक दादीक हाथ पकड़ि कऽ शीशाक पट्टीपर लगौलक। एक बेर नहि, तीन बेर। कहलक—यंत्र खराब अछि।’ एहि वाक्यपर अनन्याक सीस-कलम रुकि गेल।

चन्ना गाछीमे घुरला पर सभ प्रमाण पाथरपर राखल गेल—रानी देवीक बयान, अँगूठाक तुलना, पोताक कथन, रानी कुमारीक परदेश-पत्र, समिति-पंजी आ धन-धाराक सारणी। मीरा फेर कहली—‘एहिमे कोनो स्त्रीकेँ अपराधी घोषित नहि करब। ई उनटे सिद्ध करैत अछि जे अपराधी लोक स्त्रीक नामकेँ एतेक सुरक्षित मानैत अछि जे ओकरा भीतर पैसा नुकबैत अछि।

अनन्या तुरन्त अध्याय १८६क पन्ना पलटली। ओहिमे ‘महेश्वर-सम्बन्ध—पुष्टि शेष’ लिखल छल। आब ओहि रिक्त स्थानमे पहिल कण भरल।

सत्यव्रत मेहता दिनक अन्तिम टिप्पणी लिखलनि—‘रानी-खण्ड वास्तविक नियन्त्रक नहि, बहुस्तरीय आवरण प्रतीत होइत अछि। गरीब स्त्री, अनुपस्थित युवती, कागचक समिति, नकली अँगूठा आ महेश्वरनाथ सेवकक मोहरक सम्बन्ध जाँचनीय। मधुकर आवाज बनबैत छल।

छत्ताक भीतरक 'रानी' कोनो एक रानी नहि, अपितु चोरी कएल स्त्री-नामक परत-दर-परत तिजोरी सिद्ध भेल। मधुकरक आवाज, ध्रुवेशक सेवा-जाल, रानी-खाताक बहाव, नकली अँगूठा आ महेश्वरनाथ सेवकक मोहर एके रेखामे देखाइ पड़ल। अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखली—'महेश्वरक मोहर'।

छोट लोकगीत

चमकाउ गे रानी, अपन नाम चमकाउ गे,
झूठक धूलि झाड़ि साँचक जलसँ नहाउ गे।
रानी अपन नाम धुए नहि, धूलि झाड़ि चमकाउ,
जकरा झूठ मलिन कएलक, साँचक जलसँ नहाउ।

अध्याय १८८
महेश्वरक मुहर

नील मुहर छाप नहि, कागजक देहपर पड़ल घाव थीक।



नाम बदलै छै—महेसर, महेश्वर, महेश्वरनाथ, सेवक—मुदा स्याहीक घाव अपना चाल नै बदलै छै। पूरा नाम, छोट नाम, समिति-मुहर। तीन रूपमे बँटल चिन्ह जाँचकें थकबय चाहै छै।

खाली कागच सभसँ गहिर पेटी होइ छै। ओहिमे जे लिखल नै गेल, से लिखबाक अधिकार केकरा लग छल—ई प्रश्न कागचक उज्जर देहसँ उठै छै। पहिने मंजूरी, पाछाँ तिथि।

मीरा आइक सभा शुरू करैत कहली—‘मोहर अपराधी नहि। मोहरक प्रयोग अपराधक बाट खोलि सकैत अछि। महेश्वरनाथक नाम आयल अछि, मुदा नाम आयलासँ लोक सिद्ध नहि।

एहि बयानपर सभा हलचल करय लागल। ‘महेसर’ शब्द जेना धूरिसँ निकलल बाल्यकालक पएर छल। अनन्या तुरन्त नामावलीमे एक नव स्तम्भ बनौली—महेसर, महेश्वर, महेश्वरनाथ, म. न. सेवक।

एहि वाक्यपर चन्ना गाछीक पात काँपल। बूढ़बा भूतक आवाज गूँजल—‘पुरान समयमे जाली बँटबारा पहिने मनमे होइत छल, कागच बादमे बनैत। आब जाली लाभ पहिने खातामे होइत अछि, मञ्जूरी बादमे बनैत।

अनन्या पाथरपर नक्शा बनौली—चन्ना गाछी, हरिहर सेवा केन्द्र, स्टेशन-पाछाँक गली, बैंक शाखा, रानी-खाता, ध्रुवेशक सेवा-जाल, मधुकरक कमरा, महेश्वरक मोहर। रेखा सभ जोड़िते एक आकृति बनल—मधुमक्खीक छत्ता नहि, अपितु गोहिक खुलल जबड़ा। आरुणि कहलक—‘छत्ता भीतर मधु रहैत अछि।

‘खाली पत्र-मस्तक?’ सत्यव्रत मेहता चौकन्ना भेलाह। नरहरी काका हँकार देलनि—‘हँ। बटुकनाथ हरिहरनक समयसँ चलल।

सत्यव्रत मेहता दिनक अन्तिम टिप्पणी लिखलनि—‘महेश्वरनाथ सेवकक मोहर बहु-प्रयोगी नियंत्रण-चिह्न प्रतीत। रानी-खाता, समिति अनुमोदन, अंकीय आदेश, बैंक परिचय, आ हरिहर सेवा केन्द्रक खाली पत्र-मस्तक सम्भावित रूपेँ सम्बद्ध। ध्रुवेशक माध्यम, मधुकरक आवाज-जाल, स्टेशन-पाछाँक गली, आ पुरान लोहाँक पेटी जाँचनीय।

महेश्वरक मोहर एक लोकक जेबक छाप नहि, अपितु पुरान सेवा-संस्थाक अन्हार, खाली पत्र-मस्तक, स्त्री-नामक चोरी, डरक अंकीय आदेश, बैंकक ढिलाइ, आ ध्रुवेश-मधुकरक जालक बीच घूमैत कुंजी सिद्ध भेल। गदाधरक जंग-लगल कुंजी पाथरपर राखल रहल। अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखली—‘लोहाँक पेटी’।

छोट लोकगीत

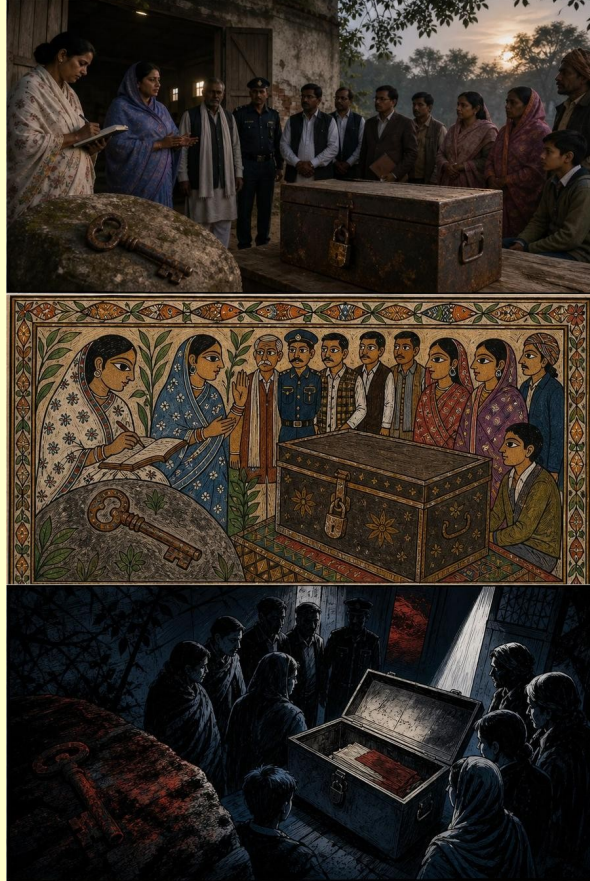
लगाउ हे पात, नील घावपर हरियर पात हे,
झिझियाक छिद्र-छिद्रसँ किरण पठाउ हे।
नील मोहर जँ घाव बनल, हरियर पात लगाउ,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

दीपक छिद्रसँ साँचक किरण भीतर धरि पटाउ ।

अध्याय १८९ लोहेक पेटी

लोहेक पेटीक कुंजी जड खा सकैए, गवाही नहि।



पेटी कहै छै—हमरा दोष नहि, हमरा भरनिहार हाथ पढ़ू।
नारिकेलक पात शुभ छल, मुदा ओकर नीचाँ खाली पत्र-मस्तक
राखि शुभकै छलक चादर बना देल गेल। मुहर सेवा लेल छल,
मुदा नाम पाछाँ भरबाक बाट बनल।

पीयर धागामे बिसेसरक अधूर नाम काँपै छै। मृत्युकै
“अनुपस्थिति” लिखि देल गेल तँ माय कते दिन देहरी ताकत?
मजदूरक देह पुलक पाया बनल, मुदा नाम पेटीक तहमे दबि गेल।

मीरा भोरमे सभकै फेर नियम सुनौली। पंचायतक दू सदस्य, पुलिसक उपस्थितिमे, बैंकक प्रतिनिधि, स्त्री-समितिक दू स्त्री, विनीत झा, सत्यव्रत मेहता, गदाधर, आ नामक पहरुआ बच्चा सभ—एतेक लोकक सोझाँ भण्डार-घर खुलत। ‘कोनो कागच जेना अछि तेना उठत, जेना उठत तेना लिखल जाएत।

पीयर थैलीमे मजदूरक पुरान दावा-पत्र छल। किछु गंगा-पुल बनबाक समयक, किछु बादक निर्माण-शिविरक, किछु दुर्घटना-सहायताक नामपर। ‘बिसेसर पासवान’क एक अधूरा पन्ना देखायल।

चारिम तहमे मुहरक तीन डब्बा भेटल। एक गोल, एक चौकोर, एक छोट नाम-पट्टी। गोल मुहर महेश्वरनाथ सेवकक।

नील पंजीक बीचमे एक पन्ना मोड़ल छल। मोड़ खोलितहि पुरान नाम सोझाँ आयल—‘बटुकनाथ हरिहरन स्मृति-कोष’। ओकर नीचाँ लिखल—‘खाली प्रमाणपत्र—पच्चीस, मुहरित आदेश—बारह, आवाज सूची—छब्बीस, सक्रिय खाता—नौ।’ महेश्वर, ध्रुवेश, मधुकर—तीनू नाम छोट अक्षरमे अलग-अलग पंक्तिमे।

राति चन्ना गाछी लग आइ लोहाँक पेटीक आँखिसँ देखल ज्ञान वस्तु नहि, ओकर सूची राखल गेल। खाली पत्र-मस्तक, प्रतिलिपि-पत्र, जाली अँगूठा, मुहर, स्त्री-थैली, बैंक-थैली, फोन-थैली, मजदूर-थैली, आ नील पंजी—सभ क्रममे लिखल। पनिडुब्बी पाथरक किनारपर झुकि कहली—‘जाहि पन्नापर बिसेसर फेर भेटल, ओ पन्ना पानि माँगैत अछि।’ हुलासी आँख बन्द कऽ कहलनि—‘पहिने नाम पढ़।

सत्यव्रत मेहता दिनक अन्तिम टिप्पणी लिखलनि—‘लोहाँक पेटीसँ खाली मुहरित पत्र-मस्तक, बहुविध मुहर, जाली अँगूठा-छाप, लाभुक-सूची, बैंक-सूत्र, फोन-सूत्र, मजदूर-दावा, बटुकनाथ स्मृति-कोषक उल्लेख, आ नील पंजी बरामद। अपराधक पुरान संस्थाक ढाँचा आ नव अंकीय विधि एकहि संग्रहमे सम्बद्ध देखाइत अछि। सावधानी: प्रत्येक नामक अपन निजी बातक अधिकार, प्रत्येक वस्तुक विधिक शृंखला, आ प्रत्येक चिन्ह देखि बुझल बातक पुष्टि आवश्यक।’ मीरा एहिपर लिखली—‘पेटी खुलल, पर लोक एखन बन्द अछि।’

लोहाँक पेटी केवल पुरान कागचक डब्बा नहि, अपितु खाली नाम भरबाक कारखाना, डरक पंजी, जाली अँगूठाक औजार, स्त्री-नामक तिजोरी, मजदूरक अधूरा मृत्यु-दावा, आ बटुकनाथसँ

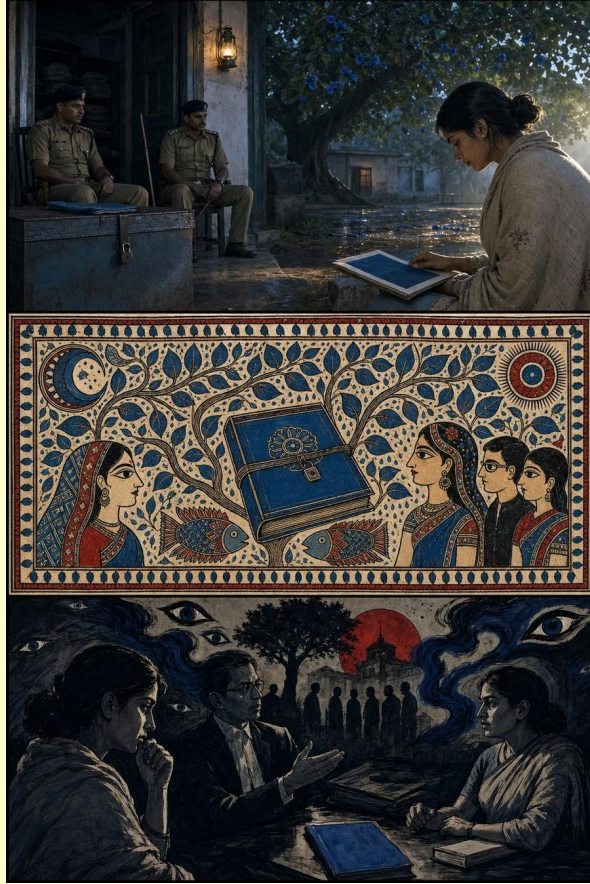
महेश्वर-मधुकर-ध्रुवेश धरि चलैत सेवा-जालक पेट सिद्ध भेल।
अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखली—‘नील पंजी’। आरुणि
ओकर नीचाँ जोड़लक—‘जतय नाम डरक स्तम्भमे लिखल, ओतय
नाम फेर जीवित चिन्हारि बनि उठत।’ चन्ना गाछीक राति उतरि
गेल।

छोट लोकगीत

ललना रे, बिसेसरक सोहर हे,
लोहाँक पेटीसँ नामक नव जनम हे।
लोहाँक पेटी खुलत आइ, नामक जन्म होयत,
बिसेसरक श्रमक अक्षर फेर पातपर सोहेत।

अध्याय १९० नील पंजी

नील पंजीक रंग निगरानीक बाहर पसरै छै— भयक अपन कोनो
ताला नहि ।



आवाजक नमूना, पाँच साँसक मौन, तुरन्तक हडबडी आ गिरफ्तारी-पत्रक नाम—सभ शब्द नहि, कसैत डोरी छै। मुदा लोकक बोली केवल फँसबाक बाट नै। जखन ओहि बोलीकें क्रम, साक्षी आ करुणासँ पढ़ल जाइए, तखन वैह डरक नक्शा न्यायपर पहुँचबाक रस्ता बनै छै।

बिसेसरक अधूर अक्षर, नन्द आरुणिक संकट-चिन्ह, हुलासीक अपमान-नाम आ स्त्रीसभक चोराओल अँगूठा—ई सभ पंजीक

वस्तु नै, जीवित लोकक छिन्न चिन्हारि छै। असल नाम घुरेनाइ केवल वर्तनी सुधार नै। ई देह, मान आ स्मृतिक पुनर्स्थापन छै।

तेसर पन्नापर मजदूर-नामक छाह भेटल। बिसेसर पासवानक नाम पूरा नहि, केवल 'बि.पा.'। सलामत अंसारी 'स.अ.'।

एक ठाम 'मौनक समय' लिखल छल। फोनक बीच पाँच साँस धरि चुप रहबाक निर्देश। 'मौनसँ डर बढ़ैत अछि।' आरुणि एहिपर चन्ना गाछीक मौन मोन पाड़लक।

नील पंजीक एक पन्नापर 'नन्द आरुणि'क नाम देखाइ देलक। सभकेँ लगल जे समय अटकल गेल। नामक आगाँ लिखल छल —'पुरान अभियन्ता—रिपोर्ट—मजदूर सूची—वंश सम्बन्ध—सावधान।' आरुणिक चेहरा पीयर पड़ि गेल।

आरुणि बहुत देर किछु नहि बजल। फेर ओ कहलक—'तखन पिताक रिपोर्ट गायब किएक भेल?' ककरो लग उत्तर नहि छल। पंजीमे उत्तर नहि, मार्ग छल।

हुलासीक नाम आँखिसँ देखल ज्ञान नहि, मुदा 'इनारबाली' लिखल एक संकेत भेटल। मीरा तुरन्त कहली—'ई नाम नहि, अपमान अछि। जँ असल नाम भेटत, पंजीमे एहि शब्दक ठाम ओहि नामक पुनर्स्थापन कएल जाएत।' बच्चासभ एहि बात केँ अलग पन्नापर लिखलक—'उपनाम, अपमान-नाम, भय-नाम—सभ हटाकऽ असल नाम खोजब।' बूढ़बा भूतक कारी इजोत खिड़की लग झिलमिलायल, जेना ओ एहि निर्णयपर मुहर लगा रहल हो।

साँझक बेर चन्ना गाछी लग नील पंजीक प्रतिलिपि नहि, केवल ओकर खाली नील आवरण राखल गेल। पन्नासभ सुरक्षित कमरामे रहि गेल, कारण नाम रातिक ओसमे नहि छोड़ल जा सकैत। बूढ़बा भूत डारिसँ कहलथिन—'आइ पन्ना नहि पढ़ू।

हरिहर सेवा केन्द्रक ऊपरक कमरा अन्हारमे निस्तब्ध देखाइत छल, पर ओकर खिड़कीक भीतर एक कुर्सीक पीठ चमकि रहल छल। केओ लोक नहि, पर कुर्सीपर दबावक धँसल छाह। ओ पन्ना बन्द करैत लिखलक—'ध्रुवेशक कुर्सी।

छोट लोकगीत

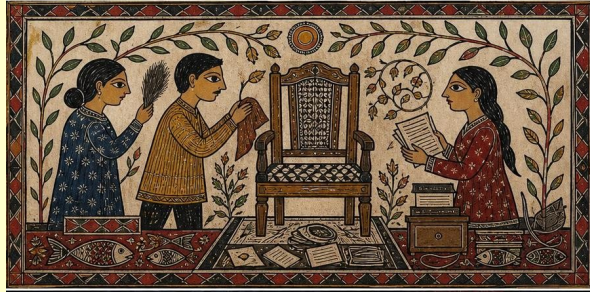
जागू हे पंजी, नील पंजी जागू हे,
बरखोंक चुप पाँतिकँ भोरमे बाँचू हे।
नील पंजी आँखि खोलि भोरक नाम पढ़ै,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

जे पाँति चुप छल बरखों, आव इजोत गढ़ै।

अध्याय १११ ध्रुवेशक कुर्सी

कुर्सी खाली रहितो शासन करै छै— जाधरि ओकर नाम नहि
पुकारल जाए।



आदेश ऊपरसँ खसै छै, मुदा ओकर वजन नीचासँ चढैत पाएरसभ
बनबैत छै। सीढीक प्रत्येक पायदान धूलि, पीक, घिसल जूता आ
संकोचक अलग पाँति लिखै छै। जे कमरा ककरो लेल मना रहै छै,
ओकर बाहरक घण्टी आ घसिटैत कुर्सीक ध्वनि ओहि लोकक
मोनमे बेसी साफ रहै छै जकरा भीतर जाए नहि देल जाइए।

कुर्सीक शासन केवल बैसनिहारक देहसँ नै चलै छै। 'माय असगर
—आवाज नरम', पाँच साँसक मौन, रिक्त स्वीकारोक्ति-पत्र आ
शिकार-नक्शा—ई सभ मिलि कऽ अभिनयकें आदेश बनबैत छै।

जखन पीडितक निजी डरकें पर्चीपर उतारि अभ्यास कएल जाइए, तखन आवाज शब्द नै रहैए।

सीढ़ीपर चढ़ैत समय सभकें लगल जे ई सीढ़ी साधारण इँटक नहि, पुरान आदेशक पाँति अछि। पहिल पायदानपर धूलि मोट छल। चारिमपर जूता घिसबाक निशान।

कुर्सी कमराक बीचमे नहि, कने दहिन कात सरकल छल। ओकर पीठपर बनाओटी चमड़ाक आवरण अनेक ठामसँ फाटल छल। दहिन बाँहपर नहक बारीक खरोंच, बाम बाँहपर फोन राखबाक गोल निशान, आ नीचाँ पहियामे सूखल माटि तथा धागा अटकल छल।

दोसर दराजमे एक छोट अंकीय ध्वनि-लिखित हिसाबक भेटल। ओकर पर्दा बन्द छल, मुदा भीतर स्मृति-पत्र रहबाक सम्भावना छल। विनीत झा तुरन्त कहलनि—‘ई वस्तु सीधा तकनीकी परीक्षणमे जाएत।

कुर्सीक पहियामे अटकल नील धागा अन्तमे विधिपूर्वक निकालल गेल। धागाक संग सूखल माटिक छोट टुकड़ा लागल छल। गदाधर कहलनि—‘ई माटि ऊपरक कमराक नहि।

कमराक खिड़की पाछाँक पोखरि दिस खुलैत छल। एहि खिड़कीसँ चन्ना गाछी पूरा नहि, ओकर ऊपरी पात मात्र देखाइत। ध्रुवेश जँ एहि कुर्सीपर बैसल होएत, तँ ओ गाछीक पात हिलैत देखैत रहल होएत।

साँझक बेर कुर्सी हटाओल नहि गेल। ओकर चारू कात पीयर रेखा खिंचल गेल, चित्र लेल गेल, आ कमरा मुहरबन्द भेल। विनीत झा कहलनि—‘ध्रुवेशक खोज आब व्यक्ति-खोज मात्र नहि।

चन्ना गाछी लग रातिमे कुर्सीक प्रतिकृति नहि राखल गेल। केवल ओकर धूलिसँ बनल गोल घेरा पाथरपर अंकित कएल गेल। बूढ़बा भूत डारिसँ देखैत रहलाह।

छोट लोकगीत

जमू हे चौपाल, कुर्सी बिनुओ जमू हे,
गोल घेराक बलपर काज नहि थमू हे।
कुर्सी खाली रहि सकैए, जनक आसन खाली नहि,
गामक गोल घेरामे निर्णय दूरक बात नहि।

अध्याय ११२ बन्द रेकॉर्डरक स्वर

बन्द लिखित हिसाबरक स्वर सभसँ ऊँच— कारण ओकरा आब केओ रोकि नहि सकैत ।



आवाजक नकाब अनेक छै—मायक ममता, कानूनक कठोरता, सेवाक मधुरता। मुदा साँसक गति, पाछाँक फुसफुसाहट, कागच पलटबाक ध्वनि आ कुर्सीक घर्षण नकाबक किनार उघारै छै। विज्ञान जखन जल्द निष्कर्ष नै निकालै, तखन स्मृति ओकर संग चलि सकैए।

नाम जेकाँ स्वर सेहो लोकक देहक अंश छै। ओकर प्रतिलिपि बने, समय-चिन्ह लिखाए, मूल अच्छूता रहय—ई केवल प्रक्रिया नै, पीड़ितक गरिमाक पहरा छै। रोदन सुननाइ अधिकार नै।

साधारण रातिमे ओहि पोखरिमेमेढकक स्वर, पनिडुब्बीक झौटा जेकाँ हिलैत छाह, आ कखनो-कखनो गाछीक पातक फुसफुसाहट मिसल रहैत। मुदा एहि राति पानि जेना कान बनि गेल छल। सभकेँ बुझाइ रहल छल जे कमरा भीतर बन्द अंकीय लिखित हिसाबरमे जे स्वर अटकल अछि, से पानि, पात, धूलि, कुर्सी—सभकेँ सुनबाक प्रतीक्षा करा रहल अछि।

मीरा सुनवाई रोकि पाँच मिनटक विराम देली। चन्ना गाछीक पात खिडकीसँ देखाइत नहि छल, मुदा ओकर छाह देवालपर हिलि रहल छल। हुलासीक स्वर जेना हवामे आयल—‘जकर गवाही बचल, ओकरा ओ सभ दावा बनौलक।’ पनिडुब्बी पोखरिक पानि भीतरसँ हलचल कएलक।

ई वाक्य जेना कमराक देवाल फाड़ि देलक। जे लिखल पन्नामे भेटल छल, से ध्वनिमे सेहो भेटल। ध्रुवेशक हस्ताक्षर एखन निर्णायक नहि, मुदा आदेशक पद्धति स्पष्ट भऽ रहल छल।

अन्तिम संचिका ‘नया_पंजी’ खोलल गेल। पहिने बहुत काल धरि निस्तब्धता। फेर फोनपर टाइप करबाक टक-टक।

मीरा तुरन्त आदेश देली—‘एहि अंशक प्रतिलिपि अलग सुरक्षित। बच्चा सभक सुरक्षा प्राथमिक।’ अनन्या विरोध करय चाहैत छली—‘हम डरब नहि।’ मुदा मीरा हुनकर हाथ पकड़ि कहली—‘डरब नहि आ बेपरवाह रहब—दुनू अलग बात। नामक पहरुआ जीवित रहत तखने नाम बचत।’ आरुणि माथ झुका लेलक।

साँझ चन्ना गाछी लग लिखित हिसाबर नहि आनल गेल। ओकर बदला एक खाली माटिक कटोरी राखल गेल। बूढ़बा भूत पूछलथिन—‘कटोरी किएक?’ अनन्या कहली—‘आवाजक आकार नहि होइत।

चन्ना गाछीक पात सभ हवा बिनु हिलैत रहल। कारी भूत छाहमे, उज्जर प्रेत पातक कोनापर, लोथ आध मुँह खोलने, सभ जेना सुनैत रहल—ओहि लिखित हिसाबरक निस्तब्धता, ओहि स्त्रीक रोदन, मधुकरक दबाव, ध्रुवेशक सम्भावित साँस, आ नन्दक फाटल प्रतिवेदन पढ़ल जाएबाक स्वर। मीरा पाथरपर लिखली—‘स्वर भेटल, पर चेहरा एखन बाकी।’ अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखली—‘स्वरक चेहरा।’ आरुणि नीचाँ जोड़लक—‘जकर साँस पाछाँ अछि, ओकर देह खोजल जाएत।’

छोट लोकगीत

घुमाउ गे कटोरी, घर-घर कटोरी घुमाउ गे,
बून्द-बून्द दबल स्वर ओहिमे जमाउ गे।
खाली कटोरी कान बनल, बून्द-बून्द स्वर पीबै,
जकर रोदन दबल रहल, आब गीत बनि जीबै।

अध्याय १९३ आवाजक चेहरा

आवाजक चेहरा तखन देखाइ छै, जखन साँसक पाछाँ ठाढ़ लोक
गनल जाए।



पहिने भरोसा, फेर भय—ठगीक ई पाठ मधुर आवाजमे अबै छै।
मंचपर सेवा, फोनपर धमकी, कागचपर मञ्जूरी। एके चेहरा
अलग-अलग नकाब पहिरै छै।

जकर नाम सुरक्षा माँगै, ओकरा तमाशामे नै उधारू। दीपकक
चिन्ह राखू, मुदा बातक इजोत बचाउ। विज्ञानक भाषा धीम हो,
प्रतिलिपि अलग हो, मूल मुहरबन्द रहय—कारण तेज सभक
सामने कहल बात अपराधीकेँ भागबाक बाट दै छै, धीम प्रक्रिया
ओकर बाट बन्द करै छै।

अनन्या कागचपर लिखैत रहली—साँसक ठहराव, “र”क पहिने खँखार, “स”क सीटी, वाक्यक अन्तमे बाहर छोड़ल साँस। हुनका लगल जे लोकक अपराध नुकाइ सकैत अछि, मुदा कण्ठ अपन पुरान आदत नहि छोड़ैत। आरुणि कहलक—‘नाम झूठ हो सकैत अछि, चेहरा बदलि सकैत अछि, कागच काटल जा सकैत अछि।

एहि बयानक बाद आवाजक चेहरा पहिल बेर धुँधलासँ उभरल। चेहरा केवल ध्रुवेशक नहि छल। ओकर माथपर बटुकनाथक पुरान तिथिक छाह, आँखिमे चन्द्रपालक पटल, गालपर महेश्वरक मुहर, कण्ठमे मधुकरक अभ्यास आ पाछाँ राघव-सङ्केतक टूटल जाल छल।

वृद्धाक बयान सुनि बच्चासभक चेहरा बदलि गेल। अनन्या हुनकर नाम लिखय चाहैत छली, मुदा मीरा रोकली—‘एहि नामक सुरक्षा पहिने।’ तखन अनन्या नामक ठाम पन्नापर एक छोटा दीपक बनौली। आरुणि पूछलक—‘नामक ठाम दीपक?’ अनन्या कहली—‘जखन नाम नुकायब आवश्यक हो, तखन ओकर इजोत लिखू।’ मीरा दूरसँ ई बात सुनली।

सेवा केन्द्रक देवालपर टाँगल ध्रुवेशक पुरान चित्र उतारल गेल। चित्रमे ओ मुस्की दैत छल। पाछाँ गरीब बच्चासभक संग कम्बल-वितरणक दृश्य छल।

साँझमे चन्ना गाछी लग खाली कटोरी फेर राखल गेल। एहि बेर कटोरीमे पोखरिक पानि नहि, वृद्धाक बयान लिखल कागचपरसँ उठल धूपक राख मिलाओल गेल। हुलासी कटोरी लग झुकली।

राति उतरला पर मीरा दिनक कागच समेटली। ध्रुवेशक आवाजक तुलना, मधुकरक बयान, वृद्धाक सुरक्षित गवाही, बैंक-सभा विडियो, उद्घाटन भाषण, लिखित हिसाबर अंश आ नन्दक प्रतिवेदनक पाँति—सभ अलग-अलग लिफाफामे राखल गेल। प्रत्येकपर क्रमाङ्क छल।

अनन्या रातिक अन्तमे पंजी बन्द करबासँ पहिने पन्नापर लिखली—‘आइ चेहरा पूरा नहि देखाइ देलक, मुदा ओकर साँसक दरबाजा भेटल।’ आरुणि नीचाँ लिखलक—‘चेहराकेँ समन पठाओल जाएत।’ चन्ना गाछीक पात एक बेर हिलल। दूर कतहु कुरुर भुकल। हरिहर सेवा केन्द्रक ऊपरक मुहरबन्द कमरा जेना भीतरसँ सुनि रहल छल।

छोट लोकगीत

ललना रे, पहिल साँसक सोहर हे,
प्रत्येक चेहरामे उगल अपन-अपन भोर हे।
पहिल साँससँ चेहरा उगै, नामसँ जीवन फूले,
अन्हार गर्भक पाछाँ भोरक पाँखि खुले।

अध्याय १९४

साँसक समन

समन देहपर नहि, साँसपर जारी होइ छै— आ साँसकें कोनो वकील नहि।



कागच फाटकपर चस्पा होइत छै, मुदा असली समन भीतरक घण्टीकें हिला दै छै। टायरक निशान, अचानक बजल फोन, वकीलक पत्र, अनुपस्थितिक बहन्ना—ई सभ घेराक महीन रेखा छै। एक रेखा कमजोर हो सकै छै।

डरायल गवाहक स्मृति रसीद बनै छै, मुदा ओकर डरकें तमाशा बनायब न्याय नै। पहिने पानि, आसन, मौन आ लिखबाक समय चाही। तखने काँपैत बात प्रमाणक बीज बनि सकै छै।

समन देबाक लेल गदाधर, दू सिपाही, विनीत झाक कनिष्ठ सहायक आ अनन्याक आग्रहपर बच्चासभमे सँ केवल आरुणि गेल। मीरा अनन्याकेँ रोकली—‘सभ ठाम सभ नहि जाए। जे लिखैत अछि, ओकरा कखनो-कखनो प्रतीक्षा सेहो लिखब पडत।’ अनन्या पाथर लग रहि गेली, मुदा हुनकर दृष्टि ओहि बाटक धूलि धरि चलि गेल जे हरिहर सेवा केन्द्रसँ ध्रुवेशक नब पक्क घर दिस जाइत छल।

एतय चन्ना गाछी लग अनन्या प्रतीक्षा लिखि रहल छली। प्रतीक्षा सेहो घटना होइत अछि—ई ओ सीखि चुकल छली। हुनकर पन्नापर पाँतिसभ बनैत गेल—‘समन गेल।

बूढ़बा भूत एहि वाक्यसभक छाह चन्ना गाछीमे पहिनहि सुनि लेलनि। रातिक पहिल अन्हार झरितहि ओ डारिसँ उतरि कहलथिन—‘समन केवल जीवित अदालतक नहि होइत। मृतकसभ सेहो समन पठबैत अछि।’ हुलासी अपन बिनु हाथक देहसँ हवामे रेखा खिंचली।

चन्ना गाछीमे एहि राति कबड्डी नहि, समन-पाठ भेल। मृतकक नाम एक-एक कऽ पुकारल गेल, आ प्रत्येक नामक बाद हवामे खाली ठाम राखल गेल—जाहिमे ध्रुवेशक साँस आबि उत्तर दए। ‘बिसेसर पासवान’—हवा स्थिर।

राति उतरला पर हरिहर सेवा केन्द्रक सीलबन्द कमरा शान्त रहल, मुदा ध्रुवेशक घरक ऊपरक खिड़की एक क्षण लेल इजोतसँ भरि फेर बन्द भऽ गेल। दूरसँ ओ इजोत एहन लगल, जेना केओ भीतर कागच पढ़ि रहल हो वा कागच जरा रहल हो। केओ निश्चय नहि कऽ सकल।

मोहनक बयान सुनि सत्यव्रत मेहता अपन पुरान डायरीक पन्ना पलटलनि। नन्द आरुणिक लेखमे एक ठाम लिखल छल—‘जतय रसीद नहि, ओतय स्मृति रसीद बनू।’ सत्यव्रत ई पाँति पढ़ि सभकेँ सुनौलनि। विनीत झा कागचपर लिखलनि—‘मौखिक वहन-सूत्र।

अनन्या अगिला पन्ना खोलली। हुनकर हाथ थाकल छल, मुदा अक्षर स्थिर। ओ लिखली—‘रोकल खाता।’ आरुणि ओकर नीचाँ लिखलक—‘धनक बाट बन्द होइतहि डरक आवाज बदलैत अछि।’ मीरा दीप बुतौली।

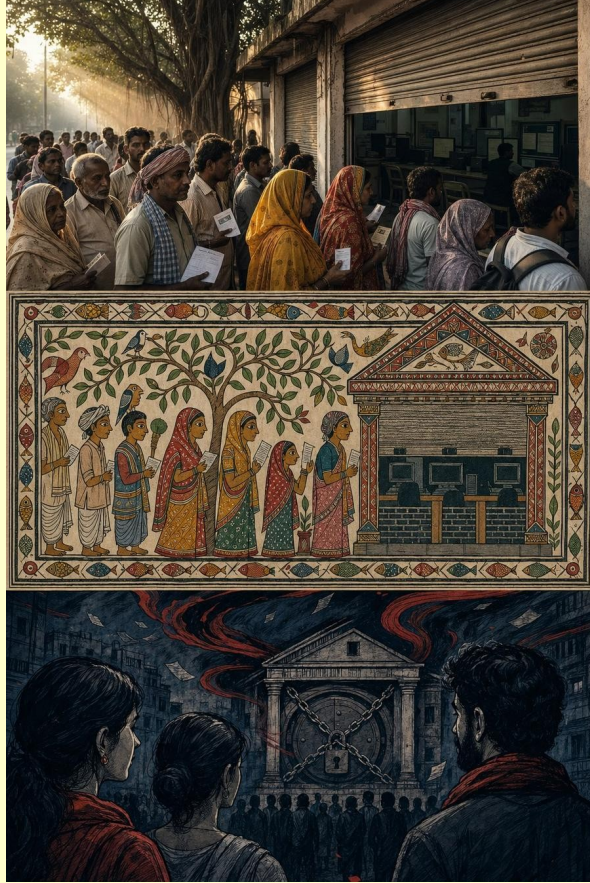
छोट लोकगीत

राखू हे लेखा, मोनक भीतर लेखा राखू हे,
कागच छुटौ, नेहक रसीद नहि हराउ हे।
कागचक रसीद छुटि सकै, मोनक लेखा रहय,
जे नेहसँ काज कएल, ओकर गवाही बहय।

अध्याय १९५

रोकल खाता

खाता रोकलापर पहिल बेर बुझाई छै— धन सेहो डेराइत अछि।



रोकल खाता केवल तिजोरीक दरबाजा बन्द करब नहि छै। ई निर्णय करबाक अनुशासन छै जे अपराधक धारा रोकय, मुदा गरीबक चूल्हि नहि बुझय। जाली सेवाक मीनार ढहय, मुदा वृद्धाक पेंशन आ छात्रक आशा सुरक्षित रहय।

नाम, फोन, अँगूठा, मुहर आ निकासीक तिथि—ई सभ अलग-अलग देखला पर छोट निशान छै। एक-दोसरासँ जोड़िते ओ धनक गुप्त नाडी बनि जाइ छै। जतय डरक आवाज उठल, ओतयसँ पाइ चलल।

अनन्या पाथरपर लिखली—‘रोकल खाता।’ आरुणि नीचाँ जोडलक—‘धनक बाट बन्द होइतहि डरक आवाज बदलैत अछि।’ मीरा पढ़ि कऽ किछु देर चुप रहली। ओ बुझैत छली जे खाता रोकब न्याय होयबाक आरम्भ अछि, समाप्ति नहि। गलत खाता रोकल गेल तँ गरीबक चूल्हि बुझत।

अनन्या सुरजमुखीक बयान लिखैत समय रुकि गेली। हुनका मोन पड़ल—चन्ना गाछीमे बूढ़बा भूत कहने छलथिन, देह गोहि खाइत अछि, नाम नहि। आइ पाइ खायल गेल छल, मुदा नाम फेर छोटा कएल गेल।

ई आँखिसँ देखल ज्ञान स्वीकार नहि छल, मुदा धागा छल। सत्यव्रत मेहता लिखलनि—‘बैंक-प्रबन्धकः दबावक फोन, ध्रुवेश-निर्देशक रूपमे प्रचलित उल्लेख। पुष्टिकरण अपेक्षित।’ अनन्या कने असन्तुष्ट भेली।

साँझ धरि खातासभक नक्शा बनि गेल। एक रेखा गामसँ बैंक, बैंकसँ सेवा केन्द्र, सेवा केन्द्रसँ ध्रुवेशक न्यास, न्याससँ शहरक उपकरण-दोकान, उपकरणसँ आवाज-लिखित हिसाबक, लिखित हिसाबकसँ फोन, फोनसँ डर, डरसँ फेर गरीबक खाता। चन्ना गाछीक कबड्डी जकाँ, मुदा मैदान अङ्कक।

रातिमे चन्ना गाछी लग एक खाली बही राखल गेल। ओ बही बैंकक नहि, बच्चासभक छल। पहिल पन्नापर अनन्या लिखली—‘रोकल खाताः पीडितक दावा-पंजी अलग, अपराधक खाता अलग।’ हुलासी देखली आ मुस्कुरेली—‘जखन हाथ नहि छल, अँगूठाक चिन्ह देखिकऽ दुख होइत छल।

सूर्योदयसँ पहिने चन्ना गाछीक पातपर ओस जमल। पनिडुब्बी ओसक एक बून्द बहीपर रखली। बून्द गोल रहि गेल, पन्नामे समायल नहि।

अनन्या पन्ना खोलि लिखली—‘जलसमाधिक अर्थ।’ आरुणि नीचाँ जोडलक—‘जे पानिमे डूबल, ओकर देह गेल। जे विस्मृतिमे डूबल, ओकर नाम। आब नाम ऊपर उठत।’ मीरा दीपक बुतौली।

छोट लोकगीत

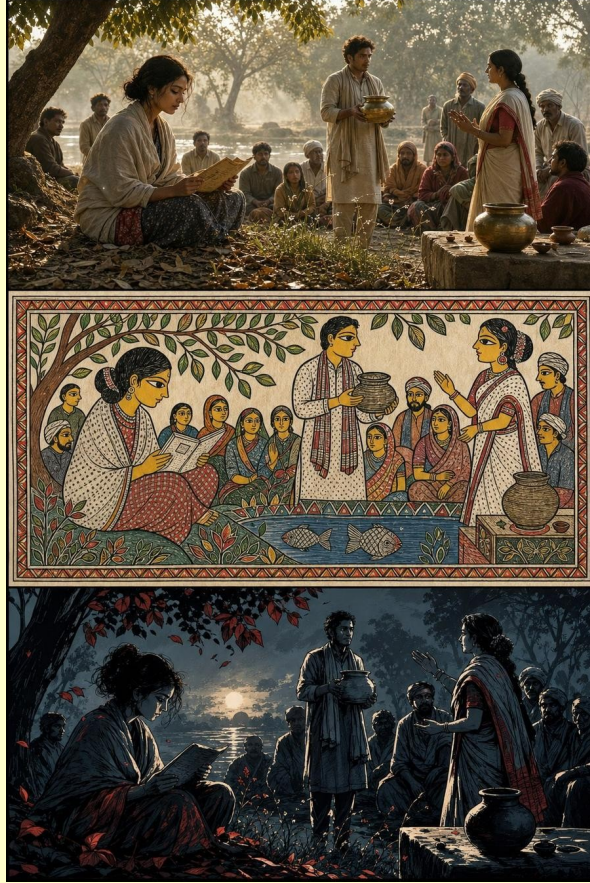
खोलू हे खाता, भोरे-भोर खाता खोलू हे,
थरथर काँपैत धनकँ साँचसँ तौलू हे।
खाता काँपै, सिक्का डेराइ, सत्य ठाढ़ मुस्काय,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

जनक एकजुट प्रश्नसँ लोभक मीनार ढहाय ।

अध्याय १९६ जलसमाधिक अर्थ

जलसमाधिक अर्थ पानि नहि जनैत— नाम जनैत अछि।



पानि अपराधी नै छै। पानि तऽ जे भेटैत छै ओकरा ढोइत चलि जाइए। असल डुबेनिहार ओ बन्दोबस्त छै जे देह गेलाक बाद नामो छीनि लैत छै, मजदूरकें अनुपस्थित लिखैत छै, स्त्रीक रोअनकें कुलक लाज बनबैत छै, आ वृद्धाक भरोसाकें अङ्कमे बदलि दैत छै।

गमछा, कटोरा, पात, पंजी, फाटल गमछा हारक चिन्ह नै, बचल स्मृतिक ध्वज छै। काँसक कटोरामे इनार, कमला-बलान आ गंगाक जल मिलैत छै तँ तीनटा नदी नै, तीन प्रकारक गवाही एक संग बैसैत छै—घरक भीतर दबाओल मृत्यु, खेत-माटिक कटान,

आ पुलक नीचाँ डूबल मजदूरक देह। पातपर लिखल पूरा नाम
एहि जलकै अर्थ दैत छै।

मीरा हुनकर कटोरामे पहिल बून्द पानि ढारली। ई पानि गामक
इनारसँ आनल गेल छल। हुलासी ओहि इनारक दिशामे अन्हार
जकाँ उपस्थित छली।

बच्चासभकै ई कथा फेर सुनाओल गेल—चन्ना गाछीक कबड्डी,
बूढ़बा भूत, हुलासी, पनिडुब्बी, पुलक छपाक, नन्दक दैनन्दिनी,
बाकै भेटल गमछा आ फकीरा साहनीक वाक्य। एहन लगल जे
कथा अन्त दिस नहि, आरम्भ दिस घुरि रहल अछि। मुदा ई घुरब
पाछाँ हटब नहि छल।

चन्ना गाछीक छाह नमहर होइत गेल। कारी भूतसभ गोल घेरा
बनाकऽ बैसल। उज्जर प्रेत आइ डारिपर नहि, लोकक पाछाँ-
पाछाँ टाढ़ छल, जेना मृतकसभ जीवितकै सहारा दऽ रहल हो।

अनन्या ओ शब्द लिखली—‘ऊपर’। आरुणि पृच्छलक—‘ऊपर
के?’ अनन्या उत्तर देली—‘सभ।’ मीरा मुस्कुरेली, मुदा आँखि
भीजल। ओ कहली—‘हँ, जे-जे डुबाओल गेल—देह, नाम,
आवाज, माटि, भरोसा, पेंशन, गवाही, बच्चाक असल नाम—सभ
ऊपर।’ ई सुनि भीडमे केओ ताली बजाबय चाहलक, पर हाथ
थमि गेल।

राति उतरलापर सभ लोक धीरे-धीरे घुरि गेल, पर कटोरा जड़ि
लग रहल। अनन्या, आरुणि, मीरा, देविका, सत्यव्रत, विनीत आ
अभय अन्त धरि बैसल रहल। केओ भविष्यक योजना नहि
बाजल।

आरुणि पंजीक अन्तिम पाँति लिखलक—‘जलसमाधि ओ नहि जे
देहकै पानि लऽ जाए। जलसमाधि ओ अछि जे नामकै लोकक
स्मृतिसँ काटि दे। आइ पहिल नाम ऊपर आयल।

शीर्षक अपने-आप जकाँ उतरि आयल—‘ऊपर उठल नाम।’
आरुणि ओकर नीचाँ लिखलक—‘जखन नाम जलसँ ऊपर आवि
जाए, तखन अपराधीक धरती काँपय लगैत अछि।’ कटोरा
रातिभरि जड़ि लग रहल। दूर गंगाक पानि एहन सुनाइ पड़ल
जेना आरम्भक छपाक आब अन्तक उत्तर पाबि रहल हो।

छोट लोकगीत

फहराउ हे गमछा, फाटलो गमछा फहराउ हे,

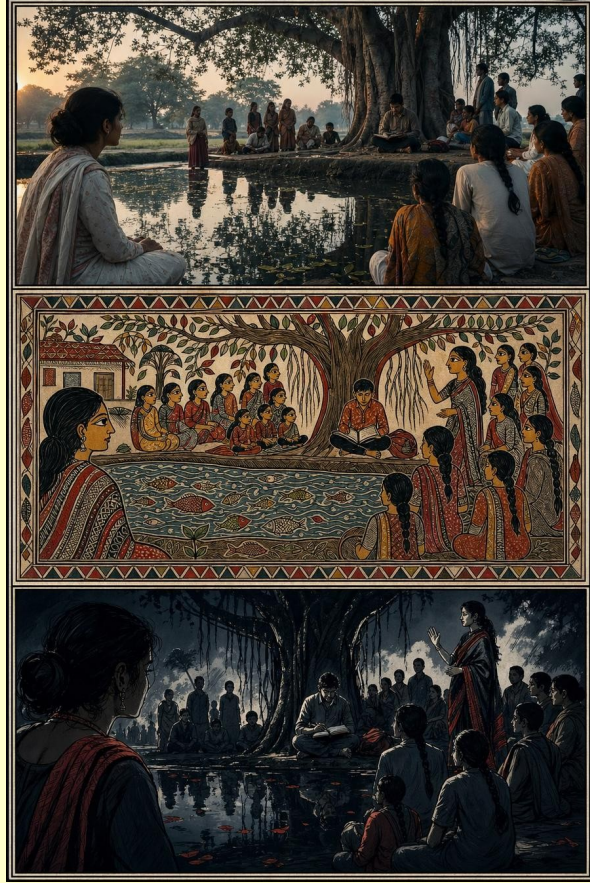
गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

श्रम-स्मृति-साहसक झण्डा बनाउ हे।
फाटल गमछा हाथमे आब हारक चिन्ह नहि,
श्रम, स्मृति आ साहसक ई झण्डा कम नहि।

अध्याय १९७

ऊपर उठल नाम

डूबल नाम जखन ऊपर उठैए, तखन पानि नहि हिलैत — हिलैत
अछि किनार।



नाम ऊपर उठेनाइ तमाशा नै छै। जकर घाव छै, ओकर मज्जुरी पहिल अर्घ्य छै। जकर घर चुप छै, ओकर चुप्पी सेहो सम्मान छै। अधूर नाम, मायक बोली, पातक अक्षर, छोदू जेना घरमे कहल जाइत छल, पंजीमे ओहि नामक ठाम अनुपस्थित लिखल रहै छै। मायक मुँहसँ जखन पूरा नाम निकलै छै, तखन पानिक सतह नै, बरखोंक झूठ हिलै छै। कागच, समय, स्थान आ साक्षी संग घरक स्मृति जुड़ि जाए, तँ किनार फेर चिन्हारि पबैत छै।

भोरमे पहिल चिरई बजली, मुदा कटोराक पानिमे कोनो तरंग नहि उठल। उनटा पानि स्थिर भऽ गेल, जेना जल स्वयं कान लगाकऽ गाछीक भीतरक आवाज सुनि रहल हो। ओसभिजल माटि, सरिसोक तेलक बासी दीप आ काँच पातक हरियर गन्ध हवामे मिलल छल।

बूढ़बा भूत डारि पर हलुक उजास जेकाँ देखाइ देलाह। हुलासी इनार दिससँ उठली। पनिडुब्बी पोखरिक पानि छोडि गाछीक छाह लग बैसली।

चन्ना गाछीक छाह लम्बा भऽ रहल छल। नाम-पाठक बीच एक बच्चा पृच्छलक—‘जँ कोनो नाम पूरा कहियो नहि भेटत तँ?’ सत्यव्रत मेहता बहुत देर सोचलनि। ‘तखन अधूरा नामकँ अधूरा कहि सुरक्षित करब।

कारी भूत आ उज्जर प्रेत एहि राति पहिल बेर एक-दोसरक सोझाँ बिनु कबड्डी ठाढ़ रहल। कारी भूतक देह सँ अन्हार नहि, थकान झरत छल। उज्जर प्रेतक देह सँ उजास नहि, पछतावा।

नाम-पाठक अन्तिम घडीमे अनन्या पंजीक खाली पन्ना खोलली। ओकरा सोझाँ पुष्ट नामक थारी, प्रतीक्षा-टोकरी, नाम-शुद्धि सूची, जल-कटोरा, माटिक ढेरी, आ पुरान मुहरक प्रतिलिपि छल। ओ लिखली—‘आइ ऊपर उठल नाम सभक पहिल सूची बनल।

ओही क्षण दूर शहरक दिशासँ गाडी चलबाक आवाज आयल। रातिमे एतेक तेज आवाज सामान्य नहि छल। डीजलक तीख गन्ध हवामे पसरल, आ कच्चा बाटपर चक्का घिसटबाक खरखराहट गाछीक पात धरि पहुँचि गेल।

अनन्या अगिला पन्ना खोलली। ओकर हाथ काँपत छल, पर अक्षर साफ उतरि आयल—‘अपराधीक धरती।’ आरुणि ओकर नीचाँ लिखलक—‘जखन नाम पानिसँ ऊपर आ माटिपर टिकि जाए, तखन भागनिहारक पएर स्वयं साक्षी बनैत अछि।’ कटोरा जडि लग रहल, पात थारीमे, प्रतीक्षा-टोकरी बाँसक छाहमे, आ चन्ना गाछी राति भरि जागल रहल।

छोट लोकगीत

देउ हे अरघ, डूबल नामकँ देउ हे,
किनार-किनार दीपक पाँति सजाउ हे।
काँपल किनार स्थिर होयत जखन दीप धरब,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

डूबल नामक सम्मानसँ उदित सूरुज करब ।

अध्याय १९८ अपराधीक धरती

अपराधीक धरती अलगसँ नहि होइ छै— वैह माटि, खाली
पएरक निशान दोसर।



जूता आवरण छै, पएर आदत। जूता बदलि सकै छै, गाडी बदलि
सकै छै, बाट घुमाओल जा सकै छै। मुदा घबराहटमे पड़ल डेग
अपन चाल, भार आ दिशा कहि दैत छै।

माटि, धूर, ओस, गवाही, रातिक अन्हारमे लोहाँक पेटी, धँसल
चक्का आ खाली पएर अलग-अलग वस्तु जेकाँ देखाइए। भोरमे
सभ एकहि वाक्यक शब्द बनि जाइए। मुदा ई वाक्य पढ़ब
सावधानीक काज छै।

चन्ना गाछीक जड़ि लग राखल कटोराक पानि एक बेर काँपल, फेर स्थिर भऽ गेल। अनन्या ओकरा दिस देखली। ओकरा लगल जे पानि कहि रहल अछि—दौड़ नै, देखू।

ओ तामसमे चिचिआयल—ई हमर निजी वस्तु अछि। मीरा दूरीसँ उत्तर देली—निजी वस्तु राति पाछाँक फाटकसँ भागैत नै। सत्यव्रत मेहता जोड़लनि—जँ निजी अछि, तँ सूची बनि जएत, साक्षीसभक सोझाँ खुलत, फेर घुरा देल जाएत।

गाडीक नम्बर, समय, स्थान, उपस्थित गवाह, संदूकक बाहरी दशा, ताला, किनारपर पुरान मुहरक हलुक चिन्ह, आ एक कोनापर चिपकल माटि। अनन्या देखली—माटि साधारण नै, हरिहर सेवा केंद्रक भीतरक कोठरीक सूखल धूर जेकाँ छल। आरुणि ओकर नमूना अलग थैलामे राखलक।

मुहर लगाबय लागल तखन ध्रुवेश अचानक पाछाँ हटि गेल। ओकर जूता माटिमे अटकल रहि गेल, पएर खाली निकलि आयल। भीड़मे दबायल हँसी उठल, मुदा बूढ़बा भूतक छाह भारी भऽ गेल।

तखन चन्ना गाछीक दिशासँ हवा आयल। हवामे पातक गन्ध, इनारक नमी, गंगाक गाद, बैंकक नोटक जरा गेल राख, आ फूलकलीक माथक माटिसभ एक संग छल। कारी भूतसभ धीरे-धीरे पाछाँ हटए लागल।

अनन्या अगिला पन्ना खोलली। ओकरा बुझाइ गेल जे आव अन्त सचमुच नजिक अछि, मुदा अन्तक अर्थ दरबाजा बन्द करब नै। एखन संदूक खुलबाक अछि, नामसभकें विधिक देह भेटबाक अछि, आ चन्ना गाछीकें निर्णय करबाक अछि जे ओ यादक चिन्ह बनत कि जीवित पहरुआ।

एहि तरहँ राति समाप्त भेल। ध्रुवेशक जूता माटिमे अटकल रहि गेल छल। ओकरा निकालबाक ककरो उताहुली नै भेल।

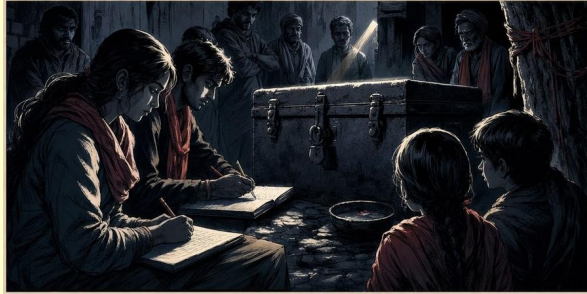
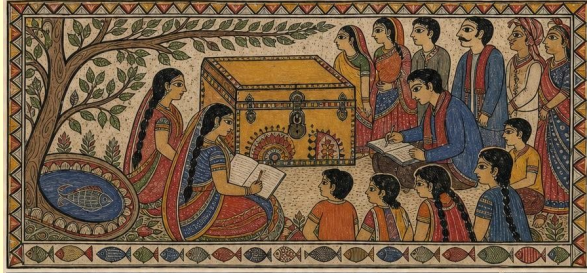
छोट लोकगीत

चलू हे संगी, जूताक पगडंडी चलू हे,
छूटल चिन्हसँ आगाँक बाट पढ़ू हे।
माटिमे छूटल जूता बाटक अन्त नहि,
ओहि ठामसँ पगडंडी उठत, साहस कम नहि।

अध्याय १९९

संदूकक भीतरक बिहान

संदूकक भीतर सेहो बिहान होइ छै— जँ ढक्कन गवाहीक हाथसँ खुजए।



पंजी, शिवनाथ, नोर, उपस्थिति, अनुपस्थित लिखल गेल देह जखन नाम सहित घुरै छै, तखन माय रोइते नै, सीधा टाढ़ होइ छै। शिवनाथ सदाक नाम कागचपर आबि कऽ केवल प्रमाण नै बनै छै। ओ तीस बरखक प्रतीक्षाकें घरक देहरी दैत छै।

मुहर, अँगूठा, स्वर, रिक्ति, जाली अँगूठा, चोरी कएल आवाज, नील पंजी, अंकीय आदेश आ खाली उत्तराधिकारी ठाम—ईसभ अपराधक अलग-अलग वस्तु नै, एकहि गोहिक दाँत छै। जे हाथ

नै छल, ओकर नामपर अँगूठा बनाओल गेल। जे बोलल नै, ओकर स्वर बेचायल।

मीरा भोरमे सभसँ पहिने कहली—संदूक खुलत, मुदा उत्सव जेकाँ नै। जे कागच भीतर अछि, ओसभ ककरो घावक पट्टी अछि। पट्टी खोलब तँ हवा लागए, चित्र-यन्त्र नै।

चौकीक छोटका कमरा एहन भरल छल जे देवाल सेहो सुनैत बुझाइट। एक कात तहसीलक कर्मचारी, दोसर कात अभय, मीरा, सत्यव्रत मेहता, अनन्या, आरुणि, देविका, फूलकली, गदाधर, बैंकक प्रतिनिधि, आ दू स्त्री जिनकर नाम रानी-खातामे चोरी कएल गेल छल। ध्रुवेशकें कोनमे बैसाओल गेल।

रातिमे सभजना चन्ना गाछीक जड़ि लग घुरि अएलाह। कटोराक पानिमे एहि बेर चौकीक प्रकाश नै, घर-घरक दीप झिलमिला रहल छल। माटिक थैला, शिवनाथक पन्नाक प्रतिलिपि, नन्दक दैनन्दिनीक छाया-प्रतिलिपि, रानी-खाताक नाम-सूची, नक्शाक प्रतिलिपि, आ खाली उत्तराधिकारी ठाम—सभ अलग-अलग पाथरपर राखल गेल।

कारी भूतसभक अन्हार पातक छाहमे घुलल। उज्जर प्रेतसभक उजास दीयाक लौमे मिलल। हुलासी इनारक दिशासँ आवाज देली—हाथक चोरी लिखल गेल।

अनन्या पन्नापर लिखली—नामक पहरा। आरुणि नीचाँ जोड़लक—अन्त तखन नै होइत जखन अपराधीक संदूक खुलि जाए। अन्त तखन आरम्भ होइ छै जखन गाम अपन आँखि बन्द करबाक अधिकार छोड़ि दे।

राति बहुत गाढ़ भऽ गेल। रिक्त संदूक चौकीमे रहल, मुदा ओकर प्रतिध्वनि चन्ना गाछीमे रहि गेल। शिवनाथक नाम पातपर टिकि गेल।

भोरसँ ठीक पहिने चन्ना गाछीक सभसँ पुरान पात टूटि कऽ नीचाँ खसल। केओ ओकरा अपशकुन नै कहल। पात सूखल छल, पर ओकर नससभ साफ देखाइत छल।

छोट लोकगीत

खोलू हे ढक्कन, संदूकक ढक्कन खोलू हे,

बरखोक बन्द साँचकें बिहानमे घोलू हे।

लोहेक संदूक खुलि गेल, भीतर भोर भेटल,

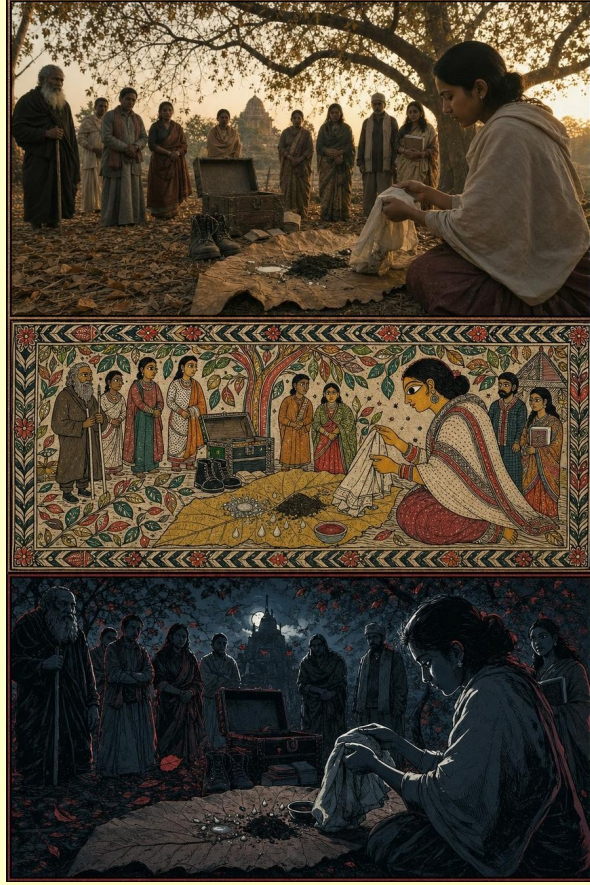
गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

अक्षरसभ पाँखि पसारि अन्हार पार उड़ल ।

अध्याय २००

नामक पहरुआ

नाम जाधरि पुकारल जाइत रहत, ताधरि ठूठोमे हरियर बिन्दु
बाँचल रहत।



पात, नस, अक्षर, जल, सूखल पातक नससभमे जे कथा बाँचल
छै, से पानिक बून्द पबितहि फेर देखाइ दै छै। सभ कहै छै—
अपराधक पेट पैघ हो सकै छै, मुदा लोक-स्मृति ओकरासँ पैघ होइ
छै।

मौन, लाभ, लाज, बाजार, बाहरी गोहिक दाँत देखाइ दै छै,
भीतरी गोहिक दाँत सुविधा बनि नुकायल रहै छै। डर, लाभ,
दिखावा, जाति, प्रतिष्ठा, नौकरी आ पीड़ाक बाजार—ईसभ नाम

बिना लिखल अपराधी छै। गाम जखन अपन मौनक नाम लिखै छै, तखन न्याय केवल दोसराक दोष नै रहि जाइए।

बूढ़बा भूत डारिसँ नीचाँ नै उतरलाह। एहि बेर जीवितसभक सभामे मृतक निर्णायक बनि बैसथि, एकर आवश्यकता नै छल। हुलासी इनारक भीतरसँ आवाज देली—“हमर हाथक बात?” अनन्या उत्तर देली—“गवाहीमे, गीतमे आ बच्चासभक पाठमे।” पनिडुब्बी पूछली—“जलसमाधि?” आरुणि कहलक—“प्रत्येक नामक संग पानि राखल अछि।

ओही क्षण कटोराक पानिमे हलचल भेल। पानिमे कोनो मृतकक चेहरा नै, अपितु गामक वर्तमान चेहरा देखाइ देलक—भूखल बच्चा, थाकल मजदूर, ऋणमे दबले किसान, फोनमे फँसल युवक, कागचसँ डरैत विधवा, बैंकक पाँतिमे ठाढ़ बूढ़, अस्पतालक बरामदा, अदालतक तिथि, स्कूलक फाटक आ चन्ना गाछीक छाह। मीरा कहली—“ईसभ जीवित अछि।

दुपहर धरि गामक लोक चन्ना गाछीक चारू कात साफ-सफाई करय लागल। केओ रंगीन फाटक बनाबय चाहलक। मीरा रोकि देली—“पहरुआकें फाटक नै चाही, बाट चाही।” केओ शिलापट्टपर पैघ नाम खुदबाबय चाहलक।

रिक्त ठामक आगाँ फूलकली दीप राखली। “जेकर नाम नै भेटल, ओकरा अन्हार नै देब,” ओ कहली। एहि वाक्यपर चन्ना गाछीक पातसभ एकसाथ हिलल।

अन्तिम शीर्षकपर अनन्या रुकली—“नामक पहरुआ।” ओ पढ़ि चुकली तँ आरुणि पूछलक—“आब?” मीरा उत्तर नै देली। ओ गाछीक बाहरी घेरापर चलय लगली। सभ लोक पाछाँ-पाछाँ चलल।

ई कथा एतय समाप्त नै होइ छै। ई ओहि मुँहसभमे जीवित रहै छै जे कहै छै—हम छी।

छोट लोकगीत

गाउ हे सगरो, ‘हम छी’क महागान गाउ हे,
पानि-पात-माटि-साँस—सभ स्वर मिलाउ हे।
पानि बजै, पात लिखै—हम छी, हम छी,
माटि कहै, साँस कहै—हम छी, हम छी।

परिशिष्ट १

गढ़ नारिकेलक सरल लोककोश

एहि परिशिष्टमे गामक माटि, पानि, गीत, श्रम, खेल, पाबनि आ लोकज्ञान सरल भाषामे बुझाओल गेल अछि।

१. गढ़ नारिकेलमे ज्ञानक अनेक रूप अछि। एकटा ज्ञान खेतक माटि छुबिते बुझि जाइत अछि जे एतय धान नीक होएत कि राहरि।
२. गढ़ नारिकेलक घर, आँगन, चूल्ह, देवाल, बर्तन, खेलौना, पूजा-वस्तु, खेतक मेड़, गहबर, पोखरिक महार—सभ माटिसँ जुडल अछि। माटि एतय निर्माणक पदार्थ मात्र नहि, जीवनक अन्तिम आश्रय सेहो अछि।
३. दैनिक जीवनमे विरामो सांस्कृतिक अछि। गाछतर बैसि पान खेनाइ, धूपसँ बचि कऽ किछु बेर गप करब, पोखरिक महारपर जाल सुखेनाइ, हाटसँ घुरैत बाटमे समाचार बाँटब, चूल्हक आगि धीम भेने पुरान कथा उठेनाइ—ई सभ निष्क्रियता नहि।
४. गढ़ नारिकेलक मुँहजबानी परम्परामे “सुनब” एकटा सक्रिय नीक-बेजायक काज अछि। खाली आवाज कानमे पड़ब सुनब नहि।
५. लोकगीतक भाषा सामान्यतः बोलचालक निकट रहैत अछि। शब्द कठिन होएबाक आवश्यकता नहि।
६. लोकधुन सीधा होइत अछि, मुदा साधारण नहि। ओकर सरलता सामूहिक गायनक आवश्यकता सँ जन्मैत अछि।
७. नाविकक पुकारमे उत्तर सुरक्षा-संकेत अछि। मुख्य नाविक “खिंचू” कहैत अछि, समूह ध्वनि दैत अछि।
८. वाद्य स्थानीय कारीगरीक परिणाम अछि। ढोलकक काट, चाम, रस्सी वा पट्टा।
९. बीआक गीत आशाक गीत अछि। छोट दानामे पूरा वर्षक भोजन बसल अछि।
१०. नाविक गीतक मूल भाव संग-साथ अछि। असगरे नाविक सेहो नदीसँ संवाद करैत अछि।

११. सोहर नवजातक स्वागत मात्र नहि। ओ माएक प्रसव-पीडा, दगरिनक ईलम, परिवारक आशा, कुलक स्मृति, बच्चाक भविष्य आ सामाजिक आकांक्षा सभ व्यक्त करैत अछि।

१२. अरिपन एकटा मौन गीत अछि। चाउरक पीठार, अँगुरीक रेखा, गोल, पात, पएर, कमल, जाल, सूर्य, चन्द्र, कोहबर—ई आकृति विधि आ सौन्दर्य दुनू अछि।

१३. घड़ी पाबनि, गहबरक पूजा, चौदहो देवान, लोकदेवताक भाव, भगैत—एहि सभमे आधिकारिक पुरोहिती ज्ञानक संग स्थानीय अनुभव जुड़ैत अछि। कखनो देवता सपनामे संकेत दैत छथि, कखनो गायकपर भाव अबैत अछि, कखनो कथा रोग वा संकटकें अर्थ दैत अछि।

१४. पहेली बच्चाकें पर्यावरण देखब सिखबैत अछि। पात, फल, औजार, पशु, चन्द्र, सूरज, नदी, घरक वस्तु—उपमा रूपमे अबैत अछि।

१५. आख्यान-गीत लोकक नीक-बेजायक शिक्षा अछि, मुदा उपदेशक रूपमे नहि। श्रोता पात्रक कर्म, परिणाम आ गामक लोकक प्रतिक्रिया सुनि स्वयं निर्णय करैत अछि।

१६. आधुनिक ठगी, नकली फोन, अपन निजी बातक अधिकारक चोरी, फोनक पर्दाक भय, ऑनलाइन कर्ज आ यन्त्रपर चलयवला धमकी दऽ कऽ दबावक विषय सेहो लोकगीतक बाहर नहि। उज्ज्वल झाक त्रासदी पुरान विरह वा भय-गीतक नव प्रसंग बनि सकैत अछि।

१७. लोक-संस्कृति केवल लम्बा गीत वा कथा नहि। छोट कहबीमे पीढ़ीक अनुभव सिमटल रहैत अछि।

१८. मुदा स्थानीयता अस्पष्टता नहि बनए। जँ गीत पुस्तकमे छपैत अछि, आवश्यक ठाम कठिन शब्दक छोट अर्थ देल जा सकैत अछि, मुदा मूल स्वर नहि बदलल जाए।

१९. “गोहि सभक बीच जलसमाधि”क अध्यायारम्भ वा अध्यायान्त लोकगीत सेहो एहि परम्पराक आधुनिक विस्तार बनि सकैत अछि। लिखल होइतहुँ ओकर धुन देल अछि, टेक सामूहिक बनाओल जा सकैत अछि, गायक पद बढ़ा सकैत अछि।

२०. समयक संग इनार घटैत अछि, चापाकल बढ़ैत अछि। नार-पुआरक घरक संग ईटा-सीमेण्ट।

२१. मुदा परदा सामूहिक गायनकेँ व्यक्तिगत उपभोगमे बदलि सकैत अछि। लोक स्वयं गाबैक बदला विडियो देखैत रहि जाए।
२२. सोहर—जनम, नव जीवन, घरमे नव स्वर, माएक पीड़ा आ परिवारक आनन्द। सोहरक धुन केवल शिशु जन्म नहि।
२३. झूमर—मध्यम लय, गोल गति, नृत्य, सामूहिक आनन्द, प्रेम, व्यंग्य वा कथा। एकर अनेक स्थानीय रूप सम्भव।
२४. निर्गुण—देह, आत्मा, माया, सत्य, जाति-पार मनुष्यता आ जीवनक अस्थिरतापर विचार। कम वाद्य वा एकल कण्ठमे प्रभावशाली।
२५. आँगन गीत—घरक दैनिक काज, बच्चा, सम्बन्ध, हँसी, स्त्री-संवाद, चूल्हि, अन्न आ ऋतु। बिना वाद्य वा हलुक ताली।
२६. एक संस्करणकेँ “शुद्ध” कहि आन संस्करणकेँ गलत नहि ठहराओल जाए। वृद्ध, स्त्री, युवा, अलग टोल, परदेशी समूह—सभक रूप दर्ज हो।
२७. बा लोकस्मृतिक नीक-बेजायक आधार छथि। हुनका लेल वस्तु निर्जीव नहि—अकेले घुरल जूता पूरा भीड़क संकेत, भीजल कागच गन्धक प्रमाण, पात पुरखाक लेख।
२८. नन्द आरुणि आधुनिक अभियन्ता होइतहुँ गढ़ नारिकेलक सुननाइ-परम्पराक वारिस छथि। हुनकर संघर्ष एहि बातक अछि जे संख्या पाछाँ मनुक्ख देखल जाए।
२९. दुनू गीत अध्यायक कथा सँ गहीर जुड़ल रहए, सामान्य सजावटी पद नहि। पात्रक वर्तमान नाम, घटना, वस्तु, मौसम, स्थान आ नीक-बेजायक प्रश्न धुनमे रूपान्तरित हो।
३०. गढ़ नारिकेलक लोकगीत तें केवल गामक मनोरंजन नहि। ओ जीवनक लय, इतिहासक वैकल्पिक बही, श्रमक साथी, स्त्रीक खुलल कण्ठ, बच्चाक पाठशाला, प्रकृतिक ज्ञान, अन्यायक आलोचना, मृतकक यादक चिन्ह आ भविष्यक चेतावनी अछि।
३१. खिस्सा—गहबरमे राखल दीप तेज हवा मे सेहो नहि बुझैत, जँ गाममे कियो असहाय लोकक संग ठाढ़ हो। मुदा दम्भक पूजा दिन दीप बेर-बेर बुझि जाइत।
३२. खिस्सा—छोट डबरा सुखलापर लोक ओकरा बेकार मानि माटि भरबाक सोचलक। ओहि राति चानक पूरा प्रतिबिम्ब केवल ओहि डबरामे देखायल, पोखरिमे नहि।

३३. खिस्सा—बान्ह टूटबाक खबर आयल तँ टोल-टोलक लोक बोरा, माटि, बाँस आ रस्सी लऽ दौड़ल। गीतक प्रत्येक टेकपर एक बोरा रखल गेल।

३४. दादीक गाँठ, नेनाक गाँठ—संगे बान्ह उतारू हो।

३५. खिस्सा—सूखल धारक बालुपर फँसल नाव निकालबाक समय लोक रस्सी पकड़ि अलग-अलग खिंचैत रहल, नाव नहि सरकल। आरुणि नन्दन ताल गनलक, अनन्या टेक उठेलक, आ तेसर चोटपर नाव खिसकि आयल।

३६. खिस्सा—पहिल हर चलबासँ पहिने किसान माटिक ढेला हाथमे मसलि नमी देखैत। बड़दक गरदन थपथपा कहैत—“काज साझाक।” लोकविश्वास अछि जे पशुकेँ गारी दऽ जोतल खेतमे अन्नक स्वाद कड़ुआ होइत।

३७. कारण चिन्हल, उपचार सटल, खेत फेर हरियाएल।

३८. खिस्सा—मड़ाइ दिन पवनक दिशा देखल जाइत, ताकि भूसी एक कात आ अन्न दोसर कात जाए। एक बेर हवा पलटल, मुदा गीतक टेक “रकू-रकू” सुनि सभ हाथ थामि गेल।

३९. खिस्सा—बढ़ही, कमार, चर्मकारी, कुम्हार आ बाँसक कारीगर सभ अपन औजारक आवाजसँ एक-दोसराक काज चिन्हैत। एक दिन चन्ना गाछी लग सामूहिक मरम्मति भेल—कियो बाँस चीरलक, कियो काँटी बनौलक, कियो रस्सी, कियो माटिक दीया।

४०. खिस्सा—उपनयनक अवसरपर आरुणि नन्दनकेँ केवल मन्त्र नहि, जल, माटि, श्रम आ सत्यक दायित्व बुझाओल गेल। बा कहलीह—“सूत्र देहपर, जिम्मेदारी मोनपर।” बच्चा सभ एक पद जोड़लक—“जे नाम सुनए, सेहि द्विज होए।”।

४१. खिस्सा—वृद्ध लोकक धीम चालकेँ बेकार समय नहि मानल जाइत। बा बैठल-बैठल बीआ चिन्हैत, कथा कहैत, बच्चाक गलती देखैत आ पुरान बाढ़िक निशान बतबैत छथि।

४२. खिस्सा—बा बच्चा सभकेँ सिखबैत छथि जे खाली मनुक्खक पियास नहि देखू। देहरीक कात जाहि विषयपर विचारीक छोट पात्र, गोहालमे स्वच्छ जल, औजार सुखायल ठाम, बीआक डब्बा ऊँच, घैल ढाकल—ई सभ घरक अनुशासन अछि।

४३. खिस्सा—विवाहक भोजनमे पातरि पर अन्न रखबाक क्रम सेहो अर्थपूर्ण छल—नमक छोट, भात उदार, मिठास अन्तमे। खोईछमे अन्न, दूभि, पान आ हल्दी राखि आशीष देल गेल।

४४. खिस्सा—भगवतीक पूजा दिन स्त्री सभ केवल परिवारक सुख नहि, सरयू सन अदृश्य श्रमिक स्त्रीक मान माँगलनि। भोगक पहिल पातरि श्रम करनिहारक नामपर राखल गेल।

४५. खिस्सा—धर्मराजक कथा सुनबैत बा कहैत छथि जे अन्तिम न्यायमे धन नहि, काजक छाप तौलल जाइत। एक पात्रमे पानि, दोसरमे श्रमिकक नाम राखि बच्चाकेँ बुझाओल गेल—नाम बिनु न्याय अधूरा।

४६. खिस्सा—दुर्गापूजाक मेला गामक रंग, व्यापार, बाजा आ भेटक अवसर अछि। मूर्ति बनबैत माटि अनेक टोलसँ आनल जाइत, ढोल अनेक हाथक कारीगरीसँ बनैत, भोग सामूहिक।

४७. नेना पुछल—'झूठ?'। बा कहलनि—'जोरक जबान'।

४८. खिस्सा—शहरक छोट कोठरीमे गढ़ नारिकेलक लोक सामा-चकेवा, सोहर, छठि आ विवाहगीत गबैत। पोखरि नहि तँ बाल्टिक जलमे चान देखैत, माटि नहि तँ छोट पात्रमे गामक माटि राखैत।

परिशिष्ट २

अनाम ग्रहक गीत

ई गीत सभ स्मृति, पृथ्वी, नाम आ घरक महत्त्व कहैत अछि।

अध्याय १०१ — अनाम ग्रहक आमन्त्रण

गीत: पृथ्वीक उपहार लिअ

सजाउ हे झोरा, यात्राक झोरा सजाउ हे,
माटिक गन्ध, मायक गीत—एतवे धन लऽ जाउ हे।

दूर ग्रह जँ बुलाबै, संग की लऽ जाएब?
माटिक गन्ध, मायक गीत, नामक दीप सजाएब।
धन नहि, हथियार नहि, साझा नेहक बात,

लोकगीत: दूर ग्रहक बुलाहट

पूछलक हे ग्रह, 'संग की आनब?' पूछलक हे,
नामक साँस, माटिक गन्ध, नेनाक हाथ लेब हे।

दूर ग्रह आमन्त्रण देलक, पूछलक—संग की आनब?
हम नामक साँस, माटिक गन्ध, बच्चाक हाथ लऽ जानब।
यानक धुआँ नहि, कबड्डीक रेखा उगल,

अध्याय १०२ — ग्रहक बीच कबड्डी

गीत: ताराक पारीमे नाम

जाउ हे खिलाड़ी, ताराक पारी जाउ हे,
साँस बान्हल, नाम खुलल—दुनू संग निबाहू हे।

साँस रोकू, नाम बाजू, ताराक पारी जाउ,
सीमा नभक हो तइयो अपन जड़ि नहि बिसराउ।
एक पारी पृथ्वी लेल, दोसर मानवता,

लोकगीत: ग्रहक पारी

रोकू हे साँस, नाम बाजि घुरू हे,

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

जतऽ खेल पहुँचत, ओतऽ पाठ बिनु ने रहत हे।

साँस रोकू, नाम बाजू, ताराक पार घुरू,
धरतीक माटि हथेलीमे, अन्हारक रेखा छुरू।
ग्रहक बीच खेलोमे वैह पुरान नियम,

अध्याय १०३ — अनाम ग्रह पर नाम-पाठ

गीत: नामक धागा आकाशमे

झूलू हे धीरे, ताराक झूला झूलू हे,
एक छोर पुरखाक हाथ, दोसर नेना बूझू हे।

ताराक बीच तनल धागा, नामक झूला डोलै,
एक छोर पुरखा पकड़े, दोसर नेना खोलै।
आकाश गहीर हो तइयो धागा टूटत नहि,

लोकगीत: तारामे तनल नाम

तनल हे धागा, ताराक बीच नामक धागा तनल हे,
धरतीक एक पुकार सँ ब्रह्माण्डो जागल हे।

ताराक बीच नामक पातर धागा तनल,
कबड्डीक स्वर यात्रा-मन्त्र बनि चलल।
जतय नाम नहि, जीवनक साँस आधा,

अध्याय १०४ — गढ़ नारिकेल फेर पृथ्वी चुनैत अछि

गीत: पृथ्वी हमर चयन

चुनू हे पृथ्वी, फेर-फेर पृथ्वी चुनू हे,
शीशा-महल सँ नीक अपन कादो गुनू हे।

स्मृति-बिनु शीशा-महलसँ अपन कादो नीक,
माटिक गन्धि, पानिक स्वर, पीपरक छाह अतीव।
पृथ्वी चुनब दीनता नहि, प्रेमक पैघ प्रमाण,

लोकगीत: पृथ्वीए चुनलहुँ

चुनलहुँ हे पृथ्वी, फेर-फेर पृथ्वीए चुनलहुँ हे,
गुम्बदक स्मृति-विहीनता सँ अपन कादो नीक बुझलहुँ हे।

स्मृति-विहीन गुंबदसँ अपन कादो नीक,
कमला-बलानक गन्ध, फाटल मेड़ अतीव।
क्रमांकित आवास नहि, नामक देहरी चाही,

परिशिष्ट ३

न्याय बुझबाक सरल कथा

न्याय केवल अदालतक शब्द नहि। साँच देखब, कारण बुझब, प्रमाण जाँचब आ सभक सम्मान राखब सेहो न्याय अछि।

अध्याय ५७ — गंगेशक प्रश्न

कादम्बरीक अन्तिम पन्ना-ग्रन्थ आ विघ्न

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय ५८ — चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोग

किरणावलीक निर्विघ्न यात्रा

कखनो किछु नहि देखाइ पड़बो एकटा जानकारी होइत अछि। मुदा अन्हार, दूरी वा ध्यानक कमी कारण वस्तु नुकायल रहि सकैत अछि। तें “एतय किछु नहि अछि” कहबाक पहिने ठाम आ परिस्थिति नीकसँ जाँचू।

अध्याय ५९ — राघव सिग्नलक नव कोड

दूषण-पञ्जीक खाली पन्ना

कखनो किछु नहि देखाइ पड़बो एकटा जानकारी होइत अछि। मुदा अन्हार, दूरी वा ध्यानक कमी कारण वस्तु नुकायल रहि सकैत अछि। तें “एतय किछु नहि अछि” कहबाक पहिने ठाम आ परिस्थिति नीकसँ जाँचू।

अध्याय ६० — सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन

चर्मकारिणीक दीप

कखनो किछु नहि देखाइ पड़बो एकटा जानकारी होइत अछि। मुदा अन्हार, दूरी वा ध्यानक कमी कारण वस्तु नुकायल रहि सकैत अछि। तें “एतय किछु नहि अछि” कहबाक पहिने ठाम आ परिस्थिति नीकसँ जाँचू।

अध्याय ६१ — पहिल नाम-उत्सव

मामागामक चिलम

धुआँ देखि आगिक अनुमान कएल जाइत अछि। मुदा पहिने बुझबाक चाही जे ई धुआँ सचमुच आगिसँ उठल अछि कि कोनो दोसर कारणसँ। सही कारण भेटलापर अनुमान भरोसायोग्य बनैत अछि।

अध्याय ६२ — ठूठमे हरियर बिंदु

श्मशानक प्रश्न

सीप दूरसँ चानी जकाँ चमकि सकैत अछि। आँखि पहिल बेर धोखा खा सकैत अछि। तें निर्णय करबाक पहिने फेरसँ देखब, छूबि जाँचब आ आन प्रमाण मिलेनाइ जरूरी अछि।

अध्याय ६३ — गढ़ नारिकेल विरासत-परियोजना

चमकैत सीप-आँखिसँ देखल ज्ञान, भ्रम आ आत्मबोध

सीप दूरसँ चानी जकाँ चमकि सकैत अछि। आँखि पहिल बेर धोखा खा सकैत अछि। तें निर्णय करबाक पहिने फेरसँ देखब, छूबि जाँचब आ आन प्रमाण मिलेनाइ जरूरी अछि।

अध्याय ६४ — स्मृति पर निविदा

पीयर शङ्ख

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय ६५ — ब्रूमक पुनरागमन

तरत्थीपर धातरीम

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय ६६ — हार्वर्डक शोध-दल

खाली आसन

कखनो किछु नहि देखाइ पड़बो एकटा जानकारी होइत अछि। मुदा अन्हार, दूरी वा ध्यानक कमी कारण वस्तु नुकायल रहि सकैत अछि। तें “एतय किछु नहि अछि” कहबाक पहिने ठाम आ परिस्थिति नीकसँ जाँचू।

अध्याय ६७ — मीरा आ दृष्टिक अधिकार

एककालिकचक्र

सीप दूरसँ चानी जकाँ चमकि सकैत अछि। आँखि पहिल बेर धोखा खा सकैत अछि। तें निर्णय करबाक पहिने फेरसँ देखब, छूबि जाँचब आ आन प्रमाण मिलेनाइ जरूरी अछि।

अध्याय ६८ — देविका बनाम श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग

कारी घटक स्मृति

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय ६९ — नामक चोरी

पर्वतपर धूम-चिन्ह देखि बुझल बातक यात्रा

धुआँ देखि आगिक अनुमान कएल जाइत अछि। मुदा पहिने बुझबाक चाही जे ई धुआँ सचमुच आगिसँ उठल अछि कि कोनो दोसर कारणसँ। सही कारण भेटलापर अनुमान भरोसायोग्य बनैत अछि।

अध्याय ७० — पनिडुब्बीक गवाही

तप्त लौह पिण्ड

धुआँ देखि आगिक अनुमान कएल जाइत अछि। मुदा पहिने बुझबाक चाही जे ई धुआँ सचमुच आगिसँ उठल अछि कि कोनो दोसर कारणसँ। सही कारण भेटलापर अनुमान भरोसायोग्य बनैत अछि।

अध्याय ७१ — नकली भूतक जुलूस

देवदत्तक रातिक भोजन

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय ७२ — चन्ना गाछीक हँसी

देवदत्त घरसँ बाहर

कखनो किछु नहि देखाइ पड़बो एकटा जानकारी होइत अछि। मुदा अन्हार, दूरी वा ध्यानक कमी कारण वस्तु नुकायल रहि सकैत अछि। तें “एतय किछु नहि अछि” कहबाक पहिने ठाम आ परिस्थिति नीकसँ जाँचू।

अध्याय ७३ — बटुकनाथक स्वप्न-दरबार

काक आ मित्रक पुत्र

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय ७४ — चन्द्रपालक पहिल स्वीकार

अस्पतालमे राम

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय ७५ — राघव सिग्नलक बिना नेटवर्क

कुम्हारक चाक — कर्ता, शक्ति आ मोक्ष

नब वस्तुकेँ पुरान परिचित वस्तुसँ तुलना कऽ बुझल जा सकैत अछि। तुलना तखन उपयोगी अछि जखन समानता साफ हो आ फरक सेहो ध्यानमे राखल जाए। केवल मिलैत रूप देखि दुनूकेँ एक नहि मानू।

अध्याय ७६ — लाउ किन-हंगक भारत-यात्रा

मणि आ अग्नि

धुआँ देखि आगिक अनुमान कएल जाइत अछि। मुदा पहिने बुझबाक चाही जे ई धुआँ सचमुच आगिसँ उठल अछि कि कोनो दोसर कारणसँ। सही कारण भेटलापर अनुमान भरोसायोग्य बनैत अछि।

अध्याय ७७ — हवाई अड्डापर गोहि

कथा 21 मोक्षक देहरी

कोनो बात सिद्ध करबाक लेल सही कारण चाही। कारण ओहि बातसँ जुड़ल हो, हर ठाम ठीक बैसय आ उलटा उदाहरणमे टूटय नहि। कठिन शब्द नहि, साफ कारण निर्णयकै मजबूत बनबैत अछि।

अध्याय ७८ — सत्यव्रत आ लाउक मौन-संवाद

जङ्गलमे गवय-तुलना सँ बुझल बात आ पहिचान

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकें आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय ७९ — ब्रूमक दान-पत्र

बालहाथी आ गदहा

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकें आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय ८० — हरिहरनक संतान

हरियर ब्रोकोली

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही

पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय ८१ — बत्राक अधूरा नाम

धारीदार जेब्रा

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय ८२ — अंदरक गज-ग्राह

सुग्गाक आदेश-शब्द, वाक्य आ विश्वास

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय ८३ — नारिकेल पात पाठशाला

घट आनू

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय ८४ — पहिल पाठ: उपस्थित

काठक पुतरी

सीप दूरसँ चानी जकाँ चमकि सकैत अछि। आँखि पहिल बेर धोखा खा सकैत अछि। तँ निर्णय करवाक पहिने फेरसँ देखब, छूबि जाँचब आ आन प्रमाण मिलेनाइ जरूरी अछि।

अध्याय ८५ — स्त्री सभक राति-सभा

दुआर

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही

पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय ८६ — मजदूरक पाँव

गङ्गाक कातक गाम

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय ८७ — स्त्रीनक उपवास

सैन्धव

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय ८८ — ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभकेँ

पङ्कजक विवाद

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय ८९ — सत्यव्रतक जन-सुनवाई

बालकक “अम्बा”

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १० — नामक संविधान

पुत्रजन्मक समाचार

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय ११ — धूर्त सभक अनुपस्थिति

फोनक अफवाह

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १२ — ठूठक छाँह

न्यायालयक साक्षी

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १३ — पुनः बाढ़ि

ओही “ग” फेर?

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १४ — गोहि सभक वापसी

सीप आ चानी / चानीक भ्रम

सीप दूरसँ चानी जकाँ चमकि सकैत अछि। आँखि पहिल बेर धोखा खा सकैत अछि। तें निर्णय करवाक पहिने फेरसँ देखब, छूबि जाँचब आ आन प्रमाण मिलेनाइ जरूरी अछि।

अध्याय १५ — लाउ किन-हंगक अंतिम सौदा

जलक प्रसङ्ग

धुआँ देखि आगिक अनुमान कएल जाइत अछि। मुदा पहिने बुझबाक चाही जे ई धुआँ सचमुच आगिसँ उठल अछि कि कोनो दोसर कारणसँ। सही कारण भेटलापर अनुमान भरोसायोग्य बनैत अछि।

अध्याय १६ — बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमा

शङ्खक रंग

सीप दूरसँ चानी जकाँ चमकि सकैत अछि। आँखि पहिल बेर धोखा खा सकैत अछि। तें निर्णय करबाक पहिने फेरसँ देखब, छूबि जाँचब आ आन प्रमाण मिलेनाइ जरूरी अछि।

अध्याय १७ — चन्द्रपालक म्यूल अकाउण्ट

विषयता पृथक् पदार्थ मानलापर प्रामाण्यक निर

नब वस्तुकें पुरान परिचित वस्तुसँ तुलना कऽ बुझल जा सकैत अछि। तुलना तखन उपयोगी अछि जखन समानता साफ हो आ फरक सेहो ध्यानमे राखल जाए। केवल मिलैत रूप देखि दुनूकें एक नहि मानू।

अध्याय १८ — राघवक अंतिम संदेश

आब एहन आपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—केवल पुरुष

कखनो किछु नहि देखाइ पड़बो एकटा जानकारी होइत अछि। मुदा अन्हार, दूरी वा ध्यानक कमी कारण वस्तु नुकायल रहि सकैत अछि। तें “एतय किछु नहि अछि” कहबाक पहिने ठाम आ परिस्थिति नीकसँ जाँचू।

अध्याय १९ — सत्यव्रत मेहताक गवाही

आँखिसँ देखल ज्ञान

धुआँ देखि आगिक अनुमान कएल जाइत अछि। मुदा पहिने बुझबाक चाही जे ई धुआँ सचमुच आगिसँ उठल अछि कि कोनो दोसर कारणसँ। सही कारण भेटलापर अनुमान भरोसायोग्य बनैत अछि।

अध्याय १०० — गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ

नव्य—न्याय सिद्धान्तः परतः प्रामाण्यवादक द

नब वस्तुकेँ पुरान परिचित वस्तुसँ तुलना कऽ बुझल जा सकैत अछि। तुलना तखन उपयोगी अछि जखन समानता साफ हो आ फरक सेहो ध्यानमे राखल जाए। केवल मिलैत रूप देखि दुनूकेँ एक नहि मानू।

अध्याय १०१ — अनाम ग्रहक आमन्त्रण

प्रामाण्यग्रहणक स्वतस्त्व आ परतस्त्वक स्वर

नब वस्तुकेँ पुरान परिचित वस्तुसँ तुलना कऽ बुझल जा सकैत अछि। तुलना तखन उपयोगी अछि जखन समानता साफ हो आ फरक सेहो ध्यानमे राखल जाए। केवल मिलैत रूप देखि दुनूकेँ एक नहि मानू।

अध्याय १०२ — ग्रहक बीच कबड्डी

इन्द्रिय नहि होएबज्ञानक प्रमाण नहि

नब वस्तुकेँ पुरान परिचित वस्तुसँ तुलना कऽ बुझल जा सकैत अछि। तुलना तखन उपयोगी अछि जखन समानता साफ हो आ फरक सेहो ध्यानमे राखल जाए। केवल मिलैत रूप देखि दुनूकेँ एक नहि मानू।

अध्याय १०३ — अनाम ग्रह पर नाम-पाठ

उद्भूत रूप प्रकाशनक कारण

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १०४ — गढ़ नारिकेल फेर पृथ्वी चुनैत अछि

एकहि समय अनेक ज्ञानक सम्भावना

कोनो बात सिद्ध करबाक लेल सही कारण चाही। कारण ओहि बातसँ जुड़ल हो, हर ठाम ठीक बैसय आ उलटा उदाहरणमे टूटय

नहि। कठिन शब्द नहि, साफ कारण निर्णयकें मजबूत बनवैत अछि।

अध्याय १०५ — पृथ्वीक पहिल पहरा

ओकर गुण साधक आ उपयोगी अछि

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकें आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १०६ — बीजक गवाही

प्रकार दू प्रकारक—ओकर गुण आ उपलक्षण

मोनक याद बहुत उपयोगी अछि, मुदा याद कखनो अधूरी वा बदलल सेहो भऽ सकैत अछि। पुरान बातक निर्णय करैत काल लिखित हिसाब, गवाही आ आन चिन्हसँ ओकर मिलान करू।

अध्याय १०७ — बीजक चोरी

उपलक्षण विशिष्टज्ञानक विषय होयब आवश्यक

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकें आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १०८ — माटिक मुँह

ओकर गुण व्यावृत्तिक समानाधिकरण मात्र नहि

मनुष्यक भीतर इच्छा, सुख, दुःख, याद आ सोच चलैत रहैत अछि। एहि अनुभवकें केवल बाहरक रूप देखि पूरा नहि बुझल जा सकैत। अपन आ दोसरक भीतरक भावक सम्मान जरूरी अछि।

अध्याय १०९ — जलक स्मृति

शिवादित्य मिश्रक मत—साक्षात् सम्बन्धी विशेष

कागजपर लिखल पुरान निर्णय हमेशा पूरा साँच नहि होइत। मनुष्यक मूल्य ओकर जन्म वा जातिसँ नहि, ओकर ज्ञान, श्रम आ

व्यवहारसँ बुझबाक चाही। अन्यायपूर्ण लिखित बातकेँ प्रश्न कएल जा सकैत अछि।

अध्याय ११० — आगिक साक्षी

साक्षादन्वित अथवा मुख्य वस्तुसम्बन्धी ओकर गुण

बहुत वस्तुमे एक समान गुण होइत अछि, मुदा प्रत्येक वस्तुक अपन विशेषता सेहो रहैत अछि। समूहक नाम बुझू, मुदा एक व्यक्ति पर समूहक सभ धारणा नहि थोपु।

अध्याय १११ — वायुक प्रश्न

धूमक चिह्न

सीप दूरसँ चानी जकाँ चमकि सकैत अछि। आँखि पहिल बेर धोखा खा सकैत अछि। तें निर्णय करबाक पहिने फेरसँ देखब, छूबि जाँचब आ आन प्रमाण मिलेनाइ जरूरी अछि।

अध्याय ११२ — आकाशक रिक्ति

अग्निक प्रश्न

सीप दूरसँ चानी जकाँ चमकि सकैत अछि। आँखि पहिल बेर धोखा खा सकैत अछि। तें निर्णय करबाक पहिने फेरसँ देखब, छूबि जाँचब आ आन प्रमाण मिलेनाइ जरूरी अछि।

अध्याय ११३ — शब्दक देह

पर्वतक धूम

सीप दूरसँ चानी जकाँ चमकि सकैत अछि। आँखि पहिल बेर धोखा खा सकैत अछि। तें निर्णय करबाक पहिने फेरसँ देखब, छूबि जाँचब आ आन प्रमाण मिलेनाइ जरूरी अछि।

अध्याय ११४ — अर्थक आत्मा

देवदत्तक प्रसङ्ग

सीप दूरसँ चानी जकाँ चमकि सकैत अछि। आँखि पहिल बेर धोखा खा सकैत अछि। तें निर्णय करबाक पहिने फेरसँ देखब, छूबि जाँचब आ आन प्रमाण मिलेनाइ जरूरी अछि।

अध्याय ११५ — कण्ठक पहरा

काकक रंग

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकें आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय ११६ — मौनक उत्तराधिकार

अन्योन्याश्रय

धुआँ देखि आगिक अनुमान कएल जाइत अछि। मुदा पहिने बुझबाक चाही जे ई धुआँ सचमुच आगिसँ उठल अछि कि कोनो दोसर कारणसँ। सही कारण भेटलापर अनुमान भरोसायोग्य बनैत अछि।

अध्याय ११७ — स्मृतिक ऋण

केवलव्यतिरेकी चिन्ह देखि बुझल बात

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकें आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय ११८ — देहक अधिकार

मीमांसकक मत: अर्थापत्ति कें पृथक् प्रमाण मानब

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकें आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय ११९ — श्रमक देह

कारण: ओ दाबी मानबाक कारण।

धुआँ देखि आगिक अनुमान कएल जाइत अछि। मुदा पहिने बुझबाक चाही जे ई धुआँ सचमुच आगिसँ उठल अछि कि कोनो दोसर कारणसँ। सही कारण भेटलापर अनुमान भरोसायोग्य बनैत अछि।

अध्याय १२० — न्यायक देह

उदाहरण संग बारम्बार साथ देखल सम्बन्ध: एकटा एहन नियम जे सब ठ

धुआँ देखि आगिक अनुमान कएल जाइत अछि। मुदा पहिने बुझबाक चाही जे ई धुआँ सचमुच आगिसँ उठल अछि कि कोनो दोसर कारणसँ। सही कारण भेटलापर अनुमान भरोसायोग्य बनैत अछि।

अध्याय १२१ — जातिक पिंजरा

विरुद्ध

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकें आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १२२ — गंगेशक मुक्ति

सत्प्रतिजाहि विषयपर विचार

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकें आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १२३ — तत्त्वचिन्तामणिक पात

जाहि विषयपर विचारक स्वरूप आ प्रतिवादीक आपत्ति

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकें आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १२४ — प्रमाणक अग्नि

पूर्वजाहि विषयपर विचार: मङ्गलाचरण साधन नहि

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही

पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १२५ — निर्णयक धान

नहि होएबप्रतीति लिङ्गसँ सम्भव अछि

धुआँ देखि आगिक अनुमान कएल जाइत अछि। मुदा पहिने बुझबाक चाही जे ई धुआँ सचमुच आगिसँ उठल अछि कि कोनो दोसर कारणसँ। सही कारण भेटलापर अनुमान भरोसायोग्य बनैत अछि।

अध्याय १२६ — अन्नक न्याय

बारम्बार साथ देखल सम्बन्ध साधनवन्निष्ठ नहि अछि

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १२७ — भूखक नाम

सिद्ध करबाक बातक जाहि विषयपर विचारधर्मव्यापकताज्ञान परामर्श—अन्य

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १२८ — प्यासक नाम

जाहि चिन्ह देखि बुझल बातमे कोनो सजाहि विषयपर विचार नहि आ व्यतिरेकव्य

कोनो बात सिद्ध करबाक लेल सही कारण चाही। कारण ओहि बातसँ जुड़ल हो, हर ठाम ठीक बैसय आ उलटा उदाहरणमे टूटय नहि। कठिन शब्द नहि, साफ कारण निर्णयकेँ मजबूत बनबैत अछि।

अध्याय १२९ — नूनक शपथ

आचार्यसभक मत अछि जे ‘जे धूमयुक्त अछि, सँ अ

धुआँ देखि आगिक अनुमान कएल जाइत अछि। मुदा पहिने बुझबाक चाही जे ई धुआँ सचमुच आगिसँ उठल अछि कि कोनो दोसर कारणसँ। सही कारण भेटलापर अनुमान भरोसायोग्य बनैत अछि।

अध्याय १३० — स्वादक न्याय

घट

सीप दूरसँ चानी जकाँ चमकि सकैत अछि। आँखि पहिल बेर धोखा खा सकैत अछि। तें निर्णय करबाक पहिने फेरसँ देखब, छूबि जाँचब आ आन प्रमाण मिलेनाइ जरूरी अछि।

अध्याय १३१ — साझा थारी

दाहशक्ति-सिद्धान्त

धुआँ देखि आगिक अनुमान कएल जाइत अछि। मुदा पहिने बुझबाक चाही जे ई धुआँ सचमुच आगिसँ उठल अछि कि कोनो दोसर कारणसँ। सही कारण भेटलापर अनुमान भरोसायोग्य बनैत अछि।

अध्याय १३२ — रसोइक गणराज्य

किछु विद्वान् एना प्रस्ताव करैत छथि—जाहि द

कखनो किछु नहि देखाइ पड़बो एकटा जानकारी होइत अछि। मुदा अन्हार, दूरी वा ध्यानक कमी कारण वस्तु नुकायल रहि सकैत अछि। तें “एतय किछु नहि अछि” कहबाक पहिने ठाम आ परिस्थिति नीकसँ जाँचू।

अध्याय १३३ — विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट

गङ्गेशक खण्डन आ प्रतिबन्धकाभाव क स्थापना

कखनो किछु नहि देखाइ पड़बो एकटा जानकारी होइत अछि। मुदा अन्हार, दूरी वा ध्यानक कमी कारण वस्तु नुकायल रहि सकैत अछि। तें “एतय किछु नहि अछि” कहबाक पहिने ठाम आ परिस्थिति नीकसँ जाँचू।

अध्याय १३४ — कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ

मोक्षक परिभाषा: विभिन्न दार्शनिक मतक खण्डन

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकें आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १३५ — विदेह नाट्य उत्सवक मंचन

आपत्ति: मङ्गलाचरण अङ्ग नहि भऽ सकैत अछि

मोनक याद बहुत उपयोगी अछि, मुदा याद कखनो अधूरी वा बदलल सेहो भऽ सकैत अछि। पुरान बातक निर्णय करैत काल लिखित हिसाब, गवाही आ आन चिन्हसँ ओकर मिलान करू।

अध्याय १३६ — तालीक बादक सन्नाटा

नव्यक मत: प्रतिबन्धकाभाव कारण नहि अछि

कखनो किछु नहि देखाइ पड़बो एकटा जानकारी होइत अछि। मुदा अन्हार, दूरी वा ध्यानक कमी कारण वस्तु नुकायल रहि सकैत अछि। तें “एतय किछु नहि अछि” कहबाक पहिने ठाम आ परिस्थिति नीकसँ जाँचू।

अध्याय १३७ — दर्शकक गवाही

फेर एना प्रतिआपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—जखन

नब वस्तुकें पुरान परिचित वस्तुसँ तुलना कऽ बुझल जा सकैत अछि। तुलना तखन उपयोगी अछि जखन समानता साफ हो आ फरक सेहो ध्यानमे राखल जाए। केवल मिलैत रूप देखि दुनूकें एक नहि मानू।

अध्याय १३८ — मंचसँ बाहरक जुलूस

गवयक पहिचान

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकें आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १३९ — बाटक रंगमंच

गदहा

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १४० — बाटक रंगमंच

वृक्षक देशभेद

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १४१ — बरामदाक फैसला

नव्य—नैयायिक मत: दू सुखमे सादृश्य

नब वस्तुकेँ पुरान परिचित वस्तुसँ तुलना कऽ बुझल जा सकैत अछि। तुलना तखन उपयोगी अछि जखन समानता साफ हो आ फरक सेहो ध्यानमे राखल जाए। केवल मिलैत रूप देखि दुनूकेँ एक नहि मानू।

अध्याय १४२ — रेकर्ड-घरक अन्हार

वानरवला वृक्ष

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १४३ — रद्दी बोराक गवाही

एकदेशी कहैत छथि—सम्बन्धीमे विद्यमान अनेक स

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १४४ — नामक यात्रा

आकाश आकाशक समान अछि जकाँ वाक्यमे आन देशक आ नब वस्तुकेँ पुरान परिचित वस्तुसँ तुलना कऽ बुझल जा सकैत अछि। तुलना तखन उपयोगी अछि जखन समानता साफ हो आ फरक सेहो ध्यानमे राखल जाए। केवल मिलैत रूप देखि दुनूकेँ एक नहि मानू।

अध्याय १४५ — डरक पहिल दरार

गायक शब्द

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १४६ — मुहरक दाग

पङ्कजक अर्थ

सीप दूरसँ चानी जकाँ चमकि सकैत अछि। आँखि पहिल बेर धोखा खा सकैत अछि। तें निर्णय करबाक पहिने फेरसँ देखब, छूबि जाँचब आ आन प्रमाण मिलेनाइ जरूरी अछि।

अध्याय १४७ — घर-घरक दस्तक

यज्ञक विधान

धुआँ देखि आगिक अनुमान कएल जाइत अछि। मुदा पहिने बुझबाक चाही जे ई धुआँ सचमुच आगिसँ उठल अछि कि कोनो दोसर कारणसँ। सही कारण भेटलापर अनुमान भरोसायोग्य बनैत अछि।

अध्याय १४८ — मिलावटक पहिचान

गङ्गाक अर्थ

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १४९ — जालक नक्शा

स्वर्गक साधन

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १५० — मुहरक छाया

दुआरक आकाङ्क्षा

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १५१ — मुहर चलौनिहार हाथ

बालकक सीख

सीप दूरसँ चानी जकाँ चमकि सकैत अछि। आँखि पहिल बेर धोखा खा सकैत अछि। तें निर्णय करबाक पहिने फेरसँ देखब, छूबि जाँचब आ आन प्रमाण मिलेनाइ जरूरी अछि।

अध्याय १५२ — आदेशक स्रोत

रूढ़ि योगसँ प्रबल

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १५३ — संकेतक पाछाँ नाम

गोत्व वाच्यार्थ अछि

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १५४ — बाबाक वचन

शब्द प्रमाण

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकें आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १५५ — सेवाक खाता

शब्द

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकें आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १५६ — दानक ऋण

आप्तोक्तत्व कारण नहि अछि

सीप दूरसँ चानी जकाँ चमकि सकैत अछि। आँखि पहिल बेर धोखा खा सकैत अछि। तें निर्णय करबाक पहिने फेरसँ देखब, छूबि जाँचब आ आन प्रमाण मिलेनाइ जरूरी अछि।

अध्याय १५७ — लोहेक संदूक

ज्ञात तात्पर्य कारण अछि

कोनो बात सिद्ध करबाक लेल सही कारण चाही। कारण ओहि बातसँ जुड़ल हो, हर ठाम ठीक बैसय आ उलटा उदाहरणमे टूटय नहि। कठिन शब्द नहि, साफ कारण निर्णयकें मजबूत बनबैत अछि।

अध्याय १५८ — सहमति-कापीक मिलान

आकाङ्क्षाक परिभाषा

मोनक याद बहुत उपयोगी अछि, मुदा याद कखनो अधूरी वा बदलल सेहो भऽ सकैत अछि। पुरान बातक निर्णय करैत काल लिखित हिसाब, गवाही आ आन चिन्हसँ ओकर मिलान करू।

अध्याय १५९ — मृतकक सहमति

शब्दानित्यताक निर्णायक सिद्धान्त

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १६० — गोदामक छाया

गाय शब्दक शक्ति अनुपपन्न नहि

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १६१ — फोनक कैद

पाकक प्रक्रिया

धुआँ देखि आगिक अनुमान कएल जाइत अछि। मुदा पहिने बुझबाक चाही जे ई धुआँ सचमुच आगिसँ उठल अछि कि कोनो दोसर कारणसँ। सही कारण भेटलापर अनुमान भरोसायोग्य बनैत अछि।

अध्याय १६२ — आवाजक मोहर

नैयायिक परम्परा—संख्या यत्नमुख्य वस्तुसँ सम्बन्ध

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १६३ — हटायल कागजक निशान

ओकर गुणक विभक्ति केवल साधुत्व लेल

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १६४ — चन्द्रपालक छायाक पेट

कर्ता तिङ्क अर्थ नहि

कोनो बात सिद्ध करबाक लेल सही कारण चाही। कारण ओहि बातसँ जुड़ल हो, हर ठाम ठीक बैसय आ उलटा उदाहरणमे टूटय नहि। कठिन शब्द नहि, साफ कारण निर्णयकेँ मजबूत बनवैत अछि।

अध्याय १६५ — छायाक देह

तत्पुरुष समासमे शक्ति

मोनक याद बहुत उपयोगी अछि, मुदा याद कखनो अधूरी वा बदलल सेहो भऽ सकैत अछि। पुरान बातक निर्णय करैत काल लिखित हिसाब, गवाही आ आन चिन्हसँ ओकर मिलान करू।

अध्याय १६६ — इमली घाटक कोठार

कर्मधारयसमासक विश्लेषण

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १६७ — नदी पारक आवाज

व्यापारार्थक आपत्तिक उत्तर

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १६८ — शहरक गला

भूत—भविष्यत् प्रयोगसम्बन्धी आपत्ति

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १६९ — चन्द्र दूक दरबज्जा

तत्त्वचिन्तामणि नामक न्याय-पोथी: ग्रन्थ-परिचय

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकें आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १७० — चन्द्र एकक खोल

आब एना तर्क कएल जा सकैत अछि—एहि प्रकार ओही कखनो किछु नहि देखाइ पड़बो एकटा जानकारी होइत अछि। मुदा अन्हार, दूरी वा ध्यानक कमी कारण वस्तु नुकायल रहि सकैत अछि। तें “एतय किछु नहि अछि” कहबाक पहिने ठाम आ परिस्थिति नीकसँ जाँचू।

अध्याय १७१ — चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत

नैयायिकक मत

कोनो बात सिद्ध करबाक लेल सही कारण चाही। कारण ओहि बातसँ जुड़ल हो, हर ठाम ठीक बैसय आ उलटा उदाहरणमे टूटय नहि। कठिन शब्द नहि, साफ कारण निर्णयकें मजबूत बनबैत अछि।

अध्याय १७२ — गाँठक पढ़नाइ

नव्यनैयायिकसभक निष्कर्ष

कोनो बात सिद्ध करबाक लेल सही कारण चाही। कारण ओहि बातसँ जुड़ल हो, हर ठाम ठीक बैसय आ उलटा उदाहरणमे टूटय नहि। कठिन शब्द नहि, साफ कारण निर्णयकें मजबूत बनबैत अछि।

अध्याय १७३ — पंजीक पहरा

चिन्ह देखि बुझल बात खण्ड — तार्किक संरचनाक चरमोत्कर्ष

मोनक याद बहुत उपयोगी अछि, मुदा याद कखनो अधूरी वा बदलल सेहो भऽ सकैत अछि। पुरान बातक निर्णय करैत काल लिखित हिसाब, गवाही आ आन चिन्हसँ ओकर मिलान करू।

अध्याय १७४ — अदृश्य अदालतक चौखट

निष्कर्ष

कोनो बात सिद्ध करबाक लेल सही कारण चाही। कारण ओहि बातसँ जुड़ल हो, हर ठाम ठीक बैसय आ उलटा उदाहरणमे टूटय नहि। कठिन शब्द नहि, साफ कारण निर्णयकेँ मजबूत बनवैत अछि।

अध्याय १७५ — मुहरबाहक नाम

चिन्ह देखि बुझल बात

धुआँ देखि आगिक अनुमान कएल जाइत अछि। मुदा पहिने बुझबाक चाही जे ई धुआँ सचमुच आगिसँ उठल अछि कि कोनो दोसर कारणसँ। सही कारण भेटलापर अनुमान भरोसायोग्य बनैत अछि।

अध्याय १७६ — सेवा-समारोहक अन्हार

उपनयः ओहि नियमकेँ अपन वर्तमान स्थिति पहाड़

धुआँ देखि आगिक अनुमान कएल जाइत अछि। मुदा पहिने बुझबाक चाही जे ई धुआँ सचमुच आगिसँ उठल अछि कि कोनो दोसर कारणसँ। सही कारण भेटलापर अनुमान भरोसायोग्य बनैत अछि।

अध्याय १७७ — घर-घरक कागज

निगमनः दाबीक अन्तिम रूप सँ सिद्ध होबय।

धुआँ देखि आगिक अनुमान कएल जाइत अछि। मुदा पहिने बुझबाक चाही जे ई धुआँ सचमुच आगिसँ उठल अछि कि कोनो दोसर कारणसँ। सही कारण भेटलापर अनुमान भरोसायोग्य बनैत अछि।

अध्याय १७८ — ऊपरक कोठरी

उपनयः ई नियम रामपर सेहो लागू होइत अछि, किए

नब वस्तुकेँ पुरान परिचित वस्तुसँ तुलना कऽ बुझल जा सकैत अछि। तुलना तखन उपयोगी अछि जखन समानता साफ हो आ

फरक सेहो ध्यानमे राखल जाए। केवल मिलैत रूप देखि दुनूकेँ एक नहि मानू।

अध्याय १७९ — मुहरक पगचिन्ह

शोध—पृष्ठभूमि आ ऐतिहासिक परिदृश्य

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १८० — शहरक खाता

प्रभाकरक अनवस्था—आपत्तिक खण्डन

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १८१ — सिमक छाया

मीमांसक मत: दोषाभाव यथार्थताक अनुकूल कारण

कखनो किछु नहि देखाइ पड़बो एकटा जानकारी होइत अछि। मुदा अन्हार, दूरी वा ध्यानक कमी कारण वस्तु नुकायल रहि सकैत अछि। तें “एतय किछु नहि अछि” कहबाक पहिने ठाम आ परिस्थिति नीकसँ जाँचू।

अध्याय १८२ — हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा

निष्कर्ष—वैकल्पिक परिभाषासभ

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १८३ — फोनक भीतरक चेहरा

विशेष—लक्षणक औचित्य

कखनो किछु नहि देखाइ पड़बो एकटा जानकारी होइत अछि। मुदा अन्हार, दूरी वा ध्यानक कमी कारण वस्तु नुकायल रहि सकैत अछि। तें “एतय किछु नहि अछि” कहबाक पहिने ठाम आ परिस्थिति नीकसँ जाँचू।

अध्याय १८४ — आवाजक नकाब

प्रतिआपत्तिक अस्वीकार: निर्विकल्पक विशिष्ट

मोनक याद बहुत उपयोगी अछि, मुदा याद कखनो अधूरी वा बदलल सेहो भऽ सकैत अछि। पुरान बातक निर्णय करैत काल लिखित हिसाब, गवाही आ आन चिन्हसँ ओकर मिलान करू।

अध्याय १८५ — मास्टरक कमरा

अन्यक मत: शरीरजन्यत्व सीमा बतबयवला बात नहि अछि

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १८६ — मधवेशक असली नाम

खण्डन

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १८७ — छत्ताक भीतरक रानी

दोष केवल जातिधर्म नहि अछि

सीप दूरसँ चानी जकाँ चमकि सकैत अछि। आँखि पहिल बेर धोखा खा सकैत अछि। तें निर्णय करबाक पहिने फेरसँ देखब, छूबि जाँचब आ आन प्रमाण मिलेनाइ जरूरी अछि।

अध्याय १८८ — महेश्वरक मुहर

आओर आक्षेपक खण्डन

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १८९ — लोहेक पेटी

गुरुसभक मत

कखनो किछु नहि देखाइ पड़बो एकटा जानकारी होइत अछि। मुदा अन्हार, दूरी वा ध्यानक कमी कारण वस्तु नुकायल रहि सकैत अछि। तें “एतय किछु नहि अछि” कहबाक पहिने ठाम आ परिस्थिति नीकसँ जाँचू।

अध्याय १९० — नील पंजी

नैयायिकसभक आक्षेप

सीप दूरसँ चानी जकाँ चमकि सकैत अछि। आँखि पहिल बेर धोखा खा सकैत अछि। तें निर्णय करबाक पहिने फेरसँ देखब, छूबि जाँचब आ आन प्रमाण मिलेनाइ जरूरी अछि।

अध्याय १९१ — ध्रुवेशक कुर्सी

अतिनवीन प्राभाकरक मत

मोनक याद बहुत उपयोगी अछि, मुदा याद कखनो अधूरी वा बदलल सेहो भऽ सकैत अछि। पुरान बातक निर्णय करैत काल लिखित हिसाब, गवाही आ आन चिन्हसँ ओकर मिलान करू।

अध्याय १९२ — बन्द रेकर्डरक स्वर

बलवान् अनिष्टानुबन्धित्वक प्रश्न

मनुष्यक भीतर इच्छा, सुख, दुःख, याद आ सोच चलैत रहैत अछि। एहि अनुभवकेँ केवल बाहरक रूप देखि पूरा नहि बुझल जा सकैत। अपन आ दोसरक भीतरक भावक सम्मान जरूरी अछि।

अध्याय १९३ — आवाजक चेहरा

प्राभाकरसभक एक वर्गक मत

बहुत वस्तुमे एक समान गुण होइत अछि, मुदा प्रत्येक वस्तुक अपन विशेषता सेहो रहैत अछि। समूहक नाम बुझू, मुदा एक व्यक्ति पर समूहक सभ धारणा नहि थोपु।

अध्याय १९४ — साँसक समन

आन वैकल्पिक मतक खण्डन

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १९५ — रोकल खाता

लक्षणाक स्वरूप—निष्कर्ष

कखनो किछु नहि देखाइ पड़बो एकटा जानकारी होइत अछि। मुदा अन्हार, दूरी वा ध्यानक कमी कारण वस्तु नुकायल रहि सकैत अछि। तें “एतय किछु नहि अछि” कहबाक पहिने ठाम आ परिस्थिति नीकसँ जाँचू।

अध्याय १९६ — जलसमाधिक अर्थ

प्राच्यमतक खण्डन

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय १९७ — ऊपर उठल नाम

प्राच्य वैयाकरणसभक उत्तर

एहि कथामे गुरु आ शिष्य एकटा कठिन प्रश्नकेँ छोट उदाहरणसँ बुझैत छथि। सीख ई अछि जे साँच निर्णय लेल ध्यानसँ देखब, कारण पूछब आ प्रमाण मिलेनाइ जरूरी अछि। जल्दीमे निष्कर्ष नहि निकालू।

अध्याय १९८ — अपराधीक धरती

षष्ठ्यर्थ—लक्षणाक लाघव

मोनक याद बहुत उपयोगी अछि, मुदा याद कखनो अधूरी वा बदलल सेहो भऽ सकैत अछि। पुरान बातक निर्णय करैत काल लिखित हिसाब, गवाही आ आन चिन्हसँ ओकर मिलान करू।

अध्याय १९९ — संदूकक भीतरक बिहान

समुच्चयमे द्वन्द्व अनुपपन्न

सभ कहल बात साँच नहि होइत अछि। जे व्यक्ति बात जानैत हो, झूठ नहि बजैत हो आ साफ शब्दमे कहैत हो, ओकर गवाही पर भरोसा कएल जा सकैत अछि। सुनल बातकेँ आन प्रमाणसँ मिलेनाइ आरो नीक।

अध्याय २०० — नामक पहरुआ

मण्डनक मत

मनुष्यक भीतर इच्छा, सुख, दुःख, याद आ सोच चलैत रहैत अछि। एहि अनुभवकेँ केवल बाहरक रूप देखि पूरा नहि बुझल जा सकैत। अपन आ दोसरक भीतरक भावक सम्मान जरूरी अछि।

पोथीक अन्तिम बात

नाम केवल अक्षर नहि। नामक संग एकटा जीवन, एकटा घर,
एकटा सपना आ एकटा अधिकार जुड़ल रहैत अछि।

जखन कियो कमजोरक नाम मेटाबय चाहय, तखन सत्य
बोलनिहार, ध्यानसँ सुननिहार आ प्रमाण सम्हारनिहार लोक
नामक पहरुआ बनैत छथि।

अहाँ सेहो नामक पहरुआ बनू।



भूत होइए कारी, प्रेत उज्जर,
राकश-लहाशक खोरनाठी जे गलतीसँ नै जड़ल,
बच्चाकेँ गाड़ल जाइए आ ओ बनि जाइए लोथ।

चन्ना गाछी।

भूत आ प्रेतक बीच कबड़्ठी, राकश करैए इजोर
आ लोथ अछि दर्शक।

किशोर संस्करण

मैथिलीक आइ धरिक सभसँ पैघ उपन्यास
न्याय दर्शन आ समकालीन अपराध-गाथा



www.videha.co.in



ISBN 978-93-5937-518-2

ISSN 2229-547X